पुस्तक मिलने का पता:—

लाला हंसराज शादीलाल जैन

१२८, बारभाई मोहल्ला बम्बई नं० २

धी लक्ष्मी मेडीकल स्टोर्स

७६, कीका स्ट्रीट, गुलालवाड़ी, बम्बई नं० ४

प्रथम आवृत्ति १०००,

वीर संवत् २४६८

विक्रम संवत् १९९८



मुद्रक:—

चिम्मनसिंह लोढ़ा

श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस ब्यावर

(राजपूताना)



॥ ॐ

शुक्ल रामायन

[तृतीय भाग]

दोहा—जिनवाणी नित्य दाहिने, अरिहन्त सिद्ध जगदीश।
परमेष्ठी रक्षा करें, त्रिपद धार मुनीश ॥
वाग्देवी वरदायिनि, कविजन केरी माय।
कृपा करी मोहे दीजियो, सुमति बुद्धि सुखदाय ॥
पास जिस समय लखन के, पहुंचे राम नरेश।
रणभूमि में शूरमें, लड़ते रोष विशेष ॥
सम्बोधन कर अनुज को, यों बोले भगवान।
अय भ्राता घबरा मती, करो चौपट मैदान ॥

चौक०—बार २ सिंहनाद शब्द कर, तुमने मुझे बुलाया है।
पर देखा मैंने आन यहां पर, तेरा पक्ष सवाया है ॥
अब जल्दी अमोघ शस्त्र धारो, शत्रु को मार भगाना है।
क्योंकि पीछे सिया अकेली शीघ्र वहां पर जाना है ॥

दोहा—सुने राम के जिस समय, अनुज वीर ने बैन।
कुछ तेजी में आनके, लगे इस तरह कहन ॥

चौक—यह सरलपना अय भ्रात कभी,
ना मनसे आपके जाता है।
सिंहनाद मैं किया नहीं,
प्रपंच कोई दिखलाता है ॥

यह वियावान उद्यान फेर,
शत्रु चहूं ओर घूमते हैं।
पता सिया का लो जल्दी,
वनचर जन फिरें सुंघते हैं॥

दोहा–रामचन्द्र वापिस चले, पहुंचे निज स्थान।
सिया नजर आई नहीं, लगे अति पछतान॥

चौक–उड़ गये अकल के सब तोते,
हृदय पर वज्रापात हुआ।
वह दुःख कहा नहीं जा सकता,
जिस काठिन्य से दिल में घात हुआ॥
इधर उधर के रहे घूम, नैनों से नीर बरसता है।
बिना नीर मछली जैसे, सीता बिन राम तरसता है॥

दोहा–पंख बिना पत्नी पड़ा, देखा जब सुखधाम।
सीता को कोई लेगया, यही विचारा राम॥

चौक–बना सहायक ये सीता का इसकारण यह हाल हुआ।
टूटा पङ्ख तभी है समझ लो,
इसका भी अब काल हुआ॥
फिर राम ने मूल मंत्र सुना,
पत्नी का कार्य संवारा है।
कर्त्तव्य पाल अपना पत्नी,
फिर चौथे स्वर्ग सिधारा है॥
यदि भक्ति हो तो ऐसी हो,
प्राणों को अर्पण कर डाला।

स्वामी हों तो ऐसे हों,
जिन विहङ्ग का भी दुःख टारा ॥
राम ढूंढ रहे सीता को, पक्षी स्वर्गों में जा पहुंचा।
वीर विराध भी मौके का इच्छुक रणमें आ पहुंचा ॥

दोहा-रण भूमि में त्रिशिरा, लक्ष्मण ने दिया मार।
वीर विराध ने लखन को, आकर किया जुहार ॥

वि. दो.-चन्द्रेश्वर का पुत्र हूं, अनुराधा अंगजात।
खरदूषण शत्रु मेरे, करी पिता की घात ॥

चौक-पाताल लङ्क को छीन लिया,
अब शरण आपकी आता हूं।
आज्ञा दो मुझ सेवक को,
कुछ सेवा करना चाहता हूं ॥
महाराज इशारा कर दीजे,
दो हाथ यहां पर दिखलाउं।
कुछ सेवा आपकी हो जावेगी,
पिता का बदला मैं पाऊं ॥

दोहा-इसी काम के वास्ते संग्रह किया सामान।
प्रभू हमारे पर करो, आप यही अहसान ॥

चौक-कुछ मुस्कराय लक्ष्मण बोले,
सुन योद्धा वीर विराध जरा।
जो रहे भरोसे औरों के,
वह आज नहीं तो काल मरा ॥
अपने बल से बलवन्त कहावे,
पर बल नित्य अधूरा है।
जो कष्ट पड़े पर घबरावे, विद्वान् नहीं ना शूरा है ॥

दोहा-भाव आपके हृदय के मैंने लिये पहचान।
आराम जरा यहीं पर करो, देखो रण मैदान॥

चौक-यदि राज की इच्छा आपको है,
तो राम पास जा अर्ज करो।
वह तुम्हें औषधि देवेंगे,
जैसी भी जाहिर मर्ज करो॥
विषधर नाग समान विराध की,
खर के दल पर नजर पड़ी।
हथियारबंध यहां विराध की सेना,
जितनी थी सब तनी खड़ी॥

दोहा-देख विराध को विरोधी खर, भभक उठा तत्काल
शक्ति जो थी लगा दई, नेत्र करके लाल

चौक-गरज मेघ समान घोर कर,
शक्ति वार भरपूर किया।
पर एक सुमित्रा नन्दन ने,
वहु दल को चकनाचूर किया॥
फेर झपट कर खर मारा,
दूषण ने कदम बढ़ाया है।
बस एक बाण से लक्ष्मण ने,
उसको परभव पहुंचाया है॥

दोहा-ज्यों सहस्रांशु के प्रताप से, तारागण छिप जाय।
ऐसे ही बाकी शूर भी, भागे जान बचाय॥

चौक-प्राचीपति निज मार्ग पूर्ण कर,
अस्ताचल पर जाने लगा।

इधर सहित विराध के अनुज वीर भी
पास राम के आने लगा ॥
अब चलत समय श्री लक्ष्मणजी का,
बांया नेत्र फड़क रहा ।
यूं समझ लिया हो गया विघ्न,
कोई दिल अन्दर से धड़क रहा ॥

दोहा--रामचन्द्र को आन कर, करी अनुज प्रणाम ।
रंग फीका श्रीराम का, मन में आर्त ध्यान ॥

चौक--भाई के दुःख को देख लखन,
नैनों में नीर भर लाया है ।
श्री राम के चरणों में गिर कर,
लक्ष्मण ने वचन सुनाया है ॥
यह तो मुझ को सूझ गया कि,
सिया नजर नहीं आती है ।
और देख तुम्हारा अशुभ ध्यान,
मेरी तबियत घबराती है ॥

दोहा--यदि और कोई बात है, सो भी कहो उच्चार ।
जिस कारण से आपको, आर्तध्यान अपार ॥

दो. राम-अय भ्राता कैसे कहूं, दुःख मेरु आकार ।
पता नहीं कैसे कहां, समा गई सिया नार ॥

श्रीराम का गाना (तर्ज़— बहरतबील)

आज भाई कहूं क्या मैं दिल की व्यथा,
न इधर का रहा न उधर का रहा।
शरणागत सिया पत्नी की रक्षा न की,
अब यह तू ही बता मैं किधर का रहा ॥ १ ॥
बन में दिलको जटायु से बहलाती थी,
ना तमन्ना उसे राजधानी की थी।
अब खबर ना कहां वह मुसीबत में है,
मैं इधर का रहा न उधर का रहा ॥ २ ॥
मुझे यह तो है निश्चय ना तोड़े धरम,
करदे प्राणों का त्यागन मुझे यह भरम।
कहां क्षत्रीपन मेरा शर्म है शर्म,
मैं इधर का रहा न उधर का रहा ॥ ३ ॥
सन्मुख लाखों के उसने बरा था मुझे,
रक्षा करना उमर भर कहा था मुझे,
कैसे दुनिया में मुख अपना दिखलाऊंगा,
ना इधर का रहा न उधर का रहा ॥ ४ ॥
अय कर्म तूने कब का यह बदला लिया,
इस विपिन में प्यारी जुदा कर दई,
मेरी इज्जत तो खाक क्या गर्द कर दई,
ना इधर का रहा न उधर का रहा ॥ ५ ॥
अय भ्राता यही कारण अशुभ ध्यान का,
कोई ग्राहक बना सिया की जान का,

वस में इच्छुक सिया के शुक्ल ध्यान का,
मैं इधर का रहा न उधर का रहा ॥ ६ ॥

दो. ल०-भाई क्या तुमको कहूं, अपनी खोल जवान।
गई ना जायगी कभी, सरल नरम की वान ॥

चौक--आपकी नरमी से मिथिला में,
जनक भूप के वचन सुने।
फेर आपकी नरमी से, सीता ने वन में दुःख चुने।
कई वार नरमाई से जानी शत्रु तक छोड़ दिये।
सब विजय किये वह राजपाट,
तुमने निज कर से मोड़ दिये।

दोहा--अब उसी सरल स्वभाव का, मिला नतीजा आन।
नीति के प्रयोग विन, सिया गई और शान ॥

चौक--जो होना था सो हो गुजरा,
अब दिल में जरा विचार करो।
सर्वज्ञ देव का कथन जरा,
उस पर भी तो कुछ ध्यान धरो ॥
सोच गये का आगम वांच्छा,
शूरवीर नहीं करते हैं।
यदि वर्तमान पर ही पुरुषार्थ,
करें तो कारज सरते हैं ॥

दोहा--समय देख कर विराध ने, करी सेव चित लाय।
वन खंड में चारों तरफ, दिये सवार दौड़ाय ॥

चौक--जितने कितने जवान दिली,
सब सेवा करना चाहते हैं।

वे बुद्धिमान बलवान सभी,
वनखण्ड छानते जाते हैं ॥
महा गिरी गुफा दुर्गम नदियां,
सब तरफ झांकते जाते हैं ।
अपनी अपनी तुलना करके,
फिर इसी जगह पर आते हैं ॥

दोहा--युवक सभी कहने लगे, निज बुद्धि प्रमाण ।
इस वन में तो है नहीं, सिया का नामोनिशान ॥

चौक–फिर बोले लक्ष्मण वीर विराध को,
भाई अर्जी सुन लीजे ।
जो आशा करके आया है,
पहले इस पर करुणा कीजे ॥
जो वीर विराध का शत्रु है,
बस वही हमारा भी होगा ।
यह आया शरणा लेने को,
इसको शरणा देना होगा ॥

दोहा–देख इशारा लखन का, बोले वीर विराध ।
प्रभू अर्ज सुन लीजिये, फिरूं हुआ बरबाद ॥

चौक–घाव लगा जो हृदय में,
सो आपको चीर दिखाऊं क्या ?
अब दुखित हुआ खुद के दुख से,
मैं सो रघुवीर सुनाऊं क्या ?
मार पिता को लंक लई,
माता ने यह दरसाया है ।

ले बदला तब हूं पुत्रवती,
यदि नहीं बांझ फरमाया है ॥

दोहा–यदुन आप से क्या कहूं, आप हैं बुद्धिमान।
मैं चरणों का दास हूं, करूं जो हो फरमान ॥

चौक–ढूंढ लिया वन खंड गहन भी,
सिया का पता न पाया है।
यह काम नीच शत्रु का अंतिम,
यही समझ में आया है ॥
इक सिर्फ आप के चरणों से,
निज राज ताज पा सकता हूं।
फिर नभ तो क्या पाताल तलक,
सीता की सुध ला सकता हूं ॥
जहां गिरे पसीना आपका,
वहां मैं अपना खून बहाउंगा।
आयु पर्यंत करूं सेवा,
उपकार ना कभी भुलाउंगा ॥
महान पुरुष ही दुनिया में,
दुखियों के दुख को हरते हैं।
चाहे अपना काम बने न बने,
दूजे का कारज करते हैं ॥

दोहा–वृक्ष नदी गौ सत् पुरुष, इनका यही है सार।
अपने पर सब दुख सहैं करते पर उपकार ॥

चौक–वह कल्पवृक्ष सम रामचन्द्र,
दुख सह सह कर फल ही झरते ।
फिर यह तो था सच्चा सेवक,
क्यों नहीं काम इसका करते ॥
सत्य पक्ष के पालन में,
तल्लीन हर समय रहते थे ।
उनके लिये वैसा करते थे,
जैसा कि मुख से कहते थे ॥

दोहा–दुखिया के दुख को सुना, दुखिया ने ला कान ।
संतोष दिलाने के लिए, बोले खोल जबान ॥

चौबो–अब विराध मनोरथ जो तेरा,
उसको हम पूरा कर देंगे ।
पाताल लंका का राज्य दिला कर,
ताज शीष पर धर देंगे ॥
अब रात रही थोड़ी बाक़ी,
कुछ देर यहां आराम करें ।
अर्चिमाली के चढ़ते ही,
सब लड़ने का सामान करें ॥

दोहा–पा आज्ञा श्रीराम की, पहुंचे निज निज धाम ॥
निद्रा मोचने के लिये, करने लगे आराम ॥

चौ०–सुख निद्रा चिन्तातुर को कहां,
यूं बुद्धिमान फरमाते हैं ।
हां जिस्म रहे शैया ऊपर,
मन घोड़े दौड़ लगाते हैं ॥

फिर सर्द श्वास भर उठ बैठे,
श्री राम को अति बेचैनी है।
इस समय कहां दुख भोग रही,
होगी हा! कोकिल बैनी है॥

दोहा--देख हाल श्रीराम का, बोले लक्ष्मणलाल।
अय भाई तुम किसलिये, होते यूं बेहाल॥

गाना लक्ष्मण का [तर्ज़— बहरतवील]

अय भाई ज़रा दिल सबर कीजिये।
तेरी बातें ये मुझको सुहाती नहीं।
क्या कहूं अपने दिल की व्यथा इस घड़ी,
होना जाहिर जवां पर वो चाहती नहीं॥१॥
देख हालत तुम्हारी फटे है जिगर,
क्या करूं इस समय पेश जाती नहीं।
धीरज धर के उपाय कहो सो करूं,
क्योंकि मेरी अकल काम आती नहीं॥ २॥

राम-आज असह्य कष्ट है छाया मुझे,
मैं कहूं क्या अकल मेरी मारी गई।
दई छोड़ अकेली वियावान में,
अबला इतनी न मुझसे विचारी गई॥ ३॥
जिस पुरुष ने दिया धोखा सिंहनाद का,
बस उसी कर से है सिया नारि गई।
कैसे दुनिया में अपना दिखाउंगा मुंह,
एक औरत ना मुझसे संभारी गई ॥ ४॥

लक्ष्मण-तुमको अब तक पता ना है अफसोस,
ये जीते लक्ष्मण को दुनिया नर ही नहीं।
फिरते लाखों दनुज इस बियावान में,
जीती है या कि मुरदा खबर ही नहीं ॥ ५ ॥
माता पूछेगी मुझको कहां है सिया,
क्या बताऊंगा दिल को सबर ही नहीं।
मेरे होते हो ऐसी तुम्हारी दशा,
मुझसा पापी भी कोई बशर ही नहीं ॥ ६ ॥
राम-जब से भाई सुना शब्द सिंहनाद का,
तब वह नैनों से आंसू बहाने लगी।
आज शत्रु की सेना ने घेरा लखन,
जावो जावो ये हरदम सुनाने लगी ॥ ७ ॥
मैंने समझाई लेकिन वह मानी नहीं,
उलटे ताने फिर मुझको लगाने लगी।
तुमहो लक्ष्मण के विश्वासघाती बलम,
मैं चला जब वह आखिर सताने लगी ॥ ८ ॥
अय भाई अगरचे ना सीता मिली,
तो मरने में मेरे न समझो भर्म।
शरणागत फिर सती का मैं दुख हरूं,
तो फिर क्षत्रिय का भाई कहां है धर्म ॥ ९ ॥
इसमें दोष नहीं है किसी का बिरन,
कोई पिछला उदय आया खोटा करम।
क्षत्रीपन भी गया और धर्म भी गया,
कैसे दिखलाऊंगा मुख मुझे ये शरम ॥ १० ॥

दोहा–लक्ष्मणजी कहने लगे, भाई दिल मत थोर।
जनक सुता मिल जायगी, है कोई दिन का फेर॥

चौक–जिसने की अपहरण सिया,
यह समझ काल ने घेरा है॥
शत्रु के प्राण सहित माता,
लाऊं यह प्रण आज से मेरा है॥
मात सुमित्रा नन्दन,
श्रय भ्रात तभी कहलाउंगा।
यदि नहीं तो फिर धिक्कार मुझे,
जीते मुख ना दिखलाउंगा॥

दोहा–दृढ प्रतिज्ञा अनुज ने, लई इस तरह धार।
यदि यह पूरी ना करूं, तो मुझ नाम निस्सार॥

चौक–इधर प्रतिज्ञा करी उधर,
रजनी ने पीठ दिखाई है।
दिनकर ने जब फेंकी मरीचि,
तो फौजी बिगुल बजाई है॥
सदां सुनी जब बाजे की,
आ जमा झुंड के झुंड हुवे।
और सेनापति के पद पर भी,
थी लक्ष्मणजी आरूढ हुवे॥

दोहा–पाताल लङ्क को चल दिने, कर धावा तत्काल।
शूरवीर योद्धा बली, रूप अति विकराल॥

चौ०–पाताल लंक में खर के पद पर,
सुंद नरेश सुहाया है।

पर चैन कहां था उसको भी,
दल बल ले सन्मुख आया है ॥
जब आन अनी से अनी मिली,
तब शूरवीर ललकारे हैं ।
तब वीर विराध ने भी अपने,
दिल के गुब्बार निकाले हैं ॥

दोहा–फौरन ही रणभूमि में, हुआ रक्त का कीच ।
कायर जन गश खा गिरे, लिए नैन दो मीच ॥

चौक–टङ्कार शब्द जब किया अनुज ने,
मानो विद्युत् कड़क पड़ी ।
फिर बाण बरस रहे लक्ष्मण के,
जैसे श्रावण की लगी झड़ी ॥
कइयों ने शस्त्र डाल दिये,
कुछ वीर विराध से आन मिले ।
और सुंद भाग लंका पहुंचा,
सब छोड़ दिये सामान किले ॥

दोहा–स्वरूपनखा ने यूं किया, अपना श्वसुर-गृह नाश ।
अब पहुंची लंकापुरी, करने कुमति प्रकाश ॥
अधिकार जमाया सब जगह, रामचंद्र ने आन ।
जो मुख से कहा विराध को, पूरी करी जबान ॥

चौक–अनुराधा राणी के दिल में,
खुशी का ना कुछ पार रहा ।
मनोकामना सिद्ध हुई,
गद्दी पर शोभ कुमार रहा ।

मात पुत्र ने रामचंद्र की,
सेवा खूब बजाई है ।
हम रहें बने चाकर इनके,
सब के दिल यही समाई है ॥

दोहा--औदार चित्त ने कर दिया, दूजे का उद्धार ।
अब सीता का भी हुआ दिल पर दुख सवार ॥

चौक--इस तरफ राम को सीता बिन,
खाना पीना नहीं भाता था ।
उस तरफ लंक में रावण भी,
वैदेही का गुण गाता था ॥
अब सुनो हाल किष्किन्धा का,
जहां नया माजरा और हुआ ।
असली नकली दो सुग्रीवों का,
रियासत भर में शोर हुआ ॥

दोहा--रूप धरा सुग्रीव का, सहसगति ने आन ।
पार कहो कैसे पड़े, दो खांडे इक म्यान ॥

चौक--चित्रांग भूप का राजकुंवर,
जो सहसगति कहलाता था ।
ज्वलनसिंह की पुत्री तारा को,
तन मन से चाहता था ।
सहसगति की ज्योतिषियों ने,
स्वल्पायु बतलाई थी ।
इस कारण ज्योतिष पुरपति ने,
सुग्रीव नरेश को ब्याही थी ॥

दोहा-सहसगति को था लगा, यही नशैला तीर।
मन वांछित औषधि बिना, मिटे न मन की पीर॥

चौक-जिसने पुरुषार्थ किया है अति,
फिर उसको था सन्तोष कहां।
जहां तारा थी सुग्रीव के यहां
था सहसगति का मन भी वहां॥
पर जोर नहीं कुछ चलता था,
तब यही समझ में आया था।
'रूप परिवर्तन' विद्या साधन,
प्रारम्भ लगाया था॥
श्री रावण को जैसे सीता,
यहां सहसगति को तारा थी।
नेक को देवी माता सी,
कामी को काम कटारा थी॥
श्री सीता यदि धर्म शशि,
तो ये भी नेक सितारा थी।
श्री सहसगति को यह बिजली,
रावण को सीता आरा थी॥

दोहा--रूप परिवर्तन लई, शक्ति जिस दम साध।
तारा ही तारा रहा, हृदय में कर याद॥

चौक--अब चला वहां से खुशी २,
किष्किन्धा में जा कयाम हुआ।
सुग्रीव चला वन सैर काल,
जब समझा शोभन श्याम हुआ॥

यहां सहसगति ने भी अपना,
सुग्रीव रूप झट धारा है।
असली से पहिले आ करके,
नकली ने वचन उचारा है॥

दो. स.-सावधान होकर रहो, जितने पहरेदार।
यदि शिथिलता कुछ हुई, लेऊंगा सिर तार॥

चौक--समय आजकल ऐसा है,
कई रूप बदल आ जाते हैं।
हैं डाकू चोर उचक्के सब,
राजाओं तक बन जाते हैं॥

फिर आगे बढ़ के महलों का,
जो था नक्शा सब खैंच लिया।
ऊपर से प्रेम दिखाता था,
पर अन्दर से था कैंची लिया॥

दोहा—नकली बैठा असल के, शयन महल में जाय।
चाह जिसकी थी मन बसी, करने लगा उपाय॥

चौक--इतने में आगया असली,
तो संतरियों ने रोक दिया।
और भाग भी न जाय कहीं,
चहुं ओर से पहरा ठोक दिया॥

सुग्रीव और सब अधिकारी,
यह बात देख कर घबराये।
यह रचा किसी ने षडयंत्र,
अनुमान सभी यह नजर आये॥

दोहा–देख हाल कपि पति किये, अपने नेत्र लाल।
गर्ज तर्ज कहने लगे, मस्तक पर बल डाल॥

चौक–बन गये बावले सब के सब,
क्या नशा आज कोई पीया है।
या काल ने परभव में जाने का,
आन सन्देशा दिया है॥
या पागलखाने में तुम निज,
तन को जकड़ाना चाहते हो।
या तुम आयु पर्यंत जेलमें,
पड़ कर सड़ना चाहते हो॥

दोहा–देख तेज सुग्रीव का, गये बहुत से कांप।
कई हो गये सामने, जैसे फणिधर सांप॥

चौक–बोले बस ज्यादा बक बक न कर,
क्या भेष बदल कर आया है।
महाराज महल में विराजमान,
तैने प्रपञ्च रचाया है॥
जो कष्ट हमें बतलाता है,
सो तेरे ऊपर ही बरसेगा।
और याद रहे स्वतंत्रता को,
स्वप्न मात्र में तरसेगा॥

दोहा–यदि है तू बहुरूपिया, सो भी दे बतलाय।
बदले कभी इनाम के, जान मूल की जाय॥

चौक–यह हाल देख कर भूपति का दिल,
कुछ उथल पुथल सा होने लगा।

जो साथ गये थे सैर करन,
फिर उनके दिल को टोहने लगा॥
वे सब के सब अपने पाये,
उनके कारण कई आन मिले।
असली की ओर हो गये बहुत,
कुछ नकली के संग जाय रले॥

दोहा--नकली को असली कहें, असली को नक्काल।
मति अज्ञान में पड़ गया, सबके भरम कमाल॥

चौक-प्रसङ्ग देख हर एक विचारों का
सागर बन जाता था।
किये उपाय अनेक परंतु,
पता नहीं कुछ पाता था॥
रंग ढङ्ग यहां तक बिगड़ा,
सेना तक भी यह हाल हुआ।
आधीन बनाउं परिस्थिति,
यह चन्द्ररश्मि का ख्याल हुआ॥

दोहा-बाली सुत बलवान अति, चन्द्ररश्मि तसु नाम।
आधीन किये अधिकार सब, मुख्य२ जो काम॥

चौक-महल बची के सबसे पहले,
पहरा दृढ लगायां है।
यह झगड़ा दो सुग्रीवों का,
महाराणी ने सुन पाया है॥
जब खबर एक दम फैल गई,
तो उसी समय दरबार हुआ।

असली से पहिले नकली आ,
सिंहासन पर असवार हुआ ॥
उस तरफ से आ पहुंचा असली,
था मस्तक पर बल पड़ा हुआ ।
वह तेज प्रताप महाराजा का,
देख सभी दल खड़ा हुआ ॥
अनिमेष दृष्टि से रहे देख,
कुछ फरक नजर नहीं आता है ।
जो कुछ पूछें असली से बात,
नकली भी वही बताता है ॥

दोहा–भेद नहीं कुछ भी खुला, हो अंतिम लाचार ।
बुद्धिमान एकत्र हो, करने लगे विचार ॥

चौक–अन्तिम निश्चय किया यही,
कि जब तक यह ना भेद मिले ।
तब तक हैं बंद किये दोनों के,
महल हकूमत फौज किले ॥
सब राज्य काज का अधिकारी,
चन्द्ररश्मि होना चाहिये ।
और इन दोनों को पृथक २,
रखकर रहस्य टोहना चाहिये ॥
वहां नियत किया जो भी कुछ था,
सब अमल उसी पर होने लगा ।
और सहसगति प्रतिकूल कपि,
के बीज फूट का बोने लगा ।

दोनों ही थे आर्तध्यानी,
करते थे ढेर विचारों का ।
तारा का दुख था नकली को,
असली को दुख था सारों का ॥

दोहा–एक बार सुग्रीव ने, बुलवाया हनुमान ।
अंजनी सुत का बहु किया, नकली ने सन्मान ॥
पवनकुंवर की अकल भी, देख हुई हैरान ।
हस्ताक्षर तक तुल्य हैं, एक बाण एक शान ॥

चौ०–भूत काल की बात सभी,
दोनों इकसार बताते हैं ।
अपने अपने अनुकूल सही,
सब तुल्य भाव दर्शाते हैं ॥
जैसे तैसे किया परंतु,
असली रहस्य न पाया है ।
फिर परीक्षा कारण दोनों का,
आपस में युद्ध कराया है ॥

दोहा–डट गये दोनों शूरमा, क्रोध हृदय में धार ।
दाव पेच करने लगे, इक दूजे पर वार ॥

चौ०–वह दोनों ही बलवीर शूरमा,
अरु दोनों ही विद्याधर थे ।
और दोनों ही उस समय
समझलो एक स्थान के अंदर थे ॥
अनुमान से आयु में सम थे,
बबर शेर नहीं कायर थे ।

शस्त्र कला के जानकार क्या,
बहत्तर कला में माहिर थे ॥

दोहा--नकली कुछ हंस कर लगा, असली को यूं कहन।
शाबाश तुझे बहुरूपिया, स्वांग उतारा अपन ॥
अब तक मैं देखा नहीं, तेरे जैसा स्वांग।
देऊंगा वो ही तुझे, जो ले मुख से मांग ॥

चौक–मांगो मुख से दान,
रही ना कसर तेरे इस फन में।
अब आगे मत तान,
क्योंकि मुश्किल होगी फिर रणमें ॥
यह सर धड़ का खेल,
खेलते क्षत्रिय खेल मगन में।
क्या तेरी औक़ात तीर से,
फैंकूं तुझे गगन में ॥

सहसगति का गाना

समर का खेल मत हांसी गिनो बहुरूपिया भाई,
मैं अबभी तरस खाता हूं सुनो बहुरूपिया भाई ॥ १ ॥
किया अनुचित भी तूने परंतु माफ करता हूं,
झुकाओ शीस मत ज्यादा तनो बहुरूपिया भाई ॥ २ ॥
प्राण अपने गंवा कर के करावोगे मेरी निंदा,
मिलो बच्चों से ताना मत, बुनो बहुरूपिया भाई ॥ ३ ॥
अभी तो शांत कर रक्खा है मैंने अपने गुस्से को,
एक सौ एक यह मुहरें चुनो बहुरूपिया भाई ॥ ४ ॥

दोहा--नकली का व्याख्यान सुन, जल बल हो गया ढेर ।
कपि पति बोला गर्ज कर, जैसे बन में शेर ॥
दम्भी प्रपंची यहां करता क्या खर नाद ।
भेष बनाने का तुझे अभी मिलेगा स्वाद ॥

चौक--अभी मिलेगा स्वाद काल,
भक्षण तुझको आता है ।
नकली बन कर आप घोंस,
खर हम को दिखलाता है ॥
अवकाश नहीं है बचने का,
क्या मन में पछताता है ।
मरने के डर से अब,
क्यों पीछे हटता जाता है ॥

सुग्रीव का गाना

काल तेरा उठा लाया तुझे मैं आज कहता हूं,
न छोडूं अब तुझे चिड़िया आगया बाज कहता हूं ॥ १ ॥
कहां आकर के फैलाई है तूने अपनी यह माया,
चलेगी पेश ना तेरी सरे सामाज कहता हूं ॥ २ ॥
चला जा अब भी सन्मुख से, फटक ना सामने मेरे,
नहीं तो मौत का तुझको मिलेगा ताज कहता हूं ॥ ३ ॥
सम्भल कर आ खड़ा होजा देख यह चोट क्षत्रिय की,
भंवर में डूबने वाला तेरा है जहाज कहता हूं ॥ ४ ॥



दोहा-फिर जुट गये मैदान में, होकर के विकराल,
शस्त्र कला में शूरमें, सम विद्या सम काल ॥

चौ०-था यही दाव और यही ध्वनि,
इसको किसी पेच से मार धरूं।
जो कांटा है मिट जायेगा,
निष्कंटक हो आराम करूं ॥
था सहसगति भी अतुलित योद्धा,
सुग्रीव भूप जग जाहिर था।
एक था नीति के अन्दर,
और दूजा नीति के बाहिर था ॥

दोहा-लड़ते लड़ते हो गये, थक कर दोनों चूर ।
पास उपस्थित थे उन्हें किये हटा कर दूर ॥
देख असल के जौहर को, नक़ली दिल घबराय।
मन ही मन में सोचता, फंसा कहां पर आय ॥

चौ०-मैं राज पाट को छोड़,
विपत्ति महा कठिन में आन फंसा।
वह सुख कहां स्वतन्त्रता के,
वर्तमान कहां आज दशा ॥
कष्ट सहे जिस कारण इतने,
उस प्यारी के दर्श कहां।
और प्रेम बदरिया बरसे बिन,
फिर यह हृदय भी शर्द कहां ॥

दोहा-मैंने भी तेरे लिये, धूनी दई रमाय ।
पर बेघर तो हो गया, प्राण रहे चाहे जाय ॥

सहसगति का गाना (स्वगत)

प्यारी सितारा तूने मुझको हला के मारा।
फिरता हूं दर तेरे दर पे दिन रात मारा मारा ॥ १ ॥
भाता न खाना पीना उस राग के नशे में।
इक तीर से ही तूंने मेरा कलेजा फारा ॥ २ ॥
परवश हुआ हूं लेकिन मुझ को ये गम नहीं है।
असली को अपने जैसा नकली बना ही डारा ॥ ३ ॥
अर्पण यह अपना तुझको सिर धड़ भी कर चुका हूं,
इस भव नहीं तो परभव होगा हिसाब सारा ॥ ४ ॥
वर्षों तलक तो मैंने पर्वत पे दुख उठाया,
तेरे लिये ही प्यारी यह रूप आके धारा ॥ ५ ॥

दोहा—सहसगति यूं कर रहा, आर्त ध्यान अपार।
वानर पति भी सुस्त हो, करने लगा विचार ॥
वार सभी खाली गये, मुश्किल बनी लाचार।
दुष्ट आत्मा ये कोई, है पूरा मक्कार ॥

चौक—क्या दोष किसी का बतलावें,
जब अपनी किसमत लौट गई।
मात पिता और भ्रात बली,
वाली की सर से ओट गई ॥
करे न्याय जो यथा तथ्य,
ना कोई नजर के अन्दर है।
यदि है तो कुछ रावण समझो,
पर सो भी कामी बंदर है ॥

दोहा—मुर्दे को मुर्दा कहें, है अनादि की रीत ।
मैं जिन्दा मुर्दा बना, है कैसा विपरीत ॥

चौक—कैदी मुझ से अच्छे क्योंकि,
सजावार दुख भरते हैं ।
रोगी जन भी मुझसे बेहतर,
अपना इलाज तो करते हैं ॥
पर यह व्याधि ऐसी चिमटी,
जिसकी कोई दवा न पाई है ।
अब यही नहीं या मैं ही नहीं,
अन्तिम दिल बीच समाई है ॥

सुग्रीवजी का गाना

अय कर्म तुझको क्या अभी आया सबर नहीं,
क्या क्या दिखायेगा मुझे कोई खबर नहीं ॥ १ ॥
माता पिता की अय कर्म तूने जुदाई कर दई,
शरणा बली वाली का भी आता नजर नहीं ॥ २ ॥
खो दई सारी हकूमत तूने मेरे हाथ से,
यह जान भी जाने में अब कोई कसर नहीं ॥ ३ ॥
करके मुकाबला कर्म दुनिया में सारे देख ले,
दुखिया हमारे जैसा कोई बशर नहीं ॥ ४ ॥
अनन्त शक्ति आत्मा अरिहन्त ने तुझ में कही,
कर हौसला तुझसे कर्म कोई जबर नहीं ॥ ५ ॥
हर चीज की सिद्धि लिये उद्यम ही सबका मूल है,
निश्चय 'शुक्ल' मुझको हुआ अब इसका सिर नहीं
॥ ६ ॥

दोहा—मैं इक उपाय और भी, आया मुझको ख्याल।
जो कि लंक पाताल में, हुआ माजरा हाल ॥

चौक—दशरथ नन्दन राम लखन,
जो महा पुरुष कहलाते हैं।
लेख और भाषण द्वारा,
हम भी ऐसा सुन पाते हैं ॥
सत्य पक्ष के हैं पालक,
और काल रूप दुश्मन के हैं।
निर्ग्रन्थ गुरु के हैं सेवक,
जो कि प्यारे सुर जन के हैं ॥

दोहा—खर दूषण ने था लिया, चन्द्रोदर का राज।
वापिस वीर विराध को, दिलवाया वही ताज ॥

चौक—अब वही कृपानिधान कृपा,
कुछ मेरे पर भी कर देंगे।
अब उन्हें दिखाउं यह नाड़ी,
दे औषधि व्याधि हर लेंगे ॥
क्या अच्छा हो रहस्य पुरुष से,
पहिले पता मंगा लूं मैं।
और वीर विराध के द्वारा ही,
अपना सब काम बना लूं मैं ॥

दोहा—रहस्य पुरुष को भूप ने, समझाया सब हाल।
लंक पाताल में जा सभी करो काम तत्काल ॥

चौक—उसी समय कर जोड़ उठा,
और खुशी से चहरा लाल हुआ।

कर के प्रणाम बोला स्वामी,
अब शत्रु का भी काल हुआ ॥
किष्किन्धा से चले आय,
झट लंक पाताल में आया है ।
श्री राम लखन के सहित,
विराध को झुककर माथ नवाया है॥

दोहा-वीर विराध ने अति किया, स्वागत और सत्कार ।
समय देख कर दूत ने, खोला दुख पिटार ॥

चौक--शायद आपको मालुम हो,
जो हाल हुआ किष्किन्धा में ।
वह सारा हाल बयान करूं,
ना समय ना शक्ति बन्दा में
महाराजा ने फरमाया है,
बस नैया है मझधार पड़ी ।
इस समय आपके चप्पू से,
है पार नहीं निराधार खड़ी ॥
आयु पर्यन्त आप का यह,
उपकार रहेगा मेरे पर ।
अब क्या वृतांत कहूं अपना,
बन बैठा हूं बेघर बेज़र ॥
बस एक आपकी कृपा से,
श्रीराम यहां आ सकते हैं ।
जो उलट पेच यह आन फंसा,
वो ही आ सुलझा सकते हैं ॥

दोहा–रहस्य पुरुष से जब सुनी, कपिपति की अरदास।
सन्तोष जनक श्रीवीरविराध यों कहे वचन शुभ-
भाष ॥

चौक०–जो सेवा मुझको फरमाई,
उनका कहना सिर मस्तक पर।
श्री राम का वहां आना होगा,
तो होगा आप के आने पर ॥
जो व्याधि तुमको चिमटी है,
उन पर भी इक दुख आन पड़ा।
सिया जनक दुलारी को वन से,
कोई दुष्ट पुरुष ले गया उड़ा ॥
इस समय अर्ज पर अर्ज,
करें सो भी बुद्धि से बाहिर है।
कभी लेने के पड़ जाय देने,
यह भी मिसाल जग जाहिर है ॥
हां इतना निश्चय है मुझको,
यदि आप यहां पर आ जावें।
और इनके दुख में हो शामिल,
अपना भी दुःख मिटा जावें ॥

दोहा–रहस्य पुरुष ने सब कहा, बीतक मालिक पास।
उसी समय कपिपति चला, करने को अरदास ॥

चौक–वीर विराध किष्किन्धा पति,
राम पै कर के आश गये।
फिर करी चरण प्रणाम सामने,
बैठ पास ही पास गये ॥

सुग्रीव बड़ा ही दाना था,
नीतिज्ञ और मरदाना था ।
अब उसी तर्ज पर चला जिस
तरह अपना काम बनाना था ॥

दोहा--दुखिया के जिस दम उठे, दुखित भरे दो नैन ।
देख नैन श्री राम ने, मन में सोचा ऐन ॥

चौक-है यह भी दुखिया कोई,
कुछ शरणा लेने आया है ।
पर आप ही रसना खोलेगा,
जो भी कुछ कहने आया है ॥
जब नेत्र मिले फिर बात,
चलनमें कहो देर क्या लगती है?
जैसे ग्रीष्म के लगते ही,
पर्वत पर हेम पिघलती है ॥

दोहा--दया दृष्टि के जिस समय, देखे नृप ने नैन ।
सोच सोच श्रीराम से लगा इस तरह कहन ॥
किस्मत ने मुझ को दिया धोखा दीनानाथ ।
रत्न और राधामणि एक समान दिखलात ॥

चौक-क्या कहूं व्यथा अपनी तुमको,
सो यहीं छोड़ना चाहता हूं ।
कुछ सेवा मुझको फरमाइये,
तन मन से करना चाहता हूं ॥
यह सोच लिया कि चन्द दिनों का,
दुनिया में रैन बसेरा है ।

जो भी कुछ तन से बन आये,
सेवा का ही फल मेरा है ॥

दोहा—सुख में दुख यह और भी, हुआ मुझे महाराज ।
इस कारण मैं क्या कहूं, अपने दिल का राज ॥

चौब.—सीता का पता लगाने में,
जैसा हूं वैसा हाजिर हूं ।
कैसा भी क्यों ना हूं चरणों का,
दुख हरने में काजर हूं ॥
मैं सेवक हूं तैयार खड़ा,
प्रभु सेवा कोई बता दीजे ।
जो व्याधि मुझको लगी हुई,
फिर उसको आप हटा लीजे ॥

दोहा—देख चतुर की चतुरता, बोल उठे श्री राम ।
अपनी आप बताइये, दुख की व्यथा तमाम ॥

चौब—यही फरक इन्सानों में,
जो महा पुरुष कहलाते हैं ।
वह अपना दुख कहें न कहें,
दूजे का दुख मिटाते हैं ॥
अपना उदर कहो दुनिया में,
कौन नहीं भर लेते हैं ।
बला दूसरों की अपने सिर,
महा पुरुष धर लेते हैं ॥

दोहा—सुने जिस घड़ी राम के, अमृत भरते बैन ।
लगा कहन सुग्रीव तब, गीले करके नैन ॥

चौक—महाराज कहूं क्या आप से मैं,
इक उलट पेच में आन फंसा।
है एक और सुग्रीव बना,
और इसी ग्यान में आन धंसा॥
क्या कहूं शर्म आती कहते,
बिन कहे विरहा नहीं जाता है।
दिन रात यही दुख लगा हुआ,
खाना पीना नहीं भाता है॥
हो गया मुझे विश्वास,
आपकी कृपा मेरे ऊपर होगी।
निज अहोभाग्य समझूंगा,
आप की इस तन से सेवा होगी।
कुछ रहा नहीं अधिकार मुझे,
फिर कहो तो क्या कर सकता हूं।
इस व्याधि से निवृत होकर,
सीता की शुध ला सकता हूं॥

दोहा--वीर विराध कहने लगा, सुन सुग्रीव सुजान।
इसी वचन पर आपको, रखना होगा ध्यान॥

चौक—प्राण तलक चाहे अर्पण हों,
यह काम अवश्य करना होगा।
यदि काम कहीं पर आन पड़ा,
तो समझो वहां सिर ना होगा॥

अब सेवक हो तो सच्चे हो,
सर्वस्व तलक लाना होगा ।
तुम निश्चय करलो मित्र,
भार अपने सिर पर उठाना होगा ॥

दोहा—उत्तर में कहने लगे, किष्किन्धा नृप राय ।
अपने मुख से क्या कहूं, देऊं कर दिखलाय ॥

चौक—हम वह बादल हैं मौके पर,
गड़बड़ बिन किये बरसते हैं ।
आपत्ति हजारों हो तो भी,
सेवा के लिये तरसते हैं ॥
तीन खण्ड में फिरा हुआ,
फिर विद्याधर कहलाता हूं ।
आप देखते रहें सिया का,
कैसे पता लगाता हूं ॥
सर्वस्व लगा कर भी सीता-
माता का पता लगा दूंगा ।
मैं गुप्तचरों का भूमण्डल पर,
मानो जाल विछा दूंगा ॥
नगर नगर क्या गिरी गुहर,
सब जगह विमान दौड़ा दूंगा ।
राष्ट्र भर का बच्चा बच्चा,
काम इसी में लगा दूंगा ॥

दोहा—परोपकारी चल दिये, किष्किन्धा की ओर ।
धन्यवाद की ही सदा, गूंज रही बाजोर ॥

चौक-देख दृश्य किष्किन्धा का :
श्रीराम लखन हर्षाये हैं ।
सामन्त मंत्री अधिकारी सब,
स्वागत करने आये हैं ।
था दृश्य एक अद्भुत सुंदर,
आवास जहां पे उतारे हैं ।
असली नकली सुग्रीव यहां,
फिर दोनों आन पुकारे हैं ॥

दोहा—करी परीक्षा राम ने, मिला नहीं कुछ भेद ।
तन मन में होने लगा, जरा जरा सा खेद ॥

चौक—फिर समझ लिया कि इन,
दोनों में है कोई एक दुराचारी ।
यह भेद प्रगट करने को फिर,
बज्रावर्तज पर दृष्टि डारी ॥
उधर जुटा दिये वह दोनों,
और इधर धनुष लिया कर धारी ।
टङ्कार शब्द घनघोर किया,
लरजाया फलक व जमीं सारी ॥

दोहा-इश्क मुश्क खांसी खुश्क, द्वेष खून मद पान ।
एते छिपाये ना छिपे, प्रगट होय मैदान ॥

चौक—सब क्षीर नीर का भेद खुले,
जब हंस चोंच अपनी डारे ॥
शुद्ध हेम पिछाना जाता है,
जिस समय कसौटी हो प्यारे ।

सच्चे जौहरी के आगे कभी,
क्या लाल रलाये रलता है ।
बबर शेर का चर्म पहन,
कभी गधा सिंह नहीं बनता है ॥

दोहा–सहसगति की टङ्कार से, विद्या हुई काफूर ।
चित्रांग पुत्र पर उस समय, लगी बरसने धूल ॥

चौक–यह हाल देख श्रीरामचन्द्र को,
रोष एक दम आया है ।
धिक्कार शब्द चहुं ओर,
महल क्या भूमंडल गुंजाया है ॥
बोले राम अहो सहसगति,
क्यों आर्त ध्यान लगाया है ।
यह फल तेरे दुष्कर्मों का,
अब सन्मुख तेरे आया है ॥

दोहा–सहसगति कहने लगा, अर्ज सुनो महाराज ।
दर्श उसी का चाहिये, जो दिल में रही विराज ॥

चौक–मात पिता राणी जिस कारण,
छोड़ दिये सब राज किले ।
कष्ट सहे गिरी उद्यानों में,
दर्श मिले तो वही मिले ॥
निर्मल व्योम जैसे शशि,
अति ही शोभा पाता है ।
सहसगति भी अन्त समय,
तारा का दर्शन चाहता है ॥

दोहा—सहसगति के वचन सुन, क्रोधित हुए रघुराय ।
बोले बस अब चुप रहो, आगे सुना न जाय ॥

चौक—जल्दी अब सम्भल खड़ा होजा,
मम इषु तव सन्मुख आता है ।
ऐसे पापी हृदय का यह,
रक्त शोषण चाहता है ॥
जो जो तूने कर्त्तव्य किये,
वे सकल बानगी बन आये ।
इसमें क्या दोष बता मेरा,
तेरे दुर्भाग्य उदय आये ॥

दोहा—सहसगति के राम ने, मारा कस कर तीर ।
उसी बाण ने दुष्ट का, दिया कलेजा चीर ॥
चक्कर खा धरणी गिरा, सहसगति मुरझाय ।
नर नारि चहुं ओर से, झूमझाम गये आय ॥
चित्रांग-सुत को रघुपति, लगे इसतरह कहन ।
अंत समय सुन ले जरा, शिक्षा-प्रद दो वैन ॥

चौक—जो खिला बाग में फूल समझ,
वह भी इक दिन कुंमलाएगा ।
जो जन्मा सो भी मनुष्य मात्र,
क्या इन्द्र भी मर जावेगा ॥
जो मिले गति सो मति,
श्री अरिहन्त देव फरमाते हैं ।
कान लगा कर सुनो जरा,
उसका भी रहस्य सुनाते हैं ॥

दोहा--सुमति छोड़ कुमति ग्रहे, फेर सुमति ले धार।
उसका भी संसार से, होता बेड़ा पार ॥

चौक-अब तजो सभी दुर्ध्यान,
जिन्होंने यह दुर्दशा कराई है।
जो होना था सो हो बीता,
समता में तेरी भलाई है ॥
यदि इसी ध्यान में प्राण गये,
तो नीच गति जा परना है।
अनमोल रत्न नर-तन खोकर,
चौरासी का दुख भरना है ॥

दोहा--इतना कह सीता-पति, बैठ गये निज स्थान।
सहसगति के भी जरा, दिल में आया ध्यान ॥
बिना पुण्य कैसे गहे, ठीक ठीक सब बैन।
पर कुछ दिलमें सोच कर, लगा इसतरह कहन ॥



सहसगति का गाना

चलना जरा संभल कर, परनारि नागिने है,
मेरी तरफ़ ही देखो, हालत ये क्या बनी है ॥ १ ॥
रखती हजारों फन ये, रग २ में गरल कातिल,
खावे जिगर को पहिले, ऐसी यह डाकिनि है ॥ २ ॥
चलती है चाल बांकी, लहरा के जब जमीं पर,
सुध बुध को बिसरावे ऐसी यह शाकिनि है ॥ ३ ॥

पड़ता नहीं है दिलमें दिन रात चैन उस के,
जिस के चश्म कटारी, मारे यह पापिनि है ॥ ४ ॥
किंपाक फल के सदृश लगती. मनुष्य को प्यारी,
विष से मिली मिठाई, नित्य चाहिये त्यागिनि है ॥ ५ ॥
इह लोक हो ख्वारी पर नरक देन हारी,
नर जन्म को है आरी ऐसी अभागिनि है ॥ ६ ॥
लख कर के हाल मेरा शिक्षा ग्रहो अय मित्रों,
नरभव वृथा गंवाया पर नारि वाघिनि है ॥ ७ ॥
परभव को यह पखेरु लेता है अब उडा री,
शुभ 'शुक्ल' ध्यान ध्याओ कहकर यह रागिनि है ॥८॥



दोहा--सहसगति यह वचन कह परभव गया सिधार ।
कपिपति के होने लगा, आनंद मंगलाचार ॥
पूर्ववत् निज पाट पर, कपिपति रहा विराज ।
शूरवीर बांका वली, चन्द्र रश्मि युवराज ॥
रामचंद्र से कपिपति, लगा करन अरदास ।
पुत्री ब्याहने की प्रभो, मेरी है दरख्वास्त ॥
कहा श्री रघुराय ने, कपिपति वचन सम्भाल ।
जनक सुता की सुध बिना, दिल का हाल बेहाल ।

चौक–अब इधर सिया के शोधन में,
हुए एकत्र परामर्श करने को ।
उस तरफ लंक में शुर्पनखा,
पहुंची अपना दुख रोने को ॥
पर वहां रंग कुछ और खिला,
था नशा भूप को चढ़ा हुआ ।

जिस भंवर से कोई बचा नहीं,
था उसी चक्कर में फंसा हुआ ॥

दोहा-जो विलासिता में पड़ा, गया मनुष्य भव हार।
चार गति मनुष्यत्व बिन, मिले दुःख संसार ॥

चौक-लग रही ध्वनी इक सीता की,
कुछ खान पान नहीं भाता है।
बस नाम एक सीता के बिन,
कुछ और न सुनना चाहता है ॥
निदान कर्म के उदय कोई,
चारित्र पाल नहीं सकता है।
विषयानुरागी परोपकार की,
शक्ति कभी नहीं रखता है ॥

दोहा--शुर्पनखा कहने लगी, अब बन्धु जग ताज।
प्रीतम सुत देवर मरे, गया हमारा राज ॥

चौक-तुम देख रहे दुर्दशा हमारी,
यही तो सबसे दुःख बड़ा।
जिस तख्त पै तेरा बहनोई था,
उस पर वीर विराध चढ़ा ॥
अब सुंद की आप सहाय करें,
इस समय यदि ना ध्यान दिया।
तो यही नजर में आता है,
कि गढ़ लंका भी आन लिया ॥

दोहा-रावण के था चढ़ रहा, इश्क मजीठी रंग।
विचार शक्ति रहती कहां, जिसको डंसे भुजंग ॥

चौक-वह बना असज्ञी (असंज्ञी) बैठा था,
मन सीता में था अटक रहा।
या यों कहिये कि मन भंवरा था,
इसी फूल पर भटक रहा॥
फिर बोला बेमन होकर बस,
इस व्याख्या को रहने दे।
और चन्द दिनों तक उनको भी,
इस बात का लावा लेने दे॥
अब किष्किन्धा में निश्चय,
उनको काल बुलाकर लाया है।
जो खरदूषण को मार विराध,
को राज ताज दिलवाया है॥
क्या है वन के दो भील विचारे,
महा दुःख में पड़े हुए।
इस दशकन्धर के सन्मुख तो,
महा योद्धा भी ना खड़े हुए॥
दोहा-शुर्पनखा कहने लगी, रावण को यूं भाष।
कभी कभी वह ले रही, लम्बे लम्बे श्वास॥

शूर्पनखा का गाना—रावण प्रति

आपकी भूल है भाई समझते उनको विचारे,
सहस्र चौदह समर में एकने सब खाक कर डारे॥१॥
क्या शक्ति दामिनि की; भ्रात उनके धनुष आगे,
हाय देवर पति सुत के, कलेजे तीर से फारे॥२॥

असर करता नहीं उन पर, कोई भी अस्त्र या शस्त्र,
खबर नहीं कैसे वज्र के बने हैं गजब के मारे ॥ ३ ॥

खबर तबही मिले मुझको, उन्होंका सिर कतर लाओ,
मारकर विराध शत्रु को, सुन्द फिर ताज सिर धारे ॥४॥

बने हो शून्य चित्त क्योंकर, करो ये काम जल्दी से,
नहींतो 'शुक्ल' यहां पर भी बजेंगे उनके नक्कारे ॥ ५ ॥

रावण का गाना—भगिनि प्रति

यक़ीन जो ख्याल है तेरा, वही मैं कर दिखाऊंगा,
इसी शमशेर से दोनों का सिर धड़ से उड़ाऊंगा ॥ १ ॥

बहुत कहने से क्या मतलब, क्योंकि खुद ख्याल है मेरा,
विराध को मार कर ले ताज सुन्द के सिर सजाऊंगा ॥ २ ॥

चाहे हो धनुष बिजली सा, चाहे खुद भी हों वज्र के,
स्वाद इस घात का अच्छी तरह, उनको चखाऊंगा ॥ ३ ॥

जो होना था सो हो बीता, तजो अब ख्याल ये मनसे,
उन्हों की तो है शक्ति क्या ज़मीं तकको हिलाऊंगा ॥ ४ ॥

ज़माना थरथराता है, नाम सुन करके रावण का,
चन्द दिन ठहर जा तुझको सभी कुछ कर दिखाऊंगा ॥ ५ ॥

दोहा-टालम टोला कर दई, दे शूर्पनखा को धीर।
उसी ध्वनि में फिर लगा, जो बैठा दिल तीर ॥

रावण वहां से फिर चला, पहुंचा सीता पास।
जनक सुता थी ले रही, गम में लम्बे श्वास॥

चौक--सिर हिला हिला अपने मस्तक,
पर हाथ मारती जाती थी।
निज आत्म निन्दा कर करके,
नैनों से नीर वहाती थी॥
कभी मन में ऐसा आता था,
इस तन से अभी विहार करूं।
यह सोच सोच रह जाती थी,
थोड़ा सा और विचार करूं।

दोहा--क्या आज्ञा सर्वज्ञ की कौन गुरु महाराज।
किसकी हूं मैं कुलवधू, कौन मेरे सिरताज॥

चौक--सिद्धांत कौनसा है मुझको,
जिसने यह ज्ञान बताया है।
और धर्म कौनसा है मेरा,
जिसने बलवान बनाया है॥
किसकी राज दुलारी हूं,
और क्या मुझको करना चाहिये।
बेशक ये प्राण रहें न रहें,
परमेष्ठी का शरणा चाहिये॥

दोहा--तन की खातिर धन तजो, दोनों तज रख लाज।
धर्म हेत तीनों तजो, कहा श्री जिनराज॥

चौक-शिष्य पांचसौ खन्दक के,
सब धर्म हेतु बलिदान हुए।
सम दम क्षम हृदय में धारा,
दुख चक्र छोड़ निर्वाण हुए॥
वह चीज कौनसी दुनिया में,
जो सङ्ग जीव के जाती है।
बस एक शुभाशुभ करनी है,
जो संग न तजना चाहती है॥
निष्कलंक हैं देव गुरु जन,
पांच महाव्रत के धारी।
सर्वज्ञ कथित शास्त्र होता,
प्राणी मात्र को हितकारी॥
दया धर्म में श्रद्धा है,
कुलवधू में दिवाकर वंश की हूं।
हरिवंशी धाम सकेतु जनक,
नृप मुख्य में पुत्री उसकी हूं॥
निष्कलंक जैसे थे सब,
मैं भी निर्मल कहलाउंगी।
शील धर्म नहीं जाने दूं,
इस तन की बलि चढ़ाउंगी॥
महा शक्तिवान उसे जग में,
अरिहन्त देव फरमाते हैं।
जो धर्म बलि देने के लिये,
मस्तक सहर्ष चढ़ाते हैं॥
जो राग द्वेष के वशीभूत,
हो मरे तो आत्म-हत्या है।

फिर अज्ञानी दो अशुभ ध्यान,
ना धर्म की जिसमें सत्ता है।
अन्तिम शस्त्र शील रत्न का,
रक्षक यह बतलाया है।
जिसने भी इसको दिया अंग,
इसने वह पार लगाया है॥

दोहा–यही नियत मैंने किया, अपने दिल दरम्यान।
यदि समय कोई आवता, तज देऊंगी प्राण॥

चौक–दुःख में दुःख है मुझे कोई,
तो दुःख एक श्री राम का है।
श्री राम चरण की रज बिन,
मेरा जीना भी किस काम का है॥
उधर कहां फिरते होंगे,
प्रीतम हा मेरी तलाशी में।
इस तरफ विरहनी चकवीवत्,
प्रीतम दर्शन की प्यासी में॥

दोहा—इतने में ही आगया दशकन्धर भूपाल,
पीठ फेर बैठी सिया नीची गर्दन डाल।
सीता के थे बन रहे जल झरने दो नैन।
देख हाल ये भूपति लगा इस तरह कहन॥

अयि सीता कुछ तो करो दिल में सोच विचार।
किस कारण तन खो रही रो रो गुबे अनार॥

चौक—रोकर क्यों विष घोल रही,
यह दिन हैं आनन्द मंगल के।
कहां ये स्वर्णमयी लंका,
और कहां वे सुख थे जंगल के॥
वेश्याना भेष बना कर के,
फिरती थी संग अधीरों के॥
यह हेम जड़ित साड़ी आभूषण,
पहिनों सच्चे हीरों के॥
दाने दाने पर हीरा है,
यह चम्पा कली निहारो तो।
बिछियों का तो क्या कहना है,
यह हार गले में डारो तो।
ये सुन्दर कर्ण फूल देखो,
कुंडलों की झलक निराली है॥
और सच्चे मोती जडे हुए,
नथ भी यह मछली वाली है॥
यह कड़े तोड़िये छेल कडे,
झांझन पहनो सब चरणों में।
क्या देख आरसी बाजूबन्द,
पौंची पहनों कर कमलों में॥
ये शीर्षमणि देखो अद्‌भुत,
हैं जवाहर ही जडे हुए।
मन मोहन माला पंचरंगी,
दाने जिसमें हैं जडे हुए॥

ये देवरमण उद्यान अहो ।
दुनियाँ में ऐसा और नहीं ।
सब तरह की मेवा लगी हुई,
तुम खाती हो किस तौर नहीं ।
फिरते-फिरते उस जंगल में,
भीलों के पीछे मर जाती ।
गुलवदन मुझे तू बता,
फेर कैसे ये ऋद्धि सब पाती ॥
देखो क्या शोभन जलाशय,
वृक्षों की पंक्ति लगी हुई ।
और मन्द-मन्द सुगन्ध मरुत,
शोभन क्या लेकर बगी हुई ।
क्या वर्णन करूं आवासों का,
चित्राम जवाहिर के सारे ।
है फर्श सब जगह रत्नों के,
और झाड़ फानूस सजे भारे ॥
अब त्रिखंडी नृप की पटराणी,
सीता तुम कहलावोगी ।
यह राजपाट सब कुछ तेरा
मनमानी मौज उड़ावोगी ॥
पुण्य सितारा उदय हुआ,
ऊपर को नजर उठावोतो ।
जैसा भी दिल में ख्याल और,
सो भी मुख से फरमावो तो ॥

दोहा—रावण का व्याख्यान सुन, बोली सीता नार।
जैसे गर्जे शेरनी, गिरी गुफा मंझार ॥

सीताजी का गाना

बसी है मेरे हृदय में भानुकुल राम की सूरत।
बिसर गई शुध जो मैंने देखी शोभाधाम की सूरत ॥१॥

वह अद्भुत गुण भरी सूरत मेरे नेत्रों में फिरती है।
समाई सारी रग रग में मेरे पति राम की सूरत॥२॥

रूप क्या सद्गुणों का सौंदर्य है त्रिलोकी का जिसमें।
कि लज्जा से मलिन होजाय कोटी काम की सूरत ॥३॥

देवगण नाचते हैं मगन होकर प्रेम से जिनके।
दुःखी जन ढूंढते फिरते छबि आराम की सूरत ॥४॥

तेरि तो हस्ति क्या है सुरपति साथ अन्तक को ले आवें।
बिसारूंगी नहीं मन से मैं अपने स्वामी की सूरत ॥५॥

'शुक्ल' अज्ञान में फंसकर फिरें भवचक्र में प्राणी।
खरों को क्या खबर होती कहां आराम की सूरत ॥६॥

दोहा—दुष्ट अश्व को चाहिये कांटेदार लगाम।
मूढ़ कोल खर नीच से नरमी का क्या काम ॥

चौक—हृदय आंख दोनों के अन्धे,
चपर-चपर क्या लाई है।
मानिन्द भांड दुर्भाषण की,
किसने यह तर्ज सिखाई है ॥

अदर्शनीक व सपीठ दिखा यह,
पापजनक व्याख्यान न कर ।
आभूषण वस्त्र फूंक सभी,
निर्लज्ज कहीं जाकर के मर ॥
मुझ पुत्री सम जो पुत्री तेरे,
उसको पटनार बना रावण ।
यह हीरे पन्ने जवाहरात के,
आभूषण पहना रावण ॥
उन सबको महलों देवरमण,
बागों की सैर करा रावण ।
इक रामचन्द्र से अन्य मनुष्य,
सब पिता भ्रात मेरे रावण ॥
यह स्वर्णमयी लंका मुझको,
मरघट मानीन्द दिखाती है ।
श्री राम चरण रज वन में,
मेरा हृदय कमल खिलाती है ॥
यह क्षत्रिय का कर्तव्य नहीं,
तू मुझे चुराकर लाया है ।
निष्कारण अय नीच, सती को,
और सताने आया है ॥

दोहा—सती शील भुजंग मणि शेर मूंछ ऋषि शाप ।
आयु तक देते नहीं अन्त न कछु संताप ॥

चौक—शुद्ध देव गुरु और धर्मशास्त्र के,
जो प्राणी विपरीत चलें ।

तो समझ लेवो कि उसके,
उड़ने वाले हैं सब कोट किले ॥
श्रेष्ठों को वही सताते हैं,
अवसान जिन्हों के पुण्य हुए।
फिर नीच गति जा पड़ते हैं,
शुभ ज्ञान ध्यान से शून्य हुए ॥

दोहा-कान लगा करके सुना सीता का व्याख्यान।
कुछ तेजी में आन के यों बोला खोल जबान ॥
करुणा आती है मुझे देख सौम्य मुख दीन।
नहीं तो कर देता अभी टुकड़े तेरे तीन ॥

चौक-दुष्ट शब्द कहना यह सब,
बुद्धिमानी से बाहर है।
सब तीन खंड में तेज मेरा,
बाकी दुनियां सब कायर है ॥
कुछ दोष नहीं इसमें तेरा,
क्योंकि शिक्षा जब ऐसी है।
और जैसी थी संगति तुझको,
चतुराई भी तुझको वैसी है ॥
इसलिए मुझे कुछ खेद नहीं,
जो भी कुछ मर्जी सो कहले।
अवशेष और दुख रोने का
बाकी कुछ है सो भी रोले ॥
कई भाग्य हीन अच्छी वस्तु के,
प्राप्त होने पर रोते हैं।

और दुष्ट शब्द कहने से अपना,
रहा सहा भी खोते हैं ॥
हीरे और पत्थर में तुझको,
रंचक ना पहचान रही,
यह सुने वचन तेरे कोई तो,
बता मेरी क्या आन रही ॥
बस छोडो पिछला ध्यान सिया,
अब भी मन को शमझालो तुम ।
जो भी कुछ गुब्बार खुशी से,
सारा आज सुनालो तुम ॥

दोहा—इतना कह दशकन्धर ने लिया मौन कुछ धार ।
सीता ने फिर इस तरह दई उसे फटकार ॥
धन्य तुझे शिक्षा मिली धन्य विद्या तरु जीव ।
धन्य तेरी यह शूरता बुद्धि धन्य सदैव ॥

चौक—धन्य तेरी यह जीभ श्वान के,
मानिन्द भौंक रहा है ।
गपड सपड़ कर मान वडाई,
अपनी ठोक रहा है ॥
अति आश्चर्य इतर लगाना,
खर को भी शौक रहा है ।
किस कारण यह जान,
काल के मुख में झोंक रहा है ।

दौड़—बताता है त्रिखंडी, मगर तू है पाखंडी,
याद रख वचन हमारा ।
इस लंका में राम लखन का बजेगा तेग दुधारा ॥

सीता का गाना-रावण प्रति

किसी कुगुरु कुसंगत से यही तालीम पाई है ।
चुराकर और की नारी खौफ से तुम दबाई है ॥१॥
करेगा क्या तू मेरे टुकड़े तू अपने ही करायेगा ।
चन्द दिन में ही लंका की देख होगी सफाई है ॥२॥
तेरी ऋद्धि को काटन में करूंगी काम आरी का ।
मुझे क्या धौंस अबला को यहां आकर दिखाई है ॥३॥
मैं उस केहरी की नारी हूं जिन्होंकी तेग जग जाहिर ।
तेरा यह सिर उड़ाने को उन्हों संग अनुज भाई है ॥४॥
दिखाता भय क्या मरने का मैं खुद मरना ही चाहती हूं ।
करो उपकार मेरे पर यह लो गर्दन झुकाई है ॥५॥
गधों को भी सुंघाते हैं कोई क्या इत्र फुलवाड़ी ।
उन्हों के वास्ते कुदरत ने इक कुरड़ी बनाई है ॥१॥
वचन पटुता इशारे सब लिये हैं बुद्धिमानों के ।
गधे सूअर व मूर्ख को अकल सोटे से आई है ॥६॥

दोहा—रावण को ये वचन थे जैसे तीक्ष्ण शूल ।
किन्तु रागान्धाभ्रमर, काट सके ना फूल ॥

दोहा—बस बस बस अब चुप रहो लम्बा करके हाथ ।
बड़े जोश में आनके बोल उठे नरनाथ ॥

दोहा—धारी आश जो तूने ये व्योमकुसुमवत् जान ।
क्या शक्ति उनकी कांपे सकल जहान ॥

चौक—कांपे सकल जहान सिया तुम आप समझ जावोगी।
अब आयु पर्यन्त राम के दर्शन नहीं पावोगी॥
देख रहा मैं हाल सभी क्या करके दिखलावोगी।
सता २ इस भंवरे को अयि कामिन पछतावोगी॥

दौड़—जले को और जलाले, दुखी को और सताले,
क्या उलट पुलट बकती हो। बन्दे के फ़न्दे से,
अब क्या सहज निकल सकती हो।

रावण का गाना

खुल गये भाग्य तेरे क्यों आज ठोकर लगाती है।
तरसती है जिसे दुनिया, उसे तू क्यों ना चाहती है॥१॥
तेरा यह निष्ठुर भाषण तो मुझे फूलों बराबर है।
मगर बेहाल तन का कर मुझे तू क्यों दिखाती है॥२॥
बात वो ही करी तूने डराती ऊंट छत्ते से।
यहां तो बज चुके धौंसे मुझे तू क्यों डराती है॥३॥
किया है नियम उसका जो मुझे दिल से नहीं वांछे।
इसलिये दीन बन कहता मुझे तू क्यों सताती है॥४॥
तेरे रोने के पानी से कभी मैं बह नहीं सकता।
प्रेम तजदे सभी पिछला उसे तू क्यों दोहराती है॥५॥
खूब सोचें जरा मन में समय कुछ और देते हैं॥
भुला बैठा खुदी को मैं संग दिल क्यों बनाती है॥६॥

दोहा—जनक सुता तैयार थी कुछ कहने को और।
रावण लंका को चला, उदय कर्म का जोर॥

चौक—था नशा भूप को चढ़ा हुआ,
कुछ खान-पान नहीं भाता था ॥
दिन रैन मन्दोदरी राणी के भी,
महल तलक नहीं जाता था ॥
मन्दोदरी ने एक समय,
चपला दासी बुलवाई है ।
एकान्त पास बैठा उसको,
यों कोमल गिरा सुनाई है ।

दोहा—अयि चपला सुन तो जरा, मेरे दिल का राज़ ।
किस कारण आते नहीं महलों में महाराज ॥

चौक—कई दिवस बीते महलों में,
महाराज कभी नहीं आये हैं ।
तरस रहे हैं दोनों नेत्र,
नहीं दर्श पिया के पाये हैं ॥
क्या है उसका हाल बता,
जो नई नार वे लाये हैं ।
और महलों में अब तक उसको,
क्यों नहीं लाना चाहये हैं ।

चपला नौ०—जैसा तुमको ज्ञान है, वैसा मुझको ज्ञात ।
मगर एक अफवाह जरा सुनी आज की रात॥

चौक—दशरथ नृप कुल वधू जानकी,
श्रीरामचन्द्रजी की नारी ।

दण्डकारण्य में देख अकेली,
दशकन्धर ने अपहारी ॥
तज देवेगी प्राण तजे ना,
मन को जनक दुलारी ।
इस कारण महाराणीजी,
लाये नहीं महल मंझारी ॥
दौड़-हर घड़ी समझाते हैं, बाग नित्य प्रति जाते हैं,
बात यह ठीक कही है,
प्रेम तमाचा लगा जिन्होंके सुध-बुध कहां रही है ।
मन्दो. दो.—अच्छा तुम जाओ अभी महाराज के पास ।
महल बुलाने की करो प्रीतम से अरदास ॥

राणी का गाना-दासी प्रति

जा चली जा अभी देर लाना मती,
साथ महलों में लेकर आना बहन ।
इन ही बातों में सारी उमर खोदई
अपना दुखड़ा ये किसको सुनाऊं बहन ॥१॥
हाय गजब है सितम कैसा अन्धेर है,
पर नारी चुरा कर के लाना बहन ।
रो-रो तन को यह खोती ननद सामने,
इसका दुख भी जरा न पिछाना बहन ॥२॥
तो मैं जल्दी से जाकर के महाराज को,
राणी साहब बुला करके लाऊँ अभी ।
जैसी आज्ञा है वैसे मैं पालन करूं,
चाहे खाने तलक को भी कहूं कभी ॥३॥

आना जाना तो उनके ही स्वाधीन है,
मैं तो आने की बातें बताऊं सभी।
कहीं देरी यदि मुझको लग भी गई,
सजा उलटी न तुमसे मैं पाऊं कभी॥

दोहा — ऐसा कह दासी चली करने को यह काज,
पहुंची बंगले में जहां लेट रहे महाराज।

नौ० चौक — मन में अति उचाट लगा शैया पर पडे हुए हैं,
ध्यान प्रथम दो पायों में और नेत्र चढे हुए हैं।
मुरझा रहा वदन मस्तक पर बल कुछ पडे हुए हैं,
कुछ ऐसे कि रोग ग्रस्त कुछ मानो लडे हुए हैं॥

दौड़---देख दासी घबराई, आज आपत्ति आई,
करूँ क्या सोच रही है पराधीन स्वप्ने।
सुख नाहीं सत्य यह बात कही है,

दोहा---अनुमान नजर यह आरहे यदि बोली इस बार,
गुस्से में गुस्सा चढे लेवेंगे सिरतार॥

चौक---चुधातुर शठ और तीसरा जो गुस्से में भरा हुआ,
दस अन्धों में अन्धा चौथा पंचम हो जो लरा(डा) हुआ॥
सब शिक्षक रागी के शत्रु बुद्धिमानों का कहना है,
इसलिये इसे कुछ कह करके क्यों कष्ट मौत का सहना है।

दोहा---यहीं सोच वहां से चली पहुंची राणी पास,
मन्दोदरी कहने लगी चेहरा देख उदास॥

मन्दोदरी का गाना

अरी क्यों क्यों दासी क्या हालत है तेरी,
छवी तन की सब मुरझाई हुई है।

खिलखिलाती हुई तू गई थी यहां से,
बता क्या किसी की सताई हुई है ॥ १ ॥
बता कहां प्रीतम पतो क्या तू लाई,
उदासी क्यों चेहरे पर छाई हुई है।
हो करके निर्भय कहो सब कहानी,
सुना सुनने की दिल समाई हुई है ॥ २ ॥

दोहा. चप.—महारानी के हुक्म से गई मैं थी जिस काज।
बंगले में थे पलंग पर पडे हुए महाराज ॥

चपला का गाना

बताऊं क्या तुमको मैं वहां की कहानी,
खबर किस मर्ज के सताये हुए हैं ॥ १ ॥
ना सेवक ही देखा कोई पास उनके
खड़े सब बाहर घबराये हुए हैं ॥ २ ॥
बिना नीर मछली तड़फते थे ऐसे
कहीं अपने मन को फँसाये हुए हैं ॥ ३ ॥
कहां मेरी शक्ति करूं उनसे बात
चरमं दोनों मस्तक चढ़ाये हुए हैं ॥ ४ ॥

दोहा-दासी के जिसदम सुने मन्दोदरी ने बैन।
यान बैठ पति पासजा लगी इस तरह कहन ॥
तल्लीन आप किस ध्यान में हुए पति महाराज।
मुझको भी बतलाइये दुःख का कारण आज ॥

नो. चौक.—दुखका कारण कहो आपके मन में कौन फ़िकर है।
दिल में अति उचाट उदासी कैसे चहरे पर है ॥

हाल आपका देख मेरे इस दिल में नहीं सबर है ।
पल २ में शय्या पर पलटे खाते इधर उधर हैं ॥
दौड़--क्षीन छवि हुई तुम्हारी, कौन दुख ऐसा भारी,
भेद सब ही बतलाइये अर्धाङ्गी से,
प्राणनाथ ना बात छिपानी चाहिये।
रावण दोहा-प्राण प्रिया मैं क्या कहूं अपने दुख की बात।
पराधीन तन मन हुआ नींद नहीं दिन रात ॥
नों. चौक--नींद नहीं दिन रात हो सके तो यह दुख मिटादे।
देवरमण उद्यान अभी जा सीता को समझादे ॥
यही रोग बस जनकसुता से प्रेम औषधि लादे।
या इस तन से छुटा जीव नाता परभव पहुंचादे॥
दौड़--तुम बनो सहायक मेरी
करो मत इसमें देरी,
तुम्हें यदि प्रेम हमारा प्रथम करो
यह काम नहीं बस यहां से करो किनारा
दोहा मन्दो.-हैं हैं हैं महाराज ये फेर न लेना नाम।
तीन खंड के ताज बन क्या करते हो काम ॥
चौक--हे नाथ आप कुछ सोच करो क्या नीच कर्म चितलाते हो।
है निर्मल कुल ये कीर्ति धवल से बट्टा आज लगाते हो॥
यहां एक २ से बढ़ करके राणी हैं आपके कमी नहीं।
जो परनारी से राग करे उसकी जड़ जगमें जमी नहीं
पाताल लंक खुस गई हाथ से जिस दिन से यह लाये हो॥
नित्य शूर्पनखा रोती फिरती उसका ना हित कर पाये हो।
खरदूषण चौदह हजार खेचर जिन से रण में हारे ॥

यदि आप पहुंचे वे लंका में कबहूं ना टरेंगे फिर टारे।
क्या लाभ उठाया बतलाइये सुन्दर तन का क्या हाल हुआ॥
सूर्य की तरह चमकता था वह काला आज निडाल हुआ।
परनारी विषबेल पिया जिसने अपने घर बोई है॥
क्या राजपाट ऋद्धि सम्पत्ति निश्चय सब उसने खोई है।
दोहा रा.--वाह वाह वाह बस पंडिता रहने दे उपदेश।
ढाई अक्षरी बात थी खोले ग्रन्थ विशेष॥
दोहा मन्दो.प्राणनाथ यह आपको दिया नहीं उपदेश।
देखो तो इसमें नहीं भीति का लवलेप॥
चौक--हे नाथ ध्यान धर सुन लीजे इक बात और बतलाती हूं।
अविनय न कहीं आपकी हो कहती २ रुक जाती हूं॥
जिस देश या घर क्या नगरों में सत्पुरुष सताये जाते हों।
जहां मांस मद्य चोरी यारी पतिव्रता नार सताते हों॥
जिस जगह शील का लेश नहीं उस जगह दरिद्रता वास करे
जहां मुनि सताये जाते हों तो कुल का सत्यानाश करे॥
कामाग्नि यदि शान्त न हो तो राजकुमारी और वरो।
हे नाथ हमारे कहने से तुम इस व्याधि को दूर करो॥
रा. दो.--बस २ चल हट परे रसना करले बन्द,।
ऐसे वचन विशेष का कौन यहां सम्बंध॥
चौक--हम चलते हैं पूर्व को तो यह पश्चिम को जाती है,
हम कहते हैं तू ऐसे कर यह उलटे गीत सुनाती है।
चल तू अपने रास्ते लग क्यों मुझे सताने आई है,
गुद्दी पीछे पति जिसकी वह अकल बताने आई है॥
मन्दो. दो.-बार बार कहती पिया पछतावोगे फेर।
एक नार के वास्ते कटें सूरमें ढेर॥

चौक--हे नाथ जरा सी कांजीरत्न पदार्थ पय का नाश करे,
सिक्के की संगति से सोना क्या गौरव की आश करे।
बिगड़े गति दुष्ट विचारों से पद उच्च कुसंगति से बिगड़े,
ग्रन्थों में ऐसा लिखा हुआ जग ताज अनीति करे बिगड़े॥
रा. दो.--समझ लिया हमने सभी लाज विनय दई तार,
गुरुणी बन कर आ गई करने को प्रचार।
चौक--चाहे सर्वस्व हो नष्ट मेरा मुझको इस बात का ध्यान नहीं,
इक प्राण प्यारी सीता बिन इस तन में बाकी जान नहीं।
खर दूषण की बात ही क्या चाहे सारा जग मारा जावे,
यह प्राण जायें तो जांय मगर नहीं जनक सुता जाने पावे॥
जब सुन्दर आदि विद्याधर राजे मिलकर आये थे,
वह समय याद होगा तुमको मैंने सब मार भगाये थे।
वैदेही तो एक ही है वे कितनी राजकुमारी थीं,
और सहस्रांशु इन्द्र नरेश की कैसी गति कर डारी थी॥
दोहा--क्या मेरा वे कर सकें दुखिया बन के भील।
अष्ट पद के सामने कौन विचारी चील॥
चौक--बड़े २ रण जीते हम एक बबरसिंह वह बन्दर है,
दोनों को नाच नचाने में हम भी तो गुरु कलन्दर हैं।
क्यों समय नष्ट करती ज्यादह सब कुछ निस्सार ही बकती है,
हृदय में जिसने वास किया अब निकल नहीं वह सकती है॥
मन्दो. दो.--जो इच्छा मुझको कहो दो सौ २ धिक्कार।
पुण्य हमेशा जीव का रहे नहीं इकसार॥
चौक.--अनुमान हमारे में स्वामी वह समय वही था बीत गया,
सब राजों को जो जीत गया वह पुण्य आपका जीत गया।

वह काम तुम्हारा कुछ नीति के अन्दर रहता वाहिर था,
और पुण्योदय से सर्व जगत दृष्टि गोचर में कायर था ॥

दोहा--इसमें तो प्रीतम कहीं नीति का नहीं अंश ।
गंज कहो कसे छुपे जहां नहीं केश का वंश ॥

चोक--किस कुल की वह वधू तिया और किसकी राजदुलारी है,
राज्य महल के सभी सुखों पर मार दई ठोकर मारी है ।
जिन पिता वचन पूरा करने को आपत्ति सिर धारी है,
हे नाथ हृदय में सोच करो वह उसी पुरुष की नारी है ॥

दोहा-भानु पश्चिम को चढे भूलें अपना राह ।
सीता सत को ना तजे पडे लंक पर धाह ॥

चोक.-किस लिये लंक में अब प्रीतम बारुद लगाना चाहते हो,
क्यों गौरव हीन वंश को करके दुर्गति बंध लगाते हो ।
जिस जगह उपद्रव होते हैं समझो कि वहां का पुण्य घटे,
वह देश दुखी हो जाता है जिस जगह पिया व्यभिचार बढे ॥

दोहा-सुन करके व्याख्यान से जलवल होगया ढेर ।
भ्रकुटि सहित निडालकर बोला जैसे शेर ॥

दोहा-तू है कायर की सुता बोल रही जिमश्वान ।
अब यदि कुछ आगे कहा लेऊं खेंच जवान ॥

नौ. चौक-लेऊं रसना खेंच किस लिये तू मरना चाहती है,
चपर २ चल रही जीभ सिर पर चढ़ती आती है ।
क्या चरित्र फैलाया और हमको छलना चाहती है,
किस लिये बनी शत्रु मेरी तू जला रही छाती है ॥

दौड़-पेच क्या चला रही है दुखी को सता रही है ।
आई क्या प्रेम दिखाने मारूं चाबुक चार,
अकल सारी आ जाय ठिकाने ॥

दोहा—या तो यहां से अलग हट या कर यह दो बात।
समझा दे जाकर सिधा या कर मेरी घात॥

रावण का गाना

उसी के तीर का मारा बना बीमार बैठा हूं,
औषधि ना दई उसने बहुत सिर मार बैठा हूं॥ १॥
राज परिवार गौरव अय प्रिया सब जीते जी के हैं,
किन्तु अब देखले जीने से ही लाचार बैठा हूं॥ २॥
बना याचक मैं भिक्षा मांगता हूं आज सीता की,
सहारा सुन्द को क्या दूं सभी कुछ हार बैठा हूं॥ ३॥
घुमेरी चढ़रही सिर में ना खाना पीना भाता है,
उसी के नाम का डाले गले में हार बैठा हूं॥ ४॥
जमाने भर में ना देखी मैं ऐसी संगदिल कोई,
नर्म क्या गर्म जैसे तैसे कर सब वार बैठा हूं॥ ५॥
मेरे नजदीक तुमतो क्या चाहे उजड़े बसे लंका,
मैं केवल एक सीता का ही पहरेदार बैठा हूं॥ ६॥

मन्दोदरी का गाना

तेरी तकदीर ने राजा तुझे धोखे में डाला है।
दमकता था जो लाली से वह चहरा आज काला है॥ १॥
भाव से तो बने अन्धे किन्तु आंखें तो खुलली हैं।
मोतियाबिन्द होने से नहीं सूझे उजाला है॥ २॥
तुम्हारे नाम की शक्ति से गूंजताथा सदाआलम।
वहेगा नाम अब दुनिया में बन गन्दा सा नाला है॥ ३॥

आपके दर्श करने को तरसती है सभी दुनिया।
हाय देखेगी घृणा से इसे नैनों की माला है ॥४।
खैर जाती मैं अभी ही मगर मस्तक ठिनकता है।
पता नहीं आज होनी ने यह क्या शस्त्र संभाला है ॥ ५ ॥
दोहा–इधर से चली मन्दोदरी देवरमण उद्यान।
उधर सिया थी कर रहीअपने दुःख का गान॥

सीताजी का विलाप

आज सुनाऊँ कैसे अपना किसको ये हाल ॥ टेक ॥
कहां पिता भाई कहां भामण्डल भाई।
आज विपदा के मांहि मेरे कोई ना नाल ॥ १ ॥
कहां प्रीतम हमारे कहां देवर हमारे।
आज सम्बन्धी सारे कोई पूछे ना हाल ॥ २ ॥
कहना साधु का न माना अपने हठ को ही ताना।
आज ये देश विराना फिरते शत्रु ले भाल ॥ ३ ॥
पहले छूटी राजधानी धूलि वन २ की छानी।
अवकी कहूं क्या कहानी बनगई बिल्कुल मुहाल ॥४॥
अशोक शोक मिटादे अपना गुण दिखलादे।
मुझको कालिव से छुडादे नहीं तो देऊँगी आल ॥५॥
रखता शोक कहाता अपना नाम लजाता।
मुझको क्यों ना जलाता डारूं बोलिन की माल ॥६॥
'शुक्ल' ध्यान कवि का शोभन कुल है रविका।
छोड़ूं ख्याल सभी का जपूं परमेष्ठी माल ॥ ७ ॥

दोहा—मूलमंत्र सत्यशील जिस हृदय लिया जमाय।
उस व्यक्ति से मनुष्य क्या देवनपति थर्राय॥

चौबो.—इधर लगी यह जाप जपन
उस तरफ मन्दोदरी आ पहुंची,
बात परस्पर करने की
नीति कुछ अन्तर में सोची।
जब दृष्टि पड़ी मुखमंडल पर
दान्तों में अंगुल दबाती है,
क्या कहूं उपमा दुनिया में
कोई मुझे नजर नहीं आती है।
यदि है तो कुछ चन्द्रमा की
सो भी यहां लज्जा खाता है,
थोह संस्थान है सुन्दरी का
यह सम चौरस कहलाता है।
उसमें तो कुछ भी सुगन्ध नहीं
इसमें शुभ खुशबू आती है,
वह कुछ ग्रहों का अधिपति
यह जगदम्बा कहलाती है।
वह गौरव पर चढ़े एकरांज ही
फिर नित्य राहु ढकता है,
यह सदा प्रकाशित रहती है
उल्टा नित्य प्रति गुण बढ़ता है।
फिर उसे ग्रहण भी लगता है
दिन में शक्ति रविमन्द करे,
पर इसका (सिया) तेज एकसा

रहता दिल में सबके आनंद करे।
है निश्चय वह भी एक रत्न
किन्तु उसमें कुछ स्याही है,
यह स्फटिक रत्नमयी हृदय
वाली देती दिखलाई है।
वह कुमुदनियों की सुखदायी
तो अन्य पंकज को दुखदाई है,
मैं जान लिया आकृति से
सीता सबको सुखदाई है।
धर्मरूप अनमोल मनुष्यतन
वैदेही ने पाया है,
यह अति तुच्छ निर्जर पति का
इक चन्द्र विमान कहाया है।
यह सम्यग्धारी शील रत्न क्या
सब रत्नों की आगर है,
इसलिये साफ जाहिर चन्द्रमा
इसके नहीं बराबर है।
इसमें तो अति श्वेतता है
यह लिये गुलाब की लाली है,
वह ज्ञान रहित एक जड़ वस्तु
यह चेतन ज्ञान उजाली है।
उसका कुछ आदि अन्त नहीं
यह शांत कभी हो जावेगी,
वह भ्रमण करेगा इसी तरह
यह मोक्षधाम को जावेगी।

दोहा–रोना आता है मुझे कहूं क्या इसे उचार।
आई हूं किस काम को मुझको हैं धिक्कार॥

चौबोला–क्या अच्छा होता इसके
चरणों में अपना सिर धरती,
इस धर्म रूप देवी की सेवा
कर आत्मा निर्मल करती।
हा फूट गई किस्मत मेरी
जो इसे सताने आई हूं,
क्या पता मुझे किस खोटी गति का
बन्ध लगाने आई हूं।
इस तरफ यह मरने को बैठी
तैयार उधर वह मरने को,
इस लिये कोई तजवीज करूं
जो भी कुछ आई करने को।
समझाऊं इसे यदि समझ गई
फिर तो सब कुछ बन सकता है,
कम से कम उत्तर देने को
सच्चा मार्ग बन सकता है।

दोहा–निश्चय ऐसा करगई राणी सीता पास,
मिष्ट वचन कहने लगी मन्द २ कुछ भाव।
अहोभाग्य मेरे बहन तेरे भी अहोभाग्य,
हुआ परस्पर आज यह तेरा मेरा राग॥

चौक–पटराणी जी का ताज मिलेगा तुमको खुशी सुनाती हूं,
दिन रात करूंगी मैं सेवा दासी बनकर यह चाहतीहूं।
जितनी कितनी भी राणी सब तेरी दासी कहलावेगी,

कर जोड़ सामने खड़ी रहूँ जो मिले हुक्म बजावेंगी ॥
अहो भाग्य तेरे सीता दश कन्ध जैसा पति मिला।
वह तीन खंड का नाथ लंक में स्वर्णमयीसब कोटकिला।
क्या वर्णु शोभा महलों की सारे रत्नों से जड़े हुए।
जो ऋद्धि सिद्धि सभी विराजे पुण्य सितारा चढ़ा हुआ?
थर्राती है दुनिया सारी वह तेज सुलक्षण पड़ा हुआ।
वह सूक्ष्म कटि देख रावण की बबर शेर शरमाता है।
सुर नर कुवेर भी देख मलूकाई को लज्जा खाता है॥
उस रूप तेज को देख ईर्षा रवि शशि कोभी आती है।
और नेत्र कटीलों की शोभा मृगों का मान गलाती हैं॥
नेत्रों में स्वाभाविक सुरमां रंग जैसे कपोत की गर्दन में।
मतवाली छवि निराली है वह अद्वितीय है नर तन में॥
फिरभीसरल स्वभावी ऐसे हैं जो भी कुछ मर्जी करवालो।
त्रिखंडी है फिर मान नहीं चाहे चरणों में सिर धरवालो।
यह लो कुछ खाना खालो फिर चलेंगी दोनों महलों में।
यह राज पाठ सब कुछ तेरा नित्य रहो बहन आवासोंमें॥
६— मन्दोदरी ने टहलनी को कुछ इशारा कर दिया।
थाल भर पक्वान्न का दासी ने लाकर धर दिया॥
सबतरह के मिष्ट और नमकीन खुशबूदार थे।
फल फूल मेवादिक वहां पहले से ही तैयार थे॥
मौन बैठी थी सिया पांचों पदों में ध्यान था।
उसके लिए वह बाग क्या इक शोक का स्थान था॥
सीता सती को बात ये तलधार सी लगने लगी।
कुछ कर बढ़ा मन्दोदरी सीता को यों कहने लगी॥
दो॰-रहो सिया रस रंग में भोगो सुख भरपूर।
तू सबकी सरदार है मैं चरणों की धूर॥

चौ.क.- बुद्धिमान वह नर नारी जो द्रव्य काल अनुसार चले।
शुभ धन्य घड़ी धन्य भाग्य सिया तुझको महपूर्ण सुखमिले
अब छोड़ो पिछला ख्याल जरा ऊपरको मुख उठावो तो।
स्वीकार विनती कर मेरी फल फू मिठाई खावो तो ॥

कवि दोहा-कायरजन व दिलगिरे औरों की ले ओट ।
शीलवान दक्ष शूरमा करें लक्षों में चोट ॥
अनुचित इस वर्ताव का सुनना भी महापाप।
गर्ज तर्ज बोली सिया रहन सकी चुपचाप ॥
हट पीछे को दूतिका विछा रही क्या जाल।
कूद लालिका यहां तेरी गले ना बिलकुल दाल ॥

चौ.क.-गलेना तेरी दाल किसलिये बातें बना रही है ।
जली हुई को क्यों आकर अब वृथा जला रही है ॥
मानिन्द विष्टा सन्मुख मेरे जो कुछ दिखा रही है।
क्यों दुर्गति का बन्ध पापिनी अपने लगा रही है।

दौड़-मिलाई कुदरत ने जोड़ी तू अन्धी रावण कोढ़ी,
भांड था पहले आया उसी तर्ज का।
अब भांडन तेने भी राग सुनाया ॥

सीता का गाना राणी के प्रति

बड़ी निर्लज्ज तूने लाज सारी वेचखाई है।
रागान्धी तू कामान्धे की क्या कीर्ति सुनाई है ॥ ॥१॥
चोर कामी है गौर वहिन वो रावण दुराचारी।
किया सिंहनाद का धोखा मुझे लाया चुराई है ॥२॥

तुझे मैं रांड करने को यहां आई न मिलने को।
मिलाऊं धूल में लंका करूं सबकी सफाई है ॥३॥
पीठ यहां से दिखा जल्दी सूरत तेरी न भाती है।
दनादन देखना यहांपर अभी देगा सुनाई है ॥४॥

दोहा-देख तेज उस सती का विस्मित हुई अपार।
दशकन्धर आया तभी उसी बाग मंझार ॥

चौ. क.-सीता के सुन वचन मन्दोदरी लज्जित होकर बैठगई
चक्षुरोगी ने मानों निज दृष्टि सूर्य से खैंच लई ॥
कर पांच पदों में ध्यान सियाने मौनवृत्ति मन लाई है।
यह दृश्य देख दशकन्धर ने फिर ऐसे बात चलाई है ॥

दोहा-अब दृष्टि ऊंची करो छोड़ो आर्त ध्यान।
क्या सोचा फिर आपने सच करो व्याख्यान ॥

चौ. क.-अय सीता किसलिये मुझे सता २ कर मार रही।
यह मोरारक्त बरसता है जितने तू आंसू ढार रही ॥
घाव लगाकर हृदय में क्यों ऊपर नमक लगाती है।
कर शान्त हृदय औषधि यही क्यों नहीं किंचित झुकाती है
यह देख मन्दोदरी राणी भी तेरी दासी है बनी हुई।
और कैसा प्रेम दिखाया इसने फिर भी तू है तनी हुई ॥
एक यही इच्छा मेरी हंसने का दृश्य दिखादे तू।
हृदय की तप्त बुझे ऐसा कोई शीतल वचन सुनादे तू ॥
यह दासी और मैं दास तेरा बस और बता क्या चाहती है
सराशर सोच इन बातों का फिर क्यों नहीं भोजन पाती है
और बता क्या कहूं आसरा इन प्राणों का तूही तो है।
राजपाट क्या महल कोष इनसब की मालिक तूही तो है।

दोहा—देख ढीठ की ढीठता बोली हो लाचार ।
वचन तीर सम भूप पर बरसन लगे अपार ॥

सो. चौ. छं.—हे मूढ कमलिनी दुनिया में
सूर्यके दर्शन चाहती है,
पर जुगनूं चाहे हजार चढे
फिर भी नहीं दर्श दिखाती है ।
और देख पुरुष के दर्शन को
लज्जावंती मुरझाती है,
शुद्ध कुलवन्ती परपुरुषों की
छाया से लज्जा खाती है ॥
जिस समय चढेंगे राम रवि
लंका रजनी पै आकरके,
उस समय कमलिनी आंख तेरी
खुल जायेंगी चटका खाकरके ।
वे प्रबल सिंह हैं राम लखन
तू कायर दुर्बुद्धि खर है,
क्या मान करे ये लंका तुझ को
होनेवाली यम घर है ।
कुरीति तुम्हारे कुल में
ये प्रत्यक्ष आज दिखलाती है,
जो बहन तुम्हारी शूर्पनखा
वह पति दूसरा चाहती है ॥
व्याधि जो उसको लगी हुई
सोही तुमको बीमारी है,
क्या तुमसा वैद्य सभी !

घरके कट जायें मर्ज तुम्हारी है।
क्या ठीक ऊंठ की शादी में
खरदेव ने शंख बजाया है,
आपस में ध्वनि रूप दोनों ने
मिलकर खूब शराहया है॥
यह देख इशारा शुनीने भी
सुरसा गीत उचारा है,
कौवों ने बांधा अलंकार
सब आकर राग सुधारा है।
यह खभी तुम्हारे पर घटता
आपस में सोच समझ लेवो,
जो काल बुलावा दे आया
तैयार चवीना कर लेवो॥
आज नहीं तो कुछ दिन में
यह सिर भी उड़ने वाला है,
फिर सोचो एक चिता में
किस २ का सिर जुड़ने वाला है॥

दोहा--सुना काट करता हुआ सीता का व्याख्यान।
रावण को भी चढ़ गया गुस्सा वै प्रमान॥

चौबो—पर शीलवान का मस्तक भी कुछ जादू का सा होता है,
और बुंदत्ता असली चन्दन का तैजस शक्ति को खोता हैं।
दशकन्धर ने लिया खेंच शस्त्र और हाथों पर तोला,
भय दिखलाता हुआ सिया को लंकपति ऐसे बोला॥

दोहा—बस बस बस अब चुप रहो बोलो वचन सम्भाल।
दुष्ट शब्द कह कर वृथा ही बजा रहो क्यों गाल॥

चौक-मत याद रहे तू इस फन्दे से निश्चय निकल नहीं सकती,
क्यों खाली गाल बजाती है तू मुझको निगल नहीं सकती।
हम जितनी करते नरमाई तू उतनी सिर पर चढती है,
हम हृदय से हित चाहते हैं तू और उल्टी अकड़ती है।
यदि अबके अनुचित कहा तो निश्चय खड्ग से शोश उड़ा दूंगा,
जो आशा करके बैठी है मिट्टी में उसे मिला दूंगा।
बस बहुत सुनी मैंने तेरी अब जल्दी मान वचन मेरा,
यदि नहीं तो कालबली ने अब तेरे सिर पर लाया डेरा।

दोहा-कहते २ भूप ने शस्त्र लीना हाथ।
मन्दोदरी तब यूं लगी कहन जोडकर हाथ॥

मन्दोदरी का गाना

त्रिखंडी नाथ यों ही क्रोध में आया न करें,
निर्बलों को प्रबल शक्ति दिखाया न करें ॥१॥
तेज प्रतापी नहीं आपसा जग में कोई,
अपनी कृपा से इन्हें दूर हटाया न करें ॥२॥
दोउ कर जोर के नम्र विनती यही है मेरी,
कभी निर्दोषों पै तलवार उठाया न करें ॥३॥
पति विरहिनी पतिव्रता विदेश नो दुखिया,
शस्त्र अबला को दिखा पाप कमाया न करें ॥४॥
क्षत्रिय का धर्म ही नहीं स्त्री वध करने का,
"शुक्ल" कर्मों से डरो पाप कमाया न करें ॥५॥

सीता दोहा—

समझ लिया मैंने सभी है तू प्राणी नीच,
फंसे चोर वत् म्यान से शस्त्र दिखाया खींच।
ज्ञान शून्य तू हो रहा बुद्धि महा मलीन,
प्रगट वीरता हो गई अब ढोंगी मति हीन॥

चौक—

धिक्कार तेरी शूरमताई किस पै तलवार उठाई है,
भगिनी भ्राता की कुदरत ने जोड़ी क्या खूब बनाई है।
वह अन्य पुरुष को ले भागे ये पर नारी ले दौड़ता है,
गीदड़ छिपकर खेलें शिकार और मूछें बहुत मरोड़ता है॥
कायर पिंजरे में फँसी शेरनी को तलवार दिखाता है,
क्या यही शौर्य शक्ति तुझमें जिसपर यह गाल बजाता है।
इस मेरी अमर आत्मा को तलवार काट नहीं सकती है,
देवेन्द्र कुछ नहीं कर सकता क्या तुच्छ तुमारी शक्ति है॥
इस कलधौत की लंका पर जुत्ती की ठोकर लाती हूं,
यह शक्ति एक शील की है जिससे उत्साह बढ़ाती हूं।
सर्वज्ञदेव ने धर्म बली पै सिर देना बतलाया है,
और धन्यघड़ी धन्यभाग्य आज यह समय अपूर्व पाया है॥

चौबोला

उपकार आपका मानूंगी मुझको परभव पहुंचा रावण,
तलवार जो हाथ में तेरे है ग्रीवा पै शीघ्र चला रावण।
पहले इसे रक्त पिला मेरा फिर खून आपका पीवेगी।
जब तक दुनिया में जैन धर्म एस कीर्ति मेरी जीवेगी॥
फिर रक्तपात मेरा शोभन सच्चा इतिहास कहायेगा,
यह बने सहायक सतियों का मम हृदय कमल खिल जायेगा॥

अब छुटा मुझे दुखसे रावण देतु वन पहुंचूं स्वर्गों में,
जहां अवधिज्ञान से देखूंगी तू दुख भोगेगा नरकों में।
यह रवि चला अस्ताचल को तू भी अब चलने वाला है,
क्या मान करे इस राज्य का सब कुछ धूल में मिलनेवाला है॥
गच्छी सतवंती कुलवंती लिये धर्म के जान गमाती है,
यदि नल कुबेर भी चल आवें उसको भी ठोकर लाती है॥

दोहा

मौन धार रावण खड़ा दिल में करे विचार।
मरने को तैयार है पड़े किसतरह पार॥

चौबो०

अधिक और कुछ कहा इसे तो अपने प्राण गमावेगी,
इसलिये समय देना चाहिये अपने मनको समझावेगी।
यह सहज २ कम हावेगा क्योंकि पिछला मोह ताजा है,
यह मन अन्तिम गिर जावेगा जो इसके तन का राजा है॥

दोहा

फिर बोला अब सीता सभी गुस्सा दूर निवार।
तुमतो ऐसे होगई जैसे लाल अनार॥

चौबो० क०

किस कारण तुमने भयमाना यह सब ऊपर की बातें हैं,
यदि हुआ कष्ट इनबातों से तो क्षमा आप से चाहते हैं।
नरम गर्म वचनों से तुमको बार बार समझाता हूं,
इसका भी तो इक कारण है सो तुमको आज सुनाता हूं॥

दोहा

मैं एक समय मुनिराज से लई प्रतिज्ञा धार।
जो मुझको चाहे नहीं त्यागी वो पर नार॥

चौबो. क०

जो हृदय से नहीं चाहे उस पर नारी का त्याग मुझे,
बस केवल नियम रुकावट करने वाला है मैं कहूं तुझे।
इस बात पै आप विचार करें कुछ समय और भी देते हैं,
इस पत्थर दिल को मोम बना हम तेरे हितकी कहते हैं॥

कवि दोहा

अस्ताचल भानु गया लंका में लंकेश,
दासी जन को कर गया चलते यह उपदेश।
सुनो सभी तुम दासियों जरा लगाकर कान,
यदि समझाई तुमने सिया तो पावोगी सन्मान

चौ० क०

अयि त्रिजटा सब में चातुर अनुभवी तर्क अवतार है तू
यह काम अवश्य करना होगा क्योंकि सबकी सरदार है तू।
जैसे भी होसके सिया को अपने पंजों में लावो,
नरमाई या गरमाई से भय महाभयानक दिखलावो॥
सब यंत्र मंत्र टूणे टचे सिद्ध मंत्र कोई चलावो तुम,
मैं आज्ञा तुमको देता हूं सीता को खूब सतावो तुम।
इस काम में आप सफल रहोगी तो मनचिंतित धन पावोगी,
और दासी पन भी दूर करूं स्वतंत्र आनन्द उड़ावोगी॥

दोहा

समझा कर सबबात यह पहुंचा महल मंझार।
दासी भी करने लगी अब अपना उपचार॥

चौक.

कोई नरम मोम की तरह बनी कोई तेजी लगी दिखाने को,
कोई लगी भूतणी सीनखने कोई मंत्र लगी चलाने को।
कोई दांत फाड़ अट अट हंसती लगी कोई उपहास उड़ाने को
यंत्र मंत्र में लगी कोई और कोई विषय जगाने को ॥

दोहा क०—

मूल मंत्र सत्य शीलता जिस पर हों हथियार।
उस पर कुछ चलता नहीं करलो यत्न हजार॥

चौक—

अज्ञानी कायर भर्मी भय इनका अधिक मानते हैं,
वह दुनियां से नहीं भय खाते जो जिनवाणी को जानते हैं।
कर वच पदों में ध्यान लिया निज कर्मों को धिक्कारती है,
श्रीराम के प्रेम की लहर उठे तब मस्तक पर कर मारती हैं॥

दोहा—

जनकसुता को इस समय दुखमेरु आकार।
कर्मों का यूं कर रही सीता निजी विचार॥

सीताजी का विचार

सभी जन फेरलें आंखें कि जब तकदीर फिरती है,
न धीरज धर्म ही होता यह जब बेपीर फिरती है॥ १॥
घृणा हो विश्व भर को मृत्यु भी तो दूर रहती है,
खबर ना काल के सिर परभी क्या शमशीर फिरती है॥२॥
कोई कहता हमें कि तुम हमारे संग में चलदो,
किन्तु हृदय हमारे बात ये ज्यों तीर चुभती है॥ ३॥

कर्म बेशक सताते हैं मगर सन्तोष है इतना,
यह चेतन आत्मा मेरी प्रबल मशहूर फिरती है ॥ ३ ॥
कर्म मैंने किये पैदा इन्हें अब तोड़ना भी है,
"शुक्ल" सीता कर्म का करती चकनाचूर फिरती है ॥ ४ ॥

दोहा—

सीता के संग्राम की सुनी विभीषण बात।
सत्यवादी पहुंचा वहीं होते ही प्रभात ॥
था ज्ञात विभीषण को सभी है यह सीता नार।
फिर भी यूं कहने लगा वचन अति सुखकार ॥
कहो बहिन तुम कौन हो कैसा आर्त ध्यान।
कौन यहां लाया तुम्हें करो सभी व्याख्यान ॥

चौक रा०—

किसकी हो कुलवधू और किसकी तुम राजदुलारी हो।
और अतुल कष्ट क्या पड़ा आप पर कौन भूप की नारी हो ॥
तुम साफ २ कहदो सब ही इसमें क्या बात शर्म की है।
कुछ बनूं सहायक मैं तेरा तू मेरी बहिन धर्म की है ॥

दोहा—

अमृत झरते जब सुने सत्य पुरुष के बैन।
जो भी कुछ बीतक हुआ लगी इस तरह कहन ॥
क्या कहदूं मैं कौन हूं क्या बतलाऊं हाल।
कौन सहायक यहां मेरा जो काटे दुख जंजाल ॥

चौक—

क्या बतलाऊं अपना भाई तुमको मैं कौन कहां की हूं,
जब थी तब तो मैं थी किन्तु अब यहां की हूं न वहां की हूं।

परिवर्तन शील संसार सभी सर्वज्ञ देव फरमाया है,
जो भी कुछ पूर्व कर्म किया मैंने उसका फल पाया है।
मैं जनक भूप की पुत्री हूं भामंडल मेरा भाई है,
दशरथ नृप की कुलवधू नाम सिया मात विदेहामाई है।
लक्ष्मणजी देवर मेरे श्री रामचन्द्र को व्याही हूं,
वनवास में साथ रघुपति की मैं सेवा करने आई हूं।

दोहा—

दण्डकारण्य के गिरी में निश्चल ठहरे आन।
आगे भी सुनलो जरा इधर लगाकर कान॥

चौक—

जहां करते २ भ्रमण दूर जा निकले लक्ष्मण उस वन में,
थी वंश वृन्द में लटक रही तलवार देख हुए खुश मन में।
वटवृक्ष गहन द्रुम छाया थी जहां नजर नहीं कुछ आया था,
परीक्षा कारण वंशजाल में खड्ग अनुज ने वहाया था॥

दोहा—

विद्या था वहां साधता शूर्पणखा का लाल।
सिर नीचे था लटकता पांव बंधे वट डाल॥

चौक—

वहां वंश जाल के सहित कटा शम्बुक का सिर पड़ा नजर,
खेद किया लक्ष्मणजी ने निर्दोष मरा कोई राजकुमार।
जो बीता वहाँ लक्ष्मणजी ने श्रीराम को आकर बतलाया,
जब सुना हाल करुणा सागर को लक्ष्मण पर गुस्सा आया॥

दोहा—

रघुदिनेश कुल मुकुट ने दी लक्ष्मण को फटकार।
खेद प्रगट करते हुए बोले धर्मावतार॥

चौक—

विना विचारे किया काम तुमने अति ही नादानी का,
निरपराधी विद्यासाधक का क्यों शीश उतारा प्राणी का।
खेद प्रगट किया श्रीराम ने और कहो क्या करना था,
कारण बन गये श्री लक्ष्मणजी मरने वाले ने मरना था॥

दोहा—

ऐसे बातें कर रहे थे वह दोनों वीर।
शूर्पनखा आई इधर वंश जाल के तीर॥

चौक—

यह तो मुझको भी ज्ञान नहीं क्या किया वहां पर जा करके,
पर देख अनुज के चरण चिह्न गई पास हमारे आ करके।
वह रूप देख श्रीराम का वश मोह काम राग में लीन हुई,
सब प्रेम भूल गई पुत्र का जब वुद्धी महा मलीन हुई॥

दोहा—

जो भी कुछ उसने कहा मन घड सभी असत्य।
सुनते ही श्री रामजी समझे जो था तथ्य॥
बोली विद्याधर कोई ले गया मुझे चुराय।
देख रूप मोहित हुआ और दूसरा आय॥

चौक—

दोनों विद्याधर लडे इसी रूप पर परस्पर लड़े करके,
अतिरिक्त मेरे संसार में और नहीं कोई भी बढ़ करके।

फिर करी प्रार्थना विवाह करन की राम लखन को चाह करके,
स्वीकार किया नहीं दोनों ने फटकार दई धमका करके ॥

दोहा—

पूरी ना उसकी हुई मन की चाही आश।
गुस्से में भरकर गई खर दूषण के पास ॥

चौक—

खर दूषण त्रिशरा आदिक दल बल ले वन में आये थे,
इस तरफ अनुज भी धनुष बाण ले कर में सन्मुख धाये थे।
फिर कहा राम ने कष्ट पड़े तो भाई मुझे बुला लेना,
संकेत शब्दी सिंहनाद मेरे कानों तक जरा पहुंचा देना ॥

दोहा—

शूर्पनखा ने बात सब कही रावण को आन।
जाल बिछाया इन्होंने लिया सभी अब जान ॥

चौक—

संग्राम ओर छिप करके कहीं रावण ने था सिंह नाद किया,
उसी समय चल दिये लखन की करन सहाई राम पिया।
इस दुष्ट दुराचारी ने फिर खेला शिकार मुग्ध अबला का,
कुदरत ही सर्वस्व हर लेगी ऐसे दुर्भागी कंगला का ॥

दोहा—

धर्म बिना यहां कौन है मेरा लंका मांय।
बात न कोई पूंछता जो देता दुख आय ॥

चौक—

जिस जगह दुखी को दुखी मिलता वह देश दुखी हो जाता है,
करुणा दिल में न रहे तो प्राणी जन्म जन्म दुख पाता है।

ईर्षारूपी जहां पवन चले और द्वेषानल जहां जगती है,
वहां की प्रजाएं सुख तो क्या खाने से भी कर मलती हैं ॥
समवेदना सत्य एकता और जहां प्रेम का नाम निशान नहीं
सद्ज्ञान धर्म प्रचार लिये जहां करते हों कुछ दान नहीं।
जो काम समाज का करते हों उनकी इज्जत चाहते ना हों,
वह नष्ट भ्रष्ट हो जाते हो औरों को अपनाते ना हों ॥
जो स्वार्थ में होकर अन्धे अन्याय रात दिन करते हैं,
वह स्याही अपने मुख पर मलकर अन्त नरक दुख भरते हैं।
कहने करने में है फरेब लेना देना सब खोटा है,
वहां पर कहिये सुख प्रेम कहां जहां पेट भरन में टोटा है ॥
गुरु जन में भक्ति ना हो वद श्रेष्टों की पहिचान नहीं,
चोरी यारी जहां करते हों पर नारी मात समान नहीं।
विश्वासन जिनको आपस में सन्तोष का न मर्याद नहीं,
भूपाल स्वयं अन्याय करे होता सब कुछ वर्बाद नहीं ॥

दोहा—

प्रत्यक्ष आज यह लंक में घटती सारी बात।
आने वाली है यहां महा दुखों की रात ॥

चौक—

मैं नारी नहीं नागिनी हूं रावण की मौत निशानी हूं,
या यों कहिये दुष्कर्तव्यों के पीलन वाली घानी हूं।
जैसे भी होगा वैसे मैं अपना धर्म बचाऊंगी,
नहीं अन्तिम यह तो होगा ही इस तन की वली चढाऊंगी ॥
यहां तुमने तो कुछ पूछा भी और कौन पूछने वाला है,
अब निश्चय मुझको हुआ लंक से पुण्य रूसने वाला है।

पूछा तो हमने बतलाया और श्रेष्ठ पुरुष जाना तुमको,
इक धर्म सहायक है सबका यह भी विश्वास हुआ मुझको ॥

दोहा—

वीर विभीषणने सुना सीता का व्याख्यान।
मीठे स्वर से इस तरह बोला खोल जबान ॥

गाना

कर्म रेखा है अमिट कैसे मिटाये कोई।
भाग्य चक्रसे कहां भागके जावे कोई ॥ १ ॥
सर्वस्वलगा जिस के लिये गौरवसे लाये घरमें।
आज उस घर में उसे कैसे टिकाये कोई ॥ २ ॥
शैया फूलों की थी कल सुख के साधन थे अतुल।
आज वन खंड तड़फ वक्त विताये कोई ॥ ३ ॥
जो जगदम्बा कहलाती थी कल आज वह दुखमें फंसी।
धैर्य बंधाने के लिये पास न आवे कोई ॥ ४ ॥
पुण्य अपकर्ष में "शुक्ल" आंख चुरावे सबही।
कर्म का मारा व्यथा किसको सुनाये कोई ॥ ५ ॥

दोहा

बुरा किया दशकंध ने लाया तुम्हे चुराय।
अच्छा मैं जाकर अभी देऊंगा समझाय ॥
धन्य तेरे मां बाप को धन्य तुम्हें सौबार।
होना भी यह चाहिये धर्म तत्व जगसार ॥

चौबो.

जो यथातथ्य पतिव्रता धर्म तूने क्षत्राणी पाला है।
शील रत्न जैसा दुनियां में और ना कोई उजाला है ॥

पति के हित राज महल छोड़ा बन में आ कष्ट सहे भारी।
तीन खंड की ऋद्धिपर भी तूने हैं ठोकर मारी॥
प्रबल सिंह के पंजे में फंस करके भी निर्भय रहना।
बिन पता पति से विरह हुआ और आपत्ति सिरपर सहना॥
यहां दुःख समूह में पड़ कर भी तुमने समता रस पीया है।
यह पूर्ण होंगी सब आशाएं जो भी दृढ़ निश्चय किया है॥
हे जनक सुता अब धीर धरो क्यों इतनी व्याकुल होती हो।
हृदय से सहायक बनूं तेरा अब क्यों अपना तन खोती हो॥
सब अर्पण करें धर्म पै जिस के दिल में यही समाई है।
फिर उस को कौन असाध्य चीज इस दुनियां में बतलाई है॥
महा कष्ट सदा शुभ ज्ञान दर्श चारित्री परही पड़ते हैं।
वह प्राण तलक अर्पण करते पर दुनियां से नहीं डरते हैं।
अब थोड़ा कष्ट रहा बाकी अपने मनका सन्ताप हरो।
सर्वज्ञ देव का लो शरणा और पांच पदों का जाप करो॥
पहरे पर जो हैं तेरे यहां उन सबको समझा जाता हूं।
कोई ना कष्ट तुम्हें देगा सुमति पर उन्हें लगाता हूं॥

छन्द

विश्वास दे वहां से चला दासी खड़ी सिर नाय के।
प्रेम से सबको विभीषण ने कहा समझाय के॥

दोहा

त्रिजटा आदि सभी छोटी बड़ी विशेष।
आगे करना काम वह जैसा दूं उपदेश॥

चौक.

तुम भी सोचो अपने मन में प्रथम तो यह पर नारी है।
फिर सती धर्म के लिये महा ऋद्धि पर ठोकर मारी है॥

यदि आज नहीं तो काल यहां पर झगड़ा होनेवाला है ।
जो सीता को दुख देवेगा उसका होना मुंह काला है ॥
कर्तव्य सभी का मुख्य यही दुखिया को सुख देना चाहिये ।
फिर देखो कैसी सती हमें यह भी तो गुण लेना चाहिये ॥
बस यही हमारा कहना है तुम लगो सिया की सेवा में ।
अज्ञान दूर कर दोगी तो सबका हाथ रहेगा मेवा में ॥
दशकन्धर की आज्ञा को भी निश्चय आज्ञा पालन करना चाहिये
पर योग्य अयोग्य कार्य का भी तो ध्यान जरा धरना चाहिये ॥
नीति की रक्षा करने में प्राणोंतक दे देना चाहिये ।
अन्याय अधर्म कार्य में कोई भाग नहीं लेना चाहिये ॥
महाराजों की यही औषधि है बस हां जी हां जी कर देना ।
और समय देख इनलोगों का कुछ बातों से घर भर देना ॥
अब जाओ निज निज काम लगो बस यही हमारा कहना है ।
पर सब संग शोभन धर्म चले बाकी सब यहीं पर रहना है ॥

दोहा

बात विभीषण की सभी हृदय गई समाय ।
अमल वही होने लगा कुमति दई भगाय ॥
क्षमा याचने को गई सबही सीता पास ।
जनक सुता निज कर्म को बोली ऐसे भाप ॥

सीता जी का गाना

जा जा निर्दयी कर्म अबलाओं पै बल आजमाया कर ।
जन्म से दुखिया सदा उन पै बाण चलाया न कर ॥
दुख शोक के बादल बरस रहे हम आजादी को तरस रहे ।
किसी अन्य का दोष नहीं है कर्म पापी तू दुखियों दुखाया न कर

बद नसीबों के हम चक्र में फंसी दुर्गम निर्जन वनमें आकर धंसी
निर्दोष दुखियों को निठुर तेगकी धार दिखाया न कर ॥
अब ये और बुरे दिन आये हैं श्रीराम ने आये भुलाये हैं ।
आहार है रंजो गम ही सपाजी जलों को अधिक जलाया न कर
सुख वृक्ष का देखा मूल नहीं लखा स्वप्न मात्र फल फूल नहीं ।
बस क्षमा ही कर अय कर्म अरो विकराल स्वरूप दिखाया न कर

दोहा

वीर विभीषण चल दिया पहुंचा लंका जाय ।
रावण को कहने लगा ऐसे मस्तक नाय ॥
कीर्ति धवल कुल मणि मुकुट अय भाई रणधीर ।
नम्र निवेदन आपसे करने आया वीर ॥

चौबी

आज तलक यह वंश हमारा भाई शुद्ध कहाता है ।
कुछ दाग लगाया भगिनी ने तू वहा आज लगाता है ॥
हो तीन खंड के नाथ आप कोई भी तेरे समान नहीं,
यह गौरव नष्ट भ्रष्ट होरहा क्या इसपर आया ध्यान नहीं ।
क्यों क्षत्रीपन को धूर मिलाया सीता नार चुरा करके,
शुभ धर्म वृक्ष की जड़ काटी यह खोटा कर्म कमा करके ।
सुख सम्पत्ति रूपी वृक्ष लिये पैनी परनार कुल्हाड़ी है,
यह नारी नहीं नागिनी या समझो विष बुझी कटारी है ।
जो भी कुछ तेरी इच्छा है वह कभी नहीं फल लावेगी,
गौरव राज्य कोष शक्ति क्या सब कुछ धूल बनावेगी ।
वह महा पवित्र महिला है नहीं हवा तलक आने देगी,
न्यौछावर कर देगी तन को नहीं गौरव को जाने देगी ।

दोहा—

भानु पश्चिम को चढ़े भूले अपनी राह।
सीता तजे ना शील को देवे प्राण गवांय ॥

चौक--

काछो माछो की नहीं पुत्री वह जनक सुता छत्राणी है,
कुलवधू श्रेष्ठ दशरथ नृप की श्री रामचन्द्र की नारी है।
पाताल लंक को छीन लिया खर दूषण और दल को मारा,
हैं महाबली श्रीराम लखन संग वीर विराध योद्धा मारा।
वह किष्किन्धा में आ पहुंचे यहां आने में कुछ देर नहीं.
प्रभात हुई तो भानु चढ़ने में विलम्ब कुछ फेर नहीं।
जिनकी नारी यहां बैठी है उनको बतलाइये चैन कहां,
सूर्यवंशी कहलाते हैं ऐसे अपमान का सहन कहां।

दोहा—

अच्छा है कुव्यसन के सिर पर डारो धूर।
यही वेनती आपके चरण कमल में भूर ॥

चौक.

इस एक नार के पीछे क्यों शत्रु की शक्ति बढा रहे।
सुग्रीव भी उनके साथ मिला क्यों अपनी ताकत घटा रहे ॥
अन्तिम यह नम्र निवेदन है कि सीता को वापिस करदो।
यदि आप नहीं जाते तो आज्ञा मुझ सेवक पर कर दो ॥

दोहा

सहसा तेजी आगई सुन कर यह व्यख्यान।
दशकन्धर कहने लगा मस्तक त्यौरी तान ॥

बस २ अब मौन हो करो जरा आराम ।
जनक सुता वापिस करो फेर न लेना नाम ॥

चौक.

जितना समय लिया मेरा तूने सब निष्फल खोया है।
किन बातों में यह बात कही जो कहा सभी कुछ रोया है ॥
क्या अच्छा होता कहीं शूद्र वैश्य के यहां जन्म लेना ।
कोई देता कष्ट तुझे तो मेरी आनके यहां शरण गहना ॥

दोहा

क्षत्राणी का दूध भी खोया सब नादान ।
श्यालों से डरने लगा होकर सिंह महान ॥

चौक.

प्रथम तो यह बातग्रही वस्तु नहीं छोड़ा करते हैं
तन धन चाहे न्यौछावर हो नहीं बात को मोड़ा करते हैं ॥
और छलमाया प्रपंच सभी होती नीति महाराजों की।
फिर बात तीसरी जो अच्छी वस्तु होती सिरताजों की ॥

दोहा

रत्न मिला चिंतामणि पुष्प योग से आन ।
इसे छोड़ कर क्या कहो बनजाऊं अनजान ॥

चौक

आज नहीं तो काल सिया अपने मन को समझावेगी।
क्या शक्ति होती अबला की कबतक निज पांव जमावेगी ॥
जो वहम तुम्हारा झगड़े का सो भी निर्मूल निकम्मा है।
सब तीन खंड की ला रक्खी इस रावण ने परिकम्मा है ॥

दोहा

आज नहीं संसार में दिखलावे दो हाथ।
दशकन्धर के नाम से थरहर काम्पे गात॥

चौक

मैं बड़े २ दल मोड़े क्या यह रंक यहां कर सकते हैं।
हां इतनी उन्हें स्वतंत्रता यहां आकर के मर सकते हैं॥
ना सैना कोई विमान न पास ना दारू गोला शस्त्र है।
अस्त्रों का नो वहां नाम कहां मामूली धनवा वस्त्र हैं॥
फिर क्या शक्ति सुग्रीव की है जो उनके संग मिल जायेगा।
यदि मिल भी गया तो भी क्या है वह भी निज प्राण गमांवेगा॥
जो रण की चोटें सहें सूरमें वही जागीरी पावेंगे।
यदि तुम्ह ऐसे कायर जीये तो भी क्या धूल उड़ायेंगे॥
अब याद रहे ऐसी बातें मेरे संग फेर नहीं करना।
जो होगा देखा जावेगा तू हृदय फिकर नहीं धरना॥
यह जानकी जान की साथिन है इसमें ना जरा फरक होगा।
जायेगी जनक सुता तब जब रावण का नाम मरा होगा॥

बिभी. दोहा

मैंने कर्तव्य पालन किया आगे तेरा ध्यान।
कहते हैं अनुमान सब आ पहुंचा अवसान॥

विभीषण का गाना

समझले अब भी नहीं सिर धून के पछतायगा तू।
श्रेष्ठ चारित्र को सता कर नरक में जायेगा तू॥ १॥

स्वरूप आयु के लिये वदनाम क्यों होने लगा।
मनुष्य तन खोकर कुगति में ठोकरें खायेगा तू ॥ २ ॥
धूल में गौरव मिलाता आज खोटे कर्म से।
संसार सागर का सदा महमान कहलायेगा तू ॥ ३ ॥
चक्री तीर्थंकर व गणधर काल ने खाये सभी।
राज लक्ष्मी छोड़ लंका यमपुरी पायेगा तू ॥ ४ ॥
जैसी करनी वैसी भरनी दृष्टान्त यह प्रसिद्ध है।
जैसा बोया बीज तूनें वैसा फल पायेगा तू ॥ ५ ॥
हैं तेरे यदि कर्म खोटे तो "शुक्ल" फिर क्या करे।
इस कर्म खोटे का फल ये शीश कटवायेगा तू ॥ ६ ॥

राव. दोहा

क्यों मेरा शत्रु बना भाई होकर ढीठ।
मैं तेरी सुनता नहीं दिखा यहां से पीठ ॥

चौक.

दिखा यहां पीठ जल्द क्यों मुझको सता रहा है।
बना नपुंसक आप पाठ हमको वही पढ़ा रहा है ॥
मिला मिला करके समास विद्वत्ता जिता रहा है।
एक नहीं मानूं तेरी क्यों बातें बना रहा है ॥

दौड़

क्षमा मुझको बतलाइये आप बस चले जाइये।
नहीं सुनना चाहता हूं यदि नहीं तुम जाते तो मैं आप चला जाता हूं

दोहा

दशकन्धर फौरन उठा हुआ चलने को तैयार।
रोक विभीषण ने लिया लम्बी भुजा पसार ॥

वि० दोहा

रंग ढंग सब देख कर हुआ मुझे विश्वास ।
दोनों ने अब लंका पर किया आन कर वास ॥

चौ०

जो मर्जी सो करें आप शिक्षाप्रद वचन हमारा है ।
मर्जी रक्खें भेजें सीता को जैसा ख्याल तुम्हारा है ॥
मनमें सोच विचार करो अन्तिम यह नम्रनिवेदन है ।
अब चलते हैं इसलिये कहा कि आपस में संवेदन है ॥

दोहा

सत्य पुरुष वहां से चला पहुंचा निज स्थान ।
रावण ने त्रिजटा को कहा इस तरह आन ॥
सीता को अब त्रिजटा करवाओ नित सैर ।
प्रकृति के सन्मुख लगे धर्म कर्म सब जहर ॥

चौबो—

सब केलिगृह क्या अन्तरोदक वह रत्नों के घर दिखलाओ,
जिस तरह सिया का दिल पलटे वह दृश्य महाशर दिखलाओ ।
आदर्श जहां आकर्षण हो ऐसे धामों पर ले जाओ,
मरना है सबको एक रोज बुद्धि का परिचय देजाओ ॥

दोहा—

स्वीकार वचन करके चली पहुँची सीता पास ।
जनकसुता के सामने किया प्रेम से भाष ॥
जनक सुता तेरा हुआ अद्भुत कृश शरीर ।
बढे दिल दुख में मेरे देख तुम्हारी पीर ॥

चौबो--

इस लिये चलो कुछ सैर कराऊं स्वास्थ्य ठीक हो जावेगा,
जल वायु के परिवर्त्तन से कुछ खून भी दौरा पायेगा।
ऐसे नित प्रति करने कारण दुवलापन नहीं रहने का,
मनकी प्रसन्नता होने से नेत्रों से जल नहीं बहने का ॥

दोहा--

प्रातः और सायं समय रहो नित्य प्रति तैयार।
देखो क्या २ दृश्य है लंका द्वीप मंझार ॥

चौक--

कहीं केलिगृह कहीं अन्तरोद्क भवनों में हीरे जड़े हुए,
नन्दन वन सम जैसा अद्भुत फल फूलों से भरे हुए।
कहीं जल झरनों से गिरता है और हंसों का कुछ पार नहीं,
कोयल पंचम स्वर बोल रही मृगों की फिरे कतार कहीं।
चहुं ओर से है शोभाशाली शुभ दृश्य बाग का बना हुआ,
सब ऋतुओं के फल फूल खिले हैं जाल सामने तना हुआ।
खेल खेलकर कहीं बालक जब दिल बहलाते हैं,
अमित शक्ति सौंदर्य पाकर सुखदायी स्वास्थ्य बढ़ाते हैं।
कोई घूम रहा एकान्त बैठ कोई विद्या अध्ययन में लगा हुआ,
और अपना श्वास पकाने को कोई फिरे बाग में भगा हुआ।
देख देख जनता इनको मन फूली नहीं समाती है,
पर वैदेही श्रीराम बिना कुछ भी नहीं सुनना चाहती है।
क्या सारा वृत्तान्त कहें दासी समझा कर हार गई,
और अपनी सब चालाकी के औजार वहां पर डार गई।

दोहा—

हंस सरोवर वा तजे, तजे न मणि भुजंग।
पति तजे ना शील को तज देवे निज अंग॥
इस भाव लख सती के त्रिजटा हुई हैरान।
अपने दुष्कर्तव्य पर आंसू लगी बहान॥

चौक—

चरणों में मस्तक डाल दिया रो रोकर क्षमा मांगती है,
शुभ कर्मोदय से प्राणी की यों शोभन दशा जागती है।
स्पर्श लोह को हेम करे पर निज दर्जा नहीं देता है,
पर महा पुरुष महा पतितों को भी अपने सम कर लेता है।
बोली दुनियां में सिर्फ एक परतन्त्रता बीमारी है,
इस रहस्य को जिसने समझ लिया निर्वाण का वह अधिकारी है।
इस लंका में हे जनकसुता तूं मुझको तारन आई है,
सर्वस्व समर्पण सेवा में करदूं मन यही समाई है।
अब तो रावण बातों से मुझको घर भरना होवेगा,
अन्याय में जो कोई लीन होवे अन्तिम सिर धुन के रोयेगा।
व्यवहार में दासी रावण की निश्चय में आपकी बन ही चुकी,
अय जनकसुता क्या बतलाऊं बस आपके प्रेममें सन ही चुकी।

दोहा—

नमस्कार कर त्रिजटा पहुंची रावण पास।
पटुताई से भाव फिर लगी करन प्रकाश॥
तडित केशकुल मणि मुकुट दुखी जन के सिरताज।
हुक्म आपका सब तरह बजा दिया महाराज॥

चौबो --

मगर अभी तो इन फूलों में महक का नामो निशान नहीं,
यदि ज्यादह तंग किया सीता को आपकी इनमें शान नहीं।
नाम सैर का सुनते ही प्राणों को तजना चाहती है,
जिस दिन से लाये उस दिन से ना पीती ना कुछ खाती है।
मेरी तो अर्ज यही है चरणों में अभी ना कुछ कहना चाहिये,
जो भी कुछ बोले जनकसुता शांति से सब सहना चाहिये।
रहस्य समझ कर रावण ने कुछ लिये मन मोड लिया,
यहां मूलमंत्र में जगदम्बा ने अपने मन को जोड दिया।
रावण निज आवास गया था शोक धुनी में जला हुआ,
और इधर विभीषण भाई भी था अपने विचार लगा हुआ।

दोहा--

अय होनी तूने किया कैसा समय तलाश।
चढे हुए इस पुण्य पर सहसा किया निवास॥

छन्द

क्या था क्या होने लगा क्या दैव उठाया धनुष है,
इससे क्या संसार में कहो कौनसा वह मनुष्य है।
घात परदारा के कारण होवे ज्ञानी ने कहा,
रावण के मरने का वही तैयार वक्शा होरहा।
मैंने तो अपनी ओर से थे बीज छेदन कर दिये,
होनी हमारी ने वही विष वृक्ष सन्मुख धर दिये।
जिनका सहायक पुण्य और आयु कर्म का जोर है,
कांपे उन्हों से सुरपति मारे मनुष्य किस तौर है।
इस तरफ यह अंधा हुआ और बात कुछ सुनता नहीं,
तैयार हैं उस तरफ भी शत्रु न आ जावें कहीं।

पानी से पहले पाल बांधो ये बड़ों का कहन है,
उद्यम ही सबका सार है बाकी सभी कुछ वहम है।
शुक्ल अब कर्तव्य मम मंत्री को बुलवाय लूं,
सारे सभासद मेल कर प्रबंध सब करवाय लूं।

दोहा--

वीर विभीषण ने लिया मंत्री बड़ा बुलाय।
सत्यवादी अति प्रेम से यों बोला समझाय॥
अब मंत्री क्या अभी तलक रही घुमेरी छाय।
होनी ने चहुं ओर से लंका घेरी आय॥

चौक---

पुण्यरवि लंका का मंत्री जल्दी छिपने वाला है,
सुख रूप चन्द्रमा को देखो अब ग्रसने वाला है।
आलस निद्रा दूर करो और सोचो अपनी हस्ती को,
अब गौरव दबने वाला है रोको इस हेम बरसती को।

दोहा---

पतिव्रता सीता सती रामचन्द्र की नार।
ज्ञात सभी कुछ है तुम्हें फिर क्या कहूं उचार॥

चौक---

क्या सोचा तुमने बतलाओ क्यों कि मंत्रीश कहाते हैं,
सब भार तुम्हारे सिर पर किस बात है में गौरव चाहते हैं।
क्या कर्तव्य आपका है और किसकी जुम्मेवारी है,
फिर क्या फल निकलेगा इसका इस समय कर्तव्य जो जारी है

चौक

इस समय हमारी नरमाई गौरव का नाश करायेगी,
जो रहे भरोसे औरों के तो सीता हमें न पायेगी।
बस आज्ञा आपकी चाहता था देखो क्या करके दिखलाता हूं,
तलवार के आगे धर सबको सीता का पता लगाता हूं।

दोहा

उसी समय वहां से चला लखन निवाकर माथ।
रक्त नयन डोरे खिंचे धनुष बाण लिया हाथ॥

चौक

सूर्यहास तलवार बगल में लक्ष्मण के शोभाती है,
प्रबलसिंह के मस्तक पर लालो की दमक दिखाती है।
शूरवीर सहसा पहुंचा वहां मुख्य सभा थी लगी हुई,
और नेत्रों की ज्योति भी थी मानिन्द मशाल के जगी हुई।

दोहा

कालरूप लक्ष्मण पड़ा नजर सामने जाय।
वानरपति कंपित हुआ गिरा चरण में जाय॥

चौक

सबके सब होगये खड़े और दिल अन्दर से धड़क रहा,
गुस्से में चहरा लाल मनुज का दक्षिण भुज बल फड़क रहा।
मौन चित्रवत् खड़े सभी मुंह से नहीं बोल निकलता है,
समय देख नरमाई से कपिपति यों गिरा उचरता है।

दोहा

सिंहासन पै विराजिये हे प्रभु दीन दयाल।
सेवक हाजिर चरण में आप क्यों माये चाल ॥

चौक

हे नाथ आपके गुण गाऊँ वह जिव्हा नहीं मेरे मुख में है,
है धन्य पिता और माता को जिसने तुम धारे हो कुख में।
आज्ञा जो सेवक लायक हो कृपया पहले बतलाइये,
स्वामिन कुछ अन्न जल पान करो पुण्यरूपचरण अन्दर लाइये।

दोहा

कहने में कुछ और है करने में कुछ और।
आकृति में और है मन में है कुछ और ॥

चौक

मन में है कुछ और सभी यह धूर्तों के लक्षण हैं,
किन्तु निश्चय समझ अनुज के प्राणों का भक्षण है।
काम पडे पर करे मित्रता निकले पर दुश्मन है,
कष्ट आपको कौन यहां बैठे आनन्द अमन है।

दौड़

मित्र वानर हैं किसके काम काढ़ा और खिसके सुखों में झूल रहा।
सहसगति के पास पहुंचा हूं मगमें क्या भूल रहा है ॥

लक्ष्मणजी का गाना बहरतबील

तेरी बातों ने धोखे में डाला हमें,
अब भी वो सफाई जिताता रहा।

है सूर्यवंशी श्री राम लखन सर्वस्व तलक लाने वाले,
है दलबल सबल विमान सहित समझो यहांपर आने वाले।

दोहा

बात बड़े मंत्रीश की हृदय में गई समाय।
सभासदों को बुलायकर करने लगे उपाय॥

चौक

अन्त में सबने नियत किया कि इन्तजाम सारा करदो,
और भरती खोलो सैना की उल्टी सतघ्नी सीधी करदो।
सन्धि के सब मार्ग रोको कुछ भेजो फौज समुद्र पर,
सारे उद्यम शील बनो भय मार्ग और सरहद्दी पर।
अब लंकपुरी पर आशाली का कोट शीघ्र करना चाहिये,
और वज्रमुखा पहिरे पर हो दारू गोला धरना चाहिये।
गुप्तचरों को फैलादो कोई अन्य न अन्दर आ जाये,
है भेदी कपिपति छलिया कोई भेद न यहां से लेजावे।
फिर सीता को वापिस करने की सब करो विनंती राजा से,
कितनी शक्ति शत्रु की है यह भी देखो अन्दाजे से।
जब तक ना रण प्रारंभ हुआ तब तक झगड़ा मिट सकता है,
मिथिलेश कुमारी लिये बिना श्रीराम नहीं हट सकता है।

दोहा

नियत किये प्रस्ताव जो सबको दिये सुनाय।
अब निज २ कर्तव्य पर लगे सभी जन जाय॥

चौक

अब लगा सभी दारू गोला सामान इकठ्ठा होने को,
और मुख्य २ स्थानों पर सब योग्य सामग्री ढोने को।

रथा हाथी घोड़े विकट गाड़ियां संग्रामी रथों का पार नहीं,
हैं संग्रामी विमान गगन में चहुं ओर विस्तार कहीं।

दोहा

तैयारी होने लगी लंका में इस तौर।
अब सब ध्यान करो जरा किष्किन्धा की ओर॥
पल २ दिन २ राम को बीते वर्ष समान।
सुग्रीव लगा निज काम में कर्तव्य भूल महान्॥
राम अति व्याकुल हुए आर्तवन्त उदास।
लक्ष्मण को कहने लगे बैठाकर निज पास॥

राम. दो.

किसकी आशा पर यहां बैठा लक्ष्मण वीर।
सीता की सुध बिन लिये अब दिलको क्यों धीर॥

चौक

किसकी आशा पर भाई हमने डेरा डाला है,
सुग्रीव लगा अपने सुख में कर्तव्य नहीं कुछ पाला है।
सुखिया सोवे दुखिया जागे प्रत्यक्ष हमपर आज बीती,
काम काढ चुप हो बैठा कपिपति ने खेली क्या नीति।

दोहा

और यदि देरी हुई सिया तजेगी प्राण।
निष्फल सब प्रयत्न हों करो जरा कुछ ध्यान॥
सुने वचन श्रीराम के हृदय गये समाय।
जल्द उठे कर धनुष ले बोले मस्तक नाय॥
गर्माई की हाकिमां नर्मी का व्यापार।
इस से जो उल्टा चले पड़े किस तरह पार॥

दोहा

पाताल लंक श्रीराम ने अपनी लई बनाय।
वीर विराध सुग्रीव भी बन गये सेवक जाय॥

चौक

प्रत्यक्ष आज सुग्रीव नरेश्वर पक्ष राम का करता है,
और पवन पुत्र श्री हनुमान उनके चरणों में पड़ता है।
और बाकी सब जितने राजे रावण पर दांत पीसते हैं,
मति भंग हुई दशकन्धर की वो अपनी तान खींचते हैं।

दोहा

कमी नहीं मैंने करी समझाने में आज।
रावण को सीता बिना और नहीं कुछ काज॥

चौको.

इसलिये बुलाया मैंने यहां सम्मति आपकी लेने को।
और दशकन्धर का कहूं हाल क्या मन नहीं चाहता कहने को॥
तुम बुद्धिमान और स्याने हो नीतिज्ञ चतुर मर्दाने हो।
अब बतलावो क्या करना है क्यों कि तुम अनुभवी दाने हो॥

मंत्री दोहा

जो कुछ भाषा आपने सभी यथार्थ ठीक।
सीता रावण के लिये है कांजी की छींट॥

चौक.

वह एक दूध का नाश करे पर यह सर्वस्व हरायेगी।
वो जरने में कुछ बने सहायक सीता दिक हो जायेगी॥

यदि महाराजा से करें निवेदन इतना हम में साहस कहां।
पर हृदय से मैं चाहता हूं यह व्याधि भेजी जाय वहां॥

दोहा

जिस दिन से लाये तिया खुशी ना देखे भूप।
क्रोध हर समय जिस तरह बना इस तरह रूप॥

चौक.

अब लिये वीर दशकन्धर के यह नारी नहीं नागिनी है।
या यों कहिये महाराजा को चिमटी यह एक शाकिनी है॥
और व्यन्तरनी का साया भी मंत्रादिक से जा सकता है।
जो मोह नशे में चूर हुआ शिक्षा कैसे पा सकता है॥
हां युद्ध स्थल में शूर वीर निश्चय महाराज कहाते हैं।
पर पड़ें विलासिता में यह प्राणी शीघ्र नष्ट हो जाते हैं॥
सुग्रीव पवन क्या हनुमान इनके चरणों में पड़ते थे।
जहां पर भी जंग छुड़ा पहिले अपना सिर आगे करते थे॥
खर दूषण का सहस्त्रांशु से हनुमान ने बन्ध कटाया था।
और नाग फांस से अंजनी सुत ने रावण को छुड़वाया था॥
प्रत्यक्ष सभी यह दीख रहा कि दोनों शक्ति टूटेगी।
और विरुद्ध हमारे हो करके लंकाके ऊपर दौड़ेगी॥

दोहा

सबसे श्रेष्ट उपाय यह सीता को दें भेज।
नहीं तो कुछ संशय नहीं बने रक्त की सेज॥

चौक

सभासदों को बुला सभी से नियत शीघ्र कुछ कर लेवें,
या करवादें सीता वापिस या चुस्त सभी के कर देवें।

तूने वृथा हमारा समय खो दिया,
झूंठे नयनों से आंसू बहा रहा है ॥ १ ॥
मारा वृथा ही सहस गति राम ने,
वह बिचारा दुःखी अरड़ाता रहा।
तेरी युक्ति में कोई कसर ना रही,
फुलझड़ी जैसी बातें झड़ाता रहा ॥ २ ॥
अब नहीं तुझको कोई भी चाह ना रही,
जो खटकता था कांटा वो जाता रहा।
अब तू तोते चश्म बनकर बैठा यहां,
हमको बातों का शरबत चटाता रहा ॥ ३ ॥
क्यों तू विश्वास दे करके लाया यहां,
बगुला भक्ति से हमको फंसाता रहा।
क्या शर्म तुझको अबतक भी आई नहीं,
खाना पीना ही हमको सुनाता रहा ॥ ४ ॥
क्या तूने यह समझा कि मेरे बिना,
बस पता इनको सीता का पाता नहीं।
तुम यहां बैठ अपना नशा पीजिये,
कृतघ्नों को लक्ष्मण भी चाहता नहीं ॥ ५ ॥

दोहा

सुने वचन जब लखन के घबराया सुग्रीव।
गिरा चरण कर जोड़कर बोला बनकर दीन ॥
नम्र निवेदन कृपा कर सुनलें आप जरूर।
जो मर्जी फिर कीजिये निकले यदि कसूर ॥

चौक

निकले यदि कसूर मेरा तो शीश अलग कर देना,
सेवा में हाजिर हुआ नहीं यह भी कारण सुन लेना।

बिगड़ा जो था काम सभी सो भी कर में था लेना।
आप से अधिक ख्याल सीता का मुझे समझ सत्य लेना॥

दौड़

गुप्तचर भेज दिये हैं और तैयार किये हैं,
वचन पूरा कर दूंगा वैदेही के शोधन में,
चाहे अपना सिर दे दूंगा।

सुग्रीवजी का गाना बहरतबील

दृष्टि चुराऊं प्रभु आपसे,
ऐसा स्वपने में भी ख्याल लाया नहीं।
भूल जाऊं बड़े भारी उपकार को,
मैं कमीनों व नीचों का जाया नहीं॥१॥
ऐसे तानों की गोली न मारो मुझे,
मैंने कर्त्तव्य अपना भुलाया नहीं।
देखलो कर रहा क्या यही सामने,
अब तक खाने तलक को भी खाया नहीं॥२॥
मेरी इच्छा है हनुमत को बुलवाय लूं,
यह खड़ा दूत आज्ञा सुनाई नहीं।
सीता माता का जो न लगाऊं पता,
तो मैं जन्म सुर राजा के पाया नहीं॥३॥
बन चुका हूं मैं चाकर सियाराम का,
विषय ऐशों में दिल को फंसाया नहीं।
लो चलो मैं भी चलता हूं रघुवीर पै,
क्योंकि दर्शन भी कल से है पाया नहीं॥४॥

दोहा

फिर दोनों वहां से चले पहुंचे रघुवर पास ।
प्रणाम बाद सुग्रीवजी ऐसे बोले भाष ॥
मैं चरणों का दास हूं हे स्वामी सुखधाम ।
राज पाट सब आपका करूं बताया काम ॥

चौक

ऋण जो आपका मैं आयु पर्यन्त नहीं दे सकता हूं ।
हां सिया सुधि के बाद आप जो दोगे सो ले सकता हूं ।
जबतक सीता ना पायेगी तबतक मुझको आराम नहीं ।
हूं इसी बात में लगा हुआ कोई और दूसरा काम नहीं ॥

दोहा

सुनी बात सुग्रीव की खुशी हुए सुखकन्द,
मिष्टवचन से यूं लगे कहने दशरथ नन्द ।
तू मेरी दक्षिण भुजा इन्दुमालिनी फरजन्द,
बायीं भुजा मेरी समझ वीर सुमित्रा नन्द ॥

चौक

तेरा ही यह काम मित्र सब तूने ही तो करना है,
यदि कहीं पर पड़ा काम वहां पर तूने ही लड़ना है ।
अन्तिम ताज सुयश का भी तो तेरे ही सिर धरना है,
कौन फिकर उनको जिनको श्री जिनवाणी का शरना है ।

दौड़

ध्यान जब स्वयं है तुमको फिकर फिर कौन है मुझको
काम जल्दी करना है सीता हरने वाले के गलेपर शस्त्र धरना है ॥

सु० दोहा

कृपा आपकी चाहिये मुझपर कृपा निधान।
सीता की सुध के लिए करूं अभी सामान ॥
श्री हनुमान को बुलवा लूं क्योंकि वो बुद्धिवाला है।
वह शूरवीर अनुभवी योग्य उसका कुछ ढंग निराला है॥
एक २ दो ग्यारह हम और आपकी सिर पर छाया है।
अरिहन्त देव का शरणा लेकर बीड़ा आज उठाया है॥

दोहा

आज्ञा पा श्रीराम की किया एक दरबार।
जिसके जैसा योग्य था दिया सभी अधिकार॥
एक दूत आदित्यपुर भेजा हनुमत पास।
अमल वहीं होने लगा किया जिस तरह पास॥

चौक

गुप्तचरों को भेज दिया सब ग्राम २ क्या नगरों में।
और दूर २ सज गये रिसाले जंगल वन खंडगहनों में॥
पैदल पल्टन फिरे कहीं फिरते विमान आकाशों पर।
सब वैदेही को देख रहे "दूरदर्शक यन्त्र" रख आंखों पर॥

दोहा

सुग्रीव भूप खुद भी चला बैठ तांडिल विमान।
कम्बू द्वीप नग पर रहा शोध सभी स्थान॥
गिरीकन्दर में था पड़ा रत्न जटी लाचार।
फिरे विमान आकाश में देखा नजर पसार॥

चौक.

ना मार्ग कोई निकलने का चहुं ओर से पर्वत घिरा हुआ।
ऊपर को भी नहीं चढ़ सकता ऐसे स्थल पर था गिरा हुआ॥

मन में ऐसा खटका था विमान न हो दशकन्धर का ।
इसलिये विचार था छिपने का आश्रय ग्रहण कर पत्थर का।

दोहा—

देखा जब सुग्रीव ने नीचे नजर पसार।
रत्नजटी आया नज़र गिरी गुफा मंझार ॥

चौक—

सुग्रीव नरेश ने उसी समय विमान तले को झोंक दिया ।
इस हालत ने फिर रत्नजटी को छिपने से भी रोक दिया ॥
हालत थी कमजोरी की तन पर थे बेढब घाव पड़े ।
महाकष्ट देख उस व्यक्ति को रहे पूछ हाल यों पास खड़े ॥

दोहा—

अय भाई तू कौन है क्या है तेरा नाम।
क्या हालत तेरी यहां गिरा किस तरह आन ॥

चौबो—

गिरा किस तरह आन छवि तन की मुरझाय रही है ।
और लगे घाव किस तरह कमर तेरी बल खाय रही है ॥
तृषा तुझको लगी हुई मुख जिह्वा बता रही है ।
होता है मालूम तुझे तो क्षुधा भी सता रही है ॥

दौड़

सभी वृतान्त सुनावो भय ना कुछ मन में लावो, योग्य सेवा बतलावो, नहीं सांच को आंच सभी बेखटके हाल सुनावो ।

रत्न दोहा

हे स्वामिन सुन लीजिये मेरी व्यथा तमाम ।
अर्कजटी का पुत्र हूं रत्नजटी मम नाम ॥

चोबो—

जनकसुता को लंकपति हरके लंका में ले जाता था ।
इस तरफ सैर करता २ मैं भी विमान से आता था ॥
रावण के विमान बीच आवाज रुदन की भारी थी ।
दशरथ नृप की कुलवधू सिया वह रामचंद्र की नारी थी ॥

दोहा—

हा लक्ष्मण देवर तुम्हीं सुनलो मेरी पुकार ।
दुष्ट मुझे ले जा रहा सुनो राम भर्तार ॥

चौक—

इस तरह सिया चिल्लाती थी दुखिया की कोई सहाय करो ।
कभी कहती थी हे जनक पिता तुम ही मेरा सन्ताप हरो ॥
सीता के रुदन भयानक थे पत्थर का कलेजा छुनता था ।
कभी हाकारा के सहित वीर भामंडल नाम निकलता था ॥

दोहा—

भामंडल का नाम सुन मुझे आगया जोश ।
क्योंकि मेरा मित्र था रह न सका खामोश ॥

चौक—

बहिन मित्र भामंडल की सीता मेरी भी भगिनी है ।
और ज्ञात मुझे यह पहले था, यहां पेश न मेरी चलनी है ।
क्षत्रीपन का धर्म नहीं इस हालत में देऊं टारा ।
इसलिये काढ शस्त्र मैं जा रावण के सन्मुख ललकारा ॥

दोहा

हुआ परस्पर व्योम में देर तक संग्राम ।
रावण ने विमान फिर तोड़ा मेरा तमाम ॥

चौक

हे नाथ फेर बेपर होकर मैं गिरा गिरी पर आ करके ।
फिर होनहार लाई मुझको इस कन्द्रा में खिसका करके ॥
अपने दुख का ख्याल नहीं यदि है तो ख्याल सिया का है।
धिक्कार मेरी यह जिंदगानी इस जीने का फल लिया क्या है॥

दोहा—

इसी समय सुग्रीव ने लिया विमान बैठाय ।
रत्नजटी को पथ्य और खाना दिया खिलाय ॥
रत्नजटी को फिर दिए शुद्ध वस्त्र पहनाय ।
धन्यवाद उस वीर को देते हैं हर्षाय ॥

चौक—

सुग्रीव कहे हे रत्नजटी तुमने सुयोग्य कर्त्तव्य किया
सब दुःख हमारा मिटा दिया श्रीराम को भी जीतव्य दिया।
दिन रात जिस लिये फिरते थे तूने सो सफलीभूत किया ।
दुष्कर था यह जो काम हमें मित्र तूने सब सूत किया ॥
चलो मित्र यह पता खुशी का रामचन्द्र को देवेंगे ।
मिले पूर्ण सुयश तुमको हम जरा दलाली लेवेंगे ॥

दोहा—

दाबी कला विमान की पहुंचे रघुवर पास ।
माथ निवा कपिपति ने किया वचन प्रकाश ।

चौक—

महाराज सिया का रत्नजटी से हाल सभी कुछ सुन लीजे।
फिर आगे क्या करना चाहिये सो भी हमको आज्ञा दीजे॥
अब है नाहर के पन्जे में सीता यह भी मन ध्यान धरो।
पहले सुन लो सब बात तोल शक्ति फिर सोच के काम करो।

दोहा—

आदित्य नगर से आगये उधर वीर हनुमान।
वानरपति करने लगे स्वागत अरु सन्मान॥
रत्नजटी को राम ने लिया हृदय से लगाय।
लगे प्रेम से पूछने अपने पास बिठाय।
कष्ट उठा कर कहो रत्नजटी वृतान्त।
सीता का और स्वयं का आदि अन्त पर्यन्त।

रत्न० दोहा

कथन सिया का क्या करूं जलता हृदय तमाम।
यही शब्द थी कह रही हा लक्ष्मण हा राम॥

चौक—

लंकपति हर सीता को ईशान कोण में लाता था।
और कम्बू द्वीप गिरी ऊपर मैं भी उत्तर से आता था॥
जब सुना रुदन वैदेही का मैं रावण के सन्मुख धाया।
इस तरफ उठाया मैने शस्त्र उस तरफ बाण उसने उठाया।

दोहा—

कुछ देर तक आकाश में हुए वार पर वार।
उधर सिया थी होरही रो रोकर लाचार॥

चौक--

हे नाथ दृश्य वह याद करन से हृदय कमल उछलता है।
क्या करूं सिवा कहने के मेरा जोर नहीं कुछ चलता है।
वज्र बाण से रावण ने विमान मेरा झट तोड़ दिया।
और बेपर समझ व्योम से भी गिरितल पर मुझको छोड़ दिया॥

नों० दोहा

पता देन की आश पर रहे जब तलक प्राण।
घृणा आती है मुझको क्या दिखलाऊं शान॥

चौक

क्या दिखलाऊं शान दुष्ट पापी जन गया न मारा।
घोर दुःख में फंसी सिया को कुछ न दिया सहारा॥
क्षत्राणी का दूध सभी मैंने हराम कर डारा।
अब यही मेरे मन आता है मर जाऊं मार कटारा॥

दौड़-

पता कर भामंडल को तजूं फिर गन्दे तनको क्योंकि मन घबराता है, देख सिया का दुःख खाना नहीं हलक तले जाता है।

दोहा--

हृदय विदारक जब सुनी खबर सिया की राम।
नेत्रों से आंसू चले परिषद दुःखी तमाम॥
रत्नजटी की प्रशंसा करी बहुत श्रीराम।
धन्यवाद के शब्द से गूंज उठा सब धाम॥

चौक—

फिर भामंडल पर उसी समय सीता हरने की खबर गई।
और रत्नजटी की लगे चिकित्सा करने वहां पर वैद्य कई॥
सिया शुधि ने राम लखन का हृदय कमल खिलाया है।
फिर पास बुला श्रीराम ने यों सुग्रीव को वचन सुनाया है॥

दोहा

अय भाई सुग्रीव अब आलस देओ निकाल।
असली नक्शा लंक का दिखलावो तत्काल॥

सु० दोहा

हां स्वामिन देखें सभी नक्शा आप जरूर।
किन्तु कार्य सिद्ध यह होना नहीं हजूर॥

चौक.

होना नहीं हजूर क्योंकि वह अतुल बली नाहर है।
तीन खंड में पुण्य प्रचण्ड आज जिसका जाहिर है॥
सहस्र एक साधीविद्या और नीति का माहिर है।
लगे कांपने सब दुनियां जब निकले वो बाहिर है॥

दौड़

वीरबली कुम्भकर्ण है भुजा जिसकी दक्षिण है, विभीषण शूरा नाभी है स्वामिन् रावण की उसको भुजा समझलो बायीं।

दोहा

इन्द्रजीत है सुत बड़ा मेघवाहन लघु जान।
जिनके तेज प्रताप से कांपे सकल जहान॥

चौक

शक्ति रावण की देखने में यहां सारी उमर विताई है।
सब तीन खंड की परिक्रमा उनके संग मैंने लाई है॥
सहस्रांशु नृप का घमंड रावण ने सभी उतारा था।
और इन्द्रभूप इन्द्र समान को भी निज कैद में डारा था॥

दोहा

शक्ति तोड़ी वरुण की जो था बड़ा नरेश।
मधुकभूप चरणन गिरे साधें सेव विशेष॥

चौक

नृप सुरसुन्दर भी नाथ उन्हीं के ही दम में दम भरता है।
और नल कुवेर सुत दुलंङ्घपुर का उनकी सेवा करता है॥
सुरसंगीत का मय नरेश जामात है जिसका लंकपति।
तीन खंड में आज अद्वितीय रावण की है पुण्य रति॥

दोहा

अष्ट महा ये शक्तियें हैं रावण के पास।
बाकी भी सब समझलो हैं रावण के दास॥

चौक.

रावण की सेना की शक्ति निज मुख से क्या वर्णू मैं।
दो हनुमान सुग्रीव इधर हम हाजिर आपके चरणों में॥
खुद देखो नजर पसार सभी योद्धाओं का फक चेहरा है।
दशकन्धर के भय का इन योद्धों के हृदयों पर डेरा है॥

दोहा

कायरता सुग्रीव की देख सुमित्रा लाल।
शूरवीर बांका बली बोल उठा तत्काल॥

दोहा

वाह जी वाह क्या कर रहे गीदड़ के गुणगान।
चोरों ने भी क्या कभी मारा है मैदान।

चौक.

मारा है मैदान कहां चोरों ने बताइये साहिब।
आप न चलिये संग वहां निर्भय हो जाइये साहिब॥
निगल न जाये दशकन्धरपुर में छिप जाइये साहिब।
डरपोकों की भरती हमको भी ना चाहिये साहिब॥

दौड़

बात क्या कही अनोखी प्रशंसा करी गधों की, अकेला मैं जाऊंगा पहले प्राण हरूं रावण के फिर सीता लाऊंगा।

लक्ष्मणजी का गाना

चलाई तेग भेड़ों पर न देखा शूरमा अब तक।
झपट शेरे बबर की में कभी आया नहीं अब तक॥१॥
कोड़ाकोड़ तारे गण चमक कब तक दिखाते हैं।
रवि ने अपनी किरणों को वहां फैंका नहीं जब तक॥२॥
रंगा रंग में जिस्म जाबुक बना अफसर दरिन्दों का।
मगर कब तक कि नाहर ने सुनी भाषा नहीं जब तक॥३॥
जो माता चोर बकरे की शकुन कब तक मनायेगी।
उन्हों का सिर उड़ाने का मिला मौका नहीं जब तक॥४॥
जरूरत थी सिया सुध की 'शुक्ल" लाचार बैठा था।
तड़फता था मैं जिस दिन को मिला मौका न था अब तक॥५॥

दोहा—

कुछ कहने को और था वीर सुसिज्ञानन्द।
श्रीराम ने ला दिया खामोशी का वन्ध॥
गर्म नर्म दोनों मिलें काम तुरत होजाय।
नर्मी से सुग्रीव को यों बोले रघुराय॥
तुम दोनों मेरी भुजा बायीं दक्षिण जान।
भरत तुल्य तू है मुझे सुन सुग्रीव सुजान॥

चौक—

मत फिकर करो अपने मन में तुम मेरे धर्म के भ्राता हो।
किस मुख से मैं गुणगान करूं तुमतो मुझको सुखदाता हो॥
आभारी हूं सबका ही तुमने महाकष्ट उठाया है।
दुष्कर था हमको सीता का सब आपने पता लगाया है॥

दोहा

यहां आने से भरत को दीना हमने रोक।
ऐसे ही तुम भी रहो किष्किन्धा सब लोक॥

चौक

जनक सुता को ले आने की शक्ति हममें काफी है।
पर आशा करे सो नित्य अधूरा श्री जिनवाणी भाषी है॥
आग्रह हम नहीं करते हैं लंका में तुम्हें ले जाने का।
रखता है साहस एक लक्ष्मण रावण का शीश उड़ाने का॥

दोहा—

चोर उचक्कों ने कहां मारा है मैदान।
सन्मुख आ सकते नहीं भगें बचाकर जान॥

चौबो --

खुल गया ढोल का पोल सभी जिस दिन से सिया चुराई है।
रावण ने क्षत्रापन कुल की मर्यादा धूल मिलाई है।
अष्टापद के उठते ही सिंहों का पता न पाता है॥
अब देखो लक्ष्मण वीर लंक में क्या करके दिखलाता है।

श्रीराम का गाना

सभी हम शक्तियें रावण की मिट्टी में मिला देंगे।
धरणि की तो है शक्ति क्या स्वर्ग को भी हिला देंगे॥१॥
जो मन में ठान ठानी है वही करके हटेंगे हम।
समर की धूर में रावण का सर धड़ से उड़ा देंगे॥२॥
अरुणावर्त के आगे बनेगी धूर सब शक्ति।
वज्रावर्त से रवका कलेजा हम हिला देंगे॥३॥
"शुक्ल" शरणा श्रीजिन का हमें परवाह किसकी है।
सिया को चन्द ही दिन में यहां लाकर दिखा देंगे॥४॥

दोहा

देखा जब सुग्रीव ने हैं बिल्कुल तैयार।
हाथ जोड़ कहने लगा ऐसे गिरा उचार॥

चौबोला

हे नाथ आप किस कारण हमको ऐसे लज्जित करते हैं।
हम जनक सुता को छुड़वाने में पीछे पांव न धरते हैं।
जहां गिरे पसीना प्रभू आपका हम अपना रक्त बहावेंगे।
बन चुके आपके दास दासपन का कर्त्तव्य निभावेंगे॥

सु० दोहा

पवन-पुत्र तुम भी कहो अपने दिल का ख्याल ।
फिर जितने बैठे यहां पूछूं सबसे हाल ॥

हनु० राम से

नाथ कही कपिराज ने सभी यथार्थ बात ।
निश्चय ही दशकन्धर के अतुल ताकतें साथ ॥

चौक

किन्तु जो पाकर गौरव अन्याय के ऊपर तुलते हैं ।
तो जगह चमर के उस व्यक्ति पर मोची पत्र ढुलते हैं ॥
जो काम नीच भी नहीं करते वह काम किया दशकन्धर ने ।
तो समझ लेओ अब कूंच किया लंका से पुण्य सिकन्दर ने ॥

दोहा

चन्द्रोदर को मार के खर ने लई लंक पाताल ।
क्या नीति वर्ती वहां करो जरा कुछ ख्याल ॥

चौक

क्योंकि रावण को निज बहनोई की खातिर थी मंजूर सभी ।
यह तो कुछ बात पुरानी है यह नया पोल खुल गया अभी ॥
सम्मति हमारी तो यह है इस शक्ति को कमजोर करो ।
क्या समय अनुपम मिला हुआ और सीता का सन्ताप हरो ।

दोहा

मनुष्य जन्म पाकर यदि करे न विचार ।
तो समझो नर जन्म को खोते सभी निस्सार ॥

हनुमानजी का गाना

यदि हम में ना इक दूजे पै कोई महरवां होगा ।
ठिकाना फेर दुनिया में धर्मियों का कहां होगा ॥१॥
यदि अन्याय कुशक्ति से तुम डर के मुंह छिपावोगे ।
भला फिर कौनसी जां पर यह दनापन अदा होगा॥२॥
चाहे सर्वस्व भी लाकर शीश अन्याय का तोड़ो ।
यहां कर्त्तव्य पालन मोक्ष या सुरपुर मकां होगा ॥३॥
मुझे निश्चय सचाई पर डटोगे बागवां होकर ।
यहां फल-फूल और लंका समझलो दियावां होगा ॥४॥
हवावत् वैक्रिय होगा हमारी वीरता का जब ।
उड़ेगा खुश्क पत्तोंवत् लंक दल जो जमां होगा ॥५॥
सचाई पर डटे क्षत्री नहीं डरते हैं अंतक से ।
यहां इतिहास परभव में जगत हितकर सखा होगा ॥६॥
लखो मत शक्ति रावण की 'शुक्ल' अन्याय को देखो।
तुम्हारी पुण्य शक्ति से ही शत्रु नीमजां होगा ॥७॥

दोहा

हम पक्ष करें सत्यवान् का रहें कुसंग से दूर।
बाकी सब बैठे यहां पूछें आप हुजूर ॥

राम-दोहा

मिथिला नगरी से तभी भामंडल गये आय ।
स्वागत और सन्मान दे लिया पास बैठाय ॥
आज्ञा आपको दे चुके अहो अंजनी लाल ।
आप सभी से पूछले जो कुछ जिसका ख्याल ॥

चौबोला

मिथिलेश कुमार भी बैठे हैं और विराजमान हैं विराध यहां ।
गवगवाक्ष सर भजगवय हैं, जामवन्त शुभनाद यहां ॥
विद्युत और यह गन्धमादन योद्धा नल-नील विराज रहे ।
अंगद मेहश्लील वीर रणवांके सन्मुख राज रहे ॥

दोहा

यथायोग्य लेने लगे सम्मति पवन-कुमार ।
शक्ति रावण की बड़ी सबका यही विचार ॥
वीर विराध कहने लगे सुनो कर सभी गौर ।
असली क्षत्रिय समय पर दिखलाते हैं जौहर ॥

—वीर विराध का गाना—

चाहे कुछ हो ईंट का उत्तर तो अब होगा पत्थर से ।
हमें कुछ भय न रावण के किसी तलवार अस्त्र से ॥१॥
अन्ध अन्याय शक्ति से कभी क्या क्षत्रिय डरते हैं ।
निकलते हैं वह पहले ही बांध कर सिर कफन घर से ॥२॥
हमें निश्चय सही वह दिन भी इक दिन आने वाला है ।
उसको परभव पहुंचावेंगे मार उसके ही चक्कर से ॥३॥
पुण्य काफूर अब उसका हुआ सीता चुराने से ।
उड़ेगी तृण के सम शक्ति वकाया वायु अस्त्र से ॥४॥
मान में हो रहे अन्धे नजर आता नहीं कुछ भी ।
ठीक मस्तक बना देंगे सिर्फ हम एक नस्तर से ॥५॥

"शुक्ल" अब कूंच लंका पर करेंगे कह दिया हमने ।
यदि चलना है जिसने सब सजो हथियार बख्तर से ॥६॥

दोहा

वीर विराध के कथन से फैला इक दम जोश।
क्षत्रिय वीरों को लगा आने अद्‌भुत जोश ॥

चौक

सम्मति परस्पर टकराई कुछ देर तलक यह हाल रहा।
बाकी तो सब कुछ नियत हुआ इक रावण का ही ख्याल रहा॥
जामवन्त यों उठ बोले ऐसा योद्धा होना चाहिये ।
जो शक्ति रोके रावण की और इत्तमिनान होना चाहिये ॥

दोहा

जामवन्त की राय में मिलाई सबकी राय।
अंजनी सुत फिर राम से यों बोले मुस्काय ॥
बहुत काम तो होगया निश्चय से प्रभु ठीक ।
एक कसर को मेट कर ठोको इनकी पीठ ॥

चौबो

वह कसर कौनसी है स्वामिन् श्री जामवन्त बतलाते हैं ।
इस बात को आप भी समझगये कुछ परीक्षा लेना चाहते हैं॥
प्रायः है भी ठीक क्योंकि सबके हृदय में खटका है ।
यदि आप इसे पूरा करदें तो लंक तख्त का तख्ता है ॥

दोहा

इतना कह वज्रांगजी बैठ गये निज ठौर।
जामवन्त उठ रामने बोला दो करजोर (ड़) ॥

दास आपके बन चुके हैं प्रभु दीनदयाल ।
भय इनके दिल का सभी देवें आप निकाल ॥

चौक

यह सुना मुनिजन छाती मे जो कोटि शिला उठायेगा ।
वही मारे दशकन्धर को और वासुदेव कहलायेगा ॥
यह कोटि शिला उठाने से सबदल निर्भय हो जायेगा ।
तैयार लंक में जाने को एक से एक आगे पायेगा ॥

दोहा

खुश होकर सहसा उठा वीर सुमित्रानन्द ।
बोला यों श्रीराम से बांका वीर बुलन्द ॥
कोटि शिला क्या चीज है तोडूं गिरी तमाम ।
इन्द्राणी का पुत्र हूं लछमण मेरा नाम ॥

चौक

आज्ञा दीजे भ्रात लता सी फेंक शिला को दूंगा ।
चलो अभी यह भ्रम तुम्हारा सभी आज हर लूंगा ॥
कितनी शक्ति है रावण के भुजबल में देखूंगा ।
पहले खोज मिटा रावण को फिर जगदम्बा लूंगा ॥

दौड़

चलो अब देर ना लावो वृथा क्यों समय बितावो मुझे पल पल भारी है क्योंकि उधर दुःखों की चलती है सीता प आरी है ।

दोहा—

आज्ञा पा श्रीराम की बैठे तुरत विमान ।
पहुंचे जहां पर थी शिला सहित वीर हनुमान॥

चौबो.

मूल मन्त्र का ले शरणा जब हाथ शिला के लाया है ।
जैसे मुग्दर ऐसे लक्ष्मण ने शिला को वहां उठाया है ॥
फिर लगी पुष्प वृष्टि होने सुर जय २ शब्द सुनाये हैं ।
फिर बैठ विमान में खुशी सहित किष्किन्धा नगरी आये हैं ॥

दोहा—

उसी समय सुग्रीव ने किया खास दरबार ।
लंका चढ़ने के लिए होने लगा विचार ॥

चौक.

गणनायक कोई बना कोई सेनापति पद पर नियत किया ।
निज २ सेना तैयार करो सुग्रीव ने सबको हुक्म दिया ॥
और जंगी भरती खोल दई दारू गोलों का पार नहीं ।
जंगी बेड़े जंगी जहाज अद्भुत हैं वायुयान कहीं ॥

दोहा

वृद्ध मन्त्री कहने लगा दूत देवो भिजवाय ।
सीता को यदि वापस करें झगड़ा सब मिटजाय ॥
दूत भी ऐसा चाहिये करे भूत का काम ।
एक बार के जाने से करदे काम तमाम ॥

चौक.

पहले जनक सुता को यहां की खबर सुनावे जा करके ।
फिर दे उपदेश विशाल सब तरह रावण को समझा करके ॥
यदि नर्मी से ना काम बने तो कहे फेर झुंझला करके ।
अन्तिम जंगी ऐलान सुना आवे कुछ जौहर दिखा करके ॥

बाजार गली कूंचा २ ज्ञाता हो सब बाजारों का ।
जगदम्बा जहां हो विराजमान ले नक्शा उन्हीं मिनारों का ॥
शूरवीर योद्धा बांका जाने से ना घबराता हो ।
फिर जबर्दस्ती का काम नहीं हृदय से करना चाहता हो ॥

दोहा—

श्रेष्ठ पुरुष है लंक में एक विभीषण वीर ।
न्यायवन्त गम्भीर हैं शूरवीर रणधीर ॥

चौक

यदि काम बनाना चाहो तो उसके द्वारा बन सकता है ।
और रावण को भी समझा कर सन्मार्ग पर ला सकता है ॥
वही वीर भेजा जावे जिसका कुछ पहले परिचय हो ।
फिर सजी हुई लंका आशाली विद्या से ना डरता हो ॥

दोहा—

वृद्ध मन्त्री की सम्मति लई सभी ने मान ।
उसी समय सुग्रीवजी बोले खोल जबान ॥
कर सकते हैं काम सब पूरे यह हनुमान ।
क्योंकि हैं ये अनुभवी शूरवीर बलवान ॥

चौक.

ऐलान जंग का देने को तो हर व्यक्ति जा सकता है ।
पर इन बातों पर विजय एक बजरंगबली पा सकता है ।
भानेज जमाई रावण का खा रक्खी इसने आफत है ।
बाजार गली कूंचे तो क्या यह महलों तक से वाकिफ हैं ॥

फिर विभीषण से हनुमत का मेल जोल भी खासा है ।
जो कहा इसे चौचन्द दिखायेगा करके यह आशा है ॥
इसलिये अहो बजरंगबली यह काम तुम्हारे लायक है ।
वास्तव में देखा जाये तो इस दल का तू ही तो नायक है ॥

दोहा—

जी हां बिल्कुल ठीक है यों बोले सब वीर ।
समयभाव को देख कर कहन लगे रघुवीर ॥

राम–दोहा

पवनपुत्र हनुमानजी शूरवीर गम्भीर ।
सब योद्धाओं की नजर है तुम पर बलवीर ॥

चौक—

हे सच्चे पुरुषार्थी योद्धा यह जल्दी काम बनावो तुम ।
जो डालो नींव समर की तो यह भी तकलीफ उठावो तुम ॥
उपकार जिसे कहती दुनियां उसके समक्ष अवतार हो तुम ।
यह भार तुम्हारे सिर पर है क्योंकि सबके सरदार हो तुम ॥
चाहे नींव कहो जड़मूल कहो इस दल के स्तम्भ तुम्हीं तो हो ।
था बन्ध छुड़ाया रावण का बजरंगबली तुम वही तो हो ॥
काम सभी यह आप बिना कोई और नहीं कर सकता है ।
जो घाव किया दशकन्धर ने अय वीर तू ही भर सकता है ॥

दोहा

प्रियवचन श्रीराम के सुने वीर हनुमान ॥
हाथ जोड़ श्रीराम के गिरा चरण में आन ॥

हनु० दोहा

हे रघुवर कुलमणि मुकुट जगभूषण जगताज।
नम्र निवेदन दास का सुन लीजे महाराज ॥

चौक.

यहां बड़े २ योद्धा बैठे मैं पिछली संख्या वाला हूं।
इनके आगे कोई चीज नहीं क्योंकि फिर भी मैं वाला हूं॥
श्रीगव गवाक्ष सरभज गवय बैठे हैं वीरबली भारी।
श्री जाम्बवन्त अंगद सलोल जो धरा कंपा देवें सारी॥
यह गंधमादन द्विविद गवय नलनील बड़े रणबांके हैं।
महा तेज देख इन योद्धों का हृदय फटते दुर्जन के हैं॥
फिर हैं सबके सब अनुभवी इनके समक्ष मैं बच्चा हूं।
यह काम हाथ में लेते हुए दिल में होता मैं कच्चा हूं॥

दोहा

आपने सबको छोड़कर दिया मुझे यह दान।
तो फिर मुझको भी प्रभु है सब कुछ प्रमाण॥

चौक

अहोभाग्य मेरे स्वामिन् यह अवसर आज नसीब हुआ।
शक्ति अनुसार करूं पूरा जो भी कुछ यहां तजवीज हुआ॥
मूलमंत्र का ले शरणा जिस समय लंक में जाऊंगा।
और चिरस्मरणीय छाप बिना मारे नहीं वापस आऊंगा॥
आज्ञा हो यदि आपकी यहां जगदम्बा को ले आने की।
तो मेरे आगे दुर्जन की वहां पेश नहीं कुछ आने की॥
सीता तो क्या और कहो कुछ बदले में यहां ले आऊंगा।
ऐलान जंग का तो स्वामिन् चलते २ दे आऊंगा॥

दोहा

सुने राम ने जिस समय हनुमान के बैन
मिष्टवचन से रघुपति लगे इस तरह कहन

चौक

है निश्चय जो कुछ कहा आपने पूर्ण कर दिखलावोगे।
और मान सभी के मर्दन कर सीता को भी ले आवोगे॥
किन्तु अभी करो इतना जो भी कुछ यहां पर नियत हुआ।
फिर बाद में जो मर्जी करना जैसा तेरा चित्त चित्त हुआ॥
क्योंकि अधिकार है शत्रु का क्या पता वहां कैसी वीते।
हम आते हैं कुछ देर नहीं यह कह देना पास सियाजी के॥
चन्द दिनों का कष्ट और है सब धैर्य उनको दे आना।
विमान भी है तैयार काम करके वापिस जल्दी आना॥

दोहा

जो कुछ आज्ञा आपकी प्रभु मुझे स्वीकार।
अभी ही पहुंचूं लंक में मुझे ना लगती बार॥

चौक

पर एक ख्याल कुछ और अभी जो मेरे मन में आया है।
कि आज तलक वैदेही का मैंने नहीं दर्शन पाया है॥
है उदाहरण कि जला दूध का फूंक छाछ को पीता है।
इस कारण से जगदम्बा को विश्वास मेरा कब आता है॥
क्योंकि वह सती महान् सती विश्वास न मुझ पर लायेगी।
वह जगह तसल्ली के उल्टी अपने मन में घबरायेगी॥

इसलिए निशानी दे दीजे अपनी जो उन्हें दिखा देऊं ।
कुछ धीर बंधाकर सीता को भी तुम्हें निशानी ला देऊं ॥

श्रीराम का गाना

निश्चय दिलाने के लिए विपदा मेरी काफी है ।
सुना देना मेरा वृतान्त उन्हें काफी है ॥१॥
निश्चय वहां बैठी हो चाकग्रीवा वन कर ॥१॥
यह सुना देना यहां जलती मेरी छाती है ।
नित्य विरह रूपी उसे दाह सताती होगी ।
नाम संदल ही मेरा उसकी दवा काफी है ॥३॥
ऐसी निशानी यह कहीं गुम भी नहीं होने की ।
उसके हृदय ने मेरी खेंच नकल राखी है ॥४॥
यह भी ना समझे कहीं कि मुझको भुला बैठे हैं ।
भला पानी से भी क्या शीतलता कहीं जाती है ।५॥
आराम ना पावेगा कभी तुझको चुराने वाला ।
सफर को तय करके कजा उसकी चली आती है।।६॥
फिक्र अब त्याग सभी करलो निश्चय मन में ।
थोड़े दिनों का ही तुम्हें कष्ट रहा बाकी है ॥७।
प्यारी सिया समझना न ये कि मैं ही मुसीबत में हूं ।
'शुक्ल' विपदा न मेरी कागज में लिखी जाती है ॥८॥

हनुमानजी का गाना

ठीक सब आपका कहना मुझे प्रमाण है भगवन् ।
निशानी के बिना देगी ना हरगिज ध्यान वो भगवन्॥१॥

वो समझेगी मनुष्य कोई यह रावण ने ही भेजा है।
सुनाऊंगा मैं क्या उसको न लाये कान वो भगवन् ॥२॥
जो मर्जी सो कहूं लेकिन न निश्चय उनको आयेगा।
क्योंकि उनको नहीं बिल्कुल मेरी पहचान है भगवन् ॥३॥
निशानी के बिना जाना मेरा निष्फल सा होवेगा।
करूंगा घ्यान मैं कैसे ये मन हैरान है भगवन् ॥४॥
प्रथम तो कठिन होगा पास में जाना ही सीता के।
बिना फिर चिन्ह के माने क्या वो नादान है भगवन् ॥५॥
'शुक्ल' वहां पर भी रहने का समय मुझको मिला थोड़ा।
बिना किसी चिन्ह के मेरा वहां नहीं मान है भगवन् ॥६॥

दोहा

नामांकित निजमुद्रिका रघुवर दई निकाल।
ये मुद्रिका तुम लीजिये अहो अवनीलाल॥

—श्री रामजी का गान—

यह लो अंगूठी लो पास अपने रक्खो इसको संभाल करके।
लौटकर आना जल्द यहां पर कायम कोई मिसाल करके ॥१॥
यदि हो मुश्किल सिया से मिलना तो लेना कोई दलाल करके।
तमातेज जहां मिले नर्म हो ये देना हीरे निकाल करके ॥२॥
यह पत्र लो संग लेते जाना लिखा है सब कुछ विशाल करके।
सिया के दिलको तसल्ली देना सभी निराशा को टाल करके ॥३॥
जावो जल्दी वो खोती होगी तन को रंजोमलाल करके।
'शुक्ल' परम सुख मिलेगा तुमको,
दुखी के दिल को खुशहाल करके ॥४॥

हनुमानजी का गाना

यदि है कृपा तुम्हारी मुझ पर
तो नाज उसका गिरा के आऊं,
ना भूले दुनियां कभी भी जिसको
मैं धन्धा ऐसा लगाके आऊं ॥१॥
यदि हो आज्ञा तो नहले ऊपर,
दहला अपना टिका के आऊं।
सिया तो क्या मैं उसकी पुत्री,
उसी के सन्मुख उठा के लाऊं ॥२॥
होगा सन्मुख जो योद्धा कोई,
तो उसको निश्चय सुला के आऊं।
यदि समय कुछ अधिक मिले तो,
मैं फूट मेवा चखा के आऊं ॥३॥
सचाई दुनियां में है चीज कोई तो,
उनके दिल को हिला के आऊं।
सिया के चरणों में हाल कहकर,
मैं जल्दी मस्तक झुका के आऊं ॥४॥
"शुक्ल" मैं परमेष्ठी शरणा लेकर,
कवच को तन पर सजा के जाऊं।
अचूक अवसर मिला है मुझको,
अकूत का परिचय दिखा के आऊं॥५॥

दोहा

सिद्धेश्वर का नाम ले बैठा तुरत विमान।
लंका को अब चल दिये निडर वीर हनुमान ॥

महेन्द्रपुर के बाग पर पहुंचा जब विमान ।
सुभट मित्र हनुमान से बोला खोल जबान ॥

चौक

यह बाग आपके नाने का क्या अद्भुत छवि दिखाता है।
प्रसन्न कीर्ति महेन्द्रसुत अति शूरवीर कहलाता है ॥
अब चलते २ मेल जोल कुछ इनसे भी करना चाहिये ।
रावण से प्रतिकूल कान महेन्द्र का भरना चाहिये ॥

दोहा

सुने सहायक के वचन हनुमत ने जिस बार ।
मन ही मन में इस तरह करने लगा विचार ॥
इसी जगह था मात को दिया इन्होंने त्रास ।
चाहिये इनका भी उड़ा देना होश हवास ॥

चौक.

यदि मेल इन्होंसे होगा तो होगा दो हाथ दिखा करके ।
कर्त्तव्य इन्होंने किये उसी का देऊं स्वाद चखा करके ॥
मेल-जोल अब किये बिना हम भी नहीं आगे जावेंगे ।
माता को यहां ना मिली जगह तलवार से जगह बनावेंगे ॥

दोहा—

वीर रंगीले ने तुरत दीना बिगुल बजाय ।
गूंज उठा ब्रह्मांड सब भूप गया घबराय ॥

चौक

महल सभा क्या नगर किले में सहसा शोर मचा भारी ।
क्यों अकस्मात् यह बिगुल बजा किसने की रण की तैयारी ॥

प्रसन्नकीर्ति ने झटपट निज तन पर बख्तर धारा है
होगई बिगुल रण जुटने की धौंसे पर डंका मारा है
जब आन परस्पर अनी मिली तो चमका खड्ग दुधारा भी
कभी अग्निबाण कभी धुंअबाण कभी चलता सांग कटारा भी
वज्र रत्न घन और हथोड़ों की चोटों को खाता है।
इसीतरह हनुमान भी रण में आगे बढ़ता जाता है ॥

दोहा

देख तेज हनुमान का घबरा गये तमाम ।
प्रसन्नकीर्ति से लगा फिर होने संग्राम ॥
मामूली नहीं चीज था महेन्द्र सुत शूर ।
लड़ते लड़ते परस्पर होगये दोनों चूर ॥

चौक.

यह हाल देख कर पवन-पुत्र के जोश बदन में छाया है
कुछ यह भी ख्याल हुआ मनमें क्या काम तू करने आया है॥
यदि मारा मैंने मामे को तो माता अति दुःख पावेगी।
भाई मेरा तूने मारा हर समय यह ताना लावेगी ॥

दोहा

नाग फांस में बांध कर करूं फेर प्रणाम ।
भेद खोल आगे चलूं पहुंचूं लंका धाम ॥

चौक.

कर विचार ऐसा वज्र संग्रामी रथ पर झोंक दिया
सब पुरजा २ अलग २ रथ ने भी अपना छोड़ दिया ।
पवनपुत्र ने नाग फांस में प्रसन्नकीर्ति बांधा है।
फिर अपना आप बताने का भी दिल में किया इरादा है ॥

दोहा—

हनुमान का लीजिये मामाजी प्रणाम ।
ऐसा कह बजरंग ने तोड़े बन्ध तमाम ॥

चौबो.

जब लगा पता कि हनुमत है तो खुशी का ना कोई पार रहा ।
महेन्द्र नृप आकर हनुमान को देता अतितर प्यार रहा ।
भेद सिया का आदि अन्त पर्यन्त सभी बतलाया है ।
श्रीरामचन्द्र का करके सहायक आगे को चल धाया है ॥

दोहा

जय जिनेन्द्र कर चल दिये उसी समय हनुमान ।
प्रसिद्ध दधिमुख द्वीप पर पहुंचा जाय विमान ॥
साधु दो शुभ ध्यान में बैठे होकर लीन ।
कुछ दूरी पर ध्यान में राजकुमारी तीन ॥

चौक

कर नमस्कार मुनियों को पहुंचे फिर जहांपर राजदुलारी थी ।
तो दीर्घ शस्त्र ज्वाला ने कुछ वहां अपनी लाट निकाली थी ॥
जलाशय से ले पानी हनुमान ने आग बुझाई है ।
और अबला मुनिराजों की आपत्ति दूर भगाई है ।

दोहा

कष्ट सहे स्थिर योग से सिद्धि होत तत्काल ।
खुश हो राजकुमारियां बोलीं शंका टाल ॥
विना काल तरुवर फला हे प्रभु दीनदयाल ।
और हमारा आनके आपने टाला काल ॥

चौक

हम तो क्या इस ज्वाला में वे महापुरुष भी जल जाते ।
यदि एक मुहुर्त्त भर भी यहां उपकारी आप नहीं आते ॥
कारण हम अग्नि लगने के मुनिजन का पाप हमें चढ़ता ।
तन धन और धर्म सभी जाता यह जीव पता क्या कहां पड़ता ॥

हनु० दोहा

नाम पता सब आपका देवो हमें बताय ।
कैसे तुम कारण बनीं सो भी दो समझाय ।

राजकु०-दोहा

दधिमुख नगर सुहावना गन्धर्व भूप प्रधान ।
शूकमाला राणी भली मात हमारी जान ॥
ज्योतिषियों से पिता ने पूछा था इक वार ।
कौन भूप इनका कहो होवेगा भर्तार ॥

चौक.

तब ज्योतिषियों ने बतलाया जो सहसगति को मारेगा
बस पति इन्हों का बने वही दुखियों का दुःख निवारेगा ।
देख तेज उस राजकुमार का भानु भी शर्मायेगा
शूरवीर गंभीर नाम सागर मानिन्द लहरायेगा ।

दोहा

अंगारक खेचर बड़ा कामी इक नादान ।
रूप हमारे पर हुआ मोहित वश अज्ञान ॥

चौक

करी याचना पिता हमारे से हमको परिणाने की ।
पर मानी नहीं पिता ने अंगारक से विवाह रचाने की ॥
करें कोई विद्या साधन यह ख्याल हमें इक दिन आया ।
पा आज्ञा माता पिता की हमने यहां आकर डेरा लाया ॥

दोहा

द्वेषानल में दग्ध हो अंगारक ने आय ।
हमें जलाने के लिए अग्नि दई लगाय ॥

चौक

इसलिये ध्यान में लगे हुए साधु भी आज भस्म होते ।
ना हमें ध्यान से उठना था ना वह भी इधर उधर होते ॥
तुम हुए पुण्य के अधिकारी क्योंकि सब कष्ट निवारा है।
अज्ञान बचाई हम सबकी और काम सिद्ध हुआ सारा है॥
अब आप कृपा कर बतलावें किस भूप के राजदुलारे हैं।
इतनी जल्दी क्यों करते हो किस काम को आप सिधारे हैं॥
जो सेवा हो सो बतलाइये तुम जग दुख भंजन हारे हो।
कर्त्तव्य से जाने जाते हो श्री जिन शिक्षा के प्यारे हो ॥

हनु. दोहा

नगरी है आदित्यपुर पवनंजय नृप तात ।
नाम मेरा हनुमान है सती अंजना मात ॥

चौक

श्री रामचन्द्र रघुकुल दिनेश किष्किन्धा आज विराजते हैं।
औदार चित्त गम्भीर वीर दुखियों का दुःख निवारते हैं ॥

किष्किन्धा में आन राम ने सहसगति को मारा है ।
सूर्यवंशी अवधेश श्री दशरथ का राजदुलारा है ॥

दोहा

रामचन्द्र की नार थी सीता सती विशेष ।
उसे चुरा कर ले गया लंका में लंकेश ॥

चौक.

इसलिए लंक में जाता हूं सन्तोष सिया को देने को ।
फिर होगी वहां लड़ाई भी उस शत्रु का सिर लेने को ॥
यह गन्धर्व नृप को कह देना तुम राम के पास चले जाओ ।
इसलिए तुम्हें समझाता हूं कि फिर पीछे ना पछताओ ॥

दोहा—

कला दबाई वीर ने फिर चल दिया विमान ।
राजकुमारी भी गई निज नगरी सुखमान ॥

चौक.

श्रीराम की सुन कर प्रशंसा गन्धर्व नृप मन हर्षाया है ।
दल बल विमान संग सेना लेकर किष्किन्धा में आया है ॥
श्री हनुमान का शीघ्र उधर विमान लंक की ओर बढा ।
जब गये पास तो कोट आशाली विद्या का चहुं ओर खड़ा॥

दोहा

लगाई घूम विमान की ऊपर तले तमाम ।
रास्ते का तो नाम क्या नहीं छिद्र का काम ॥

चौक—

फिर कौण ईशान की तरफ बढ़े वहां आशाली का डेरा था।
थी आकृति दरवाजे की पर तमतम घोर अन्धेरा था॥
सिवा पुण्य के और नहीं कोई शस्त्र वहां चल सकता है।
सब दारू गोला आशाली के सन्मुख नहीं अड़ सकता है॥

दोहा

बज्रांगी उस तमाके अड़े सामने जाय।
तब देवी हनुमान से यों बोली झुंझलाय॥

देवी–दोहा

भाग्यहीन तुझको यहां लाई मौत बुलाय।
अब भी कहती हूं तुझे भागो जान बचाय॥

चौक—

हय नेत्र दोनों के अन्धे चला किधर को आता है।
नादान आशाली ज्वाला में किस कारण जलना चाहता है॥
तू मौत पराई क्यों मरता सब झूठा जग का नाता है।
वह काम नहीं बनना यहां पर जो काम तू करना चाहता है॥

दौड़—

पीठ यहां से दिखलावो चले अपने घर जावो, हुक्म ये दशकन्धर का, अन्य देश वालों को जाना मिले नहीं अंदर का।

दोहा—

आशाली के सुन वचन मुस्काय बजरंग।
उत्तर में कहने लगे होकर रंग विरंग॥

आशाली काली जरा सुनो लगाकर कान ।
अन्दर जाने दीजिये हम यहां के मेहमान ॥

चौक

यह हुक्म नहीं दशकन्धर का तुम रोको रिश्तेदारों को ।
किस लिये तंग करती वतला हमसे राहगीर विचारों को ॥
उपहास्य में होता है झगड़ा बुद्धिमानों का कहना है ।
हट एक तरफ को जाने दे कुल दो दिन हमने रहना है ॥

देवी दोहा

मूढ़मति तू किस लिये करता है तकरार ।
जाना तुझको ना मिले छल कर चाहे हजार ॥

चौक--

लोक अरी से वत रिश्तेदारी राजों की होती है ।
मन फटा हुआ नहीं मिल सकता, जैसे पय टूटा मोती है ॥
जान बचाकर भाग नहीं अब काल शीप पर आता है ।
यहां लिये पराये तू वृथा क्यों अपनी जान गमाता है ॥

हनु० दोहा

वाह री वाह क्या खूब तू दिखा रही है जोश ।
खैर हमारे कथन से अब हो जा खामोश ॥

चौक--

कितनी ही तुझ में शक्ति हो फिर भी अवला कहलाती है ।
पर क्षत्रिय मर्दाने के आगे यहां पेश ना तेरी जाती है ॥
नियम कुदरती जात नार की पुरुष वेद को नमती है ।
फिर मेरा दर्जा पंचम और तेरा दर्जा इक कमती है ॥

देवी दोहा

अच्छा तो फिर करन को आया है उपदेश ।
तो फिर तेरे काल ने पकड़े आकर केश ॥

चौक

अच्छा अब सावधान हो जा जल्दी परभव में जाने को ।
इस सुन्दर तन की आशाली से जल्दी भस्म बनवाने को ॥
ऐसा कह कर आशाली ने लम्बी लाट निकाली है ।
इस तरफ वीर बजरंगी ने भी अपनी गदा सम्भाली है ॥

दोहा

ज्वाला आई जिस समय पवन पुत्र के पास ।
गदा पकड़ शरणा लिया मूलमन्त्र का खास ॥

चौक—

नमस्कार मंत्र से आशाली क्या देवतपति थर्राते हैं ।
परविन निश्चय और साधन के विन पूर्ण फल नहीं पाते हैं ॥
फिर मारी गदा घुमा करके प्रस्थान किया आशाली ने ।
झट देख रवि को पीठ दिखाई जैसे रजनी काली ने ॥

दोहा—

बादलसे जैसे रवि निकला ऐसे निकला वीर ।
लंक कोट के पास फिर पहुंचा वो रणधीर ॥

चौक—

विमान तले को तार लिया भूमिचर उसे बनाया है ।
यह हाल देख कर वज्रमुखा शस्त्र ले सन्मुख आया है ॥

अतिक्रोध में चेहरा लाल हुआ और शस्त्र कर में तोला है।
निज मस्तक पर बल तीन डाल हनुमान से ऐसे बोला है॥

वज्र-दोहा

भाग्यहीन तुम किस जगह फंसे मौत मुख आन।
बिना सींग और पूंछ के क्या तुम पशु समान॥

चौक—

क्या लिखा हुआ दरवाजे पर यह तुम्हें नजर नहीं आता है।
क्या ऐनकलाने का स्वभाव या मोतियाबिन्द सताता है॥
आज्ञा नहीं यहां पर अन्य राष्ट्र वालों को अन्दर जाने की।
और किसने शिक्षा दी तुमको यह निष्फल प्राण गंमाने की॥

दोहा—

जिह्वा को वश में करो दांत होंठ लो भींच।
अनुचित जो कुछ भी कहा लेऊं रसना खींच॥

— हनुमानजी का गाना —

उछलता है क्यों मेंढकसा तुझे परभव पहुंचा दूंगा।
जो बोला दुर्वचन कोई स्वाद उसका चखा दूंगा॥१॥
रोकता है तू रावण के जो आये रिश्तेदारों को।
अलग हट एक पासे को नहीं तरकस चला दूंगा॥२॥
कभी रास्ता कहो सिंहों का स्यालों ने भी रोका है।
समझ अपना तू हित चुपमें नहीं यहां पर सुला दूंगा॥३॥
यदि रहना है इस तन में तो माफी मांग लो इसकी।
करी तूने जो अविनय वह सभी दिल से भुला दूंगा॥४॥

वज्र० दोहा

धौंस दिखाता है मुझे आंखें लाल निकाल ।
अब निश्चय कूदन लगा तेरे सिर पर काल ॥

—वज्रमुखा का गाना—

रस्म रिस्ते की यहां पर आपकी हम सब बजा देंगे ।
हमेशा के लिए सोना तेरा विस्तर लगा देंगे ॥१॥
यदि स्नान करना है तो जल्दी शौक से कीजे ।
तुम्हारे रक्त की धारा से हम तुमको नहला देंगे ॥२॥
चीज़ ऐसी खिलायेंगे लगे ना भूख इस भव में ।
प्यास भी दूर जायेगी नीर ऐसा पिला देंगे ॥३॥
अहो धन्य भाग्य हैं मेरे करूं मेहमान की सेवा ।
स्वयं बस पीक आयेगी पान ऐसा चबा देंगे ॥४॥

हनु० दोहा

सेवा करवाने के लिये हम भी हैं तैयार ।
अब तू जल्दी सांभले अपने सब हथियार ॥

चौक

सोचा था मैंने क्यों गरीब के नाहक प्राण गमाने है ।
पर तेरे खोटे कर्मों ने ही तुझको नाच नचाने हैं ॥
मरने से पहले मुझको इक बात और बतलाता जा ।
नियम यहां कुछ पहले भी हैं या बदले सभी सुनाता जा ॥

वज्र० दोहा

क्यों मरने के समय अब गाता आल पताल ।
बातें घड़ने से कभी टल नहीं सकता काल ॥

चौक—

पर कान लगा अब जल्दी से तेरा विचार पूरा कर दूं ।
फिर समय नहीं मिलना जबकि तलवार तेरे गल पर धर दूं ॥
कोई शक्तिशाली सन्मुख हो नीति की वहां जरूरत है ।
पर रावण के आगे सब नृप मात्र पत्थर की मूरत हैं ॥
दीपक की तब तक चाहना है जब तक ना सूरज रोशन हो ।
पंखे की वहां जरूरत क्या जहां पर सर्दी का मौसम हो ॥
तीन खंड में कान हिलाने वाला छोड़ा बसर नहीं
फिर जो मर्जी सो करें पुण्य दशकन्धर के में कसर नहीं ॥

हनु० दोहा

वाह २ तो फिर हमें मिला खूब अवकाश ।
पहले तुझको मार कर करें लंक का नाश ॥

चौक—

यह लज्जा मुझको आती है किस पर तलवार उठाऊं मैं ।
जो काम करन यहां आया हूँ सो भी तुमको समझाऊं मैं ॥
हूँ दूत राम का रावण को संदेशा देने जाता हूँ ।
नहीं दूत को रोका करते हैं फिर भी तुमको समझाता हूँ ॥

वज्र० दोहा

हमको तो आज्ञा यही दूत होवे चाहे भूत ।
राम के दल के मनुष्य को समझो सभी अछूत॥

हनु० दोहा

अच्छा तो अब सम्भल कर होजावो हुशियार।
धोखे में रहना नहीं करलो पहले वार ॥

दोहा

वज्रमुखे ने वीर पर झौंक दई तलवार ।
धक्का दे बजरंग ने दिया धरन पर डार ॥

चौक

फिर बोले अब संभल खड़ा हो जा क्योंकि अब वार हमारा है
आगे फिर जल्दी जाना है पहले कर ढेर तुम्हारा है ॥
वज्रमुखे ने फिर उठ करके अपनी सांग घुमाई है ।
पवनपुत्र ने काट उसे अपनी तलवार झुकाई है ॥

दोहा

कड़कड़ाहट से चपला ज्यों गिरे अम्बर से आय ।
ऐसे घहराती वीर की पड़ी खड़्ग गल जाय ॥

चौथो--

रक्त का फुव्वारा उठा व्योम को वज्रमुखे ने कूंच किया ।
पड़ा जिस्म रणभूमि में जीव ने परभव वास किया ॥
मरा अधिपति समझ चमू में हाहाकार मचा भारी ।
जनक मृतक हुए दुहिता खबर सुन मन में रोष करे भारी॥

दोहा--

वज्रमुखे की कन्या का लंका सुन्दरी तसुनाम।
शूरवीर रणधीर थी शस्त्र कला की धाम ॥

चौबो

बख्तर तन पै सजा के फौरन संग्रामी बिगुल को पूर दिया।
पलायित सेना रूकी है यकदम युद्ध में कदम को रोप दिया॥
इधर से बढ़े अंगरक्षक चारों शूरवीर बलधारी थे।
पवन पुत्र लखें खड़े तमाशा मित्र करते मार करारी थे॥

दोहा

लंका सुन्दरी ये हाल लख अरुण वर्ण कर नैन।
शमशेर हाथ में तान कर बोली ऐसे बैन॥

चौबोला

ओ पामरो भागो जान बचाकर क्यों व्यर्थ में प्राण गंवाते हो
जिसने जनक मेरे को मारा क्यों न उसको सन्मुख करते हो॥
ना वीर कान दें इन बातों पर फौज पै बाण बरसते हैं।
उधर सुन्दरी के कर से छूटे शर मानों अनल उगलते हैं॥

दोहा

सह न सके उस मार को घबराये चहुँ वीर।
हटा कदम मम मित्रों का देखा हनुमत वीर॥

चौक

गर्ज उठे ले गुर्ज हाथ में अति क्रोध वदन भर आया है।
खुद बढे अगाड़ी बब्बर शेर सम रण भू को कम्पाया है॥
बरसाये शिलीमुख अमित वेग से मानों श्रावण की झड़ी लगी।
असह्य तेज लख पवनपुत्र का सेना में फिर पड़ी भगी॥

दोहा

हाल देख ये सुन्दरी सन्मुख हुई तत्काल ।
बोली सम्भल अब जाइये आई मैं बन काल ॥

पवनपुत्र मन सोचते अबला नार कहलाय ।
शिरोच्छेद यदि मैं किया तो दागी कुल होजाय ॥

चौबो.--

सच्चे शूरवीर क्षत्रिय ना अबला पर हाथ उठाते हैं ।
प्राणों पर अपने खेल जांय फिर भी ना शस्त्र चलाते हैं ॥

परशस्त्रकला अद्भुत इसकी अति हस्तलाघव दिखलाती है ।
प्रचण्ड तेज लख इसका चण्डी भी मन शरमाती है ॥

उधर अस्त्र[1] शस्त्र[2] अपरम् छोड़े ना असर बीर पर करते हैं ।
क्योंकि वज्रांगवली नभ में ही उनको काट गिराते हैं ।

तूणीरस्तम्भ हुआ कुमरी का आश्चर्य सुन्दरी करती है ।
सब विद्या स्तम्भ हुई क्यों मेरी मन में विचार यों करती है॥

दोहा

बिसार क्रोध को सुन्दरी देखे नयन पसार ।
देख रूप हनुवीर का गया बाण दिलपार ॥

ज्यों मन्मथ निज रूप धर खड़ा शरासन तान ।
कन्या शस्त्र त्याग कर गिरी चरण में आन ॥

---

१ जो दैविक शक्ति सम्पन्न होते हैं ।

२ जो कि पौरुषेय होते हैं तथा बहुत से विषादि से युक्त होते हैं ।

चौबोला

फिर क्या था उस रणभूमि में प्रेम का दरिया बहने लगा ।
अभय रहो मन में सुन्दरी यों वचन वीर तब कहने लगा ॥
हाथ जोड़ अश्रु धर नैनों कन्या वचन सुनाती है ।
क्षमा करो अपराध को स्वामिन् मम अविनय जो कहाती है ॥

सुन्दरी दोहा

एक समय नैमित्तिकी आया हमरे पास ।
कौन मेरा वर होयगा यूं पिता वचन प्रकाश ॥

चौक

जो तुझको मारेगा रण में वही पुत्री वर कहलायेगा
अमित प्रतापी शूरवीर जग में निज नाम दिपायेगा
ना ख्याल किया उस बात का पितु मृत्यु सुन चढ़ आई हूं ।
अपराध क्षमो स्वामिन् मेरा अब शरण तुम्हारी आई हूं ॥

दोहा—

वचन सुने हनुमन्त ने मन में अति हर्षाय ।
पाणिग्रहण उसी दम किया गन्धर्व विवाह जो कहाय ॥
दिनकर अस्ताचल गया देखा जब हनुमान ।
ईश स्मरण करके वहीं सोये बीच विमान ॥
रजनी सुख से बितायदी फिर अर्चीमाली दीपन्त ।
स्नानादि पश्चात् फिर तैयारी करें हनुमन्त ॥
सिद्ध प्रभु का जाप जप परमेष्ठी ध्यान कराय ।
पवनपुत्र हैं चल दिये आगे पांव बढ़ाय ॥

चौक—

फिर पास बिभीषण के पहुंचे झट शीश झुका प्रणाम किया।
मिले विभीषण प्रेमभाव से हनुमत को सन्मान दिया॥
सेवक जन सेवा करते सब आगे पीछे फिरते हैं।
और यौर विभीषण हनुमान को ऐसे गिरा उचारते हैं॥

विभी. दोहा

बहुत दिनों में आपके दर्शन पाये आज।
कहो कुशल हैं सब तरह पवनंजय महाराज॥

चौक—

कुछ पता अपने आने से पहले हम पर भिजवाना था।
हम मिलते स्वयं रास्ते में सन्मान से आपको लाना था॥
यहां आने में जो कष्ट हुआ तुमको सो हम पर धब्बा है।
आराम आप कीजे क्योंकि तह किया ये रास्ता लंबा है॥

हनु० दोहा

प्रेम आपका ही हमें लाया यहां पर खींच।
किन्तु काम अब लंक में लगे होन अति नीच॥

चौक

इसलिये जहां पर न्याय नहीं वहां प्रेम नहीं रखना चाहिये।
जिस बात में सन्मुख हानि है उससे पीछे हटना चाहिये॥
अब अन्तिम का प्रणाम समझलो तुमको करने आये हैं।
कल्याण आपका हो जिसमें सो अर्ज सुनाने आये हैं॥
यस लोक अरीसेवत् अब तुमसे प्रेम हमारा छूटेगा।
और पाप का बेड़ा भरा हुआ लंका का सारा डूबेगा॥

प्रेम हमारा आपसे है कुछ अर्ज गुजारने आये हैं ।
मर्जी मानो या न मानो निज कर्त्तव्य पालन आये हैं ॥

दोहा

पिछली बातों को जरा रख दीजे सरकार ।
वर्तमान क्या हो रहा इस पर करो विचार ॥

चौक—

क्या आपने सोचा बतलावो और क्या रावण को समझाया ।
या यही किया कि कोट आशाली का लाकर पहरा लाया ।
निश्चय क्या ख्याल आपका है सब साफ २ बतला दीजे ॥
संकोच रूप से बतलाकर फिर जल्दी हमें विदा कीजे ॥

वि० दोहा

पवनपुत्र क्या कह रहे रूखी २ बात ।
प्रेम हमारा जिस तरह शीतलता जल साथ ॥

चौक—

जो भी कुछ आपको कष्ट हुआ मैं क्षमा उसी की चाहता हूं ।
अब रावण का भी हाल सुनो सारांश तुम्हें समझाता हूँ ॥
दशकन्धर को समझाने में कसर नहीं मैंने रक्खी ।
मेरा विचार भी सुन लीजे हृदय हूँ सत्य का पक्षी ॥

दोहा—

मोर खुशी में नाचता फिर २ चारों ओर ।
किन्तु चरण निज देख कर रोता है उस ठौर ॥

चौक--

बस यही हाल हमारा है युक्तियें सोच खुश होते हैं।
कुछ पेश नहीं चलती रावण के आगे हम निष्फल होते हैं॥
उधर सती का दुख भी तो हमसे न सहारा जाता है।
इधर बड़े भाई का भी ना प्रेम विसारा जाता है॥
जो दिल में दुःख उगाल उठे सो मुख से कहा न जाता है।
यह उलट पेच इक आन फंसा इसका हल मुझे न पाता है॥
और अधिक क्या बतलाऊं इस जीने से घबराता हूं।
अनुमान नजर जो आते हैं सो नहीं देखना चाहता हूं॥

हनु. दोहा

दोष नहीं कुछ आपका हुआ मुझे सब ज्ञात।
जरा ध्यान लाकर सुनो कहता हूं दो बात॥

चौक

जैसा प्रेम तुम्हारे को रावण का वैसा हमको है।
तन मन से सेवा की हमने यह ज्ञात सभी कुछ तुमको है॥
जिसकाम को नीचभी नहीं करते वह काम किया दशकन्धरने।
तो कूंच किया अब लंका से समझो कि पुण्य सिकन्दर ने॥

दोहा—

दम्भी अन्यायी अधम निन्दक और अज्ञान।
इतनों की संगत सदा तजते बुद्धिमान॥

चौक.

तजो देव फलहीन तजो राजा जो कि अन्यायी है।
तज देना चाहिये धर्म भ्रष्ट को चाहे सगा ही भाई है॥

तजो अटकनी तुरी घूमती फिरे वृथा वह याम तजो ।
जहां रहने से हो कर्मबंध ऐसे सुख शय्या धाम तजो ॥
जहां भले बुरे में अन्तर ना वहां पांव नहीं धरना चाहिये।
और बुद्धिमान शत्रु अच्छा मूर्ख मित्र तजना चाहिये ॥
रहना उस पै जो गुण जाने नजाने गुण तो क्या रहना है।
हीरे की जौहरी परख करे मूरख ने पत्थर कहना है ॥
तुम अपना सोच विचार करो क्यों मोह में डूबे जाते हो ।
और जानबूझ तुम भी उसके संग क्यों जहर हलाहल खाते हो॥
यदि पक्ष करोगे झूठा तो अन्तिम तुम भी पछताओगे ।
क्या राजपाट धन प्राणी किल्ले खोकर मलते रहजावोगे॥
बस यही हमारा कहना है तुम अपना आप बचा लेना ।
सबसे अच्छा जहां तक होवे रावण को भी समझा देना :।
अब ख्याल हमारा सीता से मिलकर रावण पै जाना है।
समझायेंगे यदि समझा नहीं अन्तिम ऐलान सुनाना है ॥

विभी० दोहा

आपको पहले कह चुका अपने दिल की बात।
इस अकार्य में भ्रात का कभी न दूंगा साथ ॥

चौक

है विचार मेरा यहां तक सीता वापिस करवाने का ।
पर पेश नहीं जाती क्योंकि वो है बेशर्म जमाने का ॥
जो होना सो तो होगा ही तुम वैदेही से मिल आओ ।
हम पता निशान बताते हैं और आप अकेले ही जाओ॥

दोहा

यहां उत्तर की तरफ है देव रमण उद्यान ।
इसी बाग के मध्य है रक्षा शोक महान ॥

चौक

उस वृक्ष तले उन महासती सीता माता का आसन है।
तन मन से ध्यानारूढ हुई मुख नमोकार का भापण है॥
कभी ऐसी हालत होती है नयनों से नीर बरसता है।
सन्देशा राम का सुनने को उसका मन बड़ा तरसता है॥
तुम जावो अभी चले जावो सन्तोष सिया को दे आना।
श्रीरामचन्द्र का सन्देशा और क्षेम कुशल सब कह आना॥
इक्कीस दिवस होगये काल जिस दिन से सीता आई है।
खाना पीना तो क्या बूंद एक जल की नहीं मुख में पाई है॥

दोहा—

निज सेवकजन से किया हनुमत ने संकेत।
फिर परमेष्टी को जपा अविचल राखे टेक॥

चौक

कर जयजिनेन्द्र विभीषण को हनुमान वहां से चल धाये।
अब देवरमण के पास गये तो पहरेदार नजर आये॥
फिर सोचा कि ये देख मुझे कोलाहल सभी मचावेंगे।
मेरा भी समय नष्ट होगा ये भी निज प्राण गमावेंगे॥

दोहा

यदि फाटक रास्ते गया तो होगा विघ्न जरूर।
सीता के फिर मिलन में बाधा है भरपूर॥

चौक

अच्छा है गमन आकाशी से अब अपना सब काम करूं।
जहां रहा शोक वहां जाकर वैदेही को प्रणाम करूं॥

उसी समय बन कर खेचर अशोक वृक्ष पर जा बैठा ।
ना दृष्टि वहां जा सकती थी ऐसे टहने पर जा लेटा ॥
सीता को पंच परमेष्ठी का बस एक वहां शरणा देखा ।
सब अंग कष्ट से दुबले थे और नयनों में जल झरना देखा ॥

दोहा—

कर्म विपाक का कर रही थी उस समय विचार ।
नेत्रों से भी चल रही मानों जल की धार ॥

चौक.

करतल पर करधर बैठी थीं आंखें दोनों थीं मिची हुई ।
गति उदासीन थी माता की तन की तप से नस खिंची हुई ॥
पर चिह्न कुदरती शीलवान के कभी नहीं मिट सकते हैं ।
गुण वैदेही के उस मुरझाये तन में कब छिप सकते हैं ।

दोहा

महासती के दर्श कर खुशी हुए हनुमान ।
मन वच काया से किया दिल ही दिल गुणगान॥
पहला ही अवसर मुझे किये दर्श यहां आन ।
धन्य राम धन्य है सिया धन्य ज्ञान शुभ ध्यान ॥

चौक

श्रीरामचन्द्र की आशा में निज तन को नहीं गंमाया है ।
इक्कीस दिवस होगये आज तक अन्नपान नहीं पाया है ॥
इस तीन खण्ड की रिद्धि पर जुत्ती की ठोकर मारी है ।
और शील रत्न की खान अद्वितीय आज एक यह नारी है॥

इस वैदेही को दशकन्धर निज कर से कभी ना मोड़ेगा ।
मेरा निश्चय तो ऐसा है आयु पर्यन्त न छोड़ेगा ॥
आशा नहीं थी रघुपति की किन्तु इसको ले चलते ही ।
रक्षक योद्ध और लंकपति सब रह जाते कर मलते ही ॥

दोहा--

हनुमान यों वृक्ष पर बैठे करें विचार ।
सीता बोली शोक में ऐसे गिरा उचार ॥
अयि सीता किसकी यहां बैठी आशा धार ।
समय पड़े पर कौन हो किसी का मददगार ॥

सीताजी का गाना

अयि मात तेरी लाडली पर जो मुसीबत आज है ।
कैसे बतावे हाल तुझको सब तरह मौहताज है ॥
प्राणों से प्यारी थी तुझे तुमने विसारा क्यों मुझे ।
अब तप्त ये जिससे बुझे कैसे मिले वो साज है ॥
पति का कथन माना नहीं अपना मैं हठ ताना सही ।
अंजाम कुछ जाना नहीं अब किसपै मुझको नाज है ॥
हे नाथ तुमभी हो खफा दई छोड़ मुझको कर दया ।
किससे कहूं अपनी व्यथा रक्खे जो मेरी लाज है ॥
क्या खबर प्रीतम हैं कहां दिया साथ जिनने था वहां ।
बन बैठी मैं कैदन यहां कहां अवध सुख समाज है ॥
किससे कहूं अब क्या करूं क्या घोट दम अपना मरूं ।
या और कुछ आशा करूं कहां मम पति महाराज हैं ॥

दोहा

कहे आपत्ति शीघ्र अब यह शरीर दे छोड़ ।
प्रेम कहे अभी ठहरजा अपने मन को मोड़ ॥
फिरते होंगे ढूंढते कहां मुझे रघुनाथ ।
यहां पर सौ सौ वर्ष सम कटे एक दिन रात ॥

चौक

निष्ठुर वचन मेरे दशकन्धर कब तक सहता जावेगा ।
फिर अवश्यमेव एक दिन मेरी इज्जत पर हमला आवेगा ॥
कुसुम व्योमवत् रामचन्द्र की आशा निष्फल करना है ।
फिर इस हालत में सिवा मौत के और मुझे क्या शरणा है ॥

दोहा

आशा आशा में हुए मुझको दिन इक बीस ।
लाख वर्ष सम कट रहे मेरे मुहूर्त तीस ॥

— सीताजी का विलाप —

किस तरह मोहताज हो यहां आज मैं मरने लगी ।
अय प्रेम अब तू अलग हट मैं तन जुदा करने लगी॥१॥
देश घर जन सब बिगाना अपना यहां कोई नहीं ।
अनित्य चोला ये हमारा फिर प्रेम कब धरने लगी ॥२॥
पांच सौ मुनिवर पिले घानी में धर्म के वास्ते ।
उन्हीं के शासन में हूं मैं मरने से कब डरने लगी ॥३॥
ढूंढ़ भाल के खूब देखा कर्म रेखा है अटल ।
ना टले अरिहन्त से फिर मैं तो कब बचने लगी ॥४॥

दोहा

देख सिया के हाल को दुखित अंजनीलाल ।
इसी समय ले मुद्रिका दई तले को डाल ॥

चौक

आ पड़ी सिया के पास मुद्रिका नाम राम का खुदा हुआ ।
जब नज़र पड़ी जगदम्बा की तो इकदम दुख सब जुदा हुआ॥
इक दम निरानी चेहरे पर आ खुशी ने डेरा लाया है ।
मानिन्द फूल के खिला हुआ मस्तक खुश रंगत लाया है ॥

दोहा

मन में छाई प्रसन्नता करने लगी विचार ।
अंगूठी रख सामने बोली गिरा उचार ॥

सीताजी का विचारना

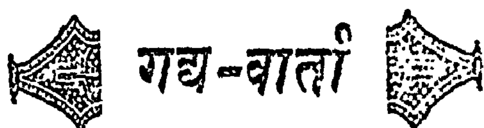
लंका में आई क्योंकर भगवान की अंगूठी ।
क्या प्रेम नाहीं उनसे स्वामिन् को ये अंगूठी ॥१॥
वे राम जिनकी संगत सुरगण भी चाहते हैं ।
उनसे विमुख हुई क्यों श्रीमान् की अंगूठी ॥२॥
भयभीत काल जिनसे उनको है किसने जीता ।
सुरपति भी रच सके ना इस शान की अंगूठी॥३॥
पत्नी भी फांद सागर आये यहां असम्भव ।
हैरान कर रही है गुणधाम की अंगूठी ॥४॥
आशीर्वाद तुमको दूंगी "शुक्ल" बतादे ।
लाया है कौन यहां पर कुलभानु की अंगूठी ॥५॥

दोहा

प्रसन्नानन लख सिया का त्रिजटा के मन उल्लास ।
कहने को वृतान्त यह पहुंची रावण पास ॥

त्रिजटा-दोहा

जय विजय महाराज की दिन २ बढ़े इकबाल ।
यदि हुक्म हो तो जरा कहूं बाग का हाल ॥



गद्य-वार्ता

रावण—आओ त्रिजटा आओ, आज तो तेरा चेहरा बड़ा प्रसन्न नजर आता है, और क्या तुम्हारा हाथ भी कुछ तरी में होना चाहता है ?

त्रिजटा—जी हां महाराज ! आज खुशखबरी सुनाकर इनाम पर अधिकार जमाने आई हूं ।

रावण—तो सुनाओ ।

त्रिजटा—महाराज, अर्ज यह है कि अबतक सीता को सिवाय रुदन के और कुछ नहीं सूझता था परन्तु आज उसका चेहरा बड़ा प्रसन्न है । बस मैं तो इस बात को देखते ही भागी और जैसा देखा वैसा आपको आ सुनाया । अब आप मालिक हैं ।

रावण—बहुत अच्छा किया, त्रिजटा । अब तुम सीता

के पास चलो और मैं महारानी साहिबा को भेजता हूं और पीछे २ मैं भी आता हूं अब तुम घबराना नहीं, बस सीता महलों में आई और तुमने भी पुरस्कार सहित स्वतन्त्रता पाई।

[दासी का जाना तथा रावण का प्रधान महल में आना]

मन्दोदरी–पधारिये २ महाराज आज तो आप अत्यन्त प्रसन्न नजर आते हैं।

रावण–हां महारानी साहिबा. त्रिजटा सूचना देकर गई है कि सीता आज अति प्रसन्न है सो मेरे विचार में तुम पहले जाओ और सीता को समझा कर महलों में ले आओ, मेरा तो यही विचार है कि अब उसने पिछला प्रेम छोड़ दिया होगा। अन्त में इसके सिवा और करती भी क्या?

मन्दोदरी–मुझे तो सीता के सामने जाने में शर्म आती है।

रावण–तुझे तो शर्म आती है? यह नहीं कहती कि सौकन मेरी छाती जलाती है।

मन्दोदरी–खैर छाती तो एक दिन जलनी ही है। यदि आप कहते हैं तो मैं जाती हूँ परन्तु मेरा निश्चय तो यही है कि खास इन्द्र भी आकर सीता को समझाये तो भी सीता अपने धर्म को नहीं त्यागेगी।

[मन्दोदरी का सीताजी के पास जाना]

मंदोदरी–सीता तेरा दुःख मेरे से नहीं देखा जाता।

सीता—तो आपने मेरे दुख मिटाने के लिए क्या उपाय सोचा।

मन्दोदरी—क्या स्पष्ट ही कह दूं।

सीता—जो तू कहने को आई है, सो तुमने कहना ही है स्पष्ट कहदो चाहे अस्पष्ट।

मंदोदरी—बस मेरा तो यही विचार है कि अब तू पिछले प्रेम को छोड दे और दशकन्धर से मुहब्बत जोड़ ले।

सीता तेजी में—बस बस खबरदार—अरी दूतिका मेरे सामने से अलग हट जा, बातें तो क्या मैं तेरी सूरत भी नहीं देखना चाहती।

शेर

हट दुराचारिणी यहां से किसको बहकाने लगी।
जैसा सिखाया भांड ने वैसा ही तू गाने लगी।
धिक्कार तेरे मातु पितु को और तुझे धिक्कार है॥
मक्कार खर जैसा पति वैसी ही तू मक्कार है॥

[शर्म के मारे मन्दोदरी का सिर नीचे करके जाना]

— सीता का विचार करना —

सीता—दोहा

प्रीतम की यहां मुद्रिका गिरी किस तरह आन।
दिल धीरज धरता नहीं बने किस तरह काम॥

चौबो.

जो कारण दिल है समझ रहा वह जिह्वा नहीं कह सकती है।
यदि प्राणपति को कष्ट हुआ तो यह मेरी कमबख्ती है ॥
क्या पक्षी कोई उड़ा लाया जो गिरी यहां पर आ करके ।
क्या देव कोई या विद्याधर कहीं छिप गया इसे गिरा करके॥

सीताजी का विलाप

मैंने ऐसा किया कर्म भारी दिल में होरही है बेकरारी ।
कैसे मुद्रिका राम की आई, लाया कोई इसे क्या चुराई ।
दिल में ये ही है आश्चर्य भारी ॥१॥
राम लक्ष्मणजी जैसे शूरे, सब तरह निज शक्ति में पूरे ॥
रहते सदा बीच हुशियारी ॥२॥
किया छल या किसीने है मारा, शायद प्रीतम मेरे को है मारा
मुद्री अंगुली से तभी उतारी ॥३॥
हाय कर्म तू और सताले, चाहे जितना तू मुझको रुलाले
मैं तो डूबी हूं कर्मों की मारी ॥४॥
अबतो जीमें मेरे यही आवे जान तनसे निकल क्यों न जावे
और करूं क्या मुसीबत की मारी ॥५॥
क्या खबर कहां प्रीतम प्यारे, कौन दिल के भ्रम निवारे
मानूं उसका मैं अहसान भारी ॥६॥

शेर

आशा जो थी दिल में वह सब काफूर बन गई।
दोष किसका इसमें जब कर्मों से तन गई ॥

तन जुदा करने को भी ना कोई सामान है ।
तो खेंचने को हाथ और मेरी जबान है ॥
वैर विरोध त्याग दिल को शान्त करती हूँ ।
शील की रक्षा लिये भगवान मरती हूँ ॥

दोहा----

दृश्य भयानक देख कर झट उतरे हनुमान ।
सन्मुख होकर कहने लगे माता सुनो बयान ॥

— हनुमानजी का गाना —

अरि मात जरा दिल धीर धरो,
अब मरने का ना विचार करो ॥
श्रीराम का भेजा आया हूँ और ये मुद्रिका मैं ही लाया हूँ ।
अंजनाराणी का मैं जाया हूँ माता मुझ पर इतबार करो ॥१॥
पवनभूप का पुत्र हूँ माता राम का सेवक कहलाता ।
तुमरे दर्शन से हुई साता अयि मात जगत उद्धार करो ॥२॥
श्रीरामचन्द्रजी महाराया किष्किन्धा में डेरा लाया ।
वहां से मैं चल कर आया अब मुझ पर कुछ उपकार करो॥३॥
दलबल सैना किष्किन्धा सुध लेने को आया बन्दा ।
निश्चय करलो हे जगदम्बा सब सोच दूर इक बार करो ॥४॥
सुग्रीवादिक नृप आन मिले सब तोड़न को गढ़ लंक किले ।
रावण की शक्ति धूल मिले अपने दिल को होशियार करो ॥५॥
तुमने सती धर्म निभाया है दुनिया में यश फैलाया है ।
तपस्या से तन को सुखाया है अब जनकसुता आहार करो॥६॥

दोहा

भाषण ये बजरंग का सोचा दिल दरम्यान ।
जनकसुता हनुमान से बोली मधुर जबान ॥

सीता-दोहा

आज तलक देखा नहीं तुझको मैंने भ्रात ।
किन्तु महासती अंजना सुनी जगत विख्यात ॥

चौबो--

रंग ढंग से यही नजर आता है तुम कोई सज्जन हो ।
यदि महासती के पुत्र हो तब तो तुम दुःख निकन्दन हो ।
क्योंकि दुनिया में महापुरुष ही दुखियों के दुखको हरते हैं
वह अपना सब कुछ अर्पणकर औरों की खातिर मरते हैं ॥
अब रही बात निश्चय की सो इसमें है कुछ संकोच मुझे ।
जो जला दूध का फूंक छाछ को लाता यह सब ज्ञात तुझे ॥
चालाक आदमी दूजों का बातों से मन भर सकता है ।
और कारीगर मुद्री जैसी दूजी मुद्री कर सकता है ॥

दोहा

इस कारण हे भ्रातजी मुझे नहीं विश्वास ।
और निशानी राम की बतलाओ कोई खास ॥

चौक.

जिससे दिल को विश्वास मिलेकि राम लखन को साता है ।
प्रतिज्ञा पूरी हुए बिना मुझको नहीं अन्न जल भाता है ॥

सन्तोषजनक श्रीराम लखन का यदि सन्देशा सुना देवो ।
फिर तो मुझको एतराज नहीं बेशक अन्न पान करा देवो ॥

दोहा

हस्त लिखित श्रीराम का लेकर कर में लेव ॥
जनकसुता को यह कहा लीजे माता देख ॥

चौक

श्रीरामचन्द्र ने पत्र में लिख रक्खे सभी इशारे थे ।
थे शब्द वे चुन २ के रक्खे जो जो सीता के प्यारे थे ॥
उस लेख में था वह असर भरा जो पढ़े वीरता आजावे ।
जो खुशी हुई पढ सीता को वह कैसे यहां कही जावे ॥
जैसे वसन्त में खिले फूल या जैसे मेला जंगल में ।
और ग्रीष्म अन्त जैसे श्रावण शुभ सखियां जैसे मंगल में ॥
सीता को ऐसे लहर चढ़ी जैसे कि लहर समुद्र में ।
उस लेख पै ऐसे मस्त हुई जैसे अहि भमरा संदल में ॥

दोहा

सोच समझ निश्चय किया अपने दिल मंझार ।
जनक सुता हनुमान से बोली गिरा उचार ॥

सीता दोहा

हे भाई अब मुझको हुआ पूर्ण विश्वास ।
खबर मुझे दी राम की वीर तुझे शाबास ॥

चौक

हे सच्चे उपकारी योद्धा मैं कैसे गुण गाऊं तेरा ।
इस दुर्गम राष्ट्र में आकर तुमने ही कष्ट हरा मेरा ॥

अब इच्छा है प्रवल मेरी श्रीराम के दर्शन चाहती हूं ।
जिस कारण दिल है धड़क रहा सो भी मैं तुझे बताती हूँ ॥

दोहा—

दुर्जन का यह देश है तुम हो चतुर सुजान।
ऐसा ना हो आपको कष्ट देवे कोई आन ॥

चौक.

अब जल्द यहां से जाकर के श्री राम लखन को बतलावो।
क्योंकि मुझको भय लगता है तुमना कहीं यहां रोकेजावो॥
कह देना जो कुछ देर करी तो सिया न जीती पावोगे ।
मैं परभव में पहुंचूंगी यहां और तुम पीछे पछताओगे ॥

दोहा

कर्मगति की चाल को भोगे सकल जहान ॥
कभी बढाते मान यह कभी घटाते शान ॥

चौक—

है महाखेद उपकारी को कहतो हूँ आज चले जावो ।
क्या जोर चले कर्मों आगे बेशक कोई हाथ मले जावो ॥
यह महादुःख मेरी जवान मेरा ही मान घटाती है ।
श्रीरामचन्द्र के सेवक को विश्राम न देना चाहती है ॥

हनु० दोहा (स्वगत)

जैसे सीता नाम है वैसा शीतल काम ।
रामचंद्र से भी अधिक इनकी मधुर जबान ॥

हनु० दोहा (प्रगट)

जनक सुता के जब सुने ये अमृत झरते बैन ।
हाथ जोड़ बजरंगजी लगे इस तरह कहन ॥

चौक

तुम्हें धन्य मात हे जनकसुता औदार चित्तवाली तुम हो।
तुम हो संकट मोचनहारी महाशक्ति सुमति वाली तुमहो ॥
तुम हो जगदम्बा महासती दुखियों का दुख हरने वाली ।
क्या मातपिता क्या पति देश सबको प्रसिद्ध करने वाली ।

दोहा

सेवक की यह अर्ज है सुनो मात कर गौर ।
यदि हुकम हो लंक में दिखलाऊं कुछ जौहर ॥

चौबो.

यदि आज्ञा हो तो मात तुम्हें श्रीराम पै अभी पहुंचा देऊं ।
और आज्ञा हो तो दशकन्धर पापी का शीश उड़ा देऊं ॥
निर्भय होकर हे जगदम्बा तुम अपने मुख से फरमावो ।
दो हाथ दिखाऊं लंका में सेवक की शक्ति अजमावो ॥

दोहा

कर सकते हो जो कहा निश्चय आप निशंक ।
पर द्रव्य काल और क्षेत्र को सोचो ऐ बजरंग॥

चौक—

चलूं आपके साथ वीर इस हालत में यह ठीक नहीं ।
जो लड़े अकेला रावण से तो तेरी भारी पीठ नहीं ॥

बस मेरी यही सम्मति है तुम जल्दी किष्किन्धा जावो ।
दल बल समेत श्रीराम लखन को शीघ्र वीर लंका लावो ॥

हनु० दोहा

जो फरमाया आपने मुझे वही स्वीकार ।
मगर दीन की अर्ज पर करना जरा विचार ॥

चौक.

प्रथम तो, फिकर तजो माता दूजे कुछ अन्न जल पान करो ।
तीजे कुछ आप निशानी दो चौथे फिर आज्ञा दान करो ॥
अब देवरमण उद्यान देख कर किष्किन्धा में जाता हूँ ।
दलबल समेत श्रीरामलखन को जल्दी लंक में लाता हूँ ॥

दोहा

प्रतिज्ञा पूर्ण हुई किया सती ने आहार ॥
फेर दिया हनुमान को चूड़ामणि उतार ॥

सीता-दोहा

लो हनुमत चूड़ामणि रक्खो अपने पास ।
प्रीतम प्यारे से मेरी करना ये अरदास ॥

चौक

हाथ जोड़ कर यह कह देना तुमरे दर्शन की प्यासी हूँ ।
क्यों आपने मुझको भुला दिया मैं तो चरणों की दासी हूँ ॥
अब कृपा करो इस हालत पर क्योंकि तुम दुःख निकन्दन हो ।
रघुकुल दिनेश काटो क्लेश दशरथ के आप सुनन्दन हो ॥
लक्ष्मण देवर को कह देना तुम पर ही तो विश्वास मेरा ।
और सिर्फ आपके नामों पर चलता है श्वासोश्वास मेरा ॥

रौरव नरक से भी बढ़कर यह देवरमण उद्यान मुझे ।
यदि हुई देर लाचार जिस्म करना होगा श्मशान मुझे ॥

हनु० दोहा

माता अब विश्वास कर हुआ सकल दुख दूर ।
लंकपति की लंक से उड़ने वाली धूर ॥

चौक—

मानिन्द घटा के राम लखन लंका पर छाने वाले हैं ।
बिजली समान वर धनुषःबाण वर्षा वर्षाने वाले हैं ॥
जैसे नभ में बादल समूह ऐसे ही विमान अड़ा देंगे ।
रावण की सारी शक्ति को क्षण भर में धूर मिला देंगे ॥

—हनुमानजी का आश्वासन—

तेरा चमकेगा तेज सितारा सती
तैनें पतिव्रत धर्म निभाया है और कष्ट अतुल ही उठाया है ।
हमको तेरा ही है आधार सती ॥१॥
तैनें धर्म पर जान कुर्बान करी लिये रावण के हुई तेज छुरी ।
होगा दुष्ट का अब संहार सती ॥२॥
श्री राम लखन अब आवेंगे गढ लंका को धूर बनावेंगे ।
यहां का पुण्य खतम हुआ सारा सती। ३॥
तैने सतियोंका धर्म प्रकाश किया सच्चे शील भवनमें वासकिया।
समझा सब कुछ और असार सती ॥४॥
दुख दूर हुआ विश्वास करो नमोकार मन्त्र का जाप करो।
श्री जिनवर का लो सहारा सती ॥५॥

अब किष्किन्धा को जाता हूँ यही आज्ञा आपसे चाहता हूँ ।
लेवो अब प्रणाम हमारा सती ॥
हम संग राजे हैं बलवान कई और दलबल का कुछ पार नहीं ।
ध्यावो "शुक्ल" ध्यान सुखकार सती ॥७॥

सीता दोहा

बार २ रघुराय से यही मेरी अरदास ।
कह देना श्रीराम को अब मत करो निराश ॥

हनु० दोहा

माता मत घबराइये दिल में धारो धीर ॥
चन्द दिनों में आपकी हर लेंगे सब पीर ॥

चौक

जो कहा आपने आदि अन्त पर्यन्त राम से कह दूंगा ।
मुझको यहां कुछ भी कष्ट नहीं यदि होगा तो सब सह लूंगा ॥
अब आने में कुछ देर नहीं श्रीराम को यहां समझ माता ।
लो नमस्कार मैं जाता हूँ श्री वीतराग को भज माता ॥

दोहा—

नमस्कार कर चलन को हनुमत हुआ तैयार ।
जल भर नयनों में सिया बोली गिरा उचार ॥

—सीता का गाना—

जावो जावोजी हनुमत् लावो जल्दी राम लखन को लावो ।
प्रीतम बिन यह नयन तरसते दर्शन बिन दिन रैन बरसते ।
सब जाकर हाल सुनावो ॥ १ ॥

प्रेम के पुंज दया के आगर, रघुकुल दीपक करुणा सागर ।
अब ना मुझे तरसावो ॥ २ ॥
मैं दुखियारी कर्मों की मारी सेवा ना कुछ करी तुम्हारी ।
ख्याल न दिल में लावो ॥ ३ ॥
सावधान हो करके जाना प्रीतम को सब अर्ज सुनाना ।
अब आनन्दघन बरसावो ॥ ४ ॥

दोहा

सीता को सन्तोष दे चले वीर हनुमान ।
लगे देखने घूम कर देवरमण उद्यान ॥

चौक

कभी खाते हैं सन्तरा कभी बदाम की डाल झुकाते हैं ।
कभी लेवें तोड़ अनार रक्त फूलों पर हाथ जमाते हैं ॥
फिर पहुंचे वीर अंगूरों के गुच्छों पर हाथ चलाने को ।
यह हाल देख उस तरफ बाग का माली लगा चिल्लाने को ॥

माली-दोहा

अरे २ कहा करत भयो रह्यो अंगूर उजाड़ ।
मानत नाहीं ढीठ तू आकर देऊं सुधार ॥

चौक—

आकर देऊं सुधार तोये मरनो पसन्द आयो है ।
बिना हुक्म तू देवरमण में कैसे घुस आयो है ॥
देऊं थोथरो तोड़ फेर जो मुख अंगूर पायो है ।
यह सरकारी बाग मूढ़ तू किसको बहकायो है ॥

दौड़—

आज तू कैद परेगो जेहल में कष्ट भरेगो, हुक्म नहीं यहां ाने को, आन फंस्यो फन्दे मेरे अब नहीं सूखो जाने को।

— माली का गाना —

अरे ढीठ उद्यान में क्यों बड़ा।
किस तरह घुस गया जबकि पहरा खड़ा॥
तोड़ने फल न दूंगा मैं हरगिज कभी,
निकल वाटिका से तू बाहर अभी।
नहीं तो लगे बांस अब कड़कड़ा॥१॥
हुक्म रावण का हमको बड़ा सख्त है,
तू तो सुनता नहीं फिर रहा मस्त है।
बेइजाजत तू क्यों बाग में आवड़ा॥२॥
तेरे सिर पर समझ मौत मंडला गई,
परभव में जाने की तेरी खबर आगई।
मैं था बेसुध गफलत में सोया पड़ा।३॥

दोहा—

बड़बड़ करता इस तरह पहुंचा हनुमत् पास।
निडर वीर खाते रहे हुए ना जरा उदास॥

चौक

यह हाल देख खामोशी का माली गुस्से में लाल हुआ।
नयनों में डोरे रक्त खिंचे और भृकुटि सहित निडाल हुआ॥

आकृति देख यह माली की अंजनीलाल मुस्काते हैं ।
और प्रेमभाव से माली को यों शीतल वचन सुनाते हैं ॥

हनु.दोहा

वागवान् कहो क्या तुम्हें होरहा कम्पन वाय ।
मस्तक में कुछ फर्क या गर्मी रही सताय ॥

चौक--

आवो बैठो यहां शान्ति से और हमको आज बताओ सब !
जो रोग औषधि सो दूंगे क्योंकि फिर आवेंगे कब कब ॥
एक रोग तो है प्रसिद्ध मुख आकृति से दर्शाता है ।
वह रोग क्रोध रूपी अग्नि जो मुख आंखों से बरसाता है ॥

दोहा

हनुमान के वचन सुन होगया लाल अंगार ।
दांत पीस और शस्त्र ले बोला गिरा उचार ॥

माली-दोहा

अरे ढीठ तू हमन से रह्यो मखौल उड़ाय ।
मुद्गर सो यह सर तेरो देऊं धरन गिराय ॥

चौबो --

जो बाग उजाड़ गेरो तूने इसका अब स्वाद चखाऊंगो ।
और जकड़ के रस्सों से तोहे रावण के पास ले जाऊंगो ॥
काल तेरे सिर पर छायो जो हमें बीमार बनावत है ।
चौर कहीं को आन घुस्यो और उल्टो धौंस दिखावत है ॥

दोहा

माली का वक्तव्य सुन कोपे पवन कुमार ।
कुछ तेजी में आन कर बोले गिरा उच्चार ॥

हनु० दोहा

किस कारण अनुचित रहा अपनी जबां चलाय ।
क्या तेरे सिर पर रहा आज शनिश्चर छाय ॥

चौक

केवल यही विचार मेरा कि किस पै हाथ उठाऊं मैं ।
तुला आज दशकन्धर को जिसको शक्ति दिखलाऊं मैं ॥
नआपन का धर्म नहीं तुझ रंक का खून बहाऊं मैं ।
किन्तु अनुचित भाषण का थोड़ा सा स्वाद चखाऊं मैं ॥

दोहा

माली की दाढ़ी पकड़ दिये तमाचे चार ॥
दो ठोकर पीछे दई मच गया हाहाकार ॥

चौक—

रुदन सुना जब माली का तो मालिन भी दौड़ी आई है ।
बच्चे बच्ची मजदूरों ने कोलाहल अधिक मचाई है ॥
यह देख हाल उस बाग के सारे रक्षक भी दौड़े आये हैं ।
मारो पकड़ो भाग न जाये सब मिल कर शोर मचाये हैं ॥

दोहा

देख हाल ये पवनसुत मन में करें विचार ।
व्यर्थ ये प्राण गंवायेंगे फिर बोले गिरा उचार ॥

हनु० दोहा

मूढ सभी क्यों बन गये भागो बचाकर प्राण ।
नहीं द्वेष तुम से कोई कहा मेरा लो मान ॥

चौबो—

क्यों हमसे रार बढ़ाते हो निज २ स्थान प्रस्थान करो ।
भरण पोषण करो पितु मातका निज बच्चों को प्यार करो॥
क्यों बबर केहरि साथ छेड़ कर मौत पराई मरते हो ।
अनमोल समय ना मिले फेर क्यों व्यर्थही करसे खोतेहो॥

दोहा—

सुन कर हनुमत के वचन रक्षकराय रिसाय ।
क्रोधोन्मत्त प्रधान हो ऐसे वचन सुनाय ॥
अब पछताये क्या होत है जब चिड़ियां चुगगई खेत।
माफी माली से मांग लो अपनी रक्षा हेत ॥

चौक

ना छूट सके यूं बात करन से अब तेरा उल्लू बनायेंगे ।
और मार २ कर होश भुलादें दुग्ध छठी का याद करायेंगे ॥
ये बात सुनत ही अंजनीलाल के क्रोध वदन भर आया है ।
विकराल बदन और गर्ज तर्ज कर थप्पड़ एक जमाया है ॥
परत वज्र के सम चपेटिका प्रधान धरणि पर जाय परा ।
प्रचण्ड तेज लख अंजनीकुमर का सबने दिल में खोफ भरा॥
टांग से पकड़ २ कर सबको इक दूजे पै गैंद सम फैंकते हैं ।
ये मार करारी देख कुमर की जा. सभा में अर्ज सुनाते हैं ॥

दोहा—

भाग दौड़ माली गये रावण के दरबार ।
सभी दुहत्थड़ मार कर करने लगे पुकार ॥

चौबो

ध्यान सिया का हृदय में दशकन्धर लाये बैठा था ।
सब यथा योग्य बैठे बायें सिंहासन पर पुत्र कनिष्ठा था ।
जब दृष्टि उठाकर देखा तो माली सन्मुख सब रोते हैं ।
नृप ध्यान हटा कुछ सीता से इस तरह मुखातिब होते हैं॥

रावण-दोहा

क्यों रोते अय मालियो कहो कष्ट का हाल ।
किसने मारा है तुम्हें सूज रहे जो गाल ॥

माली-दोहा

बुरो हमन को हाल हुओ सुनो श्री महाराज ।
बालबचन के भाग से बची जान यह आज ॥

चौक. नं०

बची आज ये जान आपके पास दौर आये हैं ।
अर्ज यही कि देवरमण रहने को भरपाये हैं ॥
तोड़ गेरो सब बाग फूल अंगूर सभी खाये हैं ।
आन घुसो कोई चोर बाग में हम सब घबराये हैं ॥

दौड़

पतो ना क्या बलाय है, किसी से डरत नांय है, तुमन

को काढ़े गाली, चमू प्रधान से मार दिये हम तो गरीब हैं माली ।

दोहा—

अक्षय कुमर सुतकी तरफ देखा नजर उठाय ।
विनीत पुत्र झटपट उठा बोला मस्तक नाय ॥

अक्ष०—दोहा

चाहता था मैं भी यही ठीक किया उपकार ।
देवरमण जाकर अभी देखूं कौन गंवार ॥

चौक—

कवच शस्त्र धारण कर जाऊं संग में सैन्य ले जाता हूं ।
कौन दुष्ट ये घुसा बाग में अभी पकड़ कर लाता हूं ॥
शीश झुकाया पिताको अपने आ टुकड़ीको हुक्म सुनाया है ।
अस्त्रों शस्त्रों से सजवा करके देवरमण में आया है ॥

दोहा

निशंक वहीं थे घूमते अमित बली हनुमान ।
देख अकेला वीर को बोला अक्ष धर मान ॥

अक्ष०-दोहा

विन आज्ञा इस बाग में घुसा किस तरह आन ।
कारण यह जल्दी कहो नहीं तो काढूं प्राण ॥

चौक

यदि प्राण प्यारे हैं तो सच २ हाल बता देवो ।
नहीं तो इस तलवार को सिर देकर के परभव को जावो ॥

हाथ जोड़ कर क्षमा मांग माली को शीश निवा जाओ ।
फिर मांगो माफी सबजनसे यदि जान बचानी निजचाहो॥

दोहा

वाह-वाह-वाह क्या खूब तू बजारहा है गाल ।
जैसा रावण चोर तुम वैसे जन्मे लाल ॥

चौक

इसमें ना दोष कोई तेरा कुदरत ने मेल मिलाया है ।
ले भागी बुआ तेरी खर को और बाप सिया ले आया है॥
अब नीच कमीने बता बाग में क्या मैंने लूट लिया ।
इक तुझ पर ही क्या ख्याल करें आवा ही सारा ऊत गया॥
दैवान कहूं या पागल तुम मनुष्यपने को खो बैठे ।
श्री रामचन्द्र की नार चुराकर जिन्दगी से कर धो बैठे ॥
तुम कहते इसको देकरमण मैं कहता तस्कर पल्ली है ।
बस कारण यहां पर आने का सीता नासमझ अकेली है ॥
अपने भुजबल की शक्ति से लंका में आज विराज रहा ।
यदि शक्ति है कुछ दिखलावो मैं सबके सन्मुख गाज रहा ॥

दोहा

हुई परस्पर इस तरह दोनों की तकरार ।
दोनों योद्धों ने लिये कर में शस्त्र धार ॥

चौबो.

अक्षकुमर ने बिगुल दई झट मारा मार मची भरी ।
अब चले वीर के बाण सरासर सैना का करते संहारी ॥

पता लगे ना बाण कब ग्रहा तान के कब फिर छोड़ दिया ।
यों छाया सारा व्योम बाण से चंदोवा सा तान दिया ।
जिधर गये बजरंगी बाण सब सेना चपट कर डारी है ।
ये हाल देख घबराई सेना भगी पड़ी अति भारी है ॥
भगदड़ लखी है अक्षकुमर ने निज धनुष बाण उठाया है ।
पर पेश गई ना वीर के सन्मुख शरासन अपना दिखाया है ॥
अब अक्षकुमर शमशेर तान हनुमान के सन्मुख आन खड़ा ।
और इधर वीर बजरंगी का बज्र पर दाहिना हाथ पड़ा ॥
अक्षकुमर ने खड़ग तान कर अंजनीलाल पर झोंक दिया ।
पर पवन पुत्र ने वार बचा निज बज्र इस पर ठोक दिया ॥

दोहा

अक्षकुमर धरनी गिरा मचगया हाहाकार ।
कुछ बचे आदमी सैन्य के दौड़े करन पुकार ॥

दूत रावण को दोहा

बज्रपात प्रभु हो गया परलोक सिधारे कुमार ।
जब कहे वचन यों सभा में छाया शोक अपार ॥

दोहा

सुना मरण लघु भ्रात का इन्द्र जीत रणधीर ।
तमक उठा सारा बदन यों बोला बलवीर ॥

नौ. चौक

यों बोला बलवीर देखूं जा बला ये क्या आई है ।
यदि निकला कोई अन्य मनुष्य तो उसकी शामत आई है ॥

तीन खंड में भुजबल की शक्ति मैं दिखलाई है।
आज यह फर्तव्य करने की यहां किसमें जुर्रत आई है॥

दौड़

किये का दण्ड पायेगा, भागकर कहां जावेगा, सिर्फ आज्ञा चाहता हूं, बांधजूड़ कर उसी दुष्ट को अभी यहां लाता हूं।

रावण–दोहा

हां बेटा जाओ अभी देवरमण उद्यान।
पकड़ उसे लाकर धरो मेरे सन्मुख आन॥
कवच पहन तन पर लिये सब हथियार सजाय।
इन्द्रजीत उस बाग में पहुंचा जल्दी जाय॥

चौबोला

..ब नजर मिली बजरंगी से तो दोनों वीर मुसकाये हैं।
दोनों के भुजबल फड़क उठे शस्त्रों पर हाथ जमाये हैं॥
जब अक्षकुमर को देखा तो नयनों में सुर्खी छाई है।
तब क्रोधातुर हो इन्द्रजीत ने ऐसे बात चलाई है॥

इन्द्र दोहा

अय मूरख तू किस लिये फंसा मौत मुख आन।
इकलौता हो लाल तू सोचा नहीं नादान॥

चौक

क्यों प्रहलाद का वंश आज निर्वंश करन की ठानी है।
अब लंका से नहीं लेजा सकता तू अपनी जिन्दगानी है॥

अक्षकुमर और वज्रमुखा दोनों को तूने मारा है ।
अब सोच जरा अपने मन में कैसे होगा छुटकारा है ॥
यदि ख्याल हो तेरा भागन का सो भी आशा निष्फल होगी ।
यदि साहस करेगा लड़ने का तो भी तुझको मुश्किल होगी ॥
बस एक यही रास्ता तुमको पहनों कर में जंजीर अभी ।
चल सैर करो कारागृह की बख्तर शस्त्र दो छोड़ सभी ॥

चौक--

सुनकर के व्याख्यान ये कोपे अंजनीलाल ।
गर्ज तर्ज कहने लगे दोनों नेत्र निकाल ॥

हनु. शेर—

संहार इस वज्र से मैंने दोनों का ही कर दिया ।
ठोकर से गेरूं ताज रावण का ये दिल में धार लिया ॥
जामात तेरे बाप का जंजीर पहनेगा नहीं ।
कंगनाविजय का हाथ में सज कर दिखा देगा यही ॥
आदत ये तेरे बाप की है दुम दबाकर भागना ।
हम शूरमों का काम हैं शत्रु के सन्मुख गाजना ॥
मुश्किल बताता जंग में धोखे में रह जाना नहीं ।
इस मौत रूपी वेग में तू देख बह जाना नहीं ॥
कहना तेरा ठीक है अंजना का मैं इक लाल हूं ।
उस सिंहनी का सिंह तुम सबके लिये मैं काल हूं ॥
सिंहनी के सिंह ही होते अतुल बलवान हैं ।
मानिन्द गधों के जन दिये मन्दोदरी ने लाल हैं ॥

इन्द्र शेर—

शेखियां तेरी सभी यह धूल में मिल जायेंगी ।
पहुँचेगा तूं परभव में और बातें यहां रह जायेंगी ॥

हनु. शेर—

शक्ति है कितनी मुझ में यह वज्र पता देगा।
आ सामने तुझको तजर्बा सब बता देगा॥

दोहा—

सुनी कार करती हुई हनुमान की बात।
इन्द्रजीत का क्रोध से लगा कांपने गात॥

चौक—

जुट गये वीर रण में दोनों ही थे गम्भीर बली।
बाणों की वर्षा बन्द हुई फिर दोनो की तलवार चली।
कभी नभ में कभी भूतल पर अपअपना जोर लगाते हैं।
ना वो हारे ना वो हारे दोनों ही लज्जा खाते हैं॥

दोहा

देख तेज हनुमान का इन्द्रजीत हैरान।
वज्रांगदली के सामने ढला आज सब मान॥

चौक

इन्द्रजीत मन सोच रहा ये तो बिल्कुल ही आफत है।
हनुमान भी यही विचार रहा किसको दे बैठा जाफत है॥
रावण से भी दो बातें करके किष्किन्धा को जाना है।
दे रामचन्द्र को सभी खबर सीता का कष्ट मिटाना है॥

हनु. दोहा—

चेहरे पर कहो किस लिये गई उदासी छाय।
अपने दिल के भाव सब देवो जल्द बताय॥

चौक

क्या मुझको रिस्तेदार समझ तुमने नहीं चोट लगाई है।
दशकन्धर के पास चलूं यदि दिल में यही समाई है॥
मैंने तो समझा था लंका वालों में कुछ दानाई है।
पर यहां अकल के खाने में सबके ही फिकर सफाई है॥

हनु. दोहा—

क्यों मेंढ़क सा उछल कर रहा जबान चलाय।
स्वयं आप घबरा गये हमको रहे चिढ़ाय॥

चौक.

अभी मैंने तो केवल तेरी शक्ति ही आजमाई है
ले सम्भल खड़ा होजा जल्दी अब तेरी शामत आई है
जब मौत शृगाल की आती है तो ग्राम सामने जाता है
था अब तक रिश्तेदार किन्तु अबतो शत्रु कहलाता है।

१

दोहा--

इतना कह बजरंग पर नाग फांस दिया डार।
बैठा कर विमान में पहुंचा लंका मंझार॥

---

१ एक दैविक अस्त्र, जिसके फन्दे से कोई नहीं बच सक
इसके दो भेद होते हैं (१) अमोधिक (२) तार्दियंक, इनमें
अमोधिक होता है "गारुडी विद्या" द्वारा खुलता है तथा "तार्दियंक"
को "गरुडास्त्र" वाला भी तोड़ डालता है।

चौक.

आ पेश किया दशकन्धर के सन्मुख हनुमत बैठाया है।
तब इन्द्रजीत की पीठ ठोक दशकन्धर अति हर्षाया है॥
दरबार ऐन भरपूर हुआ कई देख २ खुश होते हैं।
कई बुद्धिमान अन्याय समझ अंजाम सोचकर रोते हैं॥
और विभीषण भी अपने सिंहासन पर थे विराज रहे।
कुछ अन्तर से थे भानुकर्ण योद्धा भी वहां विराज रहे॥
देख देख निज गौरव को दशकन्धरजो खुश होते हैं।
फिर पवनपुत्र से लंकपति इस तरह मुखातिब होते हैं॥

(हनुमानजी व रावण का संवाद)

रावण–अहो पवन पुत्र यह तुमने क्या किया ?

हनुमान–जी हां जब तक आतमा की मोक्ष नहीं हो जाती तब तक यह संसार में कुछ न कुछ अवश्यमेव करता ही रहता है इसलिये आपकी इच्छानुसार जो कुछ आपको अच्छा लगा सो आपने किया और जो कुछ मेरा कर्त्तव्य था सो मैंने किया।

रावण–क्या तेरा यही कर्तव्य था कि चोरी से देव-रमण में घुसना बागवानों को सताना, नागफांस में फंसकर यमराज के हाथ में अपनी जान देना।

हनुमान–आपकी बात बिलकुल ठीक है किन्तु मेरे साथ सम्बंध नहीं बैठता यदि आप हृदय में विचार कर देखें तो आपके ऊपर ही घटता नजर आयेगा।

रावण—अरे हनुमान तेरी समझ पर क्या पत्थर पड़ गये ? मैं तो भानेज जंवाई समझ कर प्रेम से कुछ पूछना चाहता हूं और तुम मेरे से विपरीत ही चलते हो और यह गन्दी बात हमारे ही ऊपर डालते हो।

हनुमान—वाह तो क्या कहने हैं आपको एक शर्म नहीं और सब गहने हैं, अजी भानेज जमाई के वास्ते तो आपके प्रेम की सीमा ही न रही अहा हा देखो तो यहां ऐसा आभूषण कोई प्रेम के विना किसी को पहिना सकता है हर्गिज़ नहीं और इसका नाम भी क्या है--(नागफांस) और जिस बात को आप अपने वास्ते गन्दा समझते हैं उसे प्रेम भाव से ही तो मेरे ऊपर लगा रहे हैं।

रावण—अरे यह तो तेरे खोटे कर्मों का फल है।

हनुमान—वाह यह खूब उचरे नानी खसम करे दोहता चट्टी भरे। दुष्ट काम करने वाले आप और इसका फल भोगने वाला मैं। भला जहां ऐसा घोर अन्याय हो वहां का राज्य और सुख सम्पत्ति क्यों ना नष्ट हो यह किसी कवि ने क्या ही उत्तम पद कहा है कि—

विगरे पय कांजी की छींट परे कलधौत कुधात परे विगरे।
विगरे तपपुंज कषाय चढे पद ऊंच कुसंगति ते विगरे॥
विगरे कुल जात कलंक लगे नृपराज अनीति करे विगरे।
विगरे हित मित्र जहां छल है शुभ धर्म मृषामति ते विगरे॥

रावण—अनीति मैंने करी या तूने ?

हनुमान—सोचो मैंने करी या कि तुमने ?

रावण–सोचने की क्या बात है यह तो प्रत्यक्ष सामने नजर आती है और अब भी आंखों में धूल डालना चाहता है।

हनुमान–क्यों बतलाइये मैंने क्या करी।

रावण–अरे दुष्ट तूने आशाली कोट को क्यों ढाया।

हनुमान–तुमने क्यों लगाया क्या किसी दुष्ट कर्त्तव्य का डर था।

रावण–देख जबान को लगाम लगा।

शेर

औकात अपनी देखकर बातें बनाना चाहिये।
जैसा पचे भोजन उदर में वैसा खाना चाहिये॥

हनुमान–हां, मुंहजोर टट्टू को कांटेदार लगाम की पावश्यकता है।

शेर

क्षत्रिय का जो चिन्ह वह ललकारता मैदान में।
चोर की औकात क्या बातें करे जो सामने॥

रावण–अच्छा तैंने वज्रमुख को क्यों मारा?

हनुमान–उसने मुझको क्यों रोका?

रावण–अपना कर्त्तव्य पालन के लिये।

हनुमान–उसका क्या कर्त्तव्य था।

रावण–अन्य राष्ट्र वालों को अन्दर नहीं आने देना।

हनुमान–यदि दूत हो तो ?

रावण–तो दूत को नहीं रोकना।

हनुमान–बस मैं आपके कथनानुसार निर्दोष होगया।

रावण–क्या तू दूत है ?

हनुमान–और क्या भूत हूँ ?

रावण–किसका दूत बन के आया है।

हनुमान–वाह ! आप किस अन्धेरे में बैठे है, आपके पास पता आ चुका। सारी दुनिया में प्रसिद्ध हो चुका, यदि आपको फिर भी पता नहीं तो बताये देता हूं–मैं दूत हूं अयोध्यापति श्री महाराज रामचन्द्रजी का।

रावण–वाह ! यह खूब सुनाई, जंगली भीलों का दूत बन के आया है। खैर इस बात को फिर चलायेंगे परन्तु पहले यह बतला कि देवरमण बाग में विना आज्ञा क्यों घुसा?

हनुमान–देवरमण कहां है ?

रावण–तुमको खबर नहीं !

हनुमान–किस बात की !

रावण–अरे जहां पर मोटे २ अक्षरों में लिखा हुआ है क्या तुमको यह भी नजर नहीं आया ?

हनुमान–अच्छा तो देवरमण शब्द जहां मर्जी लिख दें चाहे वह चोरपल्ली सी क्यों न हो तो क्या उसी का नाम देवरमण हो जाता है।

रावण–अरे ज़हां तैने मालियों को मारा, अक्षकुमार

को मौत के घाट उतारा, जहां मेघनाद ने तुझको नागफांस में बांधा क्या वो चोरपल्ली है ?

हनुमान–चोरपल्ली नहीं तो और क्या है ?

रावण–भला कैसे चोरपल्ली है !

हनुमान–अजी जहां चुराई हुई वस्तु छिपाई जाय और किसी भले पुरुष को भी अन्दर न जाने दिया जाय।

रावण–क्या छिपाया ?

हनुमान–जिस काम को नीच भी नहीं करते उस नीच से भी नीच काम को आपने किया। श्रीरामचन्द्रजी की महाराणी सीताजी को चुराया और उसे चोरपल्ली में छिपाया। उसको छिपाने वाला चोर नहीं तो और क्या ? और जहां सीता को छुपाया वह चोरपल्ली नहीं तो क्या ?

रावण–तू दूत है वरना तेरा सिर उड़ा देता।

हनुमान–क्या कहना है शूरमा हो तो ऐसा ही हो, वन में गीदड़ की भांति छिपकर सिंहनाद बजाना, धोखे से सीता को चुराना, पूँछ दबाकर भागना, भला कभी ऐसे २ नपुंसकों ने भी मैदान मारा है। असली बात का कोई उत्तर नहीं, बस यही सीखे हैं कि सिर उडा दूंगा, अजी सिर तो आपका उड़ने वाला है जिसको आप बुलावा दे आये हो। क्या वो लक्ष्मण का शस्त्र आपका सिर लेने को न आयेगा। नहीं नहीं अवश्य ही आयेगा।

रावण–यदि तू दूत है तो अक्षकुमार के साथ लड़ने की क्या जरूरत थी।

हनुमान–निरापराधी के ऊपर वार करने का तो मेरा भी नियम है।

रावण–उसने तेरा क्या अपराध किया था ?

हनुमान–हां, हां-गालियां दीं मारने को शस्त्र झौंका, क्या फिर भी अपराधी ना हुआ।

रावण–अरे तैंनें पहले मालियों को सताया, ठोकरों तमाचों से उनका शरीर व मुख सुजा दिया फिर भी तू अपराधी ना हुआ ? और बाग का मालिक, गरीब मालियोंका सहायक अन्नकुमार अपराधी बनगया ?

हनुमान–हां अपराधियों का सहायक अपराधी नहीं तो और क्या होता है

रावण–मालियों ने तेरा क्या बिगाड़ा ?

हनुमान–हां उन्होंने अनुचित शब्द कहे, बदज़बान चलाइ। और मैंने दो थप्पड़ व ठोकर लगाई।

रावण–तू उन्होंकी आज्ञा बिना देवरमण में क्यों घुसा और क्यों फल खाये।

हनुमान–फिर वही बात। अजी मैं तो चोरपल्ली में गया था अपना मुद्दा ढूंढने के लिये सो मेरा कार्य सिद्ध होगया और मैं लंका को चोरपल्ली, यहां के निवासियों को चोर और आपको सब का सरदार समझता हूँ।

रावण-शेर

अब अधिक जो कुछ कहा तो सिर उड़ा दूँगा।
तेरे जिस्म से जीव का नाता छुड़ा दूंगा ॥

हनुमान-शेर

शेखियां तेरी ये मिट्टी में मिलाऊंगा।
ताज ठोकरसे गिरा मस्तक का जाऊंगा॥

मेघनाद-पिताजी आप किस पागल से मगजपच्ची कर कर रहे हैं। महाराज भूत का इलाज हमेशा जूत होता है, आप तो शांति के समुद्र हैं परन्तु ऐसे अयोग्य शब्दों को मैं नहीं सहार सकता।

[खड्ग खेंचकर]

शेर

अनुचित शब्द कहने से पहले सिर उड़ा देता।
खाल में भुस भरके रास्ते पर टिका देता ॥
बसमैं आगे और कुछ कानोंसे सुन सकता नहीं
सिर उड़ाये बिन मैं इस शत्रुका रहसकता नहीं॥

विभीषणजी-बस, बस, बेहया बेशर्म कुपात्र—तू कहां से कुल कलंक पैदा होगया। तू भाई रावण का हितैषी नहीं किन्तु शत्रु है, भला तेरा बीच में बोलने का क्या अधिकार था। अय मूढ़! तूने आज असंख्य पीढ़ियों से और असंख्य समय से चली आती हुई राजनीति का भंग किया है। बस यदि अपना भला चाहता है

तो चुपचाप यहां से वापिस उसी जगह बैठ जाओ, मैं इस अन्याय को नहीं देखना चाहता, यदि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो अपनी तलवार से तेरा सिर उड़ा दूंगा। जब तक मैं जीता हूँ जहां तक मेरी शक्ति है तब तक अपने भाई त्रिखंडेश्वर श्री दशकन्धर के गौरव को नीचे नहीं होने दूंगा। दूत का कर्त्तव्य है अपने स्वामी की आज्ञा नर्म या कठोर जैसी मर्जी वैसे कठोर शब्दों में सुना सकता है और सुनना हमारा कर्त्तव्य है।

रावण—ठीक विभीषण का कहना ठीक है और तुम गलती पर हो। राजनीति में दूत अवध्य है और यह भी सोचना चाहिये जिसको जैसी संगति होती है वैसे ही उसमें संस्कार पड़ जाते हैं किसी ने यह सत्य कहा है कि—

दोहा

जैसी सोभत बैठते वैसे ही गुण लीन।
कदली सीप भुजंग मुख एक बूंद गुण तीन॥

जैसे जंगली मनुष्य राम लक्ष्मण हैं वैसा ही यह दूत है एक और भी सोचने की बात यह है कि जब उनकी स्त्री पर हमारा अधिकार है क्या बिचारे गालियों से भी गये, यही तो निर्बल और शक्तिशालियों की परीक्षा की कसौटी है यह स्वाभाविक बात है कि निर्बल गालियां ही निकाला करते हैं और बुद्धिमान उसको सह जाते हैं। इसलिये तुम अपने दोष

को स्वीकार करते हुए उल्टे पैरों अपने सिंहासन पर बैठ जाओ।

इंद्रजीत—पिताजी आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है परन्तु यह याद रक्खें कि चचा साहिब ने इस समय शत्रु की सहायता की है और मेरा सिर उड़ाने में नीति समझी है और आपने भी शत्रु की सहायता करने वाले की प्रशंसा करी है लेकिन समय आने पर आपको प्रत्यक्ष दिखला दूंगा कि देख लो शत्रु की सहायता पर पूर्ण तुले हुए हैं ऊपर से ही ये तुम्हारे भाई हैं और प्रेम दिखलाते हैं किन्तु निश्चय में ये शत्रु हैं, आप भी इनके साथ मिलकर नीति २ पुकारते हैं, पिताजी दुनियां में शक्ति ही नीति है। कहावत भी प्रसिद्ध है कि—"जिसकी लाठी उसी के सिर" शत्रु और कांटे को जहां पावे वहीं मसल देना चाहिये, बस यही सर्वोत्कृष्ट नीति है। शक्तिशाली अपना काम कर जाते हैं और निर्बल नीति २ करते मर जाते हैं, अच्छा हमें क्या जैसी मर्जी वैसा करें, जब आपके सामने कोई कठिन समस्या आयेगी तब स्वयं पता लग जावेगा।

[मेघनाद का अपने स्थान पर बैठ जाना]

रावण—क्यों हनुमानजी कुछ घबरा रहे हो या किसी विचार में लग रहे हो ?

हनुमान—जी नहीं घबराना किससे है, कुछ आप लोगों का

तमाशा देख रहा था और कुछ विचार भी कर रहा था।

रावण–क्या विचार कर रहे थे ?

हनुमान–जी हां एक दृष्टान्त पर मेरा ध्यान चला गया था सो उसको आपके ऊपर ही घटा रहा था।

रावण–फेर घटा है या नहीं ?

हनुमान–जी हां बिल्कुल ठीक बावन तोले पाव रत्ती।

रावण–क्या दृष्टान्त है हम भी सुनें।

हनुमान–महाराज एक पर्वत के समीप कुछ मिरासी लोग रहा करते थे। पथरीला क्षेत्र विशाल था, अन्नादिक की उत्पत्ति कम होती थी। वहां के राजा ने सोचा कि इन रंक मिरासियों से क्या कर लेना है मानो एक स्वतन्त्र मिरासियों की रियासत ही बन गई थी। प्रायः ये लोग कलह प्रिय होते ही हैं एक दूसरे के घर मुहल्लों पर अधिकार जमा लेते थे कई पीढियों तक इनकी यही दशा रही उसके बाद एक मिरासी के तीन पुत्र पैदा होगये, जिनमें बड़ा पुत्र झगड़ालू, जल्दबाज, कलहप्रिय आचार विचार भ्रष्ट, कुपात्र था और दूसरा अपने भाई के अनुकूल चलने वाला जिसको अच्छे बुरे की पहचान न थी, भद्र और शूरवीर था। तीसरा पवित्रात्मा, सत्यवादी, न्यायी सदाचारी था। बड़े पुत्र ने अपने बड़ों से छिनी हुई रियासत, घर मुहल्ला जो कुछ भी था उसे अपनी शक्ति व

प्रभाव से वापिस छीन लिया तथा आस पास के मिरासियों पर अधिकार जमा कर एक राजा बन बैठा और आनन्द से रहने लगा, इधर उधर से किसी की पुत्रियों को, राजकुमारियों को अपहरण कर लेना, किसी को सताना उसका कर्त्तव्य था. परंतु शक्तिशाली था इसलिये सब लोग डरते थे, उस अन्यायी का सामना करते हिचकते थे। एक दिन एक श्रेष्ठ राजा अपनी राणी को साथ लेकर भ्रमण करता हुआ उसी पहाड़ के समीप आ निकला। मिरासी राजा की नजर श्रेष्ठ राजा की पतिव्रता राणी पर पड़ी और धोखे से अपहरण कर लाया। धर्मात्मा राजा ने अपना दूत भेजा लेकिन नीति से अनभिज्ञ मिरासियों ने दूत का भी अपमान किया और अनुचित बर्ताव किया यह देख दूत ने जाकर अपने स्वामी से सब वृतान्त कह दिया तथा उस न्यायी राजा ने अपने कुछ योद्धाओं को भेजकर उन मिरासियों को अन्याय करने का स्वाद चखाया कुछ मार दिये, कुछ भाग गये, कुछ कैद कर लिये और अपनी राणी को साथ ले गया सो मैं भी यही विचार रहा था कि देखो बुद्धिहीन शठों ने अपना सर्वस्व नाश कर लिया।

रावण—अच्छा तो यह दृष्टान्त हमारे ऊपर घटाया है।

हनुमान—मैंने क्या जबरदस्ती घटाया है यह तो स्वयं ही घट गया।

रावण–तो हम मिरासी हैं।

हनुमान–आप जो मर्जी बनें मैंने तो उनकी तरह बतलाया है।

रावण–अरे तुल्य कहो तरह कहो भान्ति कहो इसमें भेद ही क्या है।

हनुमान–नहीं तो ना सही इसमें भेद की जरूरत ही क्या है।

रावण–मुझको क्रोध बहुत आता है किन्तु क्या करूं तू दूत है।

हनुमान–नहीं तो।

रावण–नहीं तो तेरे टुकड़े २ कर डालता।

हनुमान–अच्छा मैं रामदल में सैनिक बनकर दूसरे रूप में आपसे जंग करने के लिये आऊंगा उस समय यह क्रोध मेरे ऊपर निकाल लेना किन्तु यह याद रखना कि मेरे सामने आने से पहले ही किसी योद्धा की झपट में आकर परभव को न सिधार जाना।

रावण शेर–

सूरमा मैंने कोई संसार में छोड़ा नहीं।
नीचा दिखाये बिन किसी को आजतक मोड़ा नहीं॥
आयेंगे शक्ति कौनसी पर भील मेरे सामने।
नाम ही रावण का सुन योद्धा लगें सब कांपने॥

हनुमान–शेर

चाल जो राजों की हो सो चाल चलनी चाहिये।
ठोकरें खाने से पहले ही सम्भलना चाहिये॥

शेखियां सारी ये रणभूमि में देखी जायेंगी ।
वीर लक्ष्मण के अगाड़ी धूल में मिल जायेंगी ॥
शेर की मूछों पै डाला हाथ क्या छुट जायेगा ।
कच्चे चित्र की तरह दुनिया से तू मिट जायेगा ॥

रावण–भानुकर्ण विभीषण—देखो रामचन्द्र जंगली भील होते हुए भी चालाक और धूर्त कितना है जिसने हमारी छत्रछाया में रहने वाले हमारे सेवक हनुमान को भी कैसे फन्दे में फंसाया है, पता नहीं क्या जादू डाला है जिसके प्रभाव से अपने कुल का गौरव और हमारा प्रेम तो क्या जिसने अपने शरीर की भी सुध-बुध भुला दी है, और रामचन्द्र शिकारी की तरह आप तो नहीं आया किन्तु हनुमान को कुत्तों की तरह मुझ जैसे सिंह के सामने भेज दिया। अब इसने तो बिना सोचे समझे अज्ञानता से अनुचित काम किया परन्तु यदि मैं भी इसको प्रत्युत्तर में सजा दूँ तो मेरा और उसका अन्तर ही क्या रह जावेगा, किन्तु नहीं हमारी शोभा और गौरव हनुमान के ऊपर अनुग्रह करने में ही है।

कुम्भकर्ण–निस्सन्देह महाराज आपको ऐसा ही सोचना चाहिये (क्षमा वीरस्य भूषणम्) अर्थात् दूसरों पर कृपा करना, अपकारी पर भी उपकार करना, मिष्टवचन बोलना, विचार कर काम करना ही बड़ों का भूषण है तथा (औदार

चित्तानां वसुधैव कुटुम्बकम्) अर्थात् औदार हृदय वाले पुरुषों का समस्त संसार ही निज का कुटुम्ब है, फिर हनुमान तो हमारे पुत्रवत् है, यदि इसका कुछ अपमान हुआ तो वह हमारा ही हुआ।

शेर

भूले को समझाना यही कर्तव्य है इन्सान का।
करना नहीं अपमान घर आये हुए महमान का।

विभीषण—भानुकर्णजी का कथन सुनहरी अक्षरों में लिखने लायक है तथा मेरी जबान इन अनमोल शब्दों का आशय प्रकट करने में असमर्थ है अब मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि महाराज का और हनुमानजी का परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप होना चाहिये।

शेर

आता स्वयं जिसको नजर रास्ता वही बतलायेगा।
जो आपही उल्टा चलरहा औरों को क्या समझायेगा॥
कर्त्तव्य अप अपना पिछाने मनुष्य का ये धर्म है।
नहीं तो उसे जानो पशु या यों कहो बेशर्म है।

इसलिये हमारी दोनों से प्रार्थना है कि प्रेम-पूर्वक वार्तालाप हो और हनुमानजी! आपसे हम विशेष करके कहते हैं।

हनुमान—आपका कथन मुझे स्वीकार है किन्तु ईंट का उत्तर तो मैं पत्थर से ही दूंगा क्योंकि—

शेर

चाकर हूं मैं श्रीराम का, उनका सिपाही हूँ।
भाई भले का समझलो, बद का जमाई हूँ॥

जिसको अपने गौरव की जरूरत हो वह दूसरों का गौरव बढ़ाना सीखे।

शेर

शिक्षा लई गुरुदेव से मैं फहल कर सकता नहीं।
जो होगा अपराधी मैं उससे टल कभी सकता नहीं॥
सत्य का पक्षी हूँ मैं प्रतिपक्षी हूं अन्याय का।
खौफ खोटे कर्म का सेवक हूँ श्री जिनराय का॥

रावण–ठीक; पवनकुमार मनुष्य को ऐसा ही होना चाहिये अब जरा शांति से सुनें, और उसके ऊपर विचार करें।

हनुमान–जी हां, ध्यान से ही सुनूंगा।

रावण–अच्छा प्रथम लंका और अयोध्या की तुलना करके देखो कि कितना अन्तर है।

हनुमान–किस बात का?

रावण–जलवायु का, स्वाभाविक दृश्यों का, रूप का, शक्ति का, पुण्य प्रताप का, मेरा और रामचन्द्र का, इत्यादिक सब प्रकार का।

हनुमान–जी हां ऐसे तो पृथ्वी और आकाश जितना अन्तर है। अयोध्यापुरी जैसे स्वर्ग, लंका जैसे नर्क, रामचन्द्र जैसे सुरेन्द्र, आप जैसे असुरेन्द्र इत्यादि सभी प्रकार समझ लें।

रावण–मैंने समझ लिया तू हवा के घोड़े पर सवार है।
हनुमान–जो मर्जी कहो आपको अख्तयार है।
रावण–मैं क्या करूं जब काल तेरे सिर पर तैयार है।
हनुमान–जीहां,काल तो सब पर ही आयेगा.कोई शुभ नाम
और कोई अशुभ नाम फैलाकर मर जायेगा।

रावण का हनु० के प्रति कथन-बहरतवील

होश में आन कर बात तू कर जरा,
वीर पृथ्वी के मुझको सलामी करें।
तेरा गौरव मेरे संग बढ़ जायेगा,
रामचन्द्र की क्यों तू गुलामी करे॥१॥
वह तो खुद ठोकरें खाते वनमें फिरें,
ऐसे भीलों से तुम क्यों कलामी करें।
"शुक्ल" कर दूंगा वृद्धि तेरे राज की,
ता उमर क्यों न अपनी आरामी करे॥२॥

हनुमान का रावण के प्रति--बहरतवी[ल]

यह कहना उन्हें जो हो अज्ञानीजन,
मेरे खुल्ले हैं सारे हृदय के चश्म।
सिक्का ढल जायेगा सारा पल में तेरा,
इस लंका में तेरी न होगी रस्म॥
जिन्दगी समझ तेरी खतम होगई,
रामचन्द्र के रण में तू होगा भस्म।

तुख्म छोड़ूँ ना लंका में हरगिज तेरा,
साफ कहता हूँ खाकर मैं तेरी कसम ॥
जर्द चेहरा हुआ देख गम में तेरा।
हिल चुकी है तुम्हारी सब नब्ज़ों नशम॥
"शुक्ल" थोड़े दिनों में तेरे जिस्म को,
बस उठा लेंगे डोली में गाके नज़म ॥३॥

रावण-शेर

सोच अपने मन में अब तू क्या था और क्या होगया ।
जो साथ मेरे था तेरा गौरव वो सारा खो गया ॥

कहां तो सुग्रीव और हनुमान को दुनियां राजा रावण की मूछों का बाल कहती थी किन्तु आज तुम इस नीच जंगली भील राम शिकारी के कुत्ते बने हो शर्म शर्म शर्म ।

हनुमान—बस फिर क्या जब मूछें ही कट गईं तो फिर रहा ही क्या ? खाक, किन्तु मूछों का ख्याल मर्दों को होता है, नामर्द की मूछें कटें चाहे दाढ़ी उसे क्या शर्म ।

रावण—देख जैसे तुम्हारे बड़े और तुम भी अब तक हमारे सेवक रहे और हम तुम्हारी सहायता करते रहे, उसी तरह अपने बड़ों की परम्परा को छोड़ना धर्म नहीं ।

हनु. दोहा—

कब सेवक थे हम तेरे कब स्वामी था तू ।
स्वामीपन की आप में जरा नहीं खुशबू ॥

चौक

जब वरुण भूप ने कैद किये खर दूषण को क्या नहीं पता ।
कुछ पेश गई ना आपकी वहां तब बुलवाया था मेरा पिता ॥
खर दूषण को छुड़वाया था आधीन वरुण करवाया था ।
क्या वह दिन भी अब भूल गये शत्रु से तुम्हें बचाया था ॥
फिर एक बार मैं आया था जिस समय आप पर भीड़ पड़ी ।
उस समय तुम्हारे चहुं ओर दुर्जन की थी संगीन खड़ी ॥
जब आपको लगे घसीटन को वहां वरुणभूप के सुतदल में ।
तब मैंने आकर छुड़वाया था तुमको शत्रु के दंगल में ॥

दोहा--

शुभ कर्त्तव्यों पर जरा रखना चाहिये ध्यान ।
गौरव निज पहचान कर तजो निरम अभिमान॥

चौक--

आज तीन बातों को लेकर हुआ मेरा यहां आना है ।
प्रथम सीता की खबर लेन दोयम तुमको समझाना है
यदि आप नहीं कुछ समझे तो जंगी ऐलान सुनाना है ।
और नाग फांस में बंधने का बदला लेकर भी जाना है ॥
अब सोचो आप जरा मन में किस गौरव पर थे खड़े हुए ।
और तीन खंड में सब राजों के मस्तक पर थे चढे हुए ।
किन्तु आज सब दुनिया की दृष्टि से आप हैं गिरे हुए ।
हैं बड़े २ शक्तिशाली राजों के दिल भी फिरे हुए ।
बस यही हमारा कहना है जगदम्बा को वापिस कर दो
जिस बात से प्रेम घटा सबका फिर भी उसको वैसा करदो ।

यह पुण्य समाप्त अब हुआ आपका सीता माता के हरने से।
हम सब का भी मन फटा एक बस यही अनीति करने से॥
जिस शक्ति का अभिमान तुम्हें वह सभी धरी रह जायेगी।
अब गढ़ लंका का नाश किये बिन सिया ना यहां से जायेगी॥
यह समय हाथ से निकल गया तो फिर पीछे पछतावोगे।
श्री लछमण आगे रणभूमि में तुम अपने प्राण गमांवोगे॥

रावण-दोहा

बस बस बस में सुन लिया सब तेरा उद्देश्य।
अधिक और आगे कहा तो होगा बहुत क्लेश॥

चौक

जब तक दम में दम मेरा तो जानकी जान की साथिन है।
जैसा तू नाग फांस में यूं सीता में बंधा मेरा मन है॥
मैं सुर सुन्दर से जीत लिये फिर कौन विचारा लछमण है।
इक रामचन्द्र क्या सारा दल तलवार मेरी का भक्षण है।

हनु. शेर--

फिर भी कहता हूं सम्भल बरबाद क्यों होने लगा।
एक नारी के लिये सर्वस्व क्यों खोने लगा॥

रावण शेर--

सीता विरह का शब्द भी सुनना जरा चाहता नहीं।
प्राण प्यारी के बिना अन्न जल मुझे भाता नहीं॥
सीता सो मेरी जान है जो जान है सीता वही।
बतलाइये पानी से क्या शीतलता जाती है कहीं॥

हनुमान का रावण को समझाना

अय भूपति मत ज़ुल्म पर बांधे कमर,
आखिरी अच्छा नहीं होगा समर।
दिल दुखाना धर्मियों का है गुनाह,
अन्याय से ना सुख मिले हमने सुना।
इसलिये रख प्राणीमात्र की कदर ॥१॥
एक डण्डे से सभी को हांक मत,
ज्ञान सम्यक से लखो कुछ सत्यासत।
फिर न्याय और अन्यायकी कुछ रख खबर॥२॥
कर्त्तव्य अपने को ज़रा पहचान तू,
पाके तुच्छ वैभव न कर अभिमान तू।
क्या मनुष्य तन पाया है भरने को उदर॥३॥
व्यवहार रखना शुद्ध गौरव है यही,
चन्द दिन की जिन्दगी स्थिर कहीं।
अन्त सब लेवेंगे परभव की डगर ॥४॥
चक्री तीर्थंकर व गणधर चल बसे,
अन्त सुरपति ने भी अपने कर घसे
आज ढूंढे भी नहीं आते नज़र ॥५॥
शुभ कर्म करने को मिला मनुष्य तन,
पाके अत्युत्कर्ष को ना नीच बन।
लांघ मत सरवर व वज्र की सतर ॥६॥
आया कहीं से काल कर और जाना भी है
फिर शुभाशुभ कर्म फल पाना भी है।
इसलिए शुभ ध्यान अपना 'शुक्ल' कर॥७॥

रावण-शेर

बन्द इस उपदेश को कर क्यों ढ़िठाई है गही ।
राम के जो भी सहायक मौत उनकी आगई ॥

हनु. शेर—

ठीक यह दिल में समझ मौत तेरी आगई ।
पेश अब किसकी चले जब होनी सिर पर छागई ॥

रावण वार्ता—बस बस अब ज्यादह बक २ मत कर यदि कुछ दिन दुनिया में रहना है तो जान बचाने की फिकर कर।

(हनुमानजी का प्रचँडता में आकर नागफांस तोड़ डालना और जंगी ऐलान सुनाना)

हनुमानजी—अहो लंकेश—श्रीरामचन्द्रजी महाराज तुमको यह हुक्म देते हैं कि या तो सीता को अर्च पूज कर वापिस कर दो नहीं तो जंग के लिए तैयार हो जावो और जीने की आशा छोड़कर परभव में जाने की तैयारी करलो फेर ना कहना कि रामचन्द्रजी ने मुझको बिना खबर ही आकर दबा लिया।

शेर

धोखा न देना किसी को यह क्षत्रियों का धर्म है ।
शरण आये की करे प्रतिपालना ये कर्म है ॥

किस बात पर भूला फिरे तुझको मिटा देंगे ।
धरणि तो क्या चीज हम स्वर्ग को भी हिला देंगे ।

रावण—बेटा मेघनाद इस दुष्ट को पकड़ कर अभी मेरे सामने से काला मुंह कर दो और गधे पर चढ़ाके मोरी के रास्ते निकाल दो।

दोहा—

इतनी सुनकर बात को कोप उठे बजरंग ।
कड़के बिजली की तरह होकर रंग बिरंग ॥

चौक

मस्तक पर ठोकर लाकर के रावण का ताज गिराया है ।
फिर गगन गति कर गये कलेजा सबका ही दहलाया है ।
निज अंगरक्षकों से आन मिले जहां पर भी था संकेत किया
प्रसन्न वदन हो चले शीघ्र आ किष्किन्धा प्रवेश किया ।

दोहा

बाशिन्दे सब लंक के जल बल होगये खाक ।
रावण ऐसा जल गया कोयला रहा न राख ॥
दशकन्धर का जब गिरा ताज धरणि पर जाय।
एक दम सारे सूरमे दौड़े शोर मचाय ॥

चौक—

पकड़ो २ इस दुरात्मा को टुकड़े-टुकड़े इसके कर दो।
इस बातका तो क्या कहना है यदि पकड़ यहां सन्मुख धरदो
देख २ इस बेइज्जती को सब लंका वाले रोते हैं ।
कर सके कौन रक्षा उसकी जिसके उलटे दिन होते हैं ॥

रावण—बेटा इन्द्रजीत शर्म ३।

इन्द्र०—किसको ?

रावण—तुझको।

मेघनाद—क्यों ?

रावण—अरे हमारे अपमान को तू खड़ा २ देखता रहा। तुझसे एक बन्दर न पकड़ा गया।

मेघनाद—अजी मेरा तो रोम रोम खुश होगया। आपके साथ ऐसा ही होना चाहिये था और चाचा साहब का कहना माना करो, बस जल्दी ही बेड़ा पार हो जायेगा। फिर ताज तो क्या आपका सिर भी गिर जायेगा।

भानुकर्ण— बेटा इन्द्रजीत शांति करो, तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु उस समय तो बात ही और थी यदि दूत को मार देते तो हमेशा के लिये कलंकित हो जाते।

इन्द्रजीत—हूँ--अब तो बड़े निष्कलंक हो रहे हो जब सीता को लाये तभी दोनों को समाप्त कर आते तो क्यों बुआ रांड होती, क्यों पाताल लंका का राज्य जाता और क्यों सुग्रीव हनुमान राम के पक्ष में होकर आज ये दुर्दशा करते, परन्तु यहां हमारी मानता ही कौन है, यहां तो उनकी चलती है जो सत्यानाश को करने वाले हैं, जहां दुनिया चोर २ कहती है वहां अन्याय किया इतना और

कह देती । बस इतना ही अन्तर था या और कुछ—

शेर

कष्ट से लाया था मैं शत्रु पकड़ करके यहां ।
हाथ से मौका गया अनमोल अब मिलना कहां॥
दुख बड़ा है काल के मुख से गया दुर्जन निकल।
पवनपुत्र कर गया हम सबकी बुद्धि को विकल ॥

रावण—बेटा इस विचार को अब छोड़ दो और उसको एक पशु समझो, जैसे पशु बन्धन से घबरा कर रस्सों को तोड़ देता है । और नुकसान भी कर देता है बस यही हाल हनुमान का हुआ फिर हम विचार करें तो किस बात का ।

विभीषण—जी हां, सम्भव है, ऐसा ही हुआ होगा क्योंकि जिस समय आपने काला मुंह करने को कहा । बस यह शब्द उससे सहा नहीं गया और गगन गति करते समय आपके ताज को झपट लग गई, बस बात तो यह है इस बात को यहीं छोड़ देना चाहिये और जिस कारण से अशान्ति हुई है उस कारण को दूर करने के लिए कोई समय नियत किया जाय जिससे उसमें कोई शान्ति स्थापन करने का उपाय सोचा जाय ।

रावण—शान्ति का उपाय सोचा जाय ! क्या किसी को तपेदिक है ? हमें सोचने की कोई जरूरत नहीं यदि होगी तो रामचन्द्र को होगी वह सोचें या ना सोचें

हमें क्या ? प्रथम तो रामचन्द्र की शक्ति ही नहीं कि लंका की ओर एक भी कदम उठाये, यदि उठायेगा तो अपने प्राण गंमावेगा। यदि सुग्रीव भी उसका साथ देगा तो अपने प्राण और तीनसौ योजन का वानर द्वीप हाथ से गंवायेगा। हमारे तो सब तरह पौबारह हैं। (सभा की ओर देख कर) क्योंजी यह बात ठीक है। (विभीषण के अतिरिक्त सब) जी हां बिल्कुल ठीक है।

रावण—बस मेरी यही आज्ञा है कि सबको अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिये और प्रेम से एक जयकारा बुलाकर सभा को विसर्जन करना चाहिये— (बोलो राजा रावण की जय)

(पटाक्षेप)

दोहा

रामचन्द्र के पास जब जा पहुंचा हनुमान।
झूम झाम चहु ओर से आ पहुंचे इन्सान॥
सीता का चूड़ामणी दिया राम के हाथ।
आदि अन्त पर्यन्त अब लगा कहन सब बात॥

चौक

भूखा जैसे भोजन पर तृषातुर जैसे पानी पर।
प्रतिक्षा पर जैसे सत्‌जन या भव्यजीव जिनवाणी पर॥
बीणा पर जैसे सर्पमस्त औषधि मस्त जैसे रोगी।
जनता सुननेमें मस्त हुई शुभ ध्यान मस्त जैसे योगी॥

हनु. दोहा—

जिस कारण लंका गया हुआ सिद्ध सब काज।
जो २ कुछ बीतक हुआ सुनो सभी महाराज॥

चौक

चहुं ओर कोट आशाली का था पहले उसको तोड़ दिया।
फिर रोका वज्रमुखे ने तो उसका भी भंडा फोड़ दिया॥
फिर पहुंचा पास विभीषण के जो मेरा बड़ा सहायक था।
यह उनका ही उपकार सभी वरना मैं तो किस लायक था॥
फिर गया व्योम से देवरमण अशोकवृक्ष पर जा बैठा।
थी मणि पीठिका पर सीता उस तरफ ही ध्यान लगा बैठा॥
तब देख हाल जगदम्बा का पत्थर का कलेजा छुनता था।
गिर-गिर नयनों का जल वहां पानी का झरना बनता था॥
बैठी थी अपने आसन पर ना खाती और ना पीती थी।
यदि जीती थी तो एक आपके राम नाम पर जीती थी॥
इक घड़ी २ पल २ उनका वर्षों की तरह गुजरता था।
दिल तो चाहता था मरने को पर आपका प्रेम मुकरता था॥
अन्तिम वे निराश होकरके फिर सर्द श्वास जब भरने लगी।
तब मैंने मुद्रिका गेर दई जब देखा कि अब मरने लगी॥
फिर मैंने जा प्रणाम किया और आपका सब संदेश कहा।
जब दशा आपकी सुनी नीर नयनों से और विशेष बहा॥
विश्वास दिलाकर मुश्किल से मैंने उसको समझाया था।
इक्कीस दिवस के बाद मात को अन्नपान करवाया था॥
बार २ तुम चरणों में बस यही अर्ज गुजारी है।
यदि जल्दी कुछ ना लिया पता तो आयु खतम हमारी है॥

मेरी भी यही सम्मति है अब देरी का कुछ काम नहीं ।
जब सीता को है कष्ट महा तो हमको भी आराम नहीं ॥
लंकपति को चलत समय जंगी ऐलान सुना आया ।
निज ठोकर से दशकन्धर के चेहरे का ताज गिरा आया ॥

दोहा—

सिया सन्देशा राम ने सुना प्रेम के साथ ।
हृदय लगाया पवन सुत लम्बे करके हाथ ॥

चौक—

जब लगी खबर सिया की सबको खुशी की ना सम्भाल रही ।
सुन दुःख सिया का सब नारी आंखों से आंसू डाल रही ।
अब शीघ्र लंक में जाने को सब योद्धों का मन चाहता है ।
श्रीरामचन्द्र को घड़ी २ वर्षों की तरह दिखाता है ॥

दोहा

इसी समय सुग्रीव ने किया खास दरबार ।
लंका पर अब चढ़न को हुए सभी तैयार ॥
मुख्याधिकार सबने दिया सुग्रीवनरेश के हाथ ।
और सहायक संग में कर दिया वीर विराध ॥

चौक

वानर दल के योद्धों के मस्तक पर लाली दमक रही ।
गम्भीर शस्त्र सजे खड़े नंगी तलवारें चमक रहीं ॥
बाकी राजे सब अपनी अपनी सेना को ले तैयार हुए ।
श्रीराम के सेवक बन कर सब के दिल शोभन इकसार हुए॥

दोहा

भामंडल मंडलपति वड वानर नल नील ।
जामवन्त अंगद चढे कपि सुत नन्द सलील ॥

चौक

श्री महेन्द्र महिमा अपार और पवनपुत्र बजरंग चढे ।
सज गये प्रवल और महावल यह दोनों ही थे दुर्दान्त कड़े॥
वीर विराध बलवन्त महा थे भूप सुशैन उदार वहीं ।
कई विद्याधर कई भूचर थे सव भज वल का कुछ पार नहीं॥
सज गये विमान आकाशी और दारू गोला शुम्मार नहीं ।
संग्रामी रथ हाथी घोड़े हैं विकट गाड़ी विस्तार कहीं ॥
सव मारू बाजे वजा वजा सेना को जोश दिलाते हैं ।
चढ़ गया वीररस योद्धों को हुंकार से धरा कंपाते हैं ॥

दोहा

श्रीराम ने कर दिया लंका को प्रस्थान ।
एक एक से शूरमा महा अधिक वलवान ॥

चौक---

करता किलोल सिन्धु जैसे इस तरह राम की सेना है
वहां विविध भांतिके वाहन और जहां विविध भांतिका गहना है
और विविध भूप सुन्दर स्वरूप क्या शस्त्रों का वह कहना है
निश्चय विश्वास सभी को रावण का खुर खोज गंवाना है ॥

दोहा

जंगी बाजे वज रहे पड़ी गगन में घूम ।
जय बोलें श्रीराम की रहे चरण रज चूम ॥

चौबो.--

हैं विविध भांति के तम्बू आदि खान पान सामान सभी ।
तल्लीन राम की सेवा में और राजे हैं कुर्बान सभी ॥
गुलगुलाहट हस्ति करते कहीं घोड़ों का हिनसाना है।
झंकार कहीं पर यानों का अद्भुत ही शब्द सुनाता है ॥

दोहा

कायरजन सिंहनाद सुन रण में छोड़ें प्राण ।
बड़े शूरमों का वहां उत्साह अधिक महान ॥

चौक.

कई बैठ चले विमान बीच कोई गजरथ अश्व पै जाते हैं।
सब पार हुए बेधड़क सिन्धु वेलन्धर गिरी पर आते हैं ॥
सेतु समुद्र वहां दो राजे महाशूर वीर बलधारी थे ।
श्रीरामचन्द्र को रास्ता देने से दोनों इन्कारी थे ॥

दोहा

वेलन्धरपुर नगर का सेतु श्री महाराय ।
सीमा पर श्रीराम के दल को रोका आय ॥

चौक

मित्र भूप समुद्र को संग ले निज सीमा आन खड़े ।
यह लगा पता श्रीराम को सन्मुख योद्धे हैं बलवन्त खड़े ॥
श्रीरामचन्द्रजी ने भेजा निज दूत उन्हें समझाने को ।
आज्ञा पाकर वहां दूत गया स्वामी का हुक्म बजाने को ॥

दूत-दोहा

रामदूत की लीजिये नमस्कार महाराज ।
जिस कारण आया यहां सभी सुनाऊं आज ॥

चौक।

श्रीराम ने ये बतलाया है तुमसे ना वैर हमारा है ।
फिर किस कारण रोका हमको असली क्या ख्याल तुम्हारा है॥
एक सिया के कारण ही हम लंकपुरी को जाते हैं ।
हम सिवा एक रास्ते के आपसे और नहीं कुछ चाहते हैं॥
बस यही निवेदन है तुमसे अपने दल को वापिस करलो ।
इसमें क्या आपकी हानि है यदि है भी तो हमसे भरलो ॥
झगड़े का करना ठीक नहीं इसमें कुछ हर्ज तुम्हारा है ।
और क्षण क्षण की देरी में यहां भारी नुकसान हमारा है ॥

दोहा—

वचन दूत के सुनत ही कोपा सेतु नरेश ।
उलट पुलट कहने लगा जिससे बढ़े क्लेश ॥

सेतु-दोहा

वन का वासी भीलड़ा दुखियारी का पूत ।
नार खुसा कर अब यहां लगा भेजने दूत ॥

चौक—

उस समय क्या शक्ति गहने थी जब दशकन्धर ने सिया ।
धिक्कार है ऐसी शूरमता इक नारी की ना विपद टरी ॥
बस यही हमारा कहना है अपने दल को वापिस कर लो ।
वरना नृप सेतु समुद्र की यहां शक्ति सहने का दिल करलो ॥
रास्ता देकर क्या रावण से हम अपना नाश करा लेवें ।
उस लंक में ऐसे योद्धे हैं जो सारी धरा कंपा देवें ॥
सभी नपुंसक सेना लेकर लंका पर करी चढ़ाई है ।
जा कहो राम से वापिस हो जाने में तेरी भलाई है ॥

दोहा—

सुने काट करते हुए सेतु भूप के वैन ।
विकराल रूप होकर लगा दूत इस तरह कहन॥

चौक—

इसमें ही भला तुम्हारा है जा राम लखन के चरणों में परो ।
वरना देरी का काम नहीं मैदान में आकर चरण धरो ॥
ज्यूं खोज मिटाया खरदूषण का ऐसे तुम्हें मिटा देंगे ।
जिम लंकपति का भय तुमको हम धूल में उसे मिला देंगे ॥

दोहा

इतना कहकर दूत फिर गया राम के पास ।
आदि अन्त पर्यन्त सब कथा सुनाई भाष ॥

चौपाई

उसी समय नल नील बुलाया,
रामचन्द्र ने हुक्म सुनाया ।
जावो वीर मत देरी लावो,
सेतु भूप को बांध ले आवो ॥

दोहा

आज्ञा पा श्रीराम की चले वीर हुलसाय ।
रणभूमि में आन कर दिया मोरचा लाय ॥

चौक.

दिया मोरचा लाय खनाखन बजने लगा दुधारा ।
कहीं अग्निबाण कहीं धुन्धबाण कहीं चलता सांग कटारा ॥

किया धरणि को रक्त व्योम में चलता खून फुवारा ।
देख तेज नल-नील का भारी सेतु हौंसला हारा ॥

दौड़—

घेर लिये दोनों राजे जीत के बाजे बाजे, पास श्रीराम के लाये, औदार चित्त रघुकुल दिनेश ने ऐसे वचन सुनाये ।

श्रीराम-दोहा

निष्कारण तुमने किया निज गौरव का नाश ।
समझाये थे प्रथम ही दूत भेज कर पास ॥

चौक

फिर भी हम समझाते हैं तुम अपने घर आबाद रहो
हमको कुछ भी नहीं चाहना इक भरत भूप की शरण गहो ।
यदि सहायता रावण की चाहो तो मंगवा सकते हो
और जो भी दिल में ख्याल सभी तुम पूरा कर सकते हो ॥

सेतु-दोहा

क्षमा करो सब दोष अब कृपा सिन्धु रघुनाथ ।
दास समझ कर प्रेम का धरो शीश पर हाथ ॥

चौक

यह राजपाट सब आपका है हमतो चरणों के चाकर हैं ।
दुखियों के दुःख निकन्दन को रघुकुल में आप दिवाकर हैं ॥
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है सो सिर मस्तक पर धारेंगे ।
यह सिर जावे तो जाय किन्तु वचन न अपना हारेंगे ॥

दोहा—

तोड़ बंध श्रीराम ने किया उन्हें स्वतन्त्र ।
प्रेमभाव उत्पन्न हुआ बजने लगे वांजित्र ॥

चौवोला

सेतु समुद्र ने लक्ष्मण को निज २ पुत्री का डोल दिया ।
बन गये सहायक रामचन्द्र के दारू गोला शस्त्र दिया ॥
वहां एक रात विश्राम किया फिर आगे को चल धाये हैं ।
सेतु समुद्र के सहित सभी सुवेल गिरि पर आये हैं ॥
सेतु समुद्र को आधीन किये सुवेल भूप को खबर लगी ।
और सुना दल आ पहुंचा तो क्रोधानल प्रचण्ड जगी ॥
उसी समय रण तूर बजाकर दल बल आगे ढेल दिया ।
इस तरफ सुशैन भूप ने भी आकर सीमा को घेर लिया ॥

दोहा—

युद्ध भयंकर छिड़ गया लगा होन घमसान ।
गिरें धड़ाधड़ शूरमे रण क्षेत्र में आन ॥

चौक—

वो दृश्य भयानक देख २ कायर धरणी गिर जाते थे ।
श्रीराम के दल का तेज देख सब ही शत्रु भय खाते थे ॥
झट भगी फौज यह हाल देख सुवेल भूप घबराया है ।
उस वक्त सुशैन ने ललकार भूपति को आन दबाया है ॥

दोहा

सोचा भूप सुवेल ने अब ना पार बसाय ।
सन्धि का फिर उस समय दिया निशान दिखाय ॥

चौक

फिर क्या था उस रण भूमि में प्रेम परस्पर होने लगा ।
श्रीरामचन्द्र के वचन भूप के वैर विरोध को खोने लगा ॥
रघुकुल दिनेश की सब शर्तें सुवेल भूप ने मान लईं ।
तन मन से सेवा रामचन्द्र की करना दिल में ठान लईं ॥

दोहा—

तीजे दिन वहां से चले संग सुवेल उदार ।
हंस द्वीप में जायकर दई छावनी डार ॥

चौक—

हंसरथ नृप दल बल भारी ले युद्ध करन सन्मुख आया ।
इस तरफ महाबल योद्धा भी अपनी सेना लेकर धाया ॥
ये दोनों रणधीर दोदों इस काम में माहिर थे ।
अतुल बली थे दोनों ही महाशूरवीर जगजाहिर थे ॥
फिर लगी बाण वर्षा होने जैसे श्रावण की झड़ी लगी ।
चल रहीं शतघ्नी दनादन हैं और संगीनें थी अड़ी खड़ी ॥
बादल समान नभ में विमान थे अड़े खड़े कुछ पार नहीं ।
कहीं विकट गाड़ी की कला दबाकर फिरते थे राजकुमार यहीं ॥
तोमर शक्ति कुदाल भुशुंडि परशु परिघा बरसाते थे ।
जैसे आंधी से फूल गिरें धड़ से यों सिर गिर जाते थे ॥

दोहा

महा दल दल में घस रहा होकर के विकराल ।
पराजित होकर के भगा हंसरथ भूपाल ॥

चौक

छिप गया दुर्ग में जाकर पहरा चहुं ओर लगाया है ।
इधर रामदल ने भी जा सब दुर्ग को घेरा लाया है ॥

फिर समझा कि नरमाई बिन अब बचने का अवकाश नहीं।
जो लड़ूं सामने होकर के तो शक्ति मेरे पास नहीं ॥

दोहा

अक्ल भ्रमण करने लगी उड़ गये होश हवास।
तृण मुख में लेकर गया रामचन्द्र के पास ॥

हंस. दोहा—

पराक्रम जाना था नहीं आपका हे श्रीराम ।
शरणागत को शरण में रख लीजे सुख धाम ॥

चौक

कृपासिन्धु कृपा विशाल करके दुख सारा दूर करो ।
यह राजपाट सब आपका है विनती मेरी मंजूर करो ॥
जो भी कुछ आपकी आज्ञा है तन मन से उसे निभाऊंगा।
जहां गिरे पसीना आपका वहां मैं अपना रक्त बहाऊंगा॥

राम-दोहा

माफ सभी हमने किया जो तेरा अपराध ।
संवेदन है तू मेरा जैसे वीर विराध ॥

चौक

यदि वो बांई भुजा मेरी तो तू दक्षिण कहलाता है ।
आनन्द से अपना राज करो जैसे भी तुमको साता है ॥
मत फिकर करो अपने मन में तुम भरत भूप की शरण परो।
कोई कष्ट पड़े तुम पर आकर तो शीघ्र हमें यह खबर करो॥

दोहा—

आज्ञा जो श्रीरामकी लई भूप ने मान ।
हंस रथ नृप का होगया योग्य पक्ष पर ध्यान ॥

चौक

श्रीराम पास ही आ पहुंचे यह खबर लंक में फैल गई ।
और पुण्य सितारा देख राम का सबकी तबियत दहलगई ॥
जैसे मीनराशि में शशि आने पर जन घबराते हैं ।
ऐसे ही सब लंका वाले भय रामचन्द्र से खाते हैं ॥
आगये राम आगये राम यह शोर लंक में होने लगा ।
तब आंख खुली दशकन्धर कीनिज शक्तिको भी टोहने लगा॥
मारीच हस्त प्रहस्त और सारन आदि सब बुलवाये ।
श्रीराम से युद्ध मचाने को निज २ कर्तव्य पै सब लाये ॥

दोहा

उसी समय दशकन्धर ने किया खास दरबार ।
सिंहासन पर बैठकर ऐसे कहा उचार ॥
अब तक यही विचार था कि राम रहेगा दूर ।
किन्तु आन सिर पर चढ़ा उसकी मौत जरूर॥

चौक

शृगाल की मौत जब आती है तब ग्राम सामने जाता है ।
बस यही हाल है रामचन्द्र का जो पास लंक के आता है ॥
सेतु समुद्र सुबेल हंसरथ ये भूप और भरमाये हैं ।
सो भी अपना नाश करन को संग राम के आये हैं ॥

अब उद्यम शील रहो सारे और इन्तजाम जल्दी करदो।
जा रहलो मोरचा लंका द्वीप के पास वहीं डेरा कर दो॥
बेटा इन्द्रजीत तुम भी सब अपनी सेना ले जाओ।
मुश्क बांध कर उन जंगली भीलों को यहां पर ले आओ॥
इस मूल का नाश होजाने से महावृक्ष स्वयं ही गिर जावेगा।
क्या वानरपति क्या हनुमान फिर किसी का पता न पायेगा॥
अब देरी का कुछ काम नहीं रणतूर बजा देना चाहिये।
जिस मान पे शत्रु कूद रहा वह मान गिरा देना चाहिये॥

दोहा

विना विभीषण के किया सबने वचन प्रमाण।
शिक्षा देने को अनुज बोला चतुर सुजान॥
हे भाई कुछ सोचकर करना चाहिये काम।
सोच किए मुख रूप है बिन सोचे मुख श्याम॥

चौक. नं०

सोच किये मुख श्याम मान ले अब भी बात हमारी।
सब दुनिया में बरत रही थी आन अखण्ड तुम्हारी॥
किन्तु आप लाये जिस दिन से सीता राजदुलारी।
उसी रोज से भ्रात लंक को लगी असाध्य बीमारी॥

दौड़

श्री रघुपति के हाथ में गई सब आज ताक में, मान लो अब भी कहना, यदि न माने तो लंका का अब खुर खोज रहेना।

शेर

कुल को कलंकित कर दिया और शक्तियां सब खोदई।
जो अवस्था चोर की सो आज तेरी होगई ॥
किसको दिखावें मुख यह अपना आज हम संसार में
क्या धूल इज्जत पायेंगे जाकर किसी दरबार में ॥
क्षत्रिय हैं रघुवंशी कभी खाली वो जा सकते नहीं।
मैदान में उनसे कभी तुम जीत पा सकते नहीं ॥
श्रीराम के इक दूत ने था जौहर दिखलाया यहां ।
कोट ढाया अक्ष मारा ताज था गेरा यहां ।
लक्ष्मण के आगे समर में यह शीश भी गिर जायेगा॥
धूल में लंका मिलाकर के सिया ले जायेगा ।
तुम अपने गौरव पर रहो वह अपने रास्ते जायेगा।
बस जानकी को भेज दो झगड़ा सभी मिट जायेगा॥

दोहा

शिक्षा का और राग का होता जग में वैर।
रावण को ले पैर से चढ़ा शीश तक जहर॥

चौक

पड़ गये तीन बल मस्तक पर गुस्से में चेहरा लाल हुआ।
नयनों में सुर्खी आ पहुंची और रूप अति विकराल हुआ॥
इन्द्रजीत भी पास भरा गुस्से में था बेतोल खड़ा ।
रावण से पहले मेघनाद यों चचा सामने बोल पड़ा ।

इन्द्र. दोहा

शूरताई आपकी देखी खूब हुजूर ।
अबतक तेरा ना हुआ क्लीवपना यह दूर॥

चौक

नाश हमारा करने में तैंने नहीं छोड़ी बाकी है ।
अब समझ गये हैं शायद पिता भी सब तेरी चालाकी हैं॥
विश्वासघात करने वाला दिल भी अन्दर से काला है ।
और आज तलक तूने हम सबको धोखे में ही डाला है ॥
यह झूठ कहा था तूने आकर दशरथ को मैंने मार दिया ।
फिर हनुमान को भी तूने लंका का भेद विचार दिया ॥
यह तेरी सभी शरारत थी जो भी कुछ यहां बजरंग किया।
तू भ्रात नहीं कोई शत्रु है जो पिता को तैंने तंग किया ॥

इन्द्र०—दोहा

ताज गिराया पित का लगी सभा थी आम ।
शर्म तुझे आती नहीं करवाते यह काम ॥

चौक—

फिर नागफांस में बंधे हुए शत्रु को साफ निकाल दिया ।
इस भरी सभा में तूने ही था मान हमारा गाल दिया ॥
अब शत्रु सिर पर आन चढ़ा फिर भी तू हमको रोक रहा।
तो समझ लिया तू मिला हुआ शत्रु की पीठ को ठोक रहा ॥

शेर

अब तेरा प्रपंच कोई भी यहां चल सकता नहीं ।
दांतों तले आया अरि हर्गिज निकल सकता नहीं ॥
नाम इन्द्रजीत मेरा कौन सन्मुख आयेगा ।
राम क्या दल बल कोई जीता न यहां से जायेगा ।

यदि आपको है भय कोई जाकर कहीं छिप जाइये।
या पहन कर में चूड़ियां अबला जरा बन जाइये॥
अब आपकी यहां दाल मनमानी न गलने पायेगी।
राम की सेना को यह तलवार दलने जायेगी।
नाश कर सकते नहीं कहने से तेरे अपना हम।
अपनी शक्ति से करूंगा राम क्या सब दल खतम॥

विभी०—शेर

क्यों उछल कर कूदता अविनीत कल के छोकरे।
होश गुम होजायंगे जिसदम लगेंगी ठोकरें॥
रंग दिखलायेगी ये बातें तेरी आता नजर।
हितेच्छु को जो माने अरि तो पुण्य में उसके कसर॥
अनुचित शब्द कहने का यहां अधिकार क्या था बेशर्म।
बेटा उदय में आगये हैं अब तेरे खोटे कर्म॥

दोहा

पुत्र मेरा कुछ भी नहीं रामचन्द्र से प्रेम।
तन मन धन से चाह रहा आप सभीका क्षेम॥

विभीषणजी का गाना—बहरतवील

प्रश्नोत्तर

आवे कैसे तुम्हें सीधा रास्ता नजर,
जब कि आंखों पै अपराधी चश्मा लगा।
जैसे विषयान्ध क्रोधान्ध मोहान्ध को,
जग में आता नजर न कोई अपना सगा॥१॥

अब ये विपरीत बुद्धि तुम्हारी हुई,
जो कि उपदेश मेरा जरा न लगा।
जिसने दल दल में फंसने की ही ठानली,
तो उसे थल पै ले आवे कैसे सखा ॥२॥

इन्द्रजीत

बस चचा साहिब अब जो कहा सो कहा,
आगे लाना जबां पै जिकर ये नहीं ॥३॥
क्षत्रिय कुल में कहां से तू गीदड़ हुआ,
तेरा अबला के जितना जिगर भी नहीं।
मुझ बबर सिंह का जो करे सामना,
ऐसा दुनिया में कोई बशर ही नहीं ॥४॥

विभीषण

बेशर्म अब तू अपनी जबां बंद कर,
वृथा बक बक लगाई क्यों तूने यहां।
दूध के भी ना टूटे तेरे दांत हैं,
यह अनुभव फिर तुझे है कहां ॥५॥
जिस पिता की तू शक्ति का मान करे,
इनको बाली ने नीचा दिखाया यहां।
लाया क्यों ना सिया को राम के सामने,
क्षत्रापन उस समय घुस गया था कहां ॥६॥

इन्द्रजीत

इस समय उस समय क्या सभी काल ही,
तेरी चालाकी सारे ही चलती रही।
देख करके ये गौरव पिता का सभी,
तेरी छाती हमेशा से जलती रही ॥७॥

बस तेरी ही शरारत के कारण सदा,
महा विपत्ति पिता पर है आती रही ।
नाश करने तैनें न छोड़ी कसर,
यह तो किस्मत हमारी संभलती रही ।८।

विभीषण

तू अधर्मी कुलघ्नी महादुष्ट है,
तुझे परभव का खौफो खतर ही नहीं ।
तैनें बोली की गोली में घायल किया,
मेरे हृदय में छोड़ी कसर ही नहीं ॥६॥
कामी अन्धे के अन्धा तू पैदा हुआ,
तेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं ।
कील ठुकवाने को मैंढक उछलता फिरे,
पेट फट जायेगा यह खबर ही नहीं ॥१०॥

विभी० शेर—

क्या सभ्यता यही सिखाई थी किसी बेपीर ने ।
तासीर बतलाई है या माता तेरी के क्षीर ने ॥

विभी० वार्ता—क्या त्रिखंडी लंकेश भी भरी सभा में ऐसे अयोग्य शब्दों को चुपचाप बैठे सुन रहे हैं, क्यों भाई साहब क्या आप इसको रोक नहीं सकते ?

रावण—जो भी कुछ इन्द्रजीत ने कहा है सो बिल्कुल ठीक कहा है यदि सत्य पूछा जाय तो तेरे षड़यंत्र का भण्डा फोड़ दिया—

शेर

अब तेरा विश्वास मैं त्रिकाल खा सकता नहीं ।
अपनी आदत से तू कभी बाज आ सकता नहीं ।
निश्चय मैं तू शत्रु मेरा ऊपर से भाई बन रहा ॥
अब भेद सारा खुल गया जो भी तू ताना तन रहा ।

विभी०-शेर

समझते शत्रु मुझे यह आपकी सब भूल है ।
आगे यही हालत रही तो लंक की भी धूल है ॥
मरते दम तक भी फर्ज अपना बजा जाऊंगा मैं ।
तू बदी से बाज आ फिर बाज आ जाऊंगा मैं ॥

रावण का गाना-प्रश्नोत्तर-बहरतवील

रावण

अब विश्वासघाती अलग हट जरा,
तेरा उपदेश मुझको सुहाता नहीं ।
क्योंकि पापी अधर्मी महानीच है,
अपने दिल की तू अग्नि बुझाता नहीं ॥१॥
भेद देना सिया का तेरा काम था,
वरना लंका में कोई भी आता नहीं ।
मीठा बन तैने काटी हमारी ही जड़,
तेरी वाणी किसी को यहां भाती नहीं ॥२॥

विभीषण

करदो अब भी वहम दिल से ऐसा तर्क,
वरना रो रोके आखिर को पछतावोगे ।
अपनी नारी को हर्गिज ना छोड़ेंगे वह,
सारी सेना को वृथा ही कटवाओगे ॥३॥
भेजदो भेजदो भेजदो जानकी,
मानो कहना हमारा तो सुख पावोगे ।
वृथा नरतन अमूल्य को खोकर के तुम,
खोटे कर्मों का खोटा ही फल पावोगे । ४ ।

रावण

बेशर्म निरंकुश तू बकता है क्या,
अब समझले तेरे धड़पे सिर ही नहीं ।
काट डालूंगा शस्त्र से गरदन तेरी,
मेरी शक्ति की तुझको खबर हो नहीं ॥ ५ ॥
निर्भय होकर के सन्मुख खड़ा मूढ़ तू,
धमकी सहने का तेरा जिगर ही नहीं ।
रामचन्द्र का तू पक्षपाती बना,
कृतघ्नी तेरे सा कोई नर हो नहीं ॥ ६ ॥
तेरे आये उदय भाग्य खोटे कर्म,
अब तेरे मरने में कुछ भी कसर हो नहीं ।
भाग जायेगा बच के कहां बेशर्म,
क्या यह आता नजर मेरा खंजर नहीं ॥७॥

विभीषण

देता धमकी किसे यहां तू अय बेधर्म,
आ अगाड़ी जरा अपनी शक्ति दिखा ।

काट सकता नहीं मेरा सिर तू कभी,
मेरी तलवार से अपना सिर तू बचा ॥८॥
अरे लंपट तू आंखों से चल हट परे,
मेरे आगे न अपनी ये शेखी दिखा।
होनी आई है क्यों तेरी आज ही,
किस कुमति ने तुझे अब दिया है बहका ॥९॥
तेरे सिर की धरणि पर उड़ेगी गरद,
क्या तू फिरता है दिलमें बहादुर बना।
किया चोरी से तूने सिया का हरण,
तुझे कर्म चबवायेंगे नाकों चना ॥ १० ॥

दोहा

सुनकर के व्याख्यान ये हुआ दशानन लाल।
उछल कूद सन्मुख खड़ा शस्त्र लिया निकाल ॥

चौक

इधर विभीषण ने भी झट अपनी शमशेर निकाली है।
मैदान में दोनों कूद पड़े नयनों का रंग गुलाली है॥
यह झगड़ा देख परस्पर का सब बुद्धिमान घबराने लगे।
फिर भानुकर्ण झट उठे बीच पड़ दोनों को समझाने लगे॥

कुम्भकर्ण का गाना-प्रश्नोत्तर

कुम्भकर्ण-

सगे होकर के तुम परस्पर जंग करते हो।
उधर शत्रु खड़ा सिरपर इधर आपस में लड़ते हो॥

रावण–

मेरे भानुकर्ण भ्राता जरा चुप आप हो जाईये ।
बड़ा शत्रु विभीषण जैसा ना कोई और बतलाइये ॥

भानु०

अजी आपस में जो कुछ है चाहे शत्रु चाहे मित्र ।
किन्तु औरों के तो तीनों ही मिल लगावेंगे हम छित्तर ॥

रावण–

वहम यह दूर करदो भ्रात जो इसको बचाओगे ।
दगा मैदान में देगा वफ़ा इससे न पावोगे ॥

भानु०

समझलो दिलमें यदि तलवार भाई पर चलाओगे ।
तो बदनामी यहां लेकर वहां नरकों में जाओगे ॥

रावण–

समझता तो हूं मैं भी आपने जो कुछ उचारा है ।
खड़ा देखो तो कैसे तानकर करमें दुधारा है ॥

भानु०

अर्ज दोनों से है मेरी खास कर आपसे पहले ।
जो कहना है विभीषण को वही कहना मुझे कहले ॥

विभी.

किसी की अच्छी शिक्षा को हृदय में धर नहीं सकता ।
निःशंक तुम छोड़दो इसको मेरा कुछ कर नहीं सकता ॥ ८ ॥

सभा में आज भाई को इसने तलवार दिखलाई।
पुण्य काफूर अब इसका हुआ यह समझलो भाई॥ ९॥

भानु.

बड़े भाई की इज्जत को जरा अब ध्यान में धरलो।
अभी तलवार अपनी को विभीषण म्यान में करलो॥ १०॥

विभी.

मगर यह आपका कहना मैं सिर आंखों पै धरता हूं।
आपके कथन के अनुसार म्यान में तलवार करता हूं॥ ११॥

भानुकर्ण दोहा—

तडितकेश कुल मणि मुकुट अय भाई लंकेश।
सिंहासन पर बैठकर देवो कुछ आदेश॥

चौबो—

आज्ञा देवो अब योद्धाओं को देरी का कुछ काम नहीं।
जबतक शत्रु ललकार रहा तब तक हमको आराम नहीं॥
अब एक जान तुम हो जावो और द्वेष भाव को दूर करो।
रण तूर बजाकर जल्दी से शत्रु का दल काफूर करो॥

रावण शेर—

राम की शक्ति कुचलना खेल बांये हाथ का।
परभव पहुंचाऊंगा बस अन्तरा है रात का॥

दोहा—

होनहार के वश पड़ा दशकन्धर लंकेश।
लघुभ्रात को जोश से बोला वचन नरेश॥

रांवण वार्ता—अरे दुष्ट विभीषण यदि अपना भला चाहता है तो यह अदर्शनीक अपना मुख मुझे ना दिखा और तूं जिस राम की सहायता के लिये तुला हुआ है। जा, उसी राम के पास चलाजा तुझको देख २ कर मेरी आंखों से खून बरसता है और तेरे अधिकार में जितनी सैना है उसको भी साथ लेजा मुझे उसकी भी जरूरत नहीं। क्योंकि जिन २ को तेरी संगति है वह सभी मेरे शत्रु हैं। कृतघ्नी विश्वासघाती स्वार्थी इन्हों से कोई लाभ नहीं उठा सकता, इसलिये तूं और तेरे सब मित्र तीन मुहूर्त के अन्दर २ लंका से निकल जावो नहीं तो सारे मौत के घाट उतारे जावोगे क्यों कि तुम मेरे गुप्त शत्रु हो।

शेर

गुप्त शत्रु से कोई जल्दी सम्भल सकता नहीं।
प्रत्यक्ष होकर के अरि नुकसान कर सकता नहीं॥
फट गया जो दिल मेरा वह तुझसे मिल सकता नहीं।
दाव तेरा अब यहां कोई भी चल सकता नहीं॥

विभी—छन्द.

खैर अब मैं क्या करूं जब काल सिर पर आगया।
अज्ञान का पर्दा तेरी बुद्धि के ऊपर छागया॥
श्वास तबतक आश मैं कहावत ये छोड़ूंगा नहीं।
चाहे समझ शत्रु परन्तु मित्र रहूंगा हर कहीं॥
जब तक जीता हूं मैं कर्तव्य निभाता जाऊंगा।
तूं समझ चाहे ना समझ मैं तो सुझाता जाऊंगा॥

दोहा

रहना उस संग चाहिये जो होवे अनुकूल।
यदि इससे विपरीत हो उड़े वहाँ पर धूल॥

चौक—

तजना अच्छा गुणहीन देव खोटा न जाप जपना चाहिये।
जिसमें न जौहर वह अस्त्र तजो अन्याई भूप तजना चाहिये॥
दुराचारिणी नार तजो वह मित्र तजो जो छल करता।
उस दुष्ट का मुख ना देखो कभी जो नार सताये पतिव्रता॥
जहां भले बुरे में अन्तर ना ऐसों का संग तजना चाहिये।
इन अन्धों में जो हो अन्धा उससे न वाद करना चाहिये॥
जो कह कर बात बदल जावे उसका विश्वास नहीं करना।
जिसकी कुछ जानपिछान नहीं उसके कुछ पास नहीं धरना॥
जो शत्रु समझे मित्र को उसके क्यों नाहक गल पडना।
वहां बीज डालकर खोना है फल देना कल्लर खकड़ना॥
फटगया दिल तेरे से ना सूरत देखना चाहता है।
तो नमस्कार लो वीर विभीषण भी लंका से जाता है॥

दोहा—

सज्जनगण सुन लीजिये, होनहार बलवान।
लंका से अब चल दिया लघुभ्रात पुन्यवान॥

चौक—

चले विभीषण वीर सुरति रघुवर चरणन में लाई।
तीन अक्षौहिणी संग फौज चली जरा देर न लगाई॥

हाथी घोड़े रथ संग्रामी गई गगन में छाई ।
हंसद्वीप की तरफ विकट गाड़ी की कला दबाई ॥
रामका उधर गुप्तचर भेद लंकाका लेकर चरण आशीश निवाया ।
रावण और विभीषण का सब भेद खोल दर्शाया ॥

दून दोहा

सूर्यवंश कुल मणि मुकुट हे स्वामिन जगदीश ।
विजय आपकी समझलो होगी विश्वा वीस ॥

चौक.

अब सुनो हाल सब लंका का वहां नया फूल इक और खिला ।
फट गया विभीषण रावण से यह भी इक कारण खूब मिला ॥
मनमें थी यही विभीषण के सीता वापस करवाने की ।
बस इसी बात से बिगड़ गई भाई से राजा रावण की ॥
फिर लगा परस्पर युद्ध होन तब भानुकर्ण ने छुड़वाया ।
मुझको ना अपना मुख दिखला यह दशकन्धर ने फरमाया ॥
यह वचन विभीषण सह न सका और अन्नजल वहां का छोड़ दिया ।
हे नाथ आपके चरणों में, दिल प्रेम पूर्वक जोड़ दिया ॥
तीस अक्षौहिणी* फौज सहित वह चला इधर को आता है ।

---

*सैना के आठ भेद होते हैं—

	१	२	३	४	५	६	७	८
	पतिसैना	सेना	सैनामुख	गुलाम	वाहिनी	प्रत्यनी	चमू	अनीकिनी
हाथी-	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७
रथ-	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७
घोड़ा-	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१
प्यादा--	५	१५	४०	१३५	४०५	१२१५	३६४५	१०९३५

इन हरेक में हाथी रथ घोडे प्यादे ये चार होते हैं उनकी संख्या कोष्टकों में देखो—

ऐसी १० अनीकिनियों की १ अक्षोहिणी होती है। १ अक्षोहिणी में २१८७० हाथी २१८७० रथ ६५७१० घोड़े तथा १०९३५० पैदल होते हैं।

आगे मुझको कुछ पता नहीं दिल में क्या ध्यान लगाता है ॥
सहसा विश्वास नहीं करता क्योंकि शत्रु का भाई है।
जैसी हालत मैंने देखी वैसी आकर बतलाई है ॥

राम दोहा.

अय वीर योद्धा किस तरह मैं गुण तेरे वर्णन करूं ।
यह लो खुशी से हार हीरों का तुझे अर्पण करूं ॥
जिस बुद्धि से लाया पता आश्चर्य उसपर है सभी।
देखोगे शीघ्र टूटता गढ़लंका को सारे अभी ॥

दोहा

गौरव पाकर गुप्तचर लगा फेर निज काम।
खबर यही श्रीराम ने फैला दई तमाम ॥

चौक—

सभी जगह यह लगी खबर तो बटने लगी बधाई है।
दशकंधर के यहां फूट पड़ी यह खुशी सभी दिल छाई है ॥
तीस अक्षौहणी फौज सगले वीर विभीषण आता है।
इस बात को सुनकर वानरपति सुग्रीव का दिल दहलाता है ॥

दोहा

उसी समय वहां से चला गया राम के पास।
होकर के भयभीत सा बोला ऐसे भाष ॥

सुग्रीव दोहा.

स्वामी मेरी वेनतां पर कुछ कीजे गौर।
तीस अक्षौहिणी आरही हंसद्वीप की ओर ॥

नौचौक.

हंसद्वीप की ओर गुप्तचर यही पता लाया है।
इसी बात को प्रभु आपने हरजहां पहुंचाया है॥
किन्तु कुटिल रावण की नस २ में फरेब छाया है।
क्या पता बहाने मिलने के धोखा देने आया है॥

दौड़

आप विश्वास ना करना बेनती हृदय धरना पुराना शत्रु भारा।
दशरथ नृप को आया था मारन यही अरि तुम्हारा॥

सुग्रीव का गाना

सुग्रीव—

यदि मिलने की मर्जी थी तो सैना संग क्यों लाते।
भेजते दूत या पाती कोई या खबर दिलवाते॥१॥

श्रीराम—

जो होगा ठीक ही होगा सखा न दिल में घबराइये।
यदि आया है लड़ने को तो फिर तुमको भी क्या चाहिये॥

सुग्रीव—

ठीक है आपका कहना इसी कारण तो आया हूं।
किन्तु यह भी भर्म लड़ते तो जंगी बिगुल बजवाते।

श्रीराम—

यदि निश्चय ही करना तो तुम्हें अख्तयार है सब कुछ।
भेद लो आप जाकर या किसी खेचर को भिजवाइये॥४॥

सु०-दोहा

आज्ञा आपकी चाहिये देरी का क्या काम ।
भेजूं विद्याधर कोई लावे भेद तमाम ॥
विभीषण ने निज दूत इक भेजा रघुवर पास ।
आकर सब कहने लगा जो था मतलब खास ॥

दूत-दोहा

दुख मोचन श्रीरामजी सज्जन पोषण हार ।
एक दास की वीनती सुन लीजे सरकार ॥

चौक

यह अर्ज विभीषण वीर की है चरणों की सेवा चाहता हूँ ।
बस लज्जा आपके हाथ में है मैं शरणा तुम्हारो आता हूं ॥
वचन सिया को दे बैठा स्वतन्त्र तुम्हें बनाऊंगा ।
इसलिये बिगाड़ी भाई से ना वचन के बट्टा लाऊंगा ॥

राम-दोहा

वीर विभीषण से मेरा है आन्तरिक प्रेम ।
कह देना वहां पर सभी वर्त रहा है क्षेम ॥

चौक—

रावण और विभीषण क्या मैं भला सभी का चाहता हूँ ।
और सिवा एक वैदेही के न और कुछ लेने आता हूँ ॥
आवो निःशंक सिर मस्तक पर तुम तो मेरे हमदर्दी हो ।
और फटे हुए दिल सीमन को तुमही एक अनुभवी दर्जी हो ॥
जैसा हूँ वैसा हाजिर हूँ शरणा तो श्री जिनवर का है ।
जिस काम के वास्ते आया हूँ वह काम तुम्हीं को करना है ॥

आवो मित्र यहां खुशी २ यह तम्बू डेरा आपका है ।
विश्वास तुझे मेरा मुझको तेरा तो डर किस बात का है ॥

दोहा

ले सन्देशा राम का गया विभीषण पास ।
आदि अन्त पर्यन्त सब हाल सुनाया भास ॥

चौबो.—

जब सुने राम के वचन विभीषण की आरति सब दूर हुई ।
अनुकूल विभीषण यही बात सब सेना में मशहूर हुई ॥
सुग्रीव नरेश्वर के दिल में फिर भी विश्वास न आया है ।
और ठीक भेद सब लेने को विद्याधर वहां पठाया है ॥

दोहा

पास विभीषण के गया विद्याधर सुविशाल ।
भेद भाव लेकर सभी आन कहा सब हाल ॥

चौबो.

करके निश्चय मन में आ फिर स्वागत का कारज करने लगे ।
उस खुशी का कुछ भी पार नहीं यहां प्रेम के झरने झरने लगे ॥
दरबार राम का लगा हुआ चहुं ओर थे योद्धे खड़े हुए ।
थे उद्योगी निज कर्त्तव्य पर और बक्तर तन पर पड़े हुए ॥

दोहा—

आ पहुंचे विभीषणजी धूम धाम के साथ ।
रामचन्द्र आगे बढ़े लम्बे करके हाथ ॥

चौक

वीर विभीषण ने अपना मस्तक चरणों में डाल दिया ।
औदार चित्त श्रीराम ने भी उस पर निज हाथ विशाल किया॥
क्षीर नीर सम प्रेम, प्रेम का जल नयनों से बहने लगा ।
विश्वास दिलाने के लिये राम अपने मुख से यों कहने लगा॥

श्रीराम—दोहा

तन दुबला कैसे हुआ अहो सखा लंकेश ।
शूरवीर धर्मज्ञ तुम कारण कौन विशेष ॥

चौक.

कारण कौन मिला मित्र तुमको दुबला होने का ।
जलवायु अनुकूल सभी और लंक कोट सोने का ॥
मिला समागम खूब तुम्हें है धर्म बीज बोने का ।
श्री जिनवर का धर्म समागम मिला कर्म खोने का ॥

दौड़—

तेरा सब पर सम मन है, फेर इतना क्यों गम है,
।नसी और शरीरी इनमें से है प्रियमित्र!है तुम्हें को दलगीरी।

विभी० दोहा

मैं तो हूँ प्रभु आपके चरण कमल का दास ।
सिवा यहां के और ना मिला मुझे कहीं वास ॥

चौक

जिसको ना मिलती ठौर कहीं उसको लंकेश बुलाते हो ।
हे नाथ अपेक्षा कौन आप जिससे ऐसा फरमाते हो ॥

श्री जलवायु तो शुद्ध लंक की किन्तु अब सब बिगड़ गई।
और धर्म बीज बोने की भी शक्ति इस कर से निकल गई॥
धर्म ठीक सर्वज्ञ देव का कर्म मैल को धोता है।
पर भाग्यहीन को तो फिर भी कर्मों का बन्धन होता है॥
कुल के गौरव को मैंने निज दिल से नहीं भुलाया है।
बस यही मानसी दुःख मुझे जिसने कमजोर बनाया है॥
यदि घृणा है तो मुझको कुछ रावण के कर्त्तव्यों पर है।
निश्चय उनसे कुछ वैर नहीं इज्जत मेरे दिल अन्दर है॥

दोहा

सत्यवादी के वचन पर रीझ गये रघुवीर।
दानवीर रणधीर नर यों बोले रघुवीर॥

राम-दोहा

सखा विभीषण कह चुके हम तुमको लंकेश।
ऐसा तू भाई मेरा जैसा भरत नरेश॥

चौक

यदि भरत है बांई भुजा ठीक तो भुजा मेरी तू दक्षिण है।
जैसा मुझको सुग्रीव मित्र वैसा तू मित्र विभीषण है॥
और जनक सुता के सिवा लंक से और ना कुछ ले जावेंगे।
बस ताज लंक का निज कर से दे मित्र तुम्हें दे जावेंगे॥

—श्रीराम का गाना—

तैंने विपत्ति समय में सहारा दिया॥
सगे भाई का दुःख न गवारा गया॥१॥

तैने सत्य धर्म को पाला है और दुनिया में नाम निकाला है।
तैने हृदय ये शर्द हमारा किया ॥२॥
जब हनुमत लंक में आया था तैने सीता का भेद बताया था।
हम पर आपने ये उपकार किया ॥३॥
तू जनकसुता का सहारा था सारी लंका में तू ही हमारा था।
कैसे दुष्टों में तैने गुजारा किया ॥४॥
तुम जैन धर्म के ज्ञाता हो सच्चे पुरुष जगत विख्याता हो।
खोटे पुरुषों से तूने किनारा किया ॥५॥

दोहा

रामचन्द्र के जब सुने अमृत झरते बैन।
विभीषण चरणों में गिरे लगे इस तरह कहन॥

वि० दोहा

मैं तो इस लायक नहीं जैसा कहते आप।
शरण पड़ा हूं आपके काटन निज संताप॥

चौक—

यदि मैं इस लायक होता तो जनकसुता क्यों दुख पाती।
क्यों आडम्बर इतना बढ़ता यह राड़ कभी की मिट जाती॥
जो होनहार की मर्जी है सो तो अब रंग दिखायेगी।
जब तक दशकन्धर का दम है तब तक सीता न आयेगी॥

दोहा

राम विभीषण का यहां हुआ परस्पर मेल।
इक दूजे का चाह रहे सभी कुशल और क्षेम॥

प्रथम बिगुल जिसदम बजा सावधान हुए शूर ।
योद्धों को लाली चढ़ी खुशी ऐन भरपूर ॥

राम दल की सजावट (तीनताल)

राम दल की सज गई सेना रण के बाजे बाज गये ।
दल का नायक सज गया अंगद बिगुल किया लश्कर सारा ।
आठ अक्षौहिणी दल पै सज गया अतुल वली हनुमत प्यारा ॥
महावली सुग्रीवराय भी रण की घटा में साज गये ॥१॥
जामवन्त नल नील गवय का भी संग्रामी बिगुल बोला ।
धरा कंपती जिनके पग से चली फौज बज गया गोला ।
हुई सलामी झंडा चमका आगे बरकम् दाज गये ॥२॥
अंगद हनुमत सुग्रीव दिलावर राम ने ओहदेदार किये ।
जामवन्त नल नील विराध यह संग सहायक चार दिये ॥
धनुष वाण लक्ष्मण ने धारा सब नायकगण साज गये ॥३॥
हुई चढ़ाई अब लंका पर रण के हैं बादल छाये ।
कर कवायद लश्कर चल दिना शोभा वरणी न जाये ॥
"शुक्ल मुनि" अन्याय तोड़ने रामचन्द्र महाराज गये ॥४॥

दोहा—

हंसरथ भूपाल भी गये राम के साथ ।
शस्त्रों से अति शोभते रणधीरों के गात ॥

चौक

आठ दिवस रहे हंस द्वीप फिर आगे को प्रस्थान किया ॥
चढ़ रहा वीररस योद्धों को लंका पर सबने ध्यान दिया ॥

दशस्थर की सीमा पर जा श्रीराम ने सैना डाल दई ।
और तेजी में लक्ष्मणजी ने फिर धनुषबाण टंकार दई ॥

दोहा—

लम्बी चौड़ी जगह थी योजन बीस प्रमाण ।
चक्रव्यूह सब सेना का किया वहां मंडान ॥

चौक—

मारू बाजा बजता है योद्धों को जोश दिलाने को ।
टंकार शब्द होरहे खूब शत्रु के दिल दहलाने को ॥
घनघोर शब्द सुन २ करके लंका वाले घबराते हैं ।
तब वीर दशानन इन्द्रजीत को ऐसे हुक्म सुनाते हैं ॥

रावण–दोहा

बेटा इन्द्रजीत अब क्यों करते हो देर ।
कर तैयारी फौज की शत्रु को ले घेर ॥

चौक

शत्रु को ले घेर स्वयं आ फंसे कर्म के मारे ।
बिन पुरुषार्थ किये सिंह को मिले मृगगण आ सारे ॥
समझ लिया मैंने बेटा प्रबल हैं भाग्य तुम्हारे ।
करो नाश शत्रु का बस होगये आज पौबारे ॥

वार्ता रावण–बेटा इन्द्रजीत आज अपने जौहर को दिखाओ ।

इन्द्र–आपकी कृपा से ।

शेर

यदि मैं चाहूँ तो एक बाण में अन्धेर मचा दूं।
आये हुए मध्याह्न में सूर्य को छिपा दूं॥
क्या राम क्या सुग्रीव सब परभव को पहुंचा दूं।
इक तीर से तौफान की तसवीर बना दूं॥

रावण दोहा

शाबास मेरे सुत केहरि इन्द्रजीत बलवन्त।
जंगी बिगुल बजा अभी करो अरि का अन्त॥
चढ़ा हुक्म दशकन्धर का लगा बजन रणतूर।
बख्तर शस्त्र पहन कर खड़े हुए सब शूर॥

चौक—

सज गई विकट गाड़ी संग्रामी रथ पर भूप सवार हुए।
हाथी घोड़ों का पार नहीं अद्भुत विमान तैयार हुए॥
मारू बाजे बजते हैं योद्धों को जोश दिलाने को।
कल्पान्तकाल की तरह चला रावण निज धूल उड़ाने को॥

दोहा

सहस्र अक्षोहिणी सैन को देख हर्ष दिल मांय।
रणभूमि में आन के दिया मोर्चा लाय॥

चौक

योजन पचास में फौज पड़ी रावण की चक्रव्यूह रच के।
अप-अपने शस्त्र नचाते हैं कोई गदा उछाल रहे हंस के॥

चौक.

इन्द्रजीत और भानुकर्ण थे मेघवाहन दुर्दान्त बड़े ।
मारीच सुन्द सारण आदि यह सभी वीर बलवन्त खड़े ॥
त्रिशूल भुशुंडी धनुषबाण शतघ्नी की दनादन होती है ।
कहीं दण्ड खंग शस्त्र अपार मुग्दर की सजावट होती है ॥
फिर उतर पड़े रणक्षेत्र में बलवीर दुनर्फी खाकर के ।
तब लगा घोर संग्राम होन कई गिरे धरणि गश खाकर के ॥
दुर्दान्त महाबलवन्त शूरमा उधर से हस्त प्रहस्त चढे ।
दोनों का मान मर्दन करने इस तरफ वीर नल नील बढ़े ॥
अब लगा होने संग्राम घोर कायर का हृदय फटता है ।
मिट जाता है वह दुनियां से जिस पर शस्त्र जा पड़ता है ॥

दोहा

नल भूपति ने हस्त के मारा कस कर बाण ।
शत्रु ने मैदान में दिये छोड़ झट प्राण ॥

चौक

यह हाल देख के प्रहस्त वीर के तन में गुस्सा छाया है ।
तेजी से हल्ला बोल दिया बानर दल आन दबाया है ॥
इस तरफ से नील बली ने भी सन्मुख अपना दल ठेल लिया ।
प्रहस्त सुभट के सन्मुख जाकर संग्रामी रथ को मेल दिया ॥
जब आन परस्पर मेल हुआ तो युद्ध भयानक होने लगा ।
इक एक शूरमा शर शय्या पर नींद सदा की सोने लगा ॥
फिर नील बली ने मारी एक शत्रु को सांग घुमा करके ।
जा लगी प्रहस्त के हृदय में झट गिरा मूर्च्छा खाकर के ॥

फिर इक दम हल्ला बोल दिया रावण के दल में भगी पड़ी।
अब उनकी गिनती कौन करे जो खून से लाशें रंगी पड़ी॥
पराजय हुई दशकन्धर की और विजय राम ने पाई है॥
अब रणक्षेत्र में दशकन्धर की फौज दूसरी आई है॥

दोहा

भूप वीर मारीच शुक सारण और सिंहरथ।
वीभत्स उद्दामा रवि मकरचन्द्र अश्वरथ॥

चौपै

कामाक्ष और ज्वरभूप चढे गम्भीर वली थे सिंह जघन।
सम्भूप सकामा महावली यह चढ़े वीर दिल अति मगन॥
यह महावली दशकन्धर के योद्धे आ रण में ललकारे।
इस तरफ राम की सेना ने वस्त्र शस्त्र तन पर धारे॥

दोहा—

मदन और अंकुशवली प्रथित और सन्ताप।
पुष्पास्त्र सुविघ्न भट नन्दन दुरि और ताप॥

चौक

सुदुर घर सज गया वीर योद्धा रणधीर वहादुर था।
सन्ताप से आ मारीच जुटा जो कि वलवीर उजागर था॥
मारीच वीर ने रणक्षेत्र में सन्ताप भूप को मार दिया।
नन्दन वानर ने यहां ज्वर राक्षस को धरणि पछाड़ दिया॥
राक्षस उद्दामा ने विघ्न सुभट दल में घायल कर डाला है।
तब दुरित वीर के एक वाण से परभव शुक सिधारा है॥

सिंह जघन ने प्रतीप कपि पर अमोघ बाण को छोड़ दिया।
जब लगा उर स्थल आकर के दुनिया से नाता तोड़ दिया॥
यह महाघोर संग्राम देखकर सूर्य अस्ताचल पहुंचा।
योद्धों ने शस्त्र म्यान किये होगई शाम ये दिल सोचा॥
अप अपने डेरों में जाकर सब योद्धों ने विश्राम किया।
जो नियत किये थे मुर्दों पर अप-अपना सबने काम किया॥

दोहा—

दिनकर जब प्रगट हुआ हुई निशा सब दूर।
योद्धे सब तैयार थे बजन लगा रण तूर॥

नौ. चौक

बाजा जब रणतूर चले शूरे खा जोश समर में।
बख्तर तन पर पड़े हुए लटके तलवार कमर में॥
जीने की तज दई आशा ना किया ध्यान कुछ घरमें।
रणक्षेत्र में कूद पड़े सब शस्त्र लेकर कर में॥

दौड़—

खड़े सब तने दुतर्फी सिर्फ थी देर हुकम की बैठ संग्रामी
रथ में, सब सैना को कर आगे दशकन्धर कहे मगन में।

रावण-दोहा

सुनहु शूर मम वचन सब लगा इधर को ध्यान।
जौहर दिखावो आज तुम समर भूमि दरम्यान॥

नौ० चौक

समर भूमि दरम्यान आज बस खतम सभी को कर दो।
बांध मुश्क दो भीलों की सन्मुख मेरे ला धर दो॥

इन्द्राणी का वीर समर में अदा आज सब कर दो ।
मार २ बाणों से सब सैना का छेद जिगर दो ॥

दौड़

जौहर जो दिखलायेगा, जागीर सो पायेगा, पीठ जो देगा रण में, जीता छोड़ूं नहीं उसे आखिर पहुंचे नरकन में ।

दोहा—

लंकपति के वचन सुन महारोष मन खाय ।
ललकारे सब शूरमा रणभूमि में आय ॥

गाना तर्ज आल्हा-ऊदल

रामचन्द्र की सेना पर जा योद्धे परे सभी अर्राय ।
दंड चक्र परिघा व मुग्दर फरसी गदा को रहे चलाय ॥
जिधर झुके रणधीर शूरमा लाशों पर दें लाश बिछाय ।
यह गति कर दई रण क्षेत्र की नदी खून की दई बहाय ॥
वीर बहादुर चढे जोश में सबको मार ही मार सुहाय ।
जैसे पक्षी उड़े व्योम में ऐसे शीश उड़ें रण मांय ॥
दुर्जयमाली झुके जिधर को उधर ही देवे अंधेर मचाय ।
बेशक राक्षस बूढा था पर कोई सन्मुख आवे नांय ॥
रामचन्द्र की सेना पर गई राक्षस सैना गालब आय ।
खननन २ खांडा बाजे शतघ्नी दनादन रही मचाय ॥
विकट गाड़ि घूमें रण में जिनकी झपट सही ना जाय ।
बिजली मानिन्द शस्त्र पड़ते धक्का लगे कलेजे जाय ॥
देख पराक्रम रावण दल के राम की सैना गई घबराय ।
देख हाल सुग्रीव नरेश्वर धनुष बाण कर में सम्भलाय ॥

खबर लगी यह हनुमान को वानरपति चढ़े रणमांय ।
झट आकर प्रणाम किया और बोला ऐसे शीश नवाय ॥

हनु.दोहा

स्वामी आज्ञा दीजिये सेवक को इक बार ।
रण भूमि में आज मैं कठिन करूं तलवार ॥

चौक

कौन वीर है रावण का जो मेरे सन्मुख आयेगा ।
जब गरजूंगा रण में जाकर शत्रु दल पीठ दिखायेगा ॥
प्रथम अकेले ने लंका में अक्षकुमार को मारा था ।
और भरी सभा में रावण का ठोकर से ताज गिराया था ॥

सुग्रीव-दोहा

महाबली बस है मुझे तुझ पर ही विश्वास ।
जावो अब रण क्षेत्र में करो अरि का नाश ॥

दोहा

पा आज्ञा सुग्रीव की चढ़े अंजनीलाल ।
रणभूमि में जा धसे होकरके विकराल ॥

चौक

फिर क्या था श्रीराम फौज ने निज पांव समर में रोप दिया ।
और पवनपुत्र ने जोश दिलाकर सहसा हल्ला बोल दिया ॥
जैसे शेर हस्तियों में यों राक्षस दल को दलने लगा ।
या शूकर जैसे पानी को ऐसे रणधीर मसलने लगा ।

देख बली का तेज दशानन की सेना घबराई है ।
होगये धर्म पर खाक शूर कायरों ने पीठ दिखाई है ॥
ये देख हाल दुर्जय माली हनुमान के सन्मुख आया है ।
तब पवन पुत्र ने उस वृद्ध को ऐसे वचन सुनाया है ॥

हनुमानजी का गाना—समझाना

अरे बूढे बता तूने अक्ल कहां बेच खाई है ।
अवस्था वृद्ध है तलवार तैने क्यों उठाई है ॥१॥
गई अब उम्र वह तेरी जो थी संग्राम करने की ।
बता अब काल को आकर के क्यों घमकी दिखाई है ॥२॥
बैठ करके किसी स्थान में अब भजन कुछ करले ।
क्योंकि परभव में जाने की तेरी यह उमर आई है ॥३॥
किये संग्राम तैने उम्र भर अब तो धर्म कर ले ॥
तरस खाकर "शुक्ल" कहता तेरी इसमें भलाई है ॥४॥

दुर्जय माली का उत्तर-गाना

अरे तू छोकरे कल के काल को क्यों खिझाता है ।
चन्द दिन सैर कर अपनी तू क्यों हस्ति मिटाता है ॥
दूध के भी नहीं टूटे दांत कितना अकड़ता है ।
तेज बेकार को मूर्ख तू क्या यौवन दिखाता है ॥२॥
मेरे इक तीर से अवसान सारे भूल जायेगा ।
जरा तू सामने आ क्यों खड़ा बातें बनाता है ॥३॥
लाल तू एक माता का "शुक्ल" यह तरस आता है ।
किन्तु मैं क्या करूं जब काल ही तुझको मिटाता है ॥४॥

हनुमानजी का गाना-बहरतवील

अच्छा बाबा तू अपना दिखाले जौहर,
क्योंकि फिर तेरे मन की ना मन में रहे।
अब तू मारे ही अरमां यहां काढ़ले,
कोई शक्ति बकाया ना तन में रहे ॥१॥
तू तो मुर्दा है खुद क्या मैं मारूं तुझे,
वरना तेरा निशां ना समर में रहे।
मैंने समझाया पर तू समझता नहीं,
क्यों ना आनन्द से अपने घर में रहे ॥२॥

दोहा---

पवन पुत्र के सुन वचन छाया क्रोध अपार।
हनुमत पर करने लगा वृद्ध वार पर वार ॥

चौक.

जैसे निरर्थ खर्च में मूर्ख दौलत वृथा गंवाते हैं।
जब पास नहीं कुछ रह जाता तो फिर पीछे पछताते हैं॥
बस यही हाल हुआ बूढे का शस्त्र विद्या सब खो बैठा।
फिर ऐसा दिल में भान हुआ मैं जीने से कर धो बैठा॥

दोहा

आश्चर्य में वह पड़ गया उड़ गये होश हवास।
हनुमत तब करने लगा मुख से वचन प्रकाश॥

हनु. दोहा

क्यों बाबा अब किसलिए मुंह को रहे उबाय।
यदि कुछ शक्ति और है सो भी दो दिखलाय॥

चौक

अब यदि समाप्त कर बैठे तो घर जाकर आराम करो ।
माला कर में लो पकड़ नित्य श्री नमोकार का जाप करो ॥
क्योंकि अब तो काल स्वयं तुमको ले जाने वाला है ।
तो किस कारण फिर शस्त्र से मुर्दे का खून वहाना है ॥

दोहा

वज्रोदर बलवीर नृप आ पहुंचा तत्काल ।
हो सन्मुख हनुमान के बोला आंख निकाल ॥
क्यों शठ वृद्ध से इस तरह बातें रहा बनाय ।
यदि कुछ शक्ति बदन में आज मुझे दिखलाय ॥

वज्रोदर का गाना-बहरतवील

क्यों मेंढ़क सा टर्राता अय बेशर्म,
तुझको जीता समर में ना छोड़ूंगा मैं ।
आज मेरी प्रतिज्ञा यही समझले,
सबको करके खतम मुंहको मोड़ूंगा मैं ॥
पहले तुझको मिटा करके आगे बढ़ूं,
मान सुग्रीव का आज तोड़ूंगा मैं ।
बाकी दो ही रहे सब विजय है मेरी,
शक्ति उनकी भी सारी निचोड़ूंगा मैं ॥

हनु. दोहा—

वाहजी वाह क्या खूब ये शकल दिखाई आय ।
था गल में मुर्दा पड़ा तुमने दिया हटाय ॥

हनुमानजी का गाना-बहरतवील

बूढे बाबा को देकर अभयदान हम,
　　आवो तुमको पहुंचायेंगे मुल्के अदम।
आज अरमान दिल का सभी काढ़ लें,
　　क्योंकि करदूंगा फिरतो तेरा दम खतम॥
राम सुग्रीव लक्ष्मणको देखेगा क्या यहांहो,
　　कर देंगे साहिब तुम्हारी भसम।
दाना पानी तेरा अब खतम होगया,
　　सच्ची कहता हूं तुमको तुम्हारी कसम॥

दोहा—

पवनपुत्र के वचन सुन वज्रोदर झुंझलाय।
वज्रबाण हनुमान पर सहसा दिया चलाय॥

चौबोला

पवनपुत्र ने काट वार को अपना बाण चलाया है।
तज दिये प्राण वज्रोदर ने परभव डेरा जा लाया है॥
यह हाल देख जम्बू माली नृप का नन्दन सन्मुख आया।
पर एक वार से हनुमान ने उसको भी परभव पहुंचाया॥

दोहा

दो योद्धा दल में गिरे मचगया हाहाकार।
रावण दल में एक दम छाया जोश अपार॥

चौक---

महोदर आदि वीर नृपति चढ़ आये चहुं तरफा से।
अंजनी लाल यूं घेर लिया जैसे कोई पक्षी वर्षा से॥

उदधि में जैसे बडवानल यों राक्षस दल में शोभ रहा।
जैसे भानु के चढ़ते ही तारा गया का ना खोज रहा॥
या यों समझें महा प्रबलसिंह जैसे कि गर्ज रहा वन में।
त्यों अस्त्र शस्त्र घुमा २ करता कमाल रण के फन में॥
मुर्दों पर जीते गिरने लगे यह हाल हुआ रण क्षेत्रों में।
तब लगा बरसने रक्त देख यह कुम्भकर्ण के नेत्रों में॥

कुम्भकर्ण की चढाई-गाना तीनताल में.

राम दल से चला है लड़ने कुम्भकर्ण योद्धा भारी।
रण का डंका बजता आवे पल्टन फौज चली सारी॥
श्रीराम दल भी आये मैदाने ज़ंग में।
भारी है फौज संख्या योद्धों की संग में॥
बानर ताल बजाते जावें मन में खुशियां कर भारी।
लोर बांसरी बजती जावे शूरों को जोश चढे भारी॥
वे बबर शेर हनुमत पहले ही थे डटे।
देखा आसार दल का रावण के दमघटे॥
जामवन्त नल नील विराध और संग में योद्धे बलधारी।
आकाश मण्डल में विद्याधर कहें रामचन्द्र धन्य उपकारी॥
दुष्टों के मारने को हनुमान हैं चढे।
वज्र को लेके हस्त में कुम्भकर्ण से अडे॥
दोनों तरफ से अब रण बंध गये रण में छागई अंधियारी।
कुम्भकर्ण को देख "शुक्ल" रघुवर सेना हिम्मत हारी॥

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम चढ़ा दहल गई जमीन।
लगा समर में घूमने जैसे विकट मशीन॥

चौक

राघव सेना अति घबराई उस वीर की शक्ति सह न सके।
इक सिवा अंजनीलाल युद्ध में सन्मुख कोई रह ना सके॥
कल्पान्तकाल की तरह वीर ने रूप भयानक धारा है।
जिस तरफ झुका बस उसी तरफ सब रुन्ड मुन्ड कर डारा है॥
मुर्दों में जाते लगे छिपन कई अपने प्राण बचाने को।
यह हाल देख कई लगे सोचने रण में पीठ दिखाने को॥
सब छिन्न भिन्न होगई सेना सुग्रीव ने हाल निहारा है।
झट बिगुल बजाया योद्धों ने बखतर निज तन पर धारा है॥
चलदिये दधिमुखमाहेन्द्र अपअपनी फौज सजा करके।
चौथे मुकुन्द अंगदपंचम सज गये जोश में आकरके॥
तब चढे वीर दुर्दान्तबली भामण्डल इनमें शामिल थे।
मिथिलेशकिशोरी के भाई जो कि इस फन में कामिल थे॥

दोहा

छः योद्धे जाकर अड़े कुम्भकर्ण के साथ।
उधर अकेला वीर था दशकन्धर का भ्रात॥

चौक—

जब लगा घोर संग्राम होन तो नदी रक्त की बहने लगी।
कल्पान्तकाल आगया आज वहां की जनता ये कहने लगी॥
लगी बाण वर्षा होने बहुते शरशय्या पर लेट गये।
ना हटे पिछाड़ी दोनों दल शूरे निःशंक रण भेंट गये॥

दोहा—

कुम्भकर्ण ने तानकर छोड़ा "सम्मोहन बाण"।
निद्रागत सेना हुई कपिपति का हुआ ध्यान॥

चौबो

*"शयनाहतास्त्र" को छोड़ भूपने सेना तुरत उठाई है।
फिर तमकताब क्रोधातुर होकर अपनी गदा घुमाई है॥
बाहक संग संग्रामी रथ सब कुम्भकर्ण का चूर हुआ।
मुग्दर ले नीचे कूद पड़ा क्योंकि योद्धा मजबूर हुआ॥

दोहा—

मुग्दर ले भानुकर्ण कपिपति ऊपर जाय।
गुस्से में भरपूर हो रथ पर दिया झुकाय॥

चौबो.

संग्रामी रथ तो उसी समय सुग्रीव नरेश का तोड़ दिया।
थे वीर बराबर के दोनों फिर आपस में जंग जोड़ लिया॥
विद्या की शिला बना करके सुग्रीव नरेश ने छोड़ दई।
पर भाकनुर्ण ने मुग्दर से वो माया सारी तोड़ दई॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने तान फिर मारा अस्त्र रज बाण।
घोर अन्धेरा छा गया उड़ी धूल आसमान॥

चौक

यह हाल देख सुग्रीव ने झट अस्त्राभ्रु बाण चलाया है।
जिस रज से घोर अन्धेरा था उसको झट शान्त बनाया है॥
छोड़ दिया इक तड़ित बाण सुग्रीव ने महारिसा करके।
जा लगा अरि के हृदय में झट गिरा मूर्च्छा खा करके॥

*१ मवोधनास्त्र।

दोहा

कुम्भकर्ण जिस दम गिरा होकर के बेहोश ।
राक्षस सेना का हुआ ठंडा सारा जोश ॥
छाई खुशी रघुसैन में जब अरि गया मुर्झाय ।
उत्साह चौगुना बढ़ गया हल्ला बोला जाय ॥

चौक

पक्षीगण उड़ जाते हैं जिस तरह वृक्ष गिर जाने से ।
ऐसे ही भगी सभी सेना इक योद्धा के मुरझाने से ॥
दुर्दशा देख कर सेना की दशकन्धर दिल में रिसाया है ।
झट चढा आप संग्रामी रथ मुख से रण तूर बजाया है ॥

दोहा

तैयार पिता को देख कर आया ज्येष्ठ कुमार ।
विनय सहित मस्तक निवा कहा वचन सुखकार ॥

मेघनाद—दोहा

पिता आप किस पर चढे बखतर शस्त्र धार ।
शृगालों पर क्या शोभते आप सजा हथियार ॥

चौक—

आज्ञा मुझको दे दीजे देखो तो फिर क्या कर दूँगा ।
जिस तरफ झुकुंगा उसी तरफ लाशों पर लाशें धर दूँगा ॥
कौन चीज सुग्रीव विचारा आज सभी को मारूंगा ।
यह नित्य प्रति का है जो झगड़ा बस सभी खतम कर डालूंगा ॥

रावण—दोहा

बेटा तुम पर ही मेरा है अन्तिम विश्वास ।
जावो अब रण क्षेत्र में करो अरि का नाश ॥

रावण का गाना—इन्द्रजीत प्रति

करो जंग बहादुर बेटा अब दुश्मन को मार दो।
अमोघ अस्त्र धार उनके सिर उतार दो ॥१॥
कहलाता इन्द्रजीत तूने जीता इन्द्र को।
क्या चीज राम सेना है छिन में निवार दो ॥२॥
बढ़ने न पावे आगे को ये सेना शत्रु की।
लेकर के सेना अपनी तुम आगे विस्तार दो ॥३॥
राष्ट्र अपने की करो अब सेवा तन मन से।
परवाह न करना मरने की यह निश्चय धार लो ॥४॥
भानुकर्ण चाचा तुम्हारा देखो मूर्छित है।
शत्रु से इसका बदला तुम अपना उतार लो ॥५॥

दोहा

स्वीकार वचन करके हुआ इन्द्रजीत तैयार।
बिगुल सुनत ही सजा लिये योद्धों ने हथियार॥

तीन ताल—इन्द्रजीत की तैयारी

मेघनाद तैयार हुआ है पहन अभेद्य भारी बख्तर।
खिच गई पेटी दलनायक की संग चले हैं सब अफसर॥
लंका से दल चला मैदाने शान पर।
काली घटा हो छाई सब आसमान पर॥
कवायद करवा सब सेना को देख रहा अफसर बस्त्र।
शलवट हो ना किसी वर्दी में मेघनाद बोला हंसकर॥

बाजा बजा है रण का झंडा लगा दिया ।
रावण की जय मनाओ सबको सुना दिया॥
बर्छी भाले और तमंचे बांध लिये सबने शस्त्र ।
वानर जन पर आज अपूर्व बरसाओ अस्त्र शस्त्र ॥
शक्ति नहीं है दुश्मन सहे मेरे वार को ।
लगा दे चोब डंका बोला नक्कार को ॥
बिन जीते अब राम लखन के वापिस लौटूं ना घर पर ॥
"शुक्ल" ध्यान अब करो अगाड़ी काल खड़ा सबके सिरपर॥

दोहा

इन्द्रजीत रण में चढ़ा होकर के विकराल ।
सुर्खी छाई नयनों में भृकुटी सहित निडाल ॥

चौक

इन्द्रजीत और मेघवाहन आ रणभूमि में ललकारे।
विमान विकट गाड़ी सैना भारी योद्धे संग बलवारे ॥
कल्पान्त काल की तरह देख वानर योद्धे घबराते हैं।
तब इन्द्रजीत वानर सेना को ऐसे शब्द सुनाते हैं ॥

इन्द्र० दोहा

इधर कान धर कर सुनो वानर वीर तमाम ।
सब यहां से भागो सभी पहुंचो निज २ धाम ॥

चौक

कहां गया सुग्रीव बली और पवन पुत्र हनुमान कहां ॥
राम लखन और भामंडल सबका आ पहुंचा काल यहां ॥

बाकी डालो हथियार सभी क्यों मौत पराई मरते हो ।
जा मिलो बाल-बच्चों से तुम किसलिए जुदाई लेते हो ॥

दोहा

इन्द्रजीत का नाम सुन घबरा गये तमाम ।
जैसे हों भूकम्प से कंपित सारे धाम ॥

चौक

यह हाल देख सुग्रीव और भामंडल दोनों वीर चढ़े ।
झट इन्द्रजीत और मेघवाहन के सन्मुख जा रणधीर अड़े॥
मेघवाहन से रण भूमि में भामंडल ललकारा है ।
और इन्द्रजीत के पास पहुंच सुग्रीव ने वचन उचारा है ॥

सुग्रीव का गाना

क्यों अभिमान करता खड़ा हो सम्भल कर ।
कदम अपना आगे बढाओ सम्भल कर ॥१॥
यदि इच्छा लड़ने की तेरी प्रबल है ।
तो देरी क्यों करते हो आवो सम्भलकर॥२॥
जरा सोच लेना समर है ये बांका ।
करो सैर परभव की जावो सम्भल कर॥३॥
यदि वीर हो तो बढो अब अगाड़ी ।
नहीं पैर पीछे हटाओ सम्भल कर ॥४॥

इन्द्रजीत का गाना

तुम्हें आज सब कुछ दिखाऊं सम्भल कर ।
समर में सभी को लिटाऊं सम्भल कर ॥१॥
समझलो सभी जान खतरे में अपनी ।
कि सिर सबका धड़ से उड़ाऊं सम्भल कर ॥२॥
इस लंका पै चढ़ने का तुमको नतीजा ।
सभी को समर में दिखाऊं सम्भल कर ॥३॥
तजो आश जीने की तैयार हो लो ।
परभव में सबको पठाऊं सम्भल कर ॥४॥

दोहा—

आपस में यूं बढ़ गया क्रोध दुतर्फी जान ।
रण भू में होने लगा महाघोर घमसान ॥

चौक—

विकट वीर बलवान बहुत धरणी पर मार गिराये हैं ।
कभी अग्निवाण कभी धुंधवाण कभी मेघवाण बरसाये हैं ॥
फिर मेघवाहन ने नागफांस अस्त्र छोड़ा भामंडल पर ।
वह जनक पुत्र को जा लिपटा जैसे अहि लिपटा सन्दल पर॥

दोहा—

रघुवर दल के पड़ गये महा संकट में प्राण ।
सज्जनगण सुन लीजिये होनहार बलवान ॥

चौक

इन्द्रजीत ने भी अपना अस्त्र सुग्रीव पै साध लिया ।
उस तरफ बंधा भामंडल यहां सुग्रीव नरेशको बांध लिया॥
यह हाल लखा वज्रांगवली ने क्रोध वदन अति छाया है ।
अन्य लक्षों कोछोड़ के फौरन उस तरफ ही रथ बढवाया है॥

दोहा----

जा पहुंचे झटपट वहीं जहां थे दोनों वीर ।
रोके रथ दोऊ शूरों के बोला अमित वली वीर॥

चौक--

क्यों उछल कूद मचाई है अब परभव को पहुंचाऊंगा ।
सुग्रीव और भामंडल के बांधन का मजा चखाऊंगा ॥
फिर क्या था वे वीर परस्पर बाणों की वर्षा करने लगे ।
घनघोर युद्ध छिड़ गया उन्होंका कायर लख के ही गिरने लगे॥
रक्त नदी बहती यहां नभ में रक्त फुव्वारे चलते हैं ।
जिस पर जा पड़ें वीरों के बाण बस पता न उसका पाते हैं॥
थे अमितबली रावण सुत पर वज्रांग भी एक ही नाहर थे ।
थे कांपते जिनके नाम से नृप ऐसे दुनियां में जाहिर थे ॥
रुक गये पांव श्रीरामचमू के देख के योद्धा बलधारी ।
भिड़ गई सैना फिर से आपस में मारा मार मची भारी ॥
भुशुंडी शतघ्नी परिघपटा भाला खंचर भी खटकते हैं ।
उन तीनों वीरों के आपस में व्योम में वार सटकते हैं ॥

दोहा

अस्त्र शस्त्र कड़कते ज्यों हो विद्युत् पात ।
देख तेज वज्रांग का सोचें दोनों भ्रात ॥

अमित बली हनुमन्त हैं शक इसमें कुछ नांय।
शक्ति ना हर कोई सह सके नाम सुनत भग जाय॥

चौक

धर बली श्री हनुमान के बाणों से अम्बर छाया है।
इक मेघवाहन और इन्द्रजीत क्या सब रावण दल घबराया है॥
इतने में मूर्च्छा त्याग के रण में भानुकर्ण भी आया है।
फिर तो क्या था रणभूमि में कल्पान्त काल सा धाया है॥

दोहा

कुम्भकर्ण ने उछल कर मारी गदा घुमाय।
पवनपुत्र उस गदा से गिरे मूर्च्छा खाय॥

चौक

होगये वीर तीनों बेवश फिर राघव सेना घबराई।
यह हाल देख लक्ष्मण दल का रावण सेना अति गर्वाई॥
पक्षी जैसे उड़ते नभ में यों वीरों के सिर उड़ते हैं।
यह हाल विभीषण देख राम आगे यों गिरा उचरते हैं॥

विभी०–दोहा

सेना हमारी होगई सभी प्रभु बेकार।
रावण के सुत भ्रात ने किया बहुत संहार॥

चौक—

भामंडल और सुग्रीव बली दोनों बेवश कर डारे हैं।
धोखे में गिरा वज्रांग बली सब दल के होश बिगारे हैं॥
मानिन्द शेर के गर्ज रहे निर्भय हो अब तीनों दल में।
ऐसे तो खाली कर देंगे हमको योद्धों से क्षण पल में।

दोहा

केवल इक अंगद बली निभा रहे हैं काम ।
जिनके पैरों पर खड़ी कुछ सेना सुख धाम ॥

चौक—

इसका अब जल्दी विचार करो नहीं तो पीछे पछतावोगे ।
यदि ले गये लंक में तीनों को तो कर मलते रह जावोगे ॥
अब तक तो दुःख है सीता का फिर छोटा सा सन्ताप नहीं ।
और बिना तीन योद्धों के बाकी इस दल में रहे खाक नहीं ॥

गाना विभीषण व श्रीराम के प्रश्नोत्त

विभीषण

यह देख हाल दिल को बिल्कुल ही सबर नहीं है ।
इस दम हमारी सेना उनसे जबर नहीं है ।
अंगद अकेला रण में कब तक डटा रहेगा
हिलता है इक जगह पर मेरा जिगर नहीं है ।

राम

सुनकर वचन तुम्हारे मन को सबर नहीं है ।
बीतेगी आज कैसी कुछ भी खबर नहीं है ॥
बजरंग पड़ा है मूर्च्छित दो नाग फांस में है ।
मेरा भी इक जगह पै इस दम जिगर नहीं है ॥

विभीषण

झुकता है जिस तरफ को वो भानुकर्ण देखो ।
जिसके मुकाबले हो यम का गुजर नहीं है ॥

राम

बेशक अतुल बली है भानुकर्ण बहादुर ।
लड़ता है काल बन कर इसमें कसर नहीं है ॥

विभी.

वो इन्द्रजीत भाई दोनों को आप देखें ।
जौहर दिखा रहे हैं कुछ भी तो डर नहीं है ॥

राम

रावण के पुत्र दोनों बेशक हैं वीर बांके ।
आसान उनसे करना निश्चय समर नहीं है ॥

दोहा

कुम्भकर्ण हनुमान को झुक कर लगा उठान ।
अंगद ने अति क्रोध में मारा कस कर बाण ॥

चौक

यह वार बचाया कुम्भकर्ण ने हनुमान की मूर्छा दूर हुई ।
और अंजनीलाल फिर ललकारे अंगद की आरति दूर हुई ॥
इतने में विभीषण आ पहुंचे श्रीराम की आज्ञा पाकर के ।
बस फिर क्या था वानर सेना बढ़ गई जोश में आकरके ॥

गाना

खड़ा जिस दम विभीषण तान कर कर में दुधारा है ।
मेघवाहन ने फिर सोचा कि यह चाचा हमारा है ॥१॥

ख्याल यह ज्येष्ठ भाई का कि टल जाना ही अच्छा है ।
लड़ें किससे पितावत् यह बड़ा गुरुजन हमारा है ॥२॥
भाव भानुकर्णों के भी यही लड़ना नहीं अच्छा ।
यदि वा हम मचावें जंग तो हर्जा हमारा है ।३।

दोहा—

इसी समय पीछे हटा राक्षस वीर तमाम ।
जैसा किया विचार था बना नहीं वो काम ॥

चौबो.

सूर्य अस्ताचल पर्वत के पास पहुंचने वाला था ।
नाग फांस ने यहां महायोद्धों को कष्ट में डाला था ॥
किया बहुत उपाय राम ने नागफांस तुड़वाने का ।
किन्तु प्रयत्न हुआ खाली सब योद्धों के छुड़वाने का॥

दोहा

रघुवर ने स्मरण किया महालोचन फिर देव ।
उसी समय हाजिर हुआ देव आन स्वयंमेव ॥

चौक

था वचन दिया श्रीरामचन्द्र को जिस कारण सुर आया है
और संकट दूर कराने को श्रीराम ने उसे बुलाया है
आपत्ति सब दूर भगें शुभ पुण्य जिन्हों का चढ़ा हुआ
दो हाथ जोड़ कर खड़ा सामने देव वचन का बंधा हुआ ..

गाना रामचंद्र व देवता का

सेवा मुझे बतावो चरणों का दास आया ।
जिस काम के लिए है मुझको प्रभु बुलाया ॥१॥

लाचार होके हमने तुमको यहां बुलाया ।
दुख दूर करना होगा जिसने हमें सताया ॥२॥
मुख से जरा उचारें फिर देर भी तो क्या है
मैं आपकी अमानत इस वक्त देने आया ॥३॥
यह दो हमारे शूरे सेना सभी के चक्षु ।
दोनों पै राक्षसों ने है नाग फांस लाया ॥४॥
बेशक विकट ये फंदा है काल की निशानी ।
यह खूब तुमने सोचा मुझको यहां बुलाया॥५॥
स्वनन्त्र अब बनाओ योद्धों का काट फंदा ।
इस वक्त तो हमारे दिल में यही समाया ॥६॥
यह गारुड़ी लो विद्या देता हूं आज तुमको ॥
जहां पर रहे यह विद्या हो दूर नाग माया॥७॥

छन्द

गारुड़ी विद्या सुमित्रालाल लक्ष्मण को दई ।
सिंह निनादा नाम विद्या रामचन्द्र ने लई ॥

शत्रु विनाशक इक गदा विद्युतवदन तसु नाम है ।
देकर के ये विद्या सभी वो सुर गया निज धाम है ॥
गारुड़ी विद्या पै चढ़ लक्ष्मणजी वहां फिरने लगे ।
नागफांसों के समूह सब धरणि पै गिरने लगे ॥
महा कष्ट से दोनों बचे सुग्रीव भामण्डल बली ।
सब दल के हृदय खिल गये जैसे कि फूलों की कली ॥

दोहा

वानर दल आनन्द में टल गया सकल क्लेश ।
जय २ शब्द होने लगे चारों ओर विशेष ॥

चौक—

अब सुने खुशी के नक्कारे रावण दल को अति कष्ट हुआ ।
जिस खुशी में थे सब फूल रहे उस खुशीका साहस नष्ट हुआ।।
अस्ताचल पर भानु पहुंचा सब शूर लगे विश्राम करन ।
प्रातःकाल के होते ही लग गये वीर संग्राम करन ॥

दोहा

रण भूमि में जुट गये हो करके विकराल ।
सुभट बहुत मरने लगे जिनका आया काल ॥

चौक

जुट गये वीर दोनों दल में तब नदी खून की बहने लगी ।
निज २ स्वामी और देश के हित सेना शस्त्रों को सहने लगी ॥
रावण सेना के पराक्रम से राघव सेना घबराई है ।
छिन्न भिन्न होगये वीर कइयों ने पीठ दिखाई है ॥

दोहा

देखा अब सुग्रीव ने सेना का यह हाल ।
उसीसमय भट कोप कर चले जिसतरह काल॥

चौक.

बड़े २ रणधीर शूरमा सहसा दल में कूद पड़े ।
इस तरह बढ़ा श्रीराम का दल जैसे समुद्र वेला में बढ़े ॥
जरा देर में रावण दल को छिन्न भिन्न कर डाला है ।
होगये बहुत रण भेंट शूरमे अन्तिम पैर उखाड़ा है ॥

दोहा

भंग देख निज सैन का चढ़े दशानन आप ।
थर हर कांपे मेदिनी महा प्रबल प्रताप ॥

चौक

आंधी आगे जैसे तृण या जैसे सिंह आगे बकरी ।
अब ऐसे सब वानर दल की श्रीरावण ने घुमा दई चकरी ॥
जिधर झुके रणधीर वीर सब सफा उधर ही कर डारे ।
कई भाग गये परधाम गये और कइयों ने शस्त्र डारे ॥

दोहा

रावण का कर्त्तव्य यह जब देखा रघुराय ।
वज्रावर्तज धनुष को कर में लिया सजाय ॥
पता विभीषण को लगा हुए राम तैयार ।
हाथ जोड़ सन्मुख हुआ बोला गिरा उचार ॥

विभी०—दोहा

आज्ञा मुझको दीजिये हे प्रभु दीनानाथ ।
रणभूमि में आज मैं दिखलाऊं दो हाथ ॥

चौक—

वानरदल सारा बिखर गया मैं उनका पैर जमाऊंगा ।
रावण के सन्मुख जाकर के अपनी तलवार चलाऊंगा ॥
अभी आपका रावण से लड़ने का समय नहीं आया है ।
अब आज्ञा सेवक को दीजे मेरे दिल यही समाया है ॥

श्रीरामजी का गाना—विभीषण प्रति

यदि है इच्छा यही तुम्हारी तो जावो मित्र खुशी २ से ।
भय न खाना किसी का मन में सजाओ बख्तर खुशी २ से ॥१॥
हमेशा होती है सत्य की जय असत्य की ना हुई ना होगी ।
है पुण्य योद्धा सहाई तेरा लगावो शस्त्र खुशी २ से ॥२॥
किन्तु ये शिक्षा हमारी सुनजाना धोखा भाई से कोई न करना ।
जो कर्म क्षत्रिय का सो ही करना चलावो अस्त्र खुशी २ से॥३॥
यह भी दिल में विचार करना ना पहले भाई पर वार करना।
यदि चाहे सन्धि विचार करना तो झुकाना मस्तक खुशी२ से॥४

विभीषण

जो फूल बरसे तुम्हारे मुख से सजाऊं गल में खुशी २ से ।
ये जंगी बख्तर है देर क्या है सजाऊं तन पै खुशी २ से ॥५॥
जो गुण हैं तुम में हे दीनबंधो जबां से उनको कहूँ मैं कैसे ।
सहारा चरणों का लेके स्वामी मैं जाऊं रण में खुशी २ से ॥६॥

दोहा

सब सेना को जोश दे चढा विभीषण वीर ।
उधर सामने आ गया लंकपति रणधीर ॥

चौक

जब आन मोरचा लगा सामने देख शूर हर्षाये हैं ।
हाथी घोड़े संग्रामी रथ नभ में विमान अड़ाये हैं ॥
यथा योग्य स्थानों पर थे रक्षक योद्धे खड़े हुए ।
फिर भाई से बोला रावण पर मस्तक पर बल पड़े हुए॥

रावण दोहा

देख लई सब बानगी अहो विभीषण वीर ।
आज काल के गाल में झोंका तुझे अखीर ॥

चौक

जैसे धूर्त शिकारी जन आगे कुत्ते को लाते हैं ।
बस यही हाल है राम लखन का तेरी बली चढ़ाते हैं ॥
किन्तु वह कब तक अपने प्राणों का भला मनावेंगे ।
अन्तिम तो तलवार मेरी की धार तले वो आयेंगे ॥

दोहा

मौत पराई किस लिये मरता है तू वीर ।
अन्तिम तेरे दुख की होगी मुझको पीर ॥

चौक.

पूरा-पूरा तुझ पर स्नेह क्योंकि तू मेरा भाई है ।
वो कहां छिप गये राम लखन बस मौत उन्हीं की आई है ॥
तुम जावो अपने तम्बू में बस यही हमारा कहना है ।
वानर सेना सब राम सहित कोई जीता आज न रहना है ॥

विभी-दोहा

जो कुछ कहना आपका सिर मस्तक पर वीर ।
एक बात सुन लीजिये दिल में लाकर धीर ॥

चौक

प्रेम आपका मुझ पर है और ऐसा होना भी चाहिये ।
पर दिल में जो है भर्म भूत उसको भी खो देना चाहिये ॥

श्रीराम आप ही आते थे मैंने ही उनको रोका है ।
अपनी मर्जी से आया हूं ना किसी ने मुझको झोंका है ॥

दोहा

होनी के आते नजर जाहिर सब आसार ।
अतः आपको चाहिये करना जरा विचार ॥

विभीषण का गाना

उड़ गई तेरी लंका की अब सब तरी ।
बात समझो ना रावण मेरी सरसरी ॥
रामचन्द्र के सीता हवाले करो,
शूरवीरों के नाहक न गाले करो ।
एक वानर ने ही कायर लंका करी ॥१॥
पेश उन पै चलेगी ना तेरी जरा ।
होगया तेरी लंका में अब चरचरा ॥
हुए प्रगट अवतार रघुवर हरी ॥२॥
सेना लश्कर का भाई तू मत कर गुमां।
करके ही छोड़ेंगे वो तेरा खातमा ॥
सब ये रह जायेंगी तेरी शक्ति धरी ॥३॥
राम लक्ष्मण जब रण में धरेंगे कदम ।
उनके हाथों से जायेगा मुल्के अदम ॥
सूर्यवंशी दिला देंगे ये धर्त्री ।५॥

दोहा

बीत गई सो तो गई आगम ना अख्तयार ।
वर्तमान पर ही सदा बुध जन करें विचार ॥

चौबोला

बस यही हमारा कहना है अब भी कुछ सोच विचार करो।
जो करन निवेदन आया हूँ हे भ्रात आप स्वीकार करो।
लड़ने का एक बहाना है तुमको समझाने आया हूं ॥
है जिसमें सब का भला वो ही तजवीज बताने आया हूं ॥

दोहा--'

जनक सुता वापिस करो भला इसी में जान ।
नहीं तो अब यहां कसर क्या होने में घमसान॥

चौबो

लाखों के प्राण गंमाये हैं रणभूमि में लड़वा करके ।
अब कर मलते रह जावोगे सब कुटुम्ब यहां कटवा करके॥
एक नार के कारण क्यों सब देश का नाश कराते हो ।
क्यों अपना आप गंवा करके नरकों का बंध लगाते हो ॥

दोहा—

औदार चित्त होते सदा नम्रभाव में लीन ।
आप स्वयं प्रवीण हो हरफन में प्रवीण ॥

चौबो --

यदि आप नहीं जाना चाहते तो सिया को मैं दे आता हूँ ।
उदार चित्त से बतलावो बस आज्ञा आपकी चाहता हूँ ॥
इतनी सुनकर बात भ्रात की रावण जल बल अंगार हुआ ।
शमशेर तान विकराल बना जैसे कि कुपित यमराज हुआ॥

रावण-दोहा

प्यासी तेरे खून की ये मेरी तलवार ।
अब यदि कुछ भी कह दिया लेऊंगा शीश उतार ।।

रावण विभिषण के प्रश्नोत्तर—गाना

(बहरतवील)

रावण-

तेरा कायरपना नीच जाना नहीं,
मुझको सारी उम्र ही सताता रहा ।
मैंने भाई समझ करके खाया तरस,
फिर भी टेढ़ी ही बातें बनाता रहा ।।
सीधे रास्ते से मूर्ख मुझे घेर कर,
हर समय उलटे रास्ते पे लाता रहा ।
क्या है रिश्ता तेरा उनसे यह तो बता,
करदो वापिस सिया ये सुनाता रहा ।।

विभीषण

होनी सिर पर ही आई तो फिर क्या करें,
तुझको हम तो हमेशा बचाते रहे ।
तैंने सन्धि के सारे समय खो दिये,
मौके २ पै हम तो जिताते रहे ।
चाहे मुझको कहो या किसी को कहो,
तेरे खोटे कर्म ही सताते रहे ।।
करदो वापिस सिया हम कहेंगे यही,
अब भी पहले भी तुमको सुनाते रहे ।

रावण

अरे महा मूढ़ अच्छा ठहरजा,
पहले करता हूँ जल्दी तेरा दम खत्म।
तू है कायर कमीना कुबुद्धि कुदिल,
बेहया बेच खाई कहां तैने शर्म ॥
तुझको भाई समझ कर बचाता रहा,
नहीं तो बोलन से पहले ही करता खत्म।
पीछे देखूंगा भीलों की शक्ति को मैं,
पहले पहुँचाऊं तुझको ही मुल्के अदम॥

विभीषण

ओ कुलंगार कातर अधर्मी कुटिल,
जरा आगे तो आ बेहया बेशर्म।
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझको पहुंचाता हूँ आज मुल्के अदम ॥
तेरे जैसे अधर्मी पै करना रहम,
यह भी दुनिया में फैलाना खोटा कर्म।
कृतघ्नी कुबुद्धि अधम बेशर्म,
आज आया उदय तेरा खोटा कर्म ॥

दोहा

सुन सुन रावण को चढ़ा क्रोध अति विकराल।
इधर विभीषण ने किये दोनों नेत्र लाल ॥

चौबो

जुट गये वीर दोनों दल में तो लगी मेदिनी थर्राने।
आंधी सहित जैसे वर्षा यों लगे बाण वहां सर्राने ॥

होगया रक्तसे कीच घड़ाधड़ शूर धरणि पर गिरते हैं ।
दल बल का कुछ पार नहीं विमान व्योम में फिरते हैं ॥

दोहा

युद्ध भयंकर छिड़ गया चलें सरासर बाण ।
महा काल से लड़ रहे दोनों वीर बलवान ॥

चौक.

इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण आदि योद्धे भी कूद पड़े ।
मेघवाहन और कुम्भकर्ण सुन महाबली ये आन अड़े ॥
सुग्रीवादिक बडे २ सब रावण भ्रात के संग में थे ।
इस कारण बाकी वानर योद्धा महा काल के अंक में थे ॥
भयंकर रुद्र सा रूप धार कर कुम्भकर्ण फिर धाया है ।
जिस तरफ झुके रावण योद्धे बस सफा मैदान बनाया है ॥
खलबली पड़ी सब सेना में ये राम लखन ने निहारा है ।
वज्रावर्तज अरुणावर्तज शरासन कर में धारा है ॥
अस्त्र शस्त्र तन पर धारे झट रण भू में आये हैं ।
जब लखा और भूपों ने ये तो वो भी संग उठ धाये हैं ॥
इधर नजर पड़ी सुग्रीवादिक की खलबली फौजमें छाई है ।
झुक पड़े उधर ही रणबांके लंकदल की शामत आई है ॥

दोहा—

इन्द्रजीत के सामने अड़े सुमित्रानन्द ।
मेघनाद के भी हुआ मन में परमानन्द ॥
अच्छी मिली जग वीरों की खड्ग हाथ में तान ।
लाल नेत्र कर कहत यूं इन्द्रजीत बलवान ॥

चौबो.

आओ २ ए जंगली भील मैं राह तुम्हारी लखता था।
छिपे हुए थे अब तक दोनों खांडा मेरा तरसता था॥
अब लंकपुरी पै चढ़ने का मजा तुझे दिखलाऊंगा।
ना बचकर जा सकते यहां यमपुरी को आज पठाऊंगा॥

दोहा

वचन अवज्ञा के सुने कोपे सुमित्रालाल।
रूप भयानक धार के गर्जे जैसे काल॥

चौबो

ओ मूढ़ पापिष्ठ छोटे के बच्चे क्यों व्यर्थ में गाल बजाता है।
अबतक तो तरस खाता था तुझ पै पर काल ही तुझे बुलाता है॥
तुझको क्या परभव पहुंचायेगा नराधम जान बचा अपनी।
और साथ ही निज पाखंडी पिता की बनवाले जाकर कफनी॥

दोहा—

जन्मा नहीं किसी जननी ने सहे मार मम आय।
भागो जान बचायकर नहीं परभव दूं पहुंचाय॥

मेघनाद व लक्ष्मणजी का सम्वाद

(चाल थ्येटरी)

मेघनाद बोला दलवीर, मेरे अस्त्र हैं अकसीर।
तुझको जीता दूं न जान, देख हनूं अब तेरे प्राण॥
देखूं कैसा तू रणधीर॥१॥

लक्ष्मण—

क्या तू बोल रहा है अधीर, तेरी उल्टी है तकदीर।
रघुकुल के हम वीर जवान, खोदें तेरा नाम निशान॥
पत्थर पर तू जान लकीर ॥२॥

मेघनाद—

मेरे अस्त्र हैं गम्भीर, लाखों योद्धा दीने चीर।
क्या तू बनता तीरमदाज, तुझे न जीता छोड़ूं आज॥
अब ना काबू रहा शरीर ॥३।

लक्ष्मण—

मिल आ रावण अखीर, देख लेवे तेरी तसवीर।
उसे न दर्शन होंगे फेर, लिया काल ने तुझको घेर॥
सम्भलजा आती है जंजीर॥

दोहा—

विस्तार से क्या ज्यादह लिखूं समझो स्वयं सुजान।
योद्धों का संक्षेपतः परिणाम इस तरह जान॥

गाना तर्ज आल्हा

कुम्भकर्ण संग राम जुट गया इन्द्रजीत संग लक्ष्मण जाय।
सिंह जघन महाबली राक्षस नील ने उसको लिया दबाय॥
दुर्मुख कपि घटोदर राक्षस इनकी जोड़ी अधिक सुहाय।
दुर्खन निशिचर गर्जा तर्जा शम्भू प्रबल सिंहवत् जाय॥

स्वयम्भू नप और नल योद्धाकी चलने लगी कठिन तलवार।
अंगद स्कन्ध निशाचर करने लगे परस्पर वार ॥
मय वानर और चन्द्र राक्षस जुट गये खाकर जोश अपार।
वीर विराध निरूपम योद्धा खूब चलाते सांग कटार ॥
मारीच और सुग्रीव नरेश्वर दोनों थे रणधीर अपार ।
श्रीदत्त वानर जम्बू राक्षस दोनों कूद पड़े ललकार ॥
भामंडल और केतु राजा दोनों विद्याधर बल धार ॥
पवनपुत्र और कुम्भकर्ण सुत बल जिनमें था अपरम्पार ॥
कुन्द और धूमाक्ष अड़ गये जैसे फणि धर गुस्सा खाय।
घटाटोप अम्बर कर डारा शतघ्नी दनादन रहीं मचाय ॥
चन्द्ररश्मि और शारण योद्धे दल में रहे अन्धेर मचाय ।
कटी हुई खेती जैसे बलवीरों का दिया ढेर लगाय ॥
इन्द्रजीत ने लक्ष्मण ऊपर मारा खेंच के तामस बाण ।
बाण बाण से काट गिराया लक्ष्मण शूरों का सुलतान ।
नागफांस लक्ष्मण ने छोड़ा इन्द्रजीत पर अस्त्र महान् ॥
रावण सुत फस गया फंदे में छुट गये शस्त्र गिर गई शान।
करके बन्द विकट गाड़ी में अपने दल में दिया पहुंचाय ।
चन्द्रोदर का इन्द्रजीत पै पहरा सख्त दिया लगवाय ॥
रामचन्द्र ने नाग फांस में कुम्भकर्ण को लिया फंसाय ।
भामंडल के हाथ उसे भी उसी जगह पर दिया पहुंचाय ॥
पवनपुत्र ने कुम्भकर्ण सुत अपने फंदे लिया फंसाय ।
वीर सुभट के पहरे में फिर डेरे में उसे दिया पहुंचाय ॥

दोहा

ये शूरे जब राम की पड़े कैद में जाय ।
मेघवाहन अति जोश में डटा सामने आय ॥

चौबोला

पवन पुत्र वज्रांगबली से आकर युद्ध मचाया है ।
पर पेश चली ना हनुमत सन्मुख बन्दी नाम धराया है ॥
फिर जिसके जो काबू में आया उसी ने उसको बोच लिया ।
मक्खन बिन जिम दूध समझ ऐसे सब सैन को फोक किया॥

दोहा

रावण ने यह जब लखा निज सेना का हाल ।
क्रोधातुर होकर किया रूप अति विकराल ॥
सुत भाई परभव हुए लगी खबर जिस बार ।
वचन तीर सम भूप के हुए जिगर के पार ॥
इतने में ही पहुंच गये वीर सुमित्रा लाल ।
दोनों भ्रात जहां लड़ रहे होकरके विकराल ॥

चौबो

तब रावण ने दांत पीस भ्रात पर कठोर त्रिशूल चलाई है
सो लक्ष्मण वीर बहादुर ने रास्ते में काट गिराई है ॥
फिर तो जैसे वैश्वान में घी सींचे ऐसा हाल हुआ ।
आमोघ विजय शक्ति पर अन्तिम दशकन्धर का ख्याल हुआ॥

दोहा----

अमोघ विजय महाशक्ति पर था पूरा विश्वास ।
क्योंकि इस महाअस्त्र में देवी का था वास ॥

चौबो

धरणेन्द्रदत्त अमोघ विजय शक्ति रावण ने हाथ लई ।
इस तरफ खड़े थे वीर विभीषण के भी योद्धे साथ कई ॥

जिस समय घुमाई रावण ने तो हाहाकार मचा भारी ।
रोको २ सब करते हैं शस्त्र ले कर में बलधारी ॥

दोहा

देख प्रबल उस शक्ति को दहल गये रणधीर ॥
शस्त्र फेंकने के सिवा करते क्या आखीर ॥

चौबोला

यह प्रलय कालकी बिजली के मानिन्द चमक दिखलाने लगी।
दगदगाट और तड़तड़ाहट कर अपना रूप बढ़ाने लगी ॥
नेत्र बन्द कर लिये क्योंकि उस तेजी को न सहार सके ।
अस्त्र शस्त्र छोड़े अपार शक्ति ना कोई निवार सके ॥
उड़ गये होश सारे दल के ना पेश किसी की जाती है ।
इस समय किसी योद्धा के तन में रही ना सत्ता बाकी है ॥
वीर विभीषण शान्त खड़े जीने की आशा छोड़ दई ।
अमोघ मन्त्र श्री नमोकार की तरफ आत्मा जोड़ दई ॥

दोहा

परणाम विभीषण ने किये निर्मल और विशेष ।
सागारी संथारा किया तज संयोग अशेष ॥

चौबो.

औदार चित्त ने जब देखा मित्र पर शक्ति आती है ।
शरणागत का यों मर जाना हृदय में लगती फाती है ॥
सुनो मित्रगण दुनिया के मित्रों का हाल सुनाते हैं ।
मित्र की मित्रता को देखो कैसे श्रीराम पुगाते हैं ॥

दोहा

जिस दम देखा मित्र पर आता कष्ट अपार ।
लक्ष्मण को श्रीरामजी बोले वहीं से उचार ॥

श्रीराम-दोहा

हे भाई लक्ष्मण जरा सुनना मेरी बात ।
जान बचाना मित्र की आज तुम्हारे हाथ॥

चौबोला

यह समय हाथ से निकल गया तो फिर पीछे पछतावोगे ।
कर्त्तव्यशील सत्पुरुष विभीषण सा मित्र न पावोगे ॥
अमोघ विजय शक्ति से यदि शरणागत मारा जायेगा ।
तो निश्चय करलो रामचन्द्र जीता नहीं मुख दिखलायेगा ॥

—श्रीराम का गाना—

मित्र पै कष्ट आया अब वीर आज भारी ।
अब दूर तुम निवारो आपत्ति आज सारी ॥१॥
सर्वस्व को है त्यागा जिसने हमारी खातिर ।
उसकी हो ऐसी हालत हमको ये दुख अपारी ॥२॥
जिसने हमारी खातिर अपना लहू बहाया ।
उसका हमारे ऊपर एहसान आज भारी ॥३॥
कर्त्तव्य बस यही है अब अपनी ज़िन्दगी का ।
मित्र के बदले बेशक लग जाय जां हमारी ॥४॥
दुखिया शरण में आकर फिर भी रहा जो दुखिया ।
मिट्टी में जिन्दगी ये मिल जाये आज सारी ॥५॥

इसका उपाय अब तो इसके सिवा ना कोई ।
हृदय में आप झेलो शत्रु की ये कटारी ॥७॥
मेरे सखा की खातिर छाती अड़ादो अपनी ।
परवाह न जान की कर हृदयमें लो ये धारी ॥७॥
मरना "शुक्ल" जरूरी दो दिन आगे या पीछे।
ना साथ तन चलेगा नर हो या चाहे नारी ।८॥

लक्ष्मण दोहा—

जैसी आज्ञा आपकी करूं वही मैं काम ।
खूब विचारा आपने हे स्वामी सुखधाम ॥
जब तक जीता जगत में सेवक लक्ष्मण वीर ।
तबतक तुमको क्या फिकर अय भाई रणधीर ॥

नौ. चौबोला

हे भाई रणधीर अभी मैं आगे बढ़ जाऊंगा ।
अमोघ विजय शक्ति को अपने हृदय में खाऊंगा ॥
जो कुछ कहा अभी देखो पूरा कर दिखलाऊंगा ।
इस विपदा से आज आपका मित्र बचा लाऊंगा ।

दौड़

सोच सब दूर निवारो, आप मन निश्चय धारो, अभी आगे बढ़ता हूँ, जगह आपके मित्र की अपना हृदय करता हूँ ।

दोहा

उसी समय आगे बढ़े वीर सुमित्रा लाल ।
मित्र विभीषण का धरा अपने सिर पर काल ॥

चौबोला

रावण के सन्मुख लक्ष्मण ने निज सीना तुरत अड़ाया है।
जिसको अपना कह चुके उसे अपना ही कर दिखलाया है॥
काल के सन्मुख आप अड़े मित्र का अंग पुगाया है।
उस समय दशानन ने लक्ष्मण को ऐसे वचन सुनाया है॥

रावण दोहा—

क्यों लड़के तू किस लिये फंसा काल के गाल।
जरा देर तो देखता रणभूमि का हाल॥

नं० चौबोला

रणभूमि में आज सभी शर शय्या पर सोवेंगे।
पानी की ना मिले बूंद आंसुओं से मुख धोवेंगे॥
देख २ अपनी हालत दोनों भइया रोवोगे।
तड़फ तड़फ कर प्राणों को रणभूमि में खोवोगे॥

दौड़—

प्रथम इसको मरने दो, ढेर दल का करने दो, बाद में तुम भी मरना, दशकन्धर बलबीर संग नहीं जंग सुखाला करना।

लक्ष्मण दोहा.

शर्म तुझे आती नहीं खाली करते बात।
कैद हमारी में पड़े तेरे सुत और भ्रात॥

नं० चौबो०

तेरे सुत और भ्रात डूब मर पानी चुल्लू भर में।
तीस मारखां बने रहे आज तलक निज घर में॥

कायर चोर अकड़ता कैसे बांध के तेग कमर में।
आज सुमित्रा लाल सिंह से पाला पड़ा समर में॥
दौड़-लंका की धूल उड़ाऊं, समर में तुझे सुलाऊं, प्रथम तू जोर लगाले खड़ा तान छाती सन्मुख दशरथ नन्दन अजमाले।

दोहा-बोली गोली सम हुई दशकन्धर के पार।
फिर भी यों कहने लगा धीरज मन में धार॥

राव. दो.-फिर कहता हूं तुझे ओ लड़के नादान।
क्यों मरता मतिमन्द तू मौत पराई आन॥

चौबो.-अमोघ विजय शक्ति का निश्चय वार न खाली जायेगा।
यदि पहले ही मर गया तमाशा फेर न देखन पावेगा॥
सबसे बड़ा विभीषण शत्रु पहले इसको ही मरने दो।
जो लगी हुई तन में ज्वाला वह शांत जरा अब करनेदो॥
दुष्ट विभीषण जीता है तब तक मुझको सन्तोष नहीं।
क्योंकि सबभेद दिया इसने किसी औरका इसमें दोष नहीं॥
इससे क्या आपका रिश्ता है मरने दो बेपरवाही से।
फिर आपकी वारी आवेगी मिल आवो अपने भाई से॥

लक्ष्म. दोहा-रिश्ते दो हैं जगत में एक प्रेम इक द्वेष।
तेरा शीश उतार कर करूं इसे लंकेश॥

चौबो-रिश्ता प्रथम विभीषण से और दूसरा रिश्ता आपसे है।
फिर शरण हमारी आन पड़ा बच कर तेरे संताप से है॥
श्रीरामचन्द्र ने बांह पकड़ी हृदय से मित्र हमारा है।
इसलिये सामने खड़ा करूं निष्फल ख्याल तुम्हारा है॥

—लक्ष्मणजी का गाना—

लिया साथ इसका निभाना पड़ेगा।
चाहे हमको सर्वस्व लगाना पड़ेगा ॥१॥
विभीषण को हम कह चुके अपना भाई।
तो भाई बनाकर दिखाना पड़ेगा ॥२॥
यदि आई मित्र पै कोई भी विपदा।
तो खून हमको अपना बहाना पड़ेगा ॥३॥
यह शक्ति दिखा करके क्या फूलता है।
तुझे अपना ही तन मिटाना पड़ेगा ॥४॥
यह घड़से गिरा सिर तेरा ताज लेकर।
विभीषण के मस्तक सजाना पड़ेगा ॥५॥
सीता चुराने का अब चोर तुझको।
समर में नतीजा चखाना पड़ेगा ॥६॥
यह कहता हूं निश्चय समझ काल मुझको।
तुझे अब तो परभव में जाना पड़ेगा ॥७॥

लक्ष्म. दो.—जावो लंका लौटकर सुनो हमारी बात।
यहां पर लगने की नहीं लगा रहे जो घात॥

चौबो.—कल तक जो कुछ मिलना जुलना,
खाना पीना सब कर आओ।
क्योंकि फिर तुमने मरना है,
यह शस्त्र भी घर घर आओ॥
अन्त समय यदि चाहोगे,
सुत बान्धव तुझे मिला देंगे।

और खुशी २ नींद हमेशा की,
हम तुम्हें सुला देंगे ॥

रावण दोहा–कर कर बातें जोश की रहा कलेजा चीर ।
अन्तिम जंगली भीलकी जायकहां तासीर॥

चौ.–ना संगति शोभ न मिली तुम्हें जंगल की धूल उड़ाई है ।
वन में गीदड़ ही धमकाये ना झपट शेर की खाई है ॥
यह कतर २ करना जिह्वा से तुझको अभी भुलाता हूं ।
ले सावधान हो नींद हमेशा की मैं तुम्हें सुलाता हूं ॥

दोहा–ऐसा कहकर भूप ने शक्ति दई चलाई ।
वानरदल के शूरमे सभी गये घबराय ॥

चौ.–निज निज शस्त्र सब शूरों ने शक्ति की ओर झुकाये हैं ।
आंधी आगे जैसे तृणे शक्ति ने दूर भगाये हैं ॥
अमोघ विजय आ लक्ष्मण के हृदय में तुरत समाई है ।
मूर्च्छित हो गिरा धरणि में एकदम सुरति सभी बिसराई है॥

दोहा–सुनो मित्रगण जिस समय गिरा सुमित्रा लाल ।
दशकन्धर आने लगा नजर सभी को काल ॥

चौ.–हुआ विकल सब वानरदल निज आंसुओं से मुंह धोते हैं।
छागई अन्धेरी आंखों में सब वीर धीर को खोते हैं ॥
सुग्रीव विभीषण भामण्डल सब ऊंचे स्वर से रोते हैं ।
चढ़ गया ताप कई शूरों को बीमार बने कई सोते हैं॥

दोहा–देख हाल ये राम को चढ़ा जोश विकराल ।
संग्रामी रथ बैठ कर गर्जे जैसे काल ॥

नौ. चौ.–गर्जे जैसे काल खैंच लिया धनुषबाण निज कर में।
टंकार शब्द घनघोर कड़क बिजली की ज्यों अम्बर में ॥

रावण को ललकार दई जाकर श्रीराम समर में ।
लटक रहा था शम्बुक वाला खड्ग अमोघ कमर में ।

दौड़—देख रावण घबराया, काल की शंका लाया, राम ने
पहुंच दबाया, एक बाण से रावण का सारा रथ तोड़
बगाया ।

गाना आल्हा

रावण ने फिर दूजे रथ पर अपना आसन लिया जमाय ।
उसको भी श्रीरामचन्द्र ने पुर्जा २ दिया बनाय ।
जान बचाने को फिर रावण तीजे रथ पर बैठा जाय ।
एक बाण से रामचन्द्र ने दिया उसे बेकार बनाय ॥
जान बचानी दशकन्धर को मुश्किल बनी सामने आय ।
वीर दशानन ने फुर्ती से चौथा रथ फिर लिया सजाय ॥
वज्रावर्तज धनुषबाण से उसको भी दिया गर्द बनाय ।
योद्धे खड़े तमाशा देखें राम का तेज सहा ना जाय ॥
विकल समर में हो रावण फिर पंचम रथ पर हुआ सवार ।
दशरथ नन्दने झुंझला कर उसे भी दिया धरणि में डार ॥
पीठ दिखाई दशकन्धर ने अन्तिम रणभूमि मंझार ।
प्राण बचाने को रावण ने दिल में ऐसा किया विचार ॥

(स्वगत) राव. दो—भाई के मोह में हुआ अन्धा फिरता राम ।
यदि यहां ठहरा अभी पहुंचा दे परधाम ॥

चौबो—"अन्धे का जफ्फा बुरा" ठीक यह पंजाबी में कहते हैं ।
बुद्धिमान ऐसे मौके पर कभी ना वहां पर रहते हैं ॥
समय बिचारे सो श्याना ये गुरुजनों का कहना है ।
यह स्वयं प्राण तज देवेगा किस कारण यहां दुःख सहना है ।

जिस पर था आधार सभी का उसका समझो अवसान हुआ।
श्रीराम स्वयं मर जायेगा क्योंकि ये दुःखी महान् हुआ।
बाकी तो हैं सब चूर भूर दिन उगे न कोई पावेगा।
जो पड़े कैद में सुत बान्धव सो भी कल देखा जावेगा।

दोहा—रावण लंका में गया दिल में खुशी अपार।
इधर खड़े श्रीरामजी ऐसे रहे पुकार॥

श्रीरामजी का गाना

दशकन्धर बलधार आवो २।
रणभूमि में यार आवो २ ॥टेक॥
क्षत्रिय का ये धर्म नहीं है, पीठ दिखाना कर्म नहीं है।
है तुझको धिक्कार ॥१॥
भाग कहां जायेगा पाजी, सिर धड़ की अब लाके बाजी।
देऊंगा शीश उतार ॥२॥
परभव को मैं तुझे पठाऊं, सूर्यवंशी तब ही कहलाऊं।
आज नहीं तो कल यार ॥३॥
कायर क्रूर अधर्मी अनारी, भ्रात मेरे के शक्ति मारी।
अब ना करूं उधार ॥४॥
छल फरेब से सिया चुराई, अब क्यों रण में पीठ दिखाई।
पावेगा नरक द्वार ॥५॥

दोहा—दृष्टि से रावण छिपा जाना जब श्रीराम।
वापिस फिर रथ को किया आ पहुंचे निजधाम॥

चौ.—जब देखा लक्ष्मण भाई को झट गिरे मूर्छा खा करके।
सुग्रीवादिक ने शीतलता कर मूर्छा दई हटा करके॥

भाई का सिर गोदीमें रख कर नयनोंसे नीर बहाने लगे ।
श्रीराम का दुःखना देख सका भानु अस्ताचल जाने लगे ॥
दोहा–रामचन्द्र को होरहा महाघोर संताप ।
गोदी में ले भ्रात को किया बहुत विलाप ॥
रो रोकर श्रीरामजी बहा रहे जल नैन ।
वीर सुमित्रालाल को लगे कहन यूं बैन ॥

श्रीराम का लक्ष्मण प्रति कथन

मेरे भाई लक्ष्मण वीर
शक्ति नहीं तो वचन से, वचन नहीं तो नैन ।
नैन नहीं तो और कोई करो इशारा वीर ॥१॥
दिवस चन्द्र के तेज सम बने सभी रणधीर ।
एक तुम्हारे बिन सभी खो बैठा दल धीर ॥२॥
दशकन्धर जीता गया क्या तुझको यह रोष ।
या शक्ति ने तेरे उड़ा दिये हैं होश ॥३॥
सभी शूरमे थे खड़े तुम पैरों पर वीर ।
कटक सभी है रो रहा बंधा इन्हें अब धीर ।४॥
भाई अब तेरे बिना सीता लावे कौन ।
तैने तो अब मौन को धारा कौन बंधावे धीर ॥५॥
क्या मुझ पर गुस्से हुआ वीर सुमित्रा लाल ।
तेरे बिना हम देखो भ्राता कैसे होरहे अधीर ॥६॥
,"शुक्ल" सहायक ना बनायदि यह तेरा विचार ।
तो मैं शत्रु के अभी मारूं हृदय में तीर ॥७॥
दोहा–मोह के वश श्रीरामजी धनुषबाण ले हाथ ।
शत्रु की करने चले राम समर में घात ॥

दुष्ट तुझे मारे बिना मुझे नहीं आराम ।
आता हूं अब ठहरजा पहुंचाऊं परधाम ॥

चौबो-देख मेरी शक्ति कायर और अपनी शक्ति दिखा मुझे ।
अब जीता कभी ना छोडूंगा यह साफ २ मैं कहूँ तुझे ।
तेरा शीश उड़ा करके लक्ष्मण को अभी दिखाता हूँ ।
जो रूस गया प्यारा भाई फिर जाकर उसे मनाता हूँ ॥

दोहा-उसी समय हनुमान ने रोके राम नरेश ।
फिर आकर सामने यों बोले किष्किन्धेश ॥
सूर्य अस्ताचल गया लंका में लंकेश ।
आप किधर को चल दिये सोचो जरा नरेश॥

चौबोमूर्च्छागत हैं श्रीलक्ष्मणजी मत फिकर करो अपने दिलमें ।
रजनीमें ही कोई उपाय करो फिर काम नहीं बनना दिनमें॥
मंत्र यंत्र या औषधि से शक्ति यदि बाहिर निकल आवे ।
भानु के चढ़ने से पहले ऐसा कोई तंत्र मिल जावे ॥

—सुग्रीव का गाना---

देव शक्ति को दूर हटावो प्रभु ।
कोई ऐसा उपाय बनाओ प्रभु ॥टेक॥

हम तन मन अपना लगावेंगे, और लक्ष्मण का कष्ट मिटावेंगे ।
सच्चे मित्र तब ही कहलावेंगे, श्रीजिनवर के गुण गाओ प्रभु॥१
सारी लंका की धूल उड़ावेंगे, और सीता को जीत के लावेंगे ।
ऐसा करके सेवक दिखलावेंगे, अब आर्ति दूर नसावो प्रभु ॥२
प्रातः लक्ष्मणवली उठ जावेंगे, जाकर रावण का शीश उडावेंगे।
विजय रण में स्वामी पावेंगे इन बातोंपर निश्चय लाओ प्रभु॥३

अब विद्याके कोट बनावेंगे, और लक्ष्मण को मध्य लिटावेंगे।
सब रल मिल यत्न बनावेंगे, तुम हृदय में धीरज लावो प्रभु ॥४
सब योग्य चिकित्सा जारी है, और पुरुषार्थ अति भारी है।
इस कारण अर्ज गुजारी है, अब "शुक्ल" ध्यान शुभ ध्याव प्रभु ५

दोहा—कष्ट महा प्रलय भई सुनो वीर सब बात।
प्यारे भाई के बिना अब नहीं शान्ति दिखात॥
ऐसा कह श्रीरामजी होकर हाल निढाल।
लक्ष्मण से कहने लगे उठो सुमित्रालाल॥

— श्रीराम का गाना—

जागो २ हे भ्रात लक्ष्मण करो न जग हंसाई।
आंखें खोलो मुख से बोलो प्राणों से प्यारे भाई।
मन नहीं बांधे धीर, धीर वीर मैं सह ना सकूं जुदाई ।१॥
इक तेरे सोने से कुल की मिटती है प्रभुताई॥
अवध में शोक आनन्द लंक में विधि ने धूल उड़ाई ॥२॥
संग तुम्हारे प्राण तजूं मैं रण में मचे दुहाई।
यह सुनते ही प्राण तजेगी सिया जनक की जाई ॥३॥
रघुकुल भूषण प्राण राम के सैन्य को सुखदाई।
जनकसुता नहीं आई अभी ना लंक विभीषण पाई ॥४॥
"शुक्ल" भरोसे तेरे ही लंका पै करी चढ़ाई।
उठ रख लाल तू मेरे प्राण की अच्छी नहीं रुखाई ॥५॥

सुग्रीव दोहा—धैर्य करके हे प्रभु सोचो कोई उपाय॥
जैसे तैसे हो सके विघ्न सभी टलजाय॥

राम दोहा—क्या कहदूँ मैं इस समय अपने मुख से भाष।
भाई बिना मेरा हुआ मानो सर्वस्व नाश ॥

श्रीराम सुग्रीव का गाना--बहरतवील

श्रीराम—मैं कैसे कहूं अपने दिल की व्यथा,
मेरे सिर पर महाकष्ट भारा पड़ा।
उस तरफ खोती होगी सिया जान को,
इस तरफ मेरा भाई प्यारा पड़ा ॥१॥
तब तक मेरा भी दिल ठिकाने नहीं,
जब तक माता की आंखों का तारा पड़ा।
मैंने झोंका इसे कालके गाल में,
शक्ति आगे ना हृदय हमारा बढ़ा ॥२॥
सुग्रीव—बांधो दिल में दिलासा निकालो अकल,
प्यारे लक्ष्मण को जल्दी उठावो प्रभु।
बीत जायेगा ऐसे तो सारा समय,
आप रो रो न हमको रुलावो प्रभु ॥३॥
कोई इसकी कहीं पर बतावो दवा,
उसको जल्दी वहां से मंगावो प्रभु।
पास भाई के बैठो तजो सब फिकर,
विद्याधर योद्धे हर जहां पठाओ प्रभु ॥४॥
राम शेर—मन ही ठिकाने पर नहीं, फिर मैं करूं तो क्या करूं।
दिल तो चाहता है यही भाई से पहले मैं मरूं ॥
दोहा—इतना कह फिर अनुज सिर धरा राम ने हाथ।
मोह के वश फिर लखन से यों बोले रघुनाथ ॥

श्रीराम का विलाप

उठो तुम रण योद्धा बलवान, सो लिये बहुत देर मरदान ॥टेक
कैसे बरछी आ लगी तेरे तन में वीर ।
हाय लक्ष्मण नहीं बोलता मेरी उलट गई तकदीर॥
आंखें खोल मुझे पहचान ॥१॥
दशकन्धर के अस्त्र ने किया वीर बेहोश ।
सिया चाहे मत ना मिले मुझे नहीं अफसोस ॥
बचा दे कोई वीरन के प्राण ॥२॥
आधी रैन होने लगी मिली ना औषधि खास ।
वानर सेना सब तेरी लक्ष्मण खड़ी उदास ॥
विपद में विपद पड़ी क्या आन ॥३॥
जब जाऊंगा अवध में पूछेगी मोहे मात ।
कहां वीर लक्ष्मण तेरा कोई कहूँ फिर बात ॥
कैसा लगा दुष्ट का बाण ॥४॥
खबर लगे जब भरत को तन करले विकराल ।
सिर धुन २ पागल बने छिन में करेगा काल ॥
गंवा देगा सुनकर जान ॥५॥
औषधि कोई लगती नहीं हुए वैद्य लाचार ।
चीर फाड़ से उल्टी शक्ति करती दुःख अपार ॥
हाय बिगाड़ी रघुकुल शान ॥६॥

शेर—नारी खुसाई बन और भाई गमाऊंगा यहां ।
वाक्य ना पूरा किया ये मुंह दिखाऊंगा कहां ॥

दोहा—नारी हरण भाई मरण कष्ट रहा ये दूर ।
लंक मित्र को ना दई यही दुःख भरपूर ॥

तन की खातिर धन तजो तन को तज रख लाज।
धर्म हेतु तीनों तजो कहा श्री जिनराज ॥

चौ.—संयोग मूल दुःख दुनियां में सर्वज्ञ देव का कहना है।
क्योंकि इक दिन होगा वियोग ना पास किसी के रहना है॥
यह जीव अकेला आया है और आप अकेला जायेगा।
इक सिवा शुभाशुभ कर्मों के और साथ ना कुछ ले जायेगा॥

दोहा—इक दिन लेना था जुदा अवधपुरी का राज।
माता पिता भाई बहिन और सब साज समाज॥

चौ.—जनकसुता की भी मुझसे इक रोज जुदाई होनी थी।
लक्ष्मण भाई की भी आगे पीछे कब होनी टलनी थी॥
किन्तु मित्र को वचन दिया वह अब तक नहीं निभाया है।
लंकेश विभीषण को कह कर लंकेश ना उसे बनाया है॥

दोहा—प्रातःकाल ही समर में रावण का सिर तार।
राज लंका का मित्र के सिर पर देऊं धार ॥

चौ.—राजतिलक कर वीर विभीषण के सिर ताज टिकाऊंगा।
निज वचन करूं पूरा मित्र के ऊपर चमर झुलाऊंगा ॥
पक सुमित्रालाल बिना सीता की कुछ दरकार नहीं।
और राजपाट धनदौलत क्या इस तनसे भी अब प्यार नहीं॥

दोहा—भामंडल सुग्रीवजी श्री वज्रांग नरेश।
वीर विराध आदि सभी जावो निज २ देश॥

चौ.—तन मन से सेवा की तुमने इसका बदला नहीं दे सकता।
पर एक वीर लक्ष्मणके बिना इस तनको भी नहीं रख सकता॥
पूरा करके वचन राम चन्दन की चिता बनायेगा।
फिर भाई के संग भाई गन्दे तन की भस्म बनायेगा ॥

दोहा-कर्मों ने ये कर दिया पूरा खेल तमाम ।
कुशल क्षेम पहुंचो सभी तुम अप-अपने धाम॥
सुने राम के जिस समय हृदय विदारक बैन ।
प्रेम से फिर वज्रांगजी लगे इस तरह कहन॥

हनु. दो.-वचन आपके तीर सम हुए जिगर के पार ।
जनकदुलारी के बिना जाना है धिक्कार ॥

चौ.-शूरवीर क्षत्रिय होकर हम कैसे कदम हटायेंगे ।
यह शस्त्र तनपै धारण कर क्या जग में मुख दिखलावेंगे ॥
धरें लाश पर लाश समर में दशकन्धर को मारेंगे ।
वचन आपका पूर्ण कर सीता का कष्ट मिटायेंगे ।

—हनुमानजी का गाना—

निःशंक ये तन लग जावे तो लाना ही मुनासिब है ।
बिना सीता के लंका से न जाना ही मुनासिब है ॥१॥
वचन पूरा करो बेशक तुम्हारा धर्म है राजन् ।
धर्म हमको भी तो अपना निभाना ही मुनासिब है ॥२॥
करो यह काम पहले मूर्च्छा हो दूर लक्ष्मण की ।
सवेरे लंक पर गोला बजाना ही मुनासिब है ॥३॥
सिवा रावण के राक्षस सेनामें अब तन्त ही क्या है ।
स्वाद सीता के हरने का चखाना ही मुनासिब है ॥४॥
किया अर्पण ये तन मन धन प्रभु सब आपकी खातिर ।
हमें रावण को क्षत्रापन दिखाना ही मुनासिब है ॥५॥
कष्ट की आज की रात्रि रहो सब चुस्त हो करके ।
क्योंकि विश्वास शत्रु पर न लाना ही मुनासिब है ॥६॥

सु० दोहा—प्रबन्ध सभी ऐसा करूं हे आदित्य नरेश।
मनुष्य मात्र तो चीज क्या करें न सुर प्रवेश॥

चौ.—सात कोट बना करके दरवाजे चार बनाता हूँ।
इर्द गिर्द यह इन्तजाम ऊपर विमान अड़ाता हूँ॥
मध्य भाग में राम लखन पहरा नंगी तलवारों का।
पहरा होगा दरवाजों पर भी महायोद्धा बलधारी का॥

दोहा—शीघ्र वीर सुग्रीव ने किया सभी यह काम।
मध्य भाग ले लखन को बैठ गये श्रीराम॥

चौ.—सात कोट कर विद्या के फिर वीर किये सब शीघ्र खड़े।
दरवाजों पर थे अतुल बली विमान व्योम में सभी अड़े।
गव गवाक्ष सुग्रीव हनुमत तारक स्कन्ध दधिमुख थे।
अस्त्र शस्त्र सब लगा वीर सातों पूर्व के सन्मुख थे॥

दोहा—श्री महेन्द्र अंगद कुरम अंग विहंग सुशैन।
चन्द्ररश्मि उत्तर तरफ तने खड़े थे ऐन॥

चौ.—समरशील दुर्धर मन्मथ जय विजय वीर सम्भव भारी।
पश्चिम दरवाजे सावधान हो खडे नील थे बलधारी॥
वीरविराध गजभुवनजीत नल मेद मेद विभीषण भामंडल।
नृप राजकुमार सब चुस्त खडे कानोंमें शोभ रहे कुंडल॥

दोहा—योग्य स्थानों पर खडे वीर तान शमशेर।
लक्ष्मण की करने लगे वैद्य औषधि फेर॥



दोहा—देवरमण उद्यान में बैठी थी बेचैन।
सीता को जा त्रिजटा लगी इस तरह कहन॥

दुःख में दुःख देने के लिए आई तेरे पास।
जनक किशोरी क्या कहूँ अपने मुख से भाष॥

त्रिजटा सीता के प्रश्नोत्तर-बहरतवील

त्रिजटा—मेरा आता कलेजा है मुख की तरफ,
क्या कहूं जैसी मैंने है वाणी सुनी।
क्याखबर कैसी बीतेगी कल को बहिन,
जैसी कर्मों ने आज है तानी बुनी ॥१॥
मेरी फटती है छाती ये रुकती जबां,
जब से लंका में मैंने कहानी सुनी।
मेरे तन का तो हाल भगिनी ऐसे हुआ,
जैसे चिपटीहो लकड़ीको खाने घुनी॥२॥
सीता—क्या सुनी तूने ऐसी कहानी बहिन,
कृपा करके वह जल्दी सुनातो सही।
कौन तेरे सिवा मेरा हितकार है,
प्यारी रंजोअलम यह उडा तो सही ॥३॥
मेरा दिल बैठता जाता है आज तो,
इसका कारण मुझे तू बता तो सही।
सारा कांपे जिस्म आता चक्कर मुझे,
मेरे दिल की तप्त को बुझा तो सही ॥४॥
त्रिजटा—तेरा पहले ही जब कि बुरा हाल है,
क्या सुना करके मैं बेमौत मारूं तुझे।
मैं करूं तो करूं क्या अय सीता बता,
यह भी अन्याय दिल से विसारूं तुझे ॥५॥

तो फिर देरी क्यों करतीहो जल्दी कहो,
मेरे दिल को तसल्ली बंधा तो सही।
क्या तू लाई खबर आज के जंग की,
जैसी है वैसी मुझको बता तो सही ॥६॥

त्रि. दो.—आज सुमित्रालाल के रणभूमि दर्म्यान।
अमोघ विजय दशकन्धर ने मारी शक्ति तान॥

छंद—शक्ति को खा धरणि गिरा रण में सुमित्रानन्द है।
सब जगह चर्चा यही रावण के दिल आनन्द है॥
मूर्च्छित बली लक्ष्मण हुआ देवर तुम्हारा हे सती।
धीर धर दिल में जरा बेटी तू घबरावे मती॥

दोहा—इतना सुनकर जानकी गिरी मूर्च्छा खाय।
हो सचेत धरणि गिरे ये दुख सहा न जाय॥
त्रिजटा का प्रेम था सीता संग भरपूर।
शीतल चीजों से किया मूर्च्छितपन को दूर॥

चौ.—आंखों से पानी बरस रहा जैसे श्रावण की लगी झड़ी।
कभी ऐसी हालत होती है सीता जैसे निर्जीव पड़ी॥
मार मार कर मस्तक पर सीता ना धीरज धरती है।
अपनी हालत को देख २ फिर ऐसे गिरा उचरती हैं॥

सीता दो.—सबको दुखिया कर दिया फिर भी मरती नांय।
जिस लक्ष्मणपर विश्वास था सो गिरा मूर्च्छा खाय॥

सीताजी का विलाप-शिकस्त भैरवें

आह रावण तेरा कैसे होगा भला,
दुख देने में तूने न छोड़ी कसर।

क्या बिगाड़ा अधर्मी था हमने तेरा,
मार शक्तिजो लक्ष्मणका फारा जिगर।
मेरे प्रीतम की तैने भुजा काट ली,
आज घी का दिया बस जला तेरे घर ॥
कैसे जीतेंगे तुझको अकेले पिया,
मेरे दिल में यही एक भारी फिकर।
दोहा—ऐसे मूर्च्छित हो गिरे पुनि पुनि उठे सम्भाल।
मस्तक पर कर धर लिये रोवे आंसू डार ॥
मैं पापिनी ना जन्मती क्यों होता ये हाल।
रण में क्यों लेटता आज सुमित्रा लाल ॥

सीता का गाना

सिवा लक्ष्मण पिया का सहारा नहीं,
मेरे जीने का कोई सहारा नहीं।
आशा दिल में जो थी सब खत्म होगई,
हाय ख्वारी मेरे प्यारे की हो गई।
अब तो दुनिया में कोई हमारा नहीं ॥१॥
अय कर्म तुझको आती न किसी पै दया।
मुझे किस के हवाले अय पापी किया।
तैने कुछ भी तो सोचा विचारा नहीं ॥२॥
हाय लक्ष्मण बिना प्रीतम जीने नहीं,
भ्रात बिरहा में पानी भी पीना नहीं।
क्योंकि शक्ति से बचना सुखारा नहीं ॥३॥
प्राण तज देंगी मातायें सुन बात ये।
प्रलय होने में सिर्फ आज की रात ये ॥
निकला चक्कर से बेड़ा हमारा नहीं ॥४॥

एकसा समां जग में न किसी का रहा ।
संयोगही दुःखकी जड़ है ये 'जिन'ने कहा ॥
अब तो मस्तक में पुण्य सितारा नहीं ॥५॥
"शुक्ल" कहे क्या कर्म से जब पाला पड़ा।
काल सूर्यवंशियों का आ छाती चढ़ा ॥
सिवा धर्म के अब तो गुजारा नहीं ॥६॥

दोहा—इतना कह करके सिया गिरी धरणि मुरझाय ।
उसी समय फिर त्रिजटा बोली गले लगाय ॥
त्रि. दोहा—जनक सुता क्यों होरही इतनी हाल बेहाल।
राजी अब हो जायेंगे वीर सुमित्रा लाल ॥

त्रिजटा व सीताजी का गान

त्रिजटा—तेरा सुनकर रुदन ये कलेजा हिले।
अब तू आंखों से आंसू बहावे मती ॥
इसलिये ही तो तुमको बताती न थी।
रो २ बेटी तू मुझको रुलावे मती ॥१॥
शस्त्र योद्धों को लगते हैं रण में सदा।
तेरा देवर भी योद्धा है भारी सती ।
मेरे कहने से तू अब तो सन्तोष कर।
तुझको आकर मिलेंगे अयोध्यापती ॥२॥
सीता—धीरज कैसे बंधे सोचो दिल में जरा।
ऐसी हालत में किसका सहारा लेऊं ॥
जब धर्मही गयातो फिर जीऊंगी क्या।
करखतमदम मैं यहांसे किनारा लेऊं॥३॥

विना लक्ष्मण न जीने के श्रीरामजी।
इससे अच्छा मैं पहले दुधारा लेऊं ॥
कर दे एहसान मुझ पर ज़रा आज ये।
ला गले मार अपने कटारा लेऊं ।४॥
त्रिजटा–हमने तो क्या कहा तू समझती है क्या।
श्यानी होकर अकल कहां गमाई सिया।
तूने समझा कि निश्चय वे मर ही गये।
हमने मूर्छा है उनको बताई सिया ॥५॥
पहले मेरी अकल ही तो मारी गई।
तुझको आकर ये अफवाह सुनाई सिया॥
तेरे दुख से दुखी आज मैं हो रही।
कैसे तुमको मैं निश्चय दिलाऊं सिया ॥६॥
दोहा–सरसराहट करती हुई इक विद्याधरी आय।
सीता ने उसकी तरफ देखा नैन उठाय ॥
चौ.–आंखोंसे पानी बरस रहा और दुर्बलता अति तनपर थी
वह हाल कथन नहीं होसकता जो आरति उसके मनपर थी॥
देख हाल ये जनक सुता का विद्याधरी अकुलानी है।
और प्रेमभाव से सीता को ऐसे बोली वो वाणी है ॥
विद्या दोहा–सुन २ कर तेरा रुदन हृदय दुखी अपार।
बेटी अब रोवे मती दिल में धीरज धार ॥
चौ.–अशुभ कर्म का उदयभाव हो तब ही विपत्ति आती है।
इक मनुष्यमात्र क्या देवन पतिकी पेश नहीं कुछ जाती है॥
दुष्ट न होते दुनियां में तो श्रेष्ठ पुरुष किसको कहते।
यदि अमृत ना होता तो कैसे बुरा कहो विष को कहते ॥
यदि कर्म ना होते दुनियांमें तो दुखिया नजर नहीं आते।
यदि मुक्ति न होती जीवों की तो नित्यानन्द कहां पाते ॥

यह सभी खेल हैं कर्मों के अयि सीता नजर तो आतेहैं।
जो सुखी जीव आनन्दमें है दुखिया जलनयनसे वहाते हैं॥
दोहा—शुभगणना में वे सदा जो रहें धर्म में लीन।
सर्वस्व चाहे अर्पण करें बने न हर्गिज़ दीन॥
चौ.—धर्म हेतु जो सहें कष्ट सो ही उत्तम नरनारी है।
नरतन पाकर ना धर्म किया तो व्यर्थ में जून बिगारी है॥
धन्य २ हे जनक सुता तूने सती धर्म निभाया है।
और महा कष्ट सहने परभी अपना मन नहीं हिलाया है॥
दोहा—"अवलोकिनी विद्या" सती है मेरे आधीन।
भेद मंगाया में अभी देख तेरी छवि क्षीण॥
चौ.—प्रातःकाल से पहले ही लक्ष्मण अच्छे हो जावेंगे।
निश्चय करलो ये वचन मेरे सब ही सच्चे हो जावेंगे॥
अस्त्र शस्त्र दशकन्धर के निष्फल सारे हो जावेंगे।
सब भ्रम निवारो राम लखन अब शीघ्र तुम्हें मिल जावेंगे॥
जिनराज भजो मन धीरधरो शुभ परमेष्ठी का जाप करो।
दुखियों का दुःख निवारक ये मंत्र इससे संताप हरो॥
धन्य तुम्हें अयि क्षत्राणि क्षत्रापन खूब निभाया है।
और परम धर्म का मर्म लिया हृदय में खूब जमाया हैं॥
दोहा—सन्तोषजनक सुनकर वचन धरी जरा मन धीर।
शर्द श्वास भर नेत्रों का पूंछ लिया सब नीर॥
चौ.—सूर्योदय की करन प्रतीक्षा चकवी के मानिन्द लगी।
और जगदम्बाकी उदयाचलकी ओर निरन्तर दृष्टि लगी॥
और उधर दशानन लक्ष्मण को शक्ति लाकर खुश होता है।
जब किया ध्यान भाई पुत्रों का सिर धुन २ के रोता है॥
दोहा—कर मल २ पछता रहा दशकन्धर रणधीर।
हा वत्स वत्स कर रहा कभी कहे ना वीर॥

हा भाई भानुकर्ण फंसा किस तरह आज ।
तेरे बिन मेरा सभी बिगड़ गया सब साज ॥

छन्द–हाय इन्द्रजीत बेटा कैद शत्रु की फंसा ।
प्राण प्यारा मेघवाहन नाग फांसी में फसा ॥
क्या पता तुमपर अरिजन कष्ट क्या २ लायेंगे ।
हाय मेरे वीर सुत कैसे वह दुःख उठायेंगे ॥
आत्मा मम दूसरी भानुकर्ण तू वीर था ।
हाय मेरे ज्येष्ठ सुत तू तो बड़ा रणधीर था ॥
मेघवाहन मेघ जैसी गर्जना कहां खोदई ।
आज मेरे मुख्य योद्धों की गति क्या होगई ॥
कैसे छुटें अब कैदसे योद्धे सभी ये ही फिकर ।
कोई वली ना दूसरा जिससे करूं अपना जिकर ॥
शक्तिसे लक्ष्मण मर गयातो प्रलय उनपर आयेगी।
यदि रहा जीता तो मेरी पेश ना कुछ जायेगी ॥
हे प्रभु अब किसतरह सुत भ्रातका बंधन छुटे ।
पुत्र विरहमें श्वास रुकता आज मेरा दम घुटे ॥

दोहा–रावण ऐसे कर रहा बैठा आर्त ध्यान ।
मन्दोदरी को यह खबर लगी महल दरम्यान ॥

चौ.–सुत देवर होगये कैद यह खबर सुनी तब घबराई ।
तब भूल गई रंग चाव सभी और पास दशानन के आई ॥
देख हाल दशकन्धर का रानी का मस्तक ठिनका है ।
और समझगई मनही मनमें बस पुण्य घटा अब इनका है ॥

दोहा–कर साहस आगेबढ़ी किन्तु भय दिल मांय ।
हाथ जोड़ मन्दोदरी वोली शीश निवाय ॥

मन्दोदरी का गाना

मेरे प्रीतम मुझे भी बताओ जरा ।
स्वामी दिलका ये मर्म मिटाओ जरा ॥
पंख बिन जैसे पखेरू तड़फता स्थल पर पड़ा ।
आपके दुख का असर मेरे सभी दिल पर पड़ा ॥
मौन करके मुझे न सतावो जरा ॥१॥
दिवस का जैसे शशि ऐसा है मस्तक आपका ।
सह ना सकती दुःख स्वामी आपके संताप का ॥
मेरे दिल को तसल्ली बंधावो जरा ॥२॥
आंख मेरी फरकती है दाहिनी अच्छी नहीं ।
बात मेरी मानते तुम भी कोई सच्ची नहीं ॥
मेरे सुत कहां मुझको दिखाओ जरा ॥३॥
क्या "शुक्ल" आया उदय मेरा ही खोटा कर्म है ।
आपकी आंखों में जैसे आ रहा कुछ वर्म है ॥
मेरे प्रीतम जबां तो हिलाओ जरा ॥४॥

दोहा—अय राणी मैं क्या कहूँ अपने दुःख का हाल ।
कैद अरि ने कर लिये तेरे दोनों लाल ॥

छन्द—देवर तेरा भानुकर्ण भी आज उनकी जेल है ।
साथ में योद्धे कई बिगड़ा सभी यह खेल है ॥
आज तक ऐसी कभी बीती न मेरे साथ थी ।
लाखों हजारों की अकेले ने करी मैं घात थी ॥
अय प्रिया मुझको विभीषण दुष्ट ने धोखा दिया ।
मुझको लगा बातों में शत्रु को उधर मौका दिया ॥

नागफांसी में फंसा धोखे से उनको ले गये ।
जब लगा हमको पता तो हाथ मलते रह गये ॥
क्या खबर कैसी करें सुत भ्रात के संग में अरि ।
भाग्य खोटे थे मेरे जो मध्य आ रजनी पड़ी ॥

मन्दो. दो.—काल के मुख में धर दिये मेरे दोनों लाल ।
अबके नम्बर आपका आने वाला काल ॥

चौ.—समझाये सब तरह किन्तु तुमने ना एक विचार करी ।
तो अब क्या यत्न बनाओगे बतलावो कुछ सरकार मेरी ॥
सांप पवनिये दिये छोड़ वह सूर्य वंशज नाहर हैं ।
फिर वह लड़ते नीति अन्दर तुम लड़ते नीति बाहर हैं ॥

दोहा—अन्याय महा तुमने किया हरी पराई नार ।
अपने हाथों आप ही सिर में गेरी छार ॥

चौ.—किन्तु अब यह ध्यान करो यदि आगे रार बढाओगे ।
तो कुटुम्ब खतम करवा करके सब राजपाट से जाओगे ॥
पतिव्रता नारीकी हाय बुरी यह सर्वस्व नाश कर डारेगी ।
कोई रहे ना यहां रोने वाला परभव नरकों में डारेगी ॥

दोहा—महापुरुष को चाहिये निज गौरव का ध्यान ।
नीति कभी ना त्यागते तज देवें चाहे प्राण ॥

चौ.—हे नाथ अनीति करनेसे जो पुण्य सभी काफूर बने ।
फिर अतुल बलीभी पुण्यवान आचे अति कायर कूर बने ॥
तीन खण्ड में नाथ दूसरा नहीं आपकी शानी का ।
एक नार के लिये क्यों करते नाश लंक राजधानी का ।

मन्दोदरी का गाना—समझाना

कही मानो हमारी हजारी वलम ॥टेक॥

शेर—लिया हरके कहो तुमने क्या फल पाया है।
हमतो साफ कहेंगे कि इज्जत को गंवाया है॥
समर में कटवा के कई कइयों को रांड बनाया है।
घर बेघर भी हुए कई कइयों का नाश कराया है॥
होती परनारी जहर कटारी वलम ॥१॥

शेर—कहां पै गई वह आपकी शक्ति साहिब।
बैठ अवला की तरह क्यों आंसू बहाये साहिब।
सुत बन्धु ना किसी शक्ति से छुटाये साहिब॥
अब भी मानो मैं खड़ी सिर को झुकाये साहिब॥
करदो वापिस ये जनक दुलारी वलम ॥२॥

रावण दोहा—तू है कायर की सुता सो आदत कहां जाय।
कायर सुत पैदा किये फंसे कैद में जाय॥
चौ.—फंसे कैद में जाय बता इसमें क्या दोष हमारा है।
शत्रु की जो करी प्रशंसा ये दुर्वचन तुम्हारा है॥
कायर सुत पैदा करते ही तभी नहीं क्यों मारा है।
सीता खटक रही तुझको ये मैंने ठीक विचारा है॥

—रावण का गाना—

सारा भेद मुझे अब पाया है तेरे हृदय को जिसने जलाया है
तेरी आंखोंमें सीता रड़क रही, जिस कारण सिरको है पटकरही।
तेरी तबियत विषयोंमें लटकरही तैंने सब ये पाखण्ड बनायाहै॥१

कभी राम को बलिया बताती है कभी सीतापे करुणा लातीहै।
और कायर हमें जितलाती है कैसा तिरिया चरित्र फैलाया है॥२
तेरे जैसी कोई मक्कार नहीं सिया जैसी सरल कोई नार नहीं।
तेरे फरेबोंका कुछ शुम्मार नहीं और तैनेही उसको बहकाया है॥३
तेरी सौकन सियाको बनाऊंगा पटराणी का चीर उढाऊंगा।
तुझे सारी उमर तरसाऊंगा अबतो दिलमें ये निश्चय बैठाया है॥४
जैसा छलिया दुष्ट विभीषण है राणी तेरा भी वैसाही लक्षण है।
दुखदायि तुझे ये कुलक्षण है तुम्हारा देवों ने पार न पाया है॥५

मन्दो. दोहा—जैसी गति वैसी मति स्फुरना वही निडाल।
राजन् तेरे शीश पर आ बैठा अब काल॥
प्रतिपालक तुमहो मेरे परम प्राण प्रिय आप।
देख न सकती आपका अर्द्धाङ्गिनी संताप॥

चौ.—जो मर्जी सो कहें आप मैं तो निज धर्म निभाऊंगी।
प्रज्वलित प्रतापी महाराज नित्य आपके शकुन मनाऊंगी॥
धीर वीर गम्भीर धुरन्धर आपसा और कोई नहीं।
पर यहभी मनमें समझलेवो श्रीरामका पुण्य कमजोर नहीं॥
फंस गये कैद में सब योद्धे दिल मेरा बड़ा धड़कता है।
रह गये अकेले आप मेरा यह दाहिना अंग फड़कता है॥
एक दूत रामका आकरके यहां सबकी शान बिगाड़गया।
और निर्भयता से देवरमण में अक्षकुमार को मार गया॥

राव. दोहा—प्राण प्रिये तू किस लिए होती है दिलगीर।
जब तक जीता जगतमें दशकन्धर रणधीर॥

चौ.—एक रात का कष्ट मुझे कल सभी ठीक हो जायेगा।
लक्ष्मण के मरने बाद सभी शत्रु दल पीठ दिखायेगा॥

अमोघ विजय शस्त्र मैंने लक्ष्मण के हृदय मार दिया।
बस उसी समय रणभूमि में लक्ष्मण ने पैर पसार दिया॥
जबतक रजनी तबतक उसके श्वासोंकी आश मनावेंगे।
सूर्य की किरणें नजर पड़ीं परभव को शीघ्र सिधावेंगे॥
प्रातःकाल ही अय राणी तेरे पुत्र छुड़वा दूँगा।
भागेंगे प्राण बचाकर के तम्बू डेरे उठवा दूंगा॥

रावण मंदोदरी के प्रश्नोत्तर-बहरतबील

मेरे प्राणों की प्यारी तजो सब फिकर।
यहां मुझको नहीं है किसी का खतर।
कल को दिखला दूँ करके ये बातें सभी,
आज की रात को कर तसल्ली सबर॥१॥
अपने भुजबल की शक्ति पै लाया सिया,
मेरी शक्ति ना झेले मनुष्य क्या अमर।
बदला सबका चखा करके लाऊंगा कल,
लूंगा जाकर के अच्छी तरह से खबर॥२॥
कुछ ना लोगे खबर हे हजारी बलम,
पीठ दिखलाई तुमने समर में पिया।
तोड़े संग्रामी रथ आपके राम ने,
देखो आई हैं चोटें कमर में पिया॥३॥
लाते शक्ति से सीताको तो आतेही क्यों,
राम दल बल को लेकर रण में पिया।
वहां सीता हरी यहां रण से भगे,
छत्रापन सो सभी उड़ गगन में गया॥४॥
बस बके मत तू अपनी जबां बन्द कर,
वरना कर दूंगा यहां तेरा दम खतम।

करके तारीफ शत्रु की ऐ बेहया,
क्यों जलाया करे मेरा हरदम ये तन ॥५॥
जो थी आदत विभीषण की वो ही तुझे,
पहले दर्जे की है तू बनी बेशर्म ।
जब से जन्मा विभीषण तू ब्याही मुझे,
बस उसी दिन से फूटे हमारे कर्म ॥६॥

मन्दोदरी का गाना

तेरे कर्मों ने तुझे खूब रुला के मारा ।
भाव निद्रा ने तुझे खूब सुला के मारा ॥
आंखें हुई तो क्या हृदय से तो अन्धे हो,
तीस लक्षणों की ही संख्या को घटा के मारा ॥१॥
राग और शिक्षा का बैर सदा से है,
आप तो चीज हैं क्या असुरों को मला के मारा ॥२॥
अन्तगति सो मती ये भगवान ने भाषा,
पिया कुमति ने तुझे आज भुला के मारा ॥३॥
एक देवर ही विभीषण थे रत्न लंका में,
उस धर्मी का भी दिल तूने सता के फारा ॥४॥
बन गया उसके बिना सब बाग खिजां का,
रहा बाकी जो सभी तूने कटा के डारा ॥५॥
अब के संख्या पै मुझे विधवा बनावोगे ।
कैसे दिल धीर धरूं पुत्रों को फंसा के मारा ॥६॥
मेरी नैया तो "शुक्ल" आन भंवर में अटकी,
डूबा मेरा ये कुटुम्ब तुमने रूला के मारा ॥७॥

रावण दोहा—बुद्धिहीन क्यों कर रही अशकुन यहां अपार।
यदि आगे कुछ भी कहा लेऊं शीश उतार॥
चौ.—भाग्यहीन यह बता कौन मर गया जिसे तू रोती है।
रोवेंगे राम मर गया लखन तू क्यों वृथा तन खोती है॥
लक्ष्मीवती तो आप बने और तीस में हमें बताती है।
रत्न विभीषण को कह कर क्यों छाती मेरी जलाती है॥
बार बार कह दिया तेरे पुत्र हम सभी छुड़ा देंगे।
शत्रु का करके नाश सवेरे झगड़ा सभी मिटा देंगे॥
रत्न जिसे कहती पहले उसको परभव पहुंचाऊंगा।
क्योंकि उस पर हूँ जला हुआ यह हृदय शांत बनाऊंगा॥

रावण का गाना

विभीषण दुष्ट ने ही भेद शत्रु को बताया है।
मेरे पुत्रों व भाई को उसीने तो फंसाया है॥१॥
धूल वन २ की फिरते छानते थे भील दोनोंही,
गुप्त सब भेद देकर के उसी ने तो बुलाया है॥२॥
फौज खुसरों की लेकर के बहादुर बन गये ऐसे,
हंसरथ ही कमीनों में मुझे भी जान पाया है॥३॥
यदि भानु न छिपता आजतो करता खतम सबको,
पुण्य उनके ने अय राणी आज उनको बचाया है॥४॥
स्वाद लंका पै चढने का सवेरे ही चखा दूंगा।
आज कर्मों की चालों ने ही पुत्रों को फंसाया है॥५॥
ऐश सीतासे भोगूं फेर पहले कर फना उनको।
'शुक्ल' तेरी तो शिक्षाने मेरे दिलको सताया है॥६॥

राणी मन्दोदरी का समझाना---गायन

अय प्रीतम न ऐसा खयाल करो सति सीता तरफ न ध्यान करो।
यह दुखकारी परनारी है दशकन्धर दिल में ज्ञान करो।१।
मैं दासी अर्ज ये करती हूँ लो स्वामी चरण में पड़ती हूं।
चरणरज मस्तक पर धरती हूँ हे नाथ न इतना मान करो।२।
तेरे घर में हजारों हैं नारी मुझसी कई आपके पटराणी।
सब हैं चातुर सुन्दर स्यानी कर सबर जरा आराम करो।३।
वह सीता है एक तेज छुरी कुल नाश करेगी है वह बुरी।
मेरी सच मानो जो बात फुरी इस तरफ न बिल्कुल ध्यान धरो।४।
मैंने परख लिया उसको चाकर और हार गई मैं समझाकर।
तुम आवो उसे वहां पहुंचाकर ना झगड़ा घर दरम्यान करो।५।
वह स्वप्न में भी नहीं चाहती है तेरी सूरत उसे न भाती है।
कभी नाम न सुनना चाहती है अब ज्यादह ना हैरान करो।६।
कल राम लंक धंस आवेंगे और तुमसे महाजंग मचायेंगे।
मुझको भी अनाथ बनायेंगे सारी लंका को ना विराम करो।७।
मेरी अन्तिम विनती मान पिया सब नाश करेगी जान लिया।
हठ ऐसा क्यों तुमने तान लिया श्रीरामकी शक्ति प्रमाण करो।८।
अब अशुभ ध्यान सब दूर हरो और 'शुक्ल' ध्यान भरपूर करो।
कुछ नेक नाम मशहूर करो जिनशिक्षा अमृतपान करो।९।

रावण का राणी प्रति--बहराशिकस्त

अयि मूढ़ नारी तू चल हट परे,
तेरा उपदेश सुनना मैं चाहता नहीं।

क्योंकि बातें ही तेरी हैं वृथा सभी,
कभी शत्रु से मैं घबराता नहीं ॥१॥
चाहे राणी हजारों हैं घर में मेरे,
सीता जैसी कोई एक राणी नहीं।
रूप लावण्य में समता हो ना सके,
नक्श उसके मेरे दिल जाते नहीं ॥२॥
कभी मानेगी सीता समझ आप ही,
अब तो जानेकी यहां से ना वो भी रही।
तैने बातें बना कर ये सारी कहीं,
तेरे कहने पर विश्वास लाता नहीं ॥३॥
वो प्यारी सिया मेरे मन भागई,
मेरे पुण्य से मेरे हाथ आगई।
चाहे नागिन छुरी वह कटारी सही,
उसको वापिस तो मैं भी पहुंचाता नहीं ॥४॥
मर गया होगा लक्ष्मण या मर जायेगा,
कूंच परभव को फिर राम कर जायेगा।
खेल शत्रु का सारा बिगड़ जायेगा,
बाकी राजों का खुर खोज पाना नहीं ॥५॥
तीन खण्डों में सारे अटल वाक्य हैं,
मेरे गौरव की सारे मची धाक है।
और चक्कर सुदर्शन मेरे पास है,
खौफ रावण किसी का भी खाता नहीं ॥६॥

मन्दो दोहा—समझ गई मैं सिर तेरे रहा शनिश्चर छाय।
कर्मोंके अनुसार ये अकल विकल होजाय ॥

चौ.—समझाये हर समय किन्तु तुम जरा ख्याल नहीं लातेहो।
हम कहते हैं पूर्व को तो तुम पश्चिम को जाते हो॥
अब सीता को वापिस करके श्रीरामचन्द्र से प्रेम करो।
अब फेर दुबारा परस्त्री का प्राणनाथ तुम नियम करो॥

रावण दोहा—आरी सी जिह्वा तेरी रही कलेजा चीर।
मति हीन हटती नहीं कस २ मारे तीर॥

चौ.—अनुचित कहने का मैं तुझको सारा स्वाद चखा देता।
क्या करूं जातहै औरतकी नहींतो सिर धड़से उड़ादेता॥
पीठ दिखा यहां से जल्दी क्यों तेरी होनी आई है।
निर्बुद्धि वामवता तैने कहां शर्म बेचकर खाई है॥

दोहा—सीख ना मानी नार की लंकपति ने एक।
कहो निकाचित कर्म की टले किसतरह रेख॥

चौ—लाचार गई निज महलों में पर दिल अन्दर से धड़क रहा।
रावण शय्या पर पड़ा हुआ मानिन्द मीन के तड़फ रहा॥
उधर सयाने वैद्यों ने अप-अपना जोर लगाया है।
पर वीर सुमित्रानन्दन को आराम नहीं कुछ आया है॥

दोहा—विद्याधर प्रतिचन्द्रजी आये दक्षिण द्वार।
भामण्डल को प्रेम से बोले गिरा उचार॥

प्रति० दोहा—यदि प्रेम है आपका रामचन्द्र के साथ।
तो हमें वहां पहुंचायदो आज निवावें माथ।

भामं. दोहा—कौन आप हमको पता देवें सभी बताय।
निश्चय करके हम तुम्हें देंगे दर्श कराय॥

प्रति.दोहा—ठीक हमें तुम समझलो रामचन्द्र के दास।
बाकी फिर बतलायेंगे रघुनन्दन के पास॥

चौ.–शक्ति दूर हटाने की औषधि बताने आया हूँ।
कृपया जल्दी बतला देवो उनके दुःख से घबराया हूँ॥
प्रातःकाल से पहले ही उनका इलाज हो जावेगा।
यदि देर हुई ज्यादह मेरा आना निष्फल कहलावेगा॥

दोहा–दिल में सोच विचार के इन्तजाम के साथ।
पास गये श्रीराम के तुरत निवाया माथ।

प्रति.दोहा–सूर्यवंशी कुलमणि मुकुट हे स्वामी जगताज।
नम्र निवेदन पर जरा ध्यान धरें महाराज॥
सांगीत नगर का हूं प्रभु सुप्रभा अंगजात।
प्रतिचन्द्र मम नाम है शशि मण्डल नृपतात॥

चौ.–अचूक औषधि लक्ष्मण के लिये आज बताने आया हूं।
सुनते ही शक्ति का प्रहार हे नाथ बड़ा घबराया हूँ॥
ध्यान लगाकर सुन लीजे अपनी बीती बतलाता हूं।
फिर औषधि मिले जहां पर यह सो भी स्वामी दर्शाता हूँ॥

छन्द–राणी सहित मैं एक दिन विमान में था जा रहा।
उस तरफ विद्याधर सहस्र नामक सन्मुख आरहा।
विषय सम्बन्धी वैर के कारण हमारा जंग हुआ॥
इसतरफ मैं भी थक गया उसतरफ वह भी तंग हुआ॥
प्रहार शक्ति चन्द्रवा का अन्त में उसने किया।
मूर्च्छित हो मैं उद्यान में गिर धरणि का शरणा लिया॥
आपके भाई भरत वहां आगये करुणानिधि।
लेकरके गन्धाम्बु दिये छींटे उन्होंने कर विधि॥
शक्ति उसी दम निकल भागी बाण जैसे धनुष से।
या यों कहो जैसे भगा हो चोर डरकर मनुष्य से॥

निश्चय समाधि होगई मुझको उसी जल से प्रभु।
भरत से पूछी मैं महिमा जल की अब सुनलो विभु।
बोले भरत गजपुर में महिषों का व्यापारी आगया॥
विंध्यसार्थवाह महिषा रुग्ण वहां विसरा गया।

दोहा—सभी वार्ता भरत ने दई मुझे बतलाय॥
सो भी मैं संक्षेप से देऊं प्रभु सुनाय॥
शक्तिहीन भैंसा वहां पड़ा मार्ग में आन।
दुखिया उठ सकता नहीं आगे सुनो बयान॥

चौ.—अज्ञानीजन उस भैंसे के ऊपर से आने जाने लगे।
कई दुष्ट और बालकजन भी दुखियाको खूब सताने लगे॥
अकाम निर्जरा होने से वायुकुमार जा देव हुआ।
फिर अवधिज्ञान से देखा है पर्याप्त जब स्वयमेव हुआ।

दोहा—निज मृत्यु का जब लखा सुर ने सारा हाल।
सभी देश पर देव को चढ़ा रोष विकराल॥

चौ.—क्रोधातुर हो उसी समय व्याधि सब जगह फैलाई है
भयभीत हुए उस महा रोग से जनता अति घबराई है॥
द्रोण मेघमाम कारणवश इसी राज्य में रहता था।
उस जगह था उसके आसपास यह रोग नहीं कुछ कहता था॥
मैंने फिर मातुल से पूछा किस कारण यहां रोग नहीं।
और आपके आस पास मेरी जनता परभी कुछ शोक नहीं॥
द्रोण मेघ ने बतलाया प्रियंगु जो ममराणी है।
यह रुग्ण जरा कुछ रहती थी जो धर्मन चतुर सयानी है॥

छंद—गर्भ के प्रभाव से राणी का दुःख सब हट गया।
जहां पांव राणीने धरा उसका भी संकट कट गया॥

कन्या हुई पैदा गर्भ का काल जब पूरा हुआ ।
था यों कहो पैदा सभी का पुण्य अंकूर हुआ ॥
इस तरह ही देश मेरे में भी भारा शोक था ।
जिस२ जगह कन्या फिरी वहां का मिटा सब रोगथा॥
करवा लिया छिड़काव फिर लेकर जल स्नान का।
रोग भागा दूर सारा नारी व इन्सान का ॥
नाम वैशल्या उसी दिन से यह हमने धर लिया ।
क्योंकि इसके पुण्य ने दुख दूर सबका कर दिया ॥

दोहा—सत्यभूति मुनि एकदा समवसरे तहां आय ।
कारण थे मुनिराज से पूछा हमने जाय ॥
सुनकर मेरे वचन को ज्ञान कारण मुनिराय ।
मन्द मन्द मुस्कावते ऐसे वचन सुनाय ॥
आत्म उन्नति के लिए योग स्थिर शुभध्यान ।
दानशील तप ज्ञान से शक्ति बढ़े महान ॥

,,—घोर तपस्या करी जन्म पूर्व में थी इस कन्या ने ।
इस कारण कर दिया दूर यह रोग सभी वैशल्या ने ॥
दशरथ नन्दन लक्ष्मणजी इस कन्या के वर होवेंगे ।
और देख २ जिसकी शक्ति को शत्रु मन में रोवेंगे ॥

भरत दोहा—मेरी भी विनती करी मामा ने स्वीकार ।
स्नान करा वह औषधि दई मुझे सुखकार॥

चौ.—स्नान का जल मैंने लाकर जनता का रोग मिटाया था ।
अब तुम पर भी लेकर मैंने वो ही पानी छिड़काया था ॥
घाव चोट और शक्ति क्या कैसा ही रोग होवे तन में ।
यह पानी जरा लगाने से मिट जाता है सब पल क्षण में ॥

प्रतिचन्द्र का गाना

थे कथन मेरा प्रमाण करो, अब लक्ष्मण को आराम करो ॥टेक॥
कोई वीर चतुर अब भिजवाओ स्नान का पानी मंगवाओ।
लक्ष्मण पर स्वामी छिड़काओ अब देरी का ना काम करो ॥१॥
देवी शक्ति नुकसान करे कोई औषधि ना यहां काम करे।
अक्सीर वो इसको मान हरे अब मन में न आर्तध्यान धरो॥२॥
प्रभु नेत्रों से नीर अब दूर करो जिनराज भजो मन धीर धरो।
हम लोगों की सब पीर हरो शुभध्यान 'शुक्ल' सुखधाम करो॥३॥

दोहा—प्रतिचन्द्र के वचन सुन हर्षे अति रघुराय।
हनुमान अंगद सुभट शीघ्र तभी बुलवाय॥

चौ.—भामंडल थे विराजमान योद्धा सलील बुलवाये हैं
श्रीराम ने जल की महिमा के सब भेद खोल दरशाये है।
कर जोड़ सामने खड़े वीर तन मनसे शीश झुका करके।
श्रीरामचन्द्र तब लगे कहन सबको ऐसे समझा करके।

राम दोहा—भामंडल हनुमानजी अंगद सुभट सलील।
बैठो अभी विमान में जरा न लावो ढील॥

चौक—अर्द्धरात्रि से ज्यादह रजनी का हिस्सा बीत गया।
इसलिये सभी योद्धाओंका और मेरा मन भयभीत हुआ॥
आज तलक तुम सेवक थे अब सभी धर्म के भाई हो।
अपने मुख से क्या कथन करूं बस तुमही मेरे सहाई हो॥
जो २ तुमने उपकार किये मुझपर सो नहीं दे सकता हूँ।
अय हनुमान अंजनीलाल तेरे गुण नहीं कह सकता हूँ॥

गम्भीर भंवर में नाव पड़ी तुमने ही पार लंघाना है।
यह घाव किया दशकन्धर ने सो आपने आज मिटाना है॥

हनु. दो.—अर्पण सब कुछ कर दिया तन मन धन अवधेश।
सेवक हाजिर चरण में करो इसे आदेश॥

नो.चोक—बतलाइये आदेश आपका हुक्म बजा लावें हम।
तीनलोक से जहां मिले वहां से औषधि लावें हम॥
देरी का नहीं काम बैठ विमान अभी जावें हम।
यदि आज्ञा हो खास वेशल्या को लेकर आवें हम॥

दोड़—कृपाकर हुक्म चढावें काम जल्दी कर लावें, ध्यान जिनवर का लावो समझो अब आराम हुआ, लक्ष्मण को मत घबराओ।

—श्रीराम का आदेश—

जावो २ जी हनुमत जावो जल्दी गन्धोदक अब लावो॥टेक॥

पहले भरत भाई पर जाना, शक्ति का सब भेद सुनाना।
द्रोण मेघ को फिर समझाना देरी मत अब लाओ॥१॥

सावधान होकर के जाना शत्रु का विश्वास न खाना।
संगबली योद्धे ले जाना, जल्द विमान सजावो॥२॥

जनकसुता की सुध तू लाया दशकन्धर का ताज गिराया।
सब दल का स्तम्भ कहाया; यह भी अब काम बनाओ॥३॥

परोपकारी तुम कहलावो भाई भिक्षा मुझे दिलाओ।
"शुक्ल" मेरा ये दुःख मिटाओ हृदय की तप्त बुझाओ॥४॥

दोहा—शीश निवां झट चल दिये योद्धा बैठ विमान।
अवध पहुंच अवधेशको लगे हाल समझान॥

हनु. दोहा—दशकन्धर ने अनुज के मारी शक्ति तान।
मूर्च्छित हो धरणि गिरा सब दल है हैरान॥

छन्द—इस समय कैशल्या के स्नान का जल चाहिये।
साथ चल करके प्रथम वह जल हमें दिलवाइये॥
जिन्दगानी लखन की उस जल बिना स्वामी नहीं।
पैदा करे यह औषधि उस सम कोई दानी नहीं॥
प्रभात से पहले ही पहले काम करना है सभी।
रह जायेंगे कर मलते यदि भानु निकल आया कभी॥

दोहा—राम लखन का कष्ट सुन भर लाये जल नैन।
समय सोच कर भरतजी लगे इस तरह कहन॥

भरत दोहा—चलो अभी क्या देर है द्रोण मेघ के पास।
जल तो क्या भेजूं अभी कैशल्या ही खास॥

दोहा—भरत फौरन ही चल दिये लेकर सबको साथ।
द्रोण मेघ सोया महल ऊपर पिछली रात॥

चौक—प्रथम जगाया द्रोण मेघ फिर सारी बात सुनाई है।
द्रोणमेघ ने उसी समय कैशल्या तुरत जगाई है॥
आदि अन्त पर्यन्त सभी लक्ष्मण का भेद बताया है।
इस बात ने कैशल्या के भी हृदय को खूब सताया है॥
कैशल्या के संग चलन को सभी सखी तैयार हुई।
और मात पिता की आज्ञासे विमान में तुरत सवार हुई॥

दोहा—उसी समय झट चल दिए पवन पुत्र बलधार।
अवधपुरी में, भरत को लाकर दिया उतार॥

चौ.—इस अन्तर में श्रीरामचन्द्र मन में धीरज नहीं धरते हैं।
जल बिना मीन यों तड़फ रहे विमान प्रतीक्षा करते हैं॥
दुःखसागर में लीन और आंखों से आंसू गिरते हैं॥
मोह के वश श्रीरामचन्द्र फिर ऐसे गिरा उचरते हैं॥

—श्रीराम का विलाप—

रात भी आज तो विमान बनी जाती है।
भाई लक्ष्मण की नब्ज हाथ नहीं आती है।
हाय कर्मों ने मुझे कैसे रुला के मारा।
आज अपनी ना व्यथा मुझसे कही जाती है॥१॥
एहसान तेरा मैं ना कभी भूलूंगा।
आज मुझ पर तू दया क्यों न जरा लाती है॥२॥
दुखिया की मदद कर नेक सहायक बनजा।
किसलिये आज तू तूफान बनी जाती है॥३॥
आजतक रैन मेरे अनुकूल रहा करती थी।
आज तू मुझसे क्यों विपरीत बनी जाती है॥४॥
तू ही दया करके फलक सूर्य को छिपा लेना।
क्योंकि अब रात तो प्रभात बनी जाती है॥५॥
अब तलक आये नहीं हनुमान भी औषधि लेकर
क्या करे कोई मेरी किस्मत ही फिरी जाती है॥६॥
कहां आकर के दगा तूने दिया अय भाई।
कोर माता के हिये की ये चली जाती है॥७॥
तीन से दो हम बने अब तो अकेला ही रहा।
कल को मैं भी ना रहूँ साफ नजर आती है॥८॥

माता और भ्रात खबर सुनलेही प्राण तजेंगे।
"शुक्ल" कर्मों से मेरी पेश नहीं जाती है ॥९॥

दोहा-राम इस तरफ हो रहे ऐसे आर्तवन्त।
आ पहुंचे उस तरफ से उदधि पर हनुमन्त ॥

छन्द-उदधि पै आ विमान की सहसा चमक जिस दम पड़ी।
राम क्या सब राम सेना सोच सागर में पड़ी॥
अति तेजी था विमान का प्रतिबिम्ब कुछ जल में पड़ा।
कुछ दुखी को धीर कहां महाशोक सब दल में पड़ा ॥
तेजकर विमान को उस तरफ हनुमत ने कहा।
और आंसुओं का जल यहां इस कष्ट में सबके बहा ॥
राम के दुख की कोई सीमा कही जाती नहीं।
क्षणभर की वो विपदा यहां वर्णन में सब आती नहीं।

दोहा-मन २ करता आगया क्षणभर में विमान।
वानर सेना को हुई दिल में खुशी महान ॥

चौबो-सूर्यप्रकाशी कमल जिस तरह देख रवि को खिलते हैं।
या भानुको लख दम्पति चकवाचकवी आ प्रेमसे मिलतेहैं॥
या यों कहियेकि मीन तड़फतीको थल पर आ नीर मिला।
या क्षुधातुर बच्चे को जैसे माता ने दीना क्षीर पिला ॥
दाह रोगी को जैसे शीतल वायनाकोशी होता है।
या तृषातुर खेती की जैसे बादल खुश्की खोता है ॥
देख सरोवर ठण्डे को तृषातुर आनन्द पाता है।
श्रीरामचन्द्र भी देख यान को मन में खुशी मनाता है॥

दोहा-जयरकार योद्धोंने किया हनुमान निवाया माथ।
उतरी कैशल्या सती निज सखियों के साथ ॥

प्रणाम किया जा कन्या ने रामचन्द्र के पांय।
देर न अब पुत्री करो राम यों वचन सुनांय॥
फेरा जिस दम सती ने हृदय पर निज हाथ।
शक्ति भागी निकल जिम रवि सामने रात॥

चौक–बलधारी के तीर से जिम धरणि से नीर निकलता है।
या जरा लालड़ी रखने से जैसे घन लाल उगलता है॥
महा प्रबलसिंहनी के आगे हथिनी कैसे अड़ सकती है।
बस इसी तरह वैशल्या आगे शक्ति कब डट सकती है॥
मानिन्द चोर के भगी उसी दम पवनपुत्र ने पकड़ लई।
या बाजने जैसे चिड़िया को ऐसे निज करमें जकड़ लई॥
दुःख जो था वो निकल गया फिर चेत अनुजको आया है।
अति नम्रता से शक्ति ने हनुमान को वचन सुनाया है॥

शक्ति दो.–प्रज्ञप्ति की बहिन हूँ महाशक्ति मम नाम।
दोष नहीं कोई मेरा करूं बताया काम॥

चौक–रावण के आधीन करी धरणेन्द्र ने समझा करके।
दशकन्धर ने लक्ष्मण ऊपर मुझको छोड़ा झुंझला करके॥
यदि भानु चढ़ने से पहले वैशल्या यहां नहीं आती।
तो काम सिद्ध था रावणका लक्ष्मणकी जान निकल जाती॥
पुण्य प्रबल है रामचन्द्र का लक्ष्मण की है उमर बड़ी।
जो प्रातःकाल से पहले ही वैशल्या यहां पर नजर पड़ी॥
इसका तेजप्रताप इस समय मुझसे सहा नहीं जाता है।
कृपाकर छोड़ देवो मुझको क्योंकि हृदयं घबराता है॥

दोहा–फेर नहीं इनपर कभी करने की मैं वार।
नमस्कार तुम चरणमें करती हूँ बारंबार॥

चौ.—तेज प्रबल वैशल्या का यह मुझसे नहीं सहा जाता है ।
थरथर कांपे गात मेरा कर्त्तव्य ही मुझे लजाता है ॥
मेरा इसमें कुछ दोष नहीं क्योंकि सेवक की भांति हूं ।
यह नम्र निवेदन है मेरा स्वतन्त्र करो मैं जाती हूँ ॥

दोहा—दीन वचन सुन वीर ने दई उसी दम छोड़ ।
दृष्टि से गायब हुई दौड़ गई मुख मोड़ ॥

चौक—नामनाकोशी चन्दन का लक्ष्मण ने तन पर लेप किया ।
कुछ वैशल्या ने फेर २ कर घाव हृदय का मेल दिया ॥
प्रेमभाव से वैशल्या लक्ष्मण के दुख को खोने लगी ।
वानरदल में उत्साह सहित जयकार ध्वनि अब होनेलगी ॥
कोई उछल २ कर कूद रहा फूला न अंग समाता है ।
कोई दांत पीसरहा रावण पर कोई क्रोधसे धरा कंपाताहै ॥
कई रामचन्द्र के पास पहुंच चरणों में शीश निवाते हैं ।
और मिलजुल खुशहो नरनारी अतिप्रेम से गान सुनातेहैं ॥

सेना तथा सखियों का आनन्द मनाना

आनन्द मंगलाचार गावो २ ।
श्री जिन पै बलिहार जावो २ ॥ टेक ॥

लक्ष्मण वीर की खुशियां मनावो,
आज विजय का नाद बजावो । बांटो लाखों हजार ॥१॥
भगवान की कृपा हुई भारी,
आई यहां पर राजकुमारी । निकला शक्ति प्रहार ॥२॥
सती धर्म दिखलाया आकर,
वैशल्या ने शक्ति हटाकर । सती पै जावो बलिहार ॥३॥

योग्य भावना निर्मल भावो,
न्याय पाल अन्याय मिटावो। हों लक्ष्मण तैयार ॥४॥
रामचन्द्र की विजय है भारी,
रावण ने कुमति मन धारी। अब लेवें लंक दरबार ॥५॥
योद्धे कैद किये रावण के,
अब नहीं आजादी पावन के। हम दिल खुशी अपार॥६॥
सीता सती का कष्ट मिटावो,
लंका की अब धून मिटावो। शत्रु का शीश उतार ॥७॥
औदार चित्त श्री राम लखन हैं,
पूर्ण किये जो कहे वचन हैं। दुखीजन के आधार ॥८॥
तन मन धन से सेवा करलो,
यहां यश परभव में सुरपद लो। 'शुक्ल' ध्यान शुभ धार ॥९॥

दोहा—आनन्द दिल में छा रहा मिट गया सकल क्लेश।
वानरदल के शूरमा उत्साह धरें विशेष ॥

शेर—शक्ति के प्रस्थान करने से लाली मुख पर छाई है।
धीरे २ कान्ति बढी नाड़ी स्वस्थान पै आई है॥
हनुमन्त विभीषण सुग्रीवादिक खुशी के अश्रु बहाते हैं।
जामवन्त अंगद भामंडल प्रेम से शीश झुकाते हैं।
सब क्लेश भगा वानरदल से ज्यों भान्वोदयसे तिमिर भगे॥
गद्गद कंठ हो रहे राम थे भ्रात के प्रेम में अति पगे॥
वाजे खुशी के खूब बजाओ हनुमन्तने सैनको हुक्म दिया।
क्षणभर में रामके अंकमें ही लक्ष्मण ने नैनको खोलदिया॥

दोहा—हर्षोदधि झट उमड़ पड़ा दल में चारों ओर।
अनुज वीर कहने लगा उसी समय कर जोर॥

रंग ढंग सब खुशी का आता नजर अपार।
नेत्रों से फिर किस लिये आप नीर रहे डार॥

चौक–नेत्रों में पानी भरा हुआ भाई क्या कारण है इसका।
और सभी कान्ति हुई क्षीण है कहो आपको भय किसका॥
पहरा नंगी तलवारों का किस कारण कोट लगाया है।
अनुमान नजर आता सबने आंखों से नीर बहाया है॥
यह राजकुमारी कौन कहां की कैसे यहां पर आई है।
जयकार शब्द के सहित खुशी सबके चेहरे पर छाई है॥
यह स्वप्न मुझे कोई आता है या साक्षात ही देख रहा।
और किस कारण हे भ्रात आपकी गोदी में हूं लेट रहा॥

दोहा–सुने वचन जब भ्रात के हर्ष मन में अपार।
कंठ भ्रातको लाय फिर बोले कौशल्याकुमार॥
शक्ति तुमको थी लगी कल अय लक्ष्मण वीर।
उसी समय धरणि गिरे मूर्च्छित हो रणधीर॥

चौक–हम आश तुम्हारे जीनेकी तज नयनोंसे आंसू बहातेथे।
बस कारण यही उदासीका हम सब ही रुदन मचाते थे॥
श्री द्रोणमेघ की सुता सती ने शक्ति आन हटाई है।
हनुमत आदि लाये जाकर इस कारण यहां पर आई है॥

दोहा–है प्रत्यक्ष यह बात सब स्वप्न नहीं यह भ्रात।
गोद हमारी में रहा वीर आज की रात॥

चौक–आराम हुआ तुमको भाई इस कारण खुशी मनाते हैं।
जयकार शब्दको ध्वनि सहित सब जिनवरके गुण गाते हैं।
यह इसीलिये सब कोट बने पहरा नंगी तलवारों का।
और नजर तुम्हें आया सबकुछ यहहाल सिपहसालारोंका।

अय भाई दशकन्धर ने तो यहां महा विघ्न कर डारा था।
यह जन्म दूसरा हुआ तेरा कुछ बाकी पुण्य हमारा था॥
प्रतिकार नहीं दे सकता मैं हनुमन्त आदि सब योद्धोंको।
शक्ति नहीं मम जिह्वा में वैशल्या को अनमोदूं क्या॥
दोहा—झुंझलाकर फौरन उठे वीर सुमित्रा लाल।
तान शरासन हाथ में यों बोले तत्काल॥

लक्ष्मणजी का गाना

अब तो रावण का शीश उड़ायेंगे हम।
कल की शक्ति का बदला चुकायेंगे हम॥
अबके रावण समर में जीता कभी ना जायेगा।
यदि गया तो अनुज दशरथ का न नन्द कहायेगा॥
उसके सारे ही दाव तुलावेंगे हम॥१॥
भाई का भाई वचन पूर्ण ही कर दिखलायेगा।
ताज रावण का विभीषण के ही शीश टिकायेगा॥
सीता माता को शीश झुकायेंगे हम॥२॥
मेदिनी थर्रायेगी और स्वर्ग भी थर्रायेगा।
अबके निश्चय ही समर में लंकपति मर जायेगा॥
वज्रावतेज को कर में सजायेंगे हम॥३॥
लाल मैं माता सुमित्रा का तभी कहलाऊंगा।
सीता सहित श्रीराम को जब अवध में पहुंचाऊंगा॥
नहींतो जीते अवधको न जायेंगे हम॥४॥
तेज क्षत्रापन का हम अय 'शुक्ल' अब दिखलायेंगे।
मित्र विभीषण के ही मस्तक राजतिलक सजायेंगे॥
अब तो शत्रु की धूल उड़ायेंगे हम॥५॥

राम दोहा—भाई पहले कीजिये करने वाला काम।
फिर निश्चय तुम शत्रुको पहुंचावो परधाम॥

चौक—वैशल्या का है भ्राता तुम पहले पाणिग्रहण करो।
उपकार किया जिसने ऐसा उसकाभी तो कुछ कहनकरो॥
यह पति तुम्हें है मान चुकी इस भव का राजदुलारी है।
गम्भीर सती यह महासती जिन व्याधि सभी निवारी है॥

दोहा—मौन राम के वचन सुन हुए सुमित्रालाल।
वैशल्या ने लखन को पहनाई वरमाल॥

चौक—सभी सहेलियों सहित वहांपर वैशल्या का विवाह हुआ।
था पुण्य बड़ा श्रीराम लखनका दुःख जिन्होंका जुदाहुआ॥
अतिखुशी सहित उत्सव यहां पर श्रीरामके दलमें होनेलगा।
यह खबर लगी जब रावण को तो सिरधुनर के रोने लगा॥

दोहा—उसी समय लंकेश ने मन्त्री लिये बुलाय।
ठण्डा लेकर सांस फिर यों बोला अकुलाय॥
बतलाओ सब सोच कर अब क्या करें उपाय।
रामचन्द्र से जीत हो सुत बान्धव छुट जाय॥
मन में बड़ी उमंग थी मरगया लक्ष्मण वीर।
किन्तु आज आनन्द में हैं शत्रु रणधीर॥

चौक—बाजे खुशी के बजते हैं और उत्सव का कुछ पार नहीं।
उड़ गये अकलके तोते सुनकर दिलको सबर करार नहीं॥
अब लेने के पड़ गये देने में सभी चौकड़ी भूल गया।
और व्याजको आशार में निज गांठ का सारा मूल गया॥
बतलावो तजवीज कोई जिस तरह शूरमा छुट जावें।
और रामचन्द्र के भी तम्बू डेरे यहां से सब उठ जावें॥

बुद्धि अपनी का परिचय इस कड़े समय में दिखलावो ।
अब सोच विचार करो मिलकर मेरे मस्तक में बिठलावो॥

दरबारी-दो.—महाराज आपको प्रथम ही समझाया हरबार ।
किन्तु निवेदन आपने किया नहीं स्वीकार ॥

चौक.—जो बीत गई सो जानेदो अबभी कुछ सोच विचार करो।
सीता को वापिस भिजवाकर श्रीरामचन्द्र से प्यार करो॥
नार पैर की जूती है यदि एक नहीं तो और मिले ।
पुत्र हैं कोर कलेजे की आशा न कहो किस तौर मिले ॥
राजपाट और ऋद्धि क्या सब इस प्राणीको हरबार मिले ।
जो खुसे बड़ों से लिये आपने फिर से वापिस राजकिले ॥
सीता जैसी राजकुमारी और कई ला सकते हो ।
पर जन्म २ में कुम्भकर्ण सा वीर नहीं पा सकते हो ॥
बड़े २ योद्धा इनकी सब आज कैद में सड़ते हैं ।
फिर किस शक्ति पर आप जरा बतलाइये यहां अकड़ते हैं॥
अबके रण में क्या खबर आप किस हालत में जापहुंचोगे।
फिर शत्रु लंका लूटेंगे यदि अब भी आप ना सोचोगे ॥
सीता को वापिस करने में सुत भ्रात सभी छुट जावेंगे।
श्रीराम सिया को लेकर के बस उसी समय मुड़ जावेंगे ॥
है तेज प्रताप प्रचण्ड राम का विजय नहीं पा सकतेहो।
यदि अबके रण की ठानोगे तो वापिस नहीं आसकते हो॥

रावण दोहा—शत्रु से कर वीनती मिलते कायर क्रूर ।
मिलते हैं तलवार से मर्द दिलावर शूर ॥

चौक—बस वही भुजा हैं सुर सुन्दर जैसोंका मान घटाया था।
सहस्रांशु नृप भी हार गया शतबाहु ने छुड़वाया था ॥

दुर्लंघ्य पुरपति नल कुवेरं था कोट जहां आशाली का।
क्या हाल किया था डार कैद में मैंने इन्द्र माली का ॥
पुत्र रत्नश्रवा का रत्न हूं जाय भयंकर युद्ध मचाऊं।
दंड घमंड का देऊं खलोंको तेग प्रचण्ड से शीश उड़ाऊं॥
वानरदल का चूर जरूर २ मैं धूल में धूल मिलाऊं।
सुत भ्रात छुड़ायके लाऊं तभी कैकसी दशाणोका पुत्र कहाऊं॥

रावण का गाना

मेरी शक्ति का अब तक भी न तुमने भेद पाया है।
मिलो शत्रु से जाकर के यह वाक्य किसने सिखाया है ॥१॥
मिला करती है भाई से बहिन या पुत्र माई से।
किन्तु क्षत्रिय का मिलना तेग की धारा से आया है ॥२॥
मात सुत भ्रात और बान्धव मिले यदि न मिले तो क्या।
कठिन सीता का मिलना है समझ मेरी में आया है ॥३॥
देखकर रूप सीता का शर्म खाती है इन्द्राणी।
इसे वापिस करो कहते तुम्हें किसने बहकाया है ॥४॥
प्यारी जानकी बस जान के ही साथ जावेगी।
मेरे ज़ख्मी जिगर पर नमक क्यों तुमने लगाया है ॥५॥
यदि अपना भला चाहो "शुक्ल" यह वचन न कहना।
तुम्हारा दुष्ट मन्त्र यह नहीं मुझको सुहाया है ॥६॥

दोहा—रोग असाध्य अब बन चुका समझ गये मंत्रीश।
काल शीश पर छा गया इसके विश्वा बीस ॥
मन्त्री दो.—जो मर्जी सो कीजिये महाराज रणधीर।
सुत बान्धव जैसे छुटें करो यही बलवीर ॥

रावण ने श्रीराम पै दीना दूत पठाय ।
पहुंच दूत श्रीराम पै बोला शीश झुकाय ॥

दूत दोहा—सूर्यवंशी कुलमणि मुकुट वर बुद्धि बलवीर ।
नमस्कार मम लीजिये हे स्वामी रणधीर ॥

चौक—दशकन्धर ने फरमाया है किस कारण रार बढाते हो ।
तुम एक नार के पीछे क्यों वृथा बलवीर कटाते हो ॥
अमोघ विजय से बचा अनुज भाई यह ख्याल तुम्हारा है ।
पर अभी सुदर्शन चक्र का तो बाकी वार हमारा है ॥

दोहा—शम्बुक को तुमने हना हम हर लाये नार ।
यहां तक तो हम तुम रहे सब दोनों इकसार ॥

चौक—किन्तु शम्बुक का घात किया हरनेसे नहीं भर सकता है ।
शम्बुक वापिस करने से सीता को प्राप्त कर सकता है ॥
ताज सुन्द का छीन लिया यह भी अपराध आपका है ।
अन्याय पै तुम हो तुले हुए न ध्यान किसी के संतापका है ॥
हम जितने होते नरम २ उतने तुम सिर पर चढ़ते हो ।
करलिये कैद छल से योद्ध क्या इस पर आप अकड़ते हो ॥
पर याद रहे मैं इन बातों से कभी नहीं घबराता हूं ।
क्या मारूं मैं तुम मुर्दों को यह फिर भी करुणा लाता हूं ॥
यदि तुम्हें राज की इच्छा है सो भी मैं पूरी कर दूंगा ।
शरणागत मेरे आजावो जितना दुःख सारा हर लूंगा ॥
अर्द्ध राज्य सब लंका का दो भाग आज से करवा लो ।
क्यों फिरते वन की धूल छानते ताज शीशपर चढवालो ॥
और एक सिया के बदले में निजपुत्री सभी विवाहताहूँ ।
जितने तुमने अपराध किये सब क्षमा मैं करना चाहताहूँ ॥

यह बात नहीं स्वीकार सभी तो तुमसा कोई निर्भाग्य नहीं।
अनमोल समय यह बार२ फिर आपको आना हाथ नहीं॥

दोहा—सुत बान्धव सब छोड़ कर करो बात प्रमाण।
जीत आपकी सब तरह करो हृदय में ज्ञान॥

राम दोहा—दिव्य दृष्टि से भूप ने खूब विचारी आज।
किन्तु यहां आये नहीं लेने को हम राज॥

चौक—लंका तो क्या सब दुनियां के राज की कोई अभिलाषा नहीं।
हैं स्वल्प दिनों का जीना पर कल के भी श्वास की आश नहीं॥
और सभी सुतायें लंकपति की भी हमको स्वीकार नहीं।
हम कैसे उन्नत वंशज हैं रावण ने किया विचार नहीं॥
यह कहना है सब ठीक उन्हों का शम्बुक हमने मारा है।
और ताज सुन्द का वीरविराधके मस्तक ऊपर धारा है॥
इसको तो तुमने देख लिया पर कैसे उसे निहारोगे।
जब लंक विभीषण को देंगे परभव में आप सिधारोगे॥
मरने से पहले सुत बान्धव को यदि छुड़ाना चाहते हो।
तो खर्च पूज सीता वापिस करदो क्यों देर लगाते हो॥
यहां सूर्यवंशी सिंह शृगाल की धमकी से कब डरते हैं।
यदि शक्ति है तो दिखलावें किस लिये निमंत्रण देते हैं॥
अन्याय पै तुले बताते हो कहते भी शर्म न आई है।
ले भागे चोरी से परनारी यहां शेखी अब बघराई है॥
हम राज और पुत्री लेंगे तो लेंगे अपनी शक्ति से।
अबभी हम तुमको कहते हैं आमिलो प्रेम और भक्ति से।

दूत दोहा—रिश्तेदारी मित्रता कुश्ती और तकरार।
बराबरी में ही निभें ये चारों सरकार॥

नौ चौक-यह चारों सरकार आप कुछ सोच समझकर बोलें।
अपनी और दशकन्धर की शक्ति को मन में तोलें॥
योद्धों को कर कैद और दो चार दिवस खुश होलें।
और अंतिमका यह जंग आप सब हाथ जानसे धोलें॥
दौड़-विश्व को जीतन हारा, लंकपति योद्धा भारा, सोच कुछ नहीं करते हो। एक नार के पीछे क्यों तुम सबके सब मरते हो।

दोहा-सुनकर के व्याख्यान यह उठे सुमित्रालाल।
अरुण वर्ण कर नैन दो बोला जैसे काल॥

लक्ष्मण दो-घर में बैठा श्वान की तरह रहा घुर्राय।
कल क्यों भागा था रामके आगे पूंछ दबाय॥

चौक-भानु जितना चढ़ता उल्लू अन्धा होता जाता है।
बस यही हाल है रावणका निज गौरवको खोना चाहता है॥
सुत भ्रात कैद में पड़ें सभी बेशर्म शर्म नहीं लाता है।
ठीक बात रस्सी का जलने पर भी बल नहीं जाता है॥
कबतक वहां छिपकर बैठोगे यह कह देना दशकन्धर को।
सब रणमें आकर अजमाइये श्रीरामके पुण्य सिकन्दरको॥
कायर क्रूर अधर्मी अपना कब तक भला मनायेगा।
अब तो परभव में निश्चय ही बस लक्ष्मण तुम्हें पठायेगा॥

दोहा-उत्तर देने को हुआ दूत फेर तैयार।
धक्का दे हनुमान ने किया तम्बू से बाहर॥

चौक-आदि अन्त पर्यन्त बात जाकर रावण को बतलाई।
सुन तड़क फड़कके वचन दशाननकी आत्म कुछ घबराई॥
उसी समय सामन्त मन्त्रियों से सम्मति मिलाई है।
जनकसुता वापिस करने में सबने कही भलाई है॥

सिया विरह की वातों ने दशकन्धर पर आघात किया।
कुछ लक्ष्मणजी की वातों ने हृदय पर वज्रापात किया॥
होगये सोच में मग्न कोई तरकीब नजर नहीं आई है।
कुछ देर वाद वहुरूपिणी विद्या पर निज दृष्टि जमाई है॥

दोहा–साधूं अब वहुरूपिणी विद्या पूरे आश।
दशकन्धरने कर लिया अपने दिल में साहस॥

चौक–उसी समय कर लिया ध्यान जा बैठे पौषधशाला में।
पढ २ कर मंत्र लगे छोड़ने मणके सुरति माला में॥
मन्दोदरी ने द्वारपाल यमदण्ड को पास बुला करके।
आयम्बिल तपको करवावो यह कहा खूब समझा करके॥

दोहा–उसी समय यमदण्ड ने दई डौंडी पिटवाय।
आठ दिवस तक का हुकम दिया प्रसिद्ध कराय॥

चौ.–गुप्तचरों ने पास विभीषण के यह बात पहुंचाई है
सुन वानरदल में उसी समय सवजगह सनसनी छाई है।
एक सिंह ही काबू नहीं फिर कैसे पार बसायेगी
यदि सिद्ध होगई विद्या तो फिर मौत सभी की आयेगी।

दोहा–वानरदल के भाव थे करें भंग सब ध्यान।
रामचन्द्र को आन फिर लगा मित्र समझान॥

विभी.दो.–परम प्रतापी सत्पुरुष प्रियवादी सुखदान।
प्रतिपालक दुखी जनन के सुनो लगाकर कान॥

चौक–सुनो लगा कर कान गुप्तचर पता लंक से लाया।
रावण ने वहुरूपिणी साधन का प्रारम्भ लगाया॥
आठ दिवस तक करो तपस्या सब पर हुक्म चढ़ाया।
कीजे शीघ्र उपाय कोई नहीं काल सभी सिर छाया॥

दौड़-कोई रणधीर पठाकर, ध्यान से देखो चलाकर, विघ्न ऐसा गढ़ने से विद्या सिद्ध ना होवे कभी उसके उपाय करने से।

राम दो.-सखा धीर मन में धरो क्यों घबराये आप।
पापी के मारन के लिये प्रबल उसी के पाप॥
कर्त्तव्य जिनका ठीक है सिद्धि उसके होय।
किन्तु विपक्षा अपथ्य ही सदा हेमको जोय॥

चौक.-प्रथमतो फल कहां बांसोंके यदि लगें तो उनकी शामतहै।
और सन्निपातवत् रावण को विद्या मिश्री के मानिन्द है॥
विष मिश्रित पात्र में शुद्ध अमृत भी विष हो जाता है।
एक पुण्य मित्र विन सब मंत्र यंत्र निष्फल कहलाता है॥
यदि मंत्र है तो दुनियां में मंत्र इक पुण्य सिकन्दर है।
सो विधि सहित सर्वज्ञ कथित शास्त्रों के देखो अन्दरहै॥
प्रथम तो क्षुधातुर[1] दुखिया धर्मी को भोजन देने से।
द्वितीय तृषातुर को जल देकर के दुःख हर लेने से॥
पुण्य तीसरा पांथालय विश्राम स्थान भी कहते हैं।
चौथे पट्टे चौंकी आदि जिनपे धर्मी सो रहते हैं॥
पंचम वस्त्र दान क्योंकि यह तन की रक्षा करता है।
जो ये पांचों शुभदान करे सो पुण्य खजाना भरता है॥
मन की प्रवृत्ति को सज्जन सबके हित में वरसाते हैं।
साधन है यह एक छठा 'मुनिसुव्रत स्वामी' फरमाते हैं॥
साधन सप्तम बतलाया सत्वचन सदा हितकारी हो।
गुणग्राम करे परमात्म के व्यवहार वचन सुखकारी हों॥

1 भूख

साधन अष्टम मन्त्र का तन से मोह जाल हटाते हैं।
उद्धार करें वह औरों का चाहे खेल जान पर जाते हैं॥
दुखियों का दुःख हरने के लिये जो परमार्थ में रहते हैं।
और लाख कष्ट सहने परभी कभी दीन वचन नहीं कहते हैं॥
नवमें जो मुनिपद के धारी निग्रन्थ गुरु कहलाते हैं।
जो पांच महाव्रत के पालक और आत्मध्यान लगाते हैं॥
भक्ति भाव से जो ऐसों को नित्यपति शीश निवाते हैं।
जो सज्जन और गुरुजन के भी चरणों में झुक जाते हैं॥

दोहा–पुण्यवान प्राणी सदा करें कर्म से जंग।
कर्म अरि भागें सभी आखिर होकर तंग॥

चौक–इसी मन्त्र से सखा जीव यह राजन पद को पाता है।
और इसी मंत्र से "वासुदेव[2]"पद त्रिखंडी बन जाता है॥
"चक्री[3]" बनकर इसी मन्त्र से मनवांछित सुखपाता है।
बने सुरेन्द्र इसी मन्त्र से शासन खूब चलाता है॥
इसी मंत्र से भाई सब देवनपति थर्राते हैं।
और यही मंत्र इस प्राणी को भवसागर पार[4] लंघाते हैं॥
दशकन्धर ने इस मंत्र का साधन बिलकुल छोड़ दिया।
अब नीच गति से हे भाई रावण ने नाता जोड़ लिया॥
मेरी तो यही सम्मति है जो करता है सो करने दो।
कोई विघ्न डालना ठीक नहीं यह भी तृष्णा भर लेने दो॥

बिभी.दो.–नीति यह सब धर्म की समझाई महाराज।
राजनीति बिन यहां सभी बिगड़ जायगा काज॥

---

२ तीन खंड के अधिपति (बादशाह, सम्राट)
३ छः खंड का अधिपति (रावरो महाराजा)
४ मोक्ष के पास पहुंचाते हैं।

चौक—कांटा और शत्रु जहां निकले वहीं मसल देना चाहिये।
और हारे हुए शत्रु के लिये कोई दाव नहीं देना चाहिये॥
लंकेश एक ही मान नहीं जब सहस्त्रों रूप बनायेगा।
अब जरा सोच कर बतलाइये फिर कैसे काबू आयेगा॥

राम दोहा—विघ्न डालना ध्यान में यह भी है अन्याय।
इसका भी फल हे सखा सुनलो चित्तलगाय॥

चौक—निरापराधी शम्बुक का लक्ष्मण ने शीश उड़ाया था।
सो भी भूलकर सूर्य हांस खांडा वहां पर अजमाया था॥
जो विना विचारे काम किया यह उसका ही फल पाया है।
विन भोगे कर्म नहीं छुटते सर्वज्ञ देव बतलाया है॥
अब तीनों योग लगाकर तुम रावणका ध्यान डिगावोगे।
यदि नहीं डिगा वह शूरवीर तो फिर पीछे पछतावोगे॥
बस और कहो क्या बतलाऊं क्योंकि तुम आपही श्यानेहो।
जो मर्जी सो कर सकते हो तुम आपही अनुभवी दाने हो॥

दोहा—कपिपति ने यही किया निश्चय दिल दरम्यान।
ध्यान डिगाने के लिये भेजे अपने जवान॥

चौक—अंगद आदि भेष बदल जा घुस गये पौषधशाला में।
होरहा ध्यान में मग्न भूप और चला रहे कर माला में॥
महा परिषह देने पर भी जरा ध्यान से हिला नहीं।
चुपचाप मन्त्र में लगे रहे उत्तर अंगद को मिला नहीं॥

दोहा—अंगद ने फिर रच दई अद्भुत माया और।
ध्यान डिगाने के लिए बोल उठे इस तौर॥

---

१ सयाने

—अंगदादि का गाना—

रामादल के हम बलवान करदें हम लंका को मैदान ॥
क्या है रावण तेरी शान अड़े जो रण में तू आन ॥१॥
मांगो माफी ओ अज्ञान ना कर वीरों का नुकसान ।
रामचन्द्र के अग्निवाण हरलें पल में तेरे प्राण ॥२॥
क्या तू देखे आंखें तान मेरा न छोड़ें नाम निशान ।
ओ पापी कहना मान देने आया मैं सिखान ॥
नहीं नसीहत धरता कान बैठे मुंशी चुप दिवान ।
मैं अंगद योद्धा मरदान है कोई योद्धा वीर जवान ॥
टक्कर लेवे जो मुझसे आन आवे लेके तीर कमान ।
'शुक्ल'छोड़ अब आर्तध्यान राक्षसदल का है घमसान॥

दोहा—मेरु सम महा अचल था दशकन्धर बलवान ॥
रंचक मात्र हिला नहीं अतुल बली का ध्यान॥
देख अचल भूपाल को अंगद हो लाचार ॥
तानाबाजी के शब्द ऐसे कहे उचार ॥
तेज प्रताप प्रचण्ड है रामचन्द्र का आज ।
दशकन्धर न सह सका छिप बैठा इस काज ॥
चौक—भयभीत हुआ यहां आ बैठा बाकी तो सभी बहाने हैं ।
देखो तो कर कंपन से ही गिरते माला के दाने हैं ॥
क्या करे विचारे दुखिया का मुंह भी कैसा कुम्हलाया है ।
उस तरफ राम के योद्धों ने लंका में ऊधम मचाया है ॥
दोहा—इन शब्दों से भी नहीं चला ध्यान से वीर ।
मन्दोदरी का भेष फिर बनवाया आखीर ॥

चौक–जा खड़ी सामने करी अति नयनों से नीर बहाती है।
दो मार २ कर छाती में रो रोकर वचन सुनाती है ॥
सुमेर गिरीवत् अचल भूप ने मन मन्त्र में लाया है।
इस समय वीर योद्धा अंगद ने ऐसे वचन सुनाया है ॥

अंग.दोहा–रावण कपटी नीच नर तस्कर कायर क्रूर।
अंगद योद्धा ने दई डार तेरे सिर धूर ॥

नो.चौक.–नेत्र खोलकर देख नपुंसक मूंद लई क्यों पलकें।
तू लाया था वनसे चोरी कर जनकसुता को छलके॥
पटराणी ले चला मन्दोदरी सन्मुख देख पकड़ के।
शक्ति है तो दिखला तेरी जाऊं आज मसल के ॥

दौड़–कहां अब जान छिपाई शर्म तुझको नहीं आई, डूब के मर जाना था, या कर रक्षा राणी की नहीं विवाह क्यों करवाना था।

दोहा–इतना कह कर ले चला पकड़ सामने बांह।
राणी तब कहने लगी ऐसे रुदन मचांह ॥

नकली मन्दोदरी का विलाप

छुड़ावो मुझे भर्तारजी कोई ले जाता अनाड़ी।
मैं मन्दोरी हूँ तेरी राणी खींच के महलों से शत्रु ने लानीं।
करती हूँ रुदन अपारजी ॥१।
आपके होतेहो मेरी यह हालत कैसे पिया देखो तुम ये हालत?
स्वामी अब सुनो पुकारजी ॥२॥
हाहाकार मैं कर २ हारी कोई ना सुनता आहोजारी।
फूटे कर्म हमारे जी ॥३॥

स्वामी तुमने तो मौन है धारा, किसका लेऊं मैं आज सहारा।
रो रो के गई मैं हार जी ॥४॥
पकड़ो शत्रु को देर न लावो, इस पापी से हाथ छुड़ावो।
पकड़ी तेरी पटनार जी ॥५॥
इक घुरकी है काफी तुम्हारी, शत्रु की जावे मति मारी।
आप बड़े बलधार जी ॥६॥

दोहा—रावण के सन्मुख किये राणी ने विरलाप।
तो चला फेर यसीट के सन्मुख अंगद आप॥

चौक—लंकेश ध्यान में दृढ़ रहा अंगद निज कटक सिधाया है।
विद्या ने आन प्रकाश किया तब दशकन्धर हर्षाया है।
खिल गया फूल की तरह भूप मंत्र में ध्यान लगाया है।
तब हाथ जोड़ बहुरूपिणी विद्या ने यों वचन सुनाया है"

बहुरू.दे.दो—जिस कारण तुमने किया हे दशकन्धर ध्यान।
आन खड़ी मैं सामने देने को वरदान॥

चौक—जो आशा मन की प्रकट करो सब पूरी करने आई हूं
क्या कष्ट है तुम पर बतलावो मैं सभी काटने आई हूं॥
है बहुरूपिणी नाम मेरा विश्व वश करवा सकती हूँ।
और एक वीर से शत्रु की सेना सब मरवा सकती हूँ॥
एक रूप के रूप हजारों चाहो अभी बना देऊं।
फिर कौन विचारे राम लखन सर्व निश्वसे तुम्हें जिता देऊं॥
मनका क्लेश तजो सारा और चित्तको स्वस्थ्य बनाओतुम।
लख भक्ति तुम्हारी दर्श दिया अब मुझको हुक्म सुनाओतुम॥

रावण दोहा—जो कुछ भाषा आपने कर सकती हो काम।
निश्चल रहना वचनपर अब जावो निजधाम॥

मो.चौक–अब जावो निज धाम समयपर याद तुम्हें कर लूंगा।
रणभूमि में लड़ने का कल ही सामान धरूंगा॥
रूप अनूप बना सभी शत्रु की फौज हरूंगा।
चक्र सुदर्शन से भीलों की गर्दन दूर करूंगा॥
दौड़–पता महलों का लूंगा, फेर स्नान करूंगा; जरा कुछ भोजन
पाकर याद करूंगा तुम्हें उस समय रणभूमि में जाकर।
दोहा–आज्ञा ले विद्या चली पहुंची निज स्थान।
खुशी २ गया महल में दशकन्धर बलवान॥
पूछ रही पति से क्षेम कुशल पटनार।
समझ लिया प्रपंच था सभी ध्यान मंझार॥
चौक–व्यायाम किया दशकन्धर ने फिर तेलपाक मलवाया है।
करके मंजन स्नान फेर भोजन रावण ने पाया है॥
देवरमण में जा पहुंचे जहां बैठी जनक दुलारी है।
विनाशकाल बुद्धि मलीन रावण ने गिरा उचारी है॥
रावण दोहा–साध लई बहुरूपिणी विद्या मैंने आज।
अब भी सीता मान ले मुझको सिर ताज॥
सीता दोहा–प्रथम तो यह बात है फलते कभी ना बांस।
यदि कभी फल भी गये होगा उनका नाश॥
इसी तरह अन्याय से फला न फूला कोय।
खोल देख इतिहास सब अंतिम गये सबरोय॥

श्री सीता का गाना

तू है रावण अज्ञानी कहूँ पुकार पुकार के।
एक हस्ति जो आई तेरी शान गिराई।
तू तो होगया सौदाई बस अहंकार के॥१॥

गुल होगा चिराग कौन देगा तोहे दाग।
अब फूटे तेरे भाग रोना हाथ मार के ॥२॥
तैने पाप कमाया जाके मुझे हरलाया।
कपट नाद बजाया आगे सीता नार के ॥३॥
तेरा जितना गरूर मिले सब ये अब धूर।
तेरी क्या मकदूर लाखों गये हार के ॥४॥
पापी फूलता बेतौर कुछ करता ना गौर।
रावण सुन ले तू और जरा कान धरके ॥५॥
तेरा रहना नहीं निशान होगी लंका मैदान।
जब चलेंगे यहांपर बाण राम अवतारके ॥६।
आजकलका तू महमान अब भगेंगे तेरे प्राण।
सत्य सिया की जबान सुन चित्त धारके॥७॥

रावण दोहा—धर्म भर्म को तो दई मैंने ठोकर मार।
निश्चय होना है तुझे लंकपति की नार॥

रावण व सीता के प्रश्नोत्तर--गाना

रावण—अयि जनकदुलारी मानोगी बात आखीर पर।
मत नीर भर यह पीर हर ॥अय॥
सीता—कामी कुत्ते ओ बेहुदे यहां ना यह तकरीर कर।
अय रावण पापी लानत है तुझ बेपीर, रणधीर पर,
बलवीर पर ॥ अय रावण ॥
रावण—जबां सम्भालो नाज न डालो,
बेहुदा तकरीर पर॥ अयि जनक ॥

सीता—तू मुझे चुरा कर लाया।
रावण—अच्छा यों ही सही।
सीता—तू कायर क्रूर कहाया।
रावण—वे शूर सही।
सीता—पतिव्रता को सता न ज़ालिम,
होगा बुरा आखीर पर ॥ अय रावण ॥ १ ॥
रावण—पटनार बनाऊं तुझको।
सीता—बक बक ना कर।
रावण—तू पति मानले मुझको।
सीता—परभव से डर।
रावण—राजी से नाराजी से पटनारी का चीर धर ॥
॥ अयि जनक० ॥२॥
सीता—किस कुगुरु से शिक्षा लई थी।
रावण—कुछ और कहो।
सीता—तव बुद्धि भ्रष्ट हुई थी।
रावण—खामोश रहो।
सीता—छल से नाद बजाकर लाना,
धिक क्षत्राणी वीर पर ॥ अय रावण ३॥
रावण—कुछ अक्ल नहीं है तुझको।
सीता—वाह ! खूब कही।
रावण—क्या बोल रही है मुझको।
सीता—बिल्कुल है सही।
रावण—क्या शक्ति है रामचन्द्र वनवासी,
भील हकीर पर ॥ अयि जनक० ॥
सीता—सुत बान्धव कैद हैं उनकी।

रावण—हां डर क्या है।
सीता—सुर सेवा करते उनकी।
रावण—तो फिर क्या है।
सीता—ले जायेंगे मुझे अयोध्या,
तेरी भस्म अखीर कर।'अय रावण ॥५॥
रावण—क्या सिफत बड़ी है उनकी।
सीता—शुद्ध आतम हैं।
रावण—तुझे खबर नहीं मेरे गुण की।
सीता—दुरातम है।
रावण—जबां सम्भाल के बात करो,
दृष्टि डालो शमशीर पर ॥अयि जनक० ॥६॥
सीता—मैं फिर भी यही कहूँगी।
रावण—क्या ताकत है।
सीता—बिल्कुल रोके न रुकूंगी।
रावण—तो हिमाकत है।
सीता—झूठ नहीं लवलेश आर धर देखें,
हाथ जमीन पर ॥ अय रावण ॥७॥
रावण—कल उनका सिर कतरूंगा।
सीता—खुद होगा खतम।
रावण—तेरे सन्मुख आन धरूंगा।
सीता—जाऊं मुल्के अदम।
रावण—क्रीड़ा तुझसे करूं फेर क्या भूली फिरे,
अहीर पर ॥ अयि जनक० ॥८।
सीता—मैं जिस्म फना कर दूँगी।

रावण–मूरखता है।
सीता–सुरपुर जा कदम धरूंगी।
रावण–दिल जलता है।
सीता–सती धर्म को छोड़ कभी ना हरफ लाऊं तौकीर पर।
॥ अथ रावण ॥६॥
रावण–क्यों नर तन मुफ्त गंमाती।
सीता–यह फानी है।
रावण–क्यों दिल तू मेरा जलाती।
सीता–अज्ञानी है।
रावण–ऐसे सुख दूं नहीं मिले होंगे,
वनवासी भील पर ॥ अयि जनक० ॥१०॥
सीता–तैंने कुल के दाग़ लगाया।
रावण–कुछ फिकर नहीं।
सीता–क्यों बन्ध नरक का लाया।
रावण–मंजूर वही।
सीता–धिक्कार तुझे सौबार और धिक्,
मात पिता गुरु पीर पर ॥ अथ रावण ॥११॥
रावण–क्यों करती जबां दराजी।
सीता–हो दफा परे।
रावण–ना मिले तुझे आज़ादी।
सीता–जो कर्म मेरे।
रावण–राजपाट तन तक वारूं इस सुन्दर,
तेरे शरीर पर ॥ अयि जनक ॥ १२ ॥
सीता–क्यों कुत्ते भौंक रहा है।
रावण–वा होश रहो।

सीता—खर को मोहन भोग कहां है।
रावण—दे आशीश अहो।
सीता—ले जायेंगे मुझे लखन तेरी छाती को,
चीर कर॥ अय रावण ॥ १२॥

रावण दोहा—व्योम कुसुमवत् आश ये सब ही निष्फल जाय॥
जो भाग्य कर कल तुम्हें देऊं सभी दिखाय॥

चौक—छोड़ो आर्तध्यान नहीं कुछ होता रोने धोने से।
यदि होगा सुख तुमको तो बस अनुकूल हमारे होने से॥
प्रातःकाल ही राम लखन को तो परभव पहुंचा दूंगा।
और तम्बू डेरे उठा सभी राजों को मार भगा दूंगा॥
नियम टूटने के भय से अब तक ये समय निभाया है।
अब इसकी भी परवाह नहीं दिल में यही समाया है॥
पटराणी का ताज सजा कल महलों में पहुंचाऊंगा।
राजी से नाराजी से फिर गल का हार बनाऊंगा॥

दोहा—बाणरूप जब वचन ये पड़े सिया के कान।
मूर्च्छित हो धरणि गिरी वृक्ष से जैसे टाहन॥

चौक—जरा देर में सम्भल फेर उठ बैठी जनक दुलारी है।
हुई दुखसागर में लीन और नयनों से गिरता वारि है॥
फिर आरति मनसे दूर हटा श्रीजिन का ध्यान लगाया है।
फिर दशकन्धर को क्षत्राणि ने ऐसे वचन सुनाया है॥

सीता दो.—दशकन्धर सुन लीजिये जरा लगा कर कान।
क्षत्राणी हूं आन पर तज देऊंगी प्राण॥

चौक-राम लखन के श्वासों पर ही सीता की जिन्दगानी है।
यदि राणी है तो जनकसुता श्रीरामचन्द्र की राणी है॥
बाकी दुनियां में मनुष्यमात्र सब पिता और मम भाई हैं।
आप तो बाबा दादे क्या प्रपितामह के न्याई हैं॥
राम लखन मर गये मुझे जब ये निश्चय हो जावेगा।
तो सीता के भी उसी समय इक प्राण न तन में पायेगा॥
बस इसी समय से खान पान का त्याग अटल समझें मेरा।
निज पति पास में पहुंचूंगी दुर्गति में हो तेरा डेरा॥

दोहा--देख तेज आश्चर्य में दशकन्धर बलधार।
अपने मन में कर रहा ऐसे खड़ा विचार॥
प्रेम स्वाभाविक राम से जनक सुता का जान।
आशा करना व्यर्थ है हुआ मुझे अब भान॥
पीपल झुरता फूल को फल को नागर बेल।
जनक सुता बिन मैं झुरूं झुरे पत्र को केर॥

चौक-स्थल पर मीन तड़फती है पानी से प्रेम बढाने को।
किन्तु नहीं करता नीर ध्यान दुखिया का दुःख मिटानेको॥
बस इसको भी जो कुछ कहना वज्र पर तीर चलाना है।
या यों कहिये कि मेरु गिरि को घर पै उठाकर लाना है॥
ज्यों वामन चाहे उडगण गहनको हंसी निज जगमें कराताहै।
त्यों पानी से नवनीत ग्रहण का व्यर्थ प्रयास कहाता है॥
पत्थर पर कमल जमाने का उद्यम ही निष्फल जाता है।
बस यही हाल है जनक सुता का नजर सामने आता है॥

दोहा—ठीक नहीं मैंने किया हरलाया सिया नार।
कलंकित हुआ संसार में पड़ी शीश पर छार॥

छन्द—शिक्षा विभीषण वीर की मैंने कभी अच्छी नहीं।
महाखेद उलटा दुख दिया की तनिक हमदर्दी नहीं॥

कुल भी कलंकित कर दिया कार्य भी कोई ना सरा।
भानुकर्ण मेरी भुजा हा कैद शत्रु की परा॥
वापिस करो इस बार दी मन्दोदरी ने सम्मति।
निश्चय न तोड़ेगी धर्म है अचल मेरु सम सती॥
ठीक सुखदाई वचन मन्त्रीगणों ने भी कहा।
यह उस समय बुद्धि मेरी क्या खबर बैठी थी कहां॥
राम के मरने का सीता शब्द सह सकती नहीं।
मारा उन्हें निश्चय तो यह जीती भी रह सकती नहीं॥
अब भयानक नियम जो सीता ने धारण है किया।
समझलो सामान यह सब मरण के कारण किया॥
हाथ मलने के सिवा फिर हाथ कुछ ना आयेगा।
मोड़ दूं अब भी सिया तो यश मेरा रह जायेगा॥

दोहा—अब ये निश्चय कर लिया मैंने दिल के साथ।
कल ले जाकर सौंप दूं राम लखन के हाथ।

चौक—संसार में मेरा यश होगा कुल का कलंक मिट जायेगा।
भाई बन्धु सब आन मिलें उनका डेरा उठ जायेगा॥
वृथा ही रक्त बहाया आगे वृथा ही और बहाना है।
क्योंकि मैंने अब समझलिया कुछ हाथ ना इसमें आना है॥

दोहा—मन में ऐसा नियत कर चला लंक की ओर।
होनहार आगे कहो चले किस तरह जोर॥

चौक—मन चंचल की है विचित्रगति यह कई रंग दिखलाता है।
कभी दानवीर कभी शूरवीर कभी शुभमति पर टिकजाता है॥
कृपण हो मक्खीचूस कभी क़ायर कपटी बन जाता है।
कमांध कभी मानान्ध कभी कुमति पर ध्यान जमाता है॥

जल तरंग से भी ज्यादह मन की लहरें कहलाती हैं।
या वायु चलने पर वनराजी कभी न स्थिरता लाती है॥
तंदुलमच्छ की तरह जीव दुर्मन से दुर्गति जाते हैं।
और शुभ विचार करने से प्राणी स्वर्ग का बंध लगाते हैं॥
दो भेद कहे कर्मों के 'जिन' ने निद्धित तो छुट जाते हैं।
करो तपस्या जितनी चाहे न निकाचित कर्म छुट पाते हैं॥
जिन परिणामों से बन्ध पड़े वो अन्त समय आजाते हैं।
यदि अच्छे हैं तो श्रेष्ठगति नहीं तो दुर्गति में लेजाते हैं॥

दोहा—चलते २ फिर किया इसी बात पर ध्यान।
राग वही गाने लगा फेर मान के तान॥
इस हालत में राम को देऊं सीता जाय।
तो फिर इस संसार में नाक मेरी कट जाय॥

चौबो.—सारी दुनिया फेर मेरे इस च्त्रापन पर थूकेगी।
और देख २ अपमान मेरी यह नित्यप्रति काया सूखेगी॥
वदनाम हुए ना काम बना दुनिया समझेगी हार गया।
श्रीरामचन्द्र के भय से रावण सीता आज निवार गया॥
गल गया मान सब रावणका जो सीता वापिस करता है।
क्योंकि यह अब क्या करे विचारा लक्ष्मणजी से डरता है॥
तो लिये सदा के मैं गन्दा इतिहास रूप बन जाऊंगा।
और कायर कामी शठजन की श्रेणी में संख्या पाऊंगा॥

शेर—चक्कर में डाला था मुझे कुमति ने आकर के सही।
अपने गौरव को जरा मैंने पिछाना भी नहीं॥
अधिकार सच्चा है सभी ने झूठा झगड़े को कहा।
अधिकार जिसने तजदिया समझो सभीकुछ खोरहा॥

सीताको यदि वापिस करूं छुटजाय करसे डोर है।
फिर झुकूं ऐसे चरण जिम देख झुरता मोर है॥
लाया था जिस शक्ति पै अब वही दिखाना चाहिये।
राम से पाकर विजय सीता को देना चाहिये॥

दोहा—मान उन्हों का तोड़कर फिर दूंगा सियानार।
भानु किरण सम यश मेरा फैले सब संसार॥

चौक—ऐसा ही करना ठीक समझ में सभी तरह से आता है।
और बिन सोचे जो करे काम सो फिर पीछे पछताता है॥
प्रातःकाल ही पकड़ राम लछमण दोनों को लाऊंगा।
और सुतबान्धव सब योद्धोंको भी कल स्वतंत्र बनाऊंगा॥

दोहा—शक्ति अपनी सभी को पहले दूं दिखलाय।
फिर देऊँ सीता उन्हें यश फैले जग मांय॥
बैठाई तजवीज ये सोच सोच दिल मांय।
पहुंचा सायंकाल को भूप महल में जाय॥

चौक—करके अन्न जलपान फेर जा शयन गृह आराम किया।
और प्रातःकाल होते ही रणभूमि तरफ का ध्यान किया॥
बख्तर शस्त्र सजा भूप ने वज्र हाथ उठाया है।
जब लगा देखने शीशे में तो चेहरा नजर ना आया है॥

दोहा—फेर हाथ में तोलने लगा भूप तलवार।
सो भी कर से छूटकर गिरी धरणि मंझार॥

चौक—तलवार उठाई करमें तो मस्तक का मुकुट धरणि आया।
अपशकुन देख मन्दोदरीने झट मस्तक आन चरण लाया॥
दाहिना नेत्र फड़क रहा राणी का, वामा रावण का।
तब किया इरादा राणी ने भी अपना स्वप्न सुनावनका॥

मन्दो. दो.—प्राणनाथ मेरा हृदय कांप रहा है आज।
सोच समझकर कीजिए समर आज महाराज॥

चौक—यह भी है अपशकुन आज रण करने से हूँ रोक रही।
पर देख २ हालत स्वामी कुछ अच्छा ही मैं सोच रही॥
अब तक तो छिपा के रक्खा था हे प्राणनाथ निज ख्यालोंको।
पर चैन नहीं मेरे मन को अब देख २ इन हालों को॥
कड़क रही कर की चुरियां और दाहिना नेत्र फड़क रहा।
यह चलतसमय गिरा मुकुट आपका देख मेरादिल धड़करहा
प्रातःकाल ही प्रथम मुझे आया स्वप्ना सो सुन लीजे।
हे प्राणईश फिर सोच समझकर आजका आप समरकीजे॥

रावण दोहा—क्या स्वप्न आया तुम्हें झटपट करो बयान।
शूर शकुन गिनते नहीं लगे चाहे यहां प्राण॥

रा.चौक—लगे चाहे यहां प्राण कहो जल्दी क्यों पकड़ा दामन।
गिरजाते किसी समय मुकुट कर से शस्त्र अय कामन॥
चोटें सन्मुख सहें शूरमे करें जन्म निज पावन।
आज बाण बरसाऊँ जैसे झड़ी लगावे श्रावण॥

दौड़—प्रमदा प्रिये प्रवीणा आज भय किसका कीना, पंकज मुखी वाम मृग नयनी अपने दिल का राज कहो तुम हमसे कोकिल बैनी।

मन्दोदरी व रावण का गाना (लावनी)

म.—होगई रांड मैं आज साफ स्वप्ने में,
ले गये सिया को राम आज स्वप्ने में।
सज गया विभीषण के शीश ताज स्वप्ने में॥

होगये भ्रमर में राख आप स्वप्ने में,
यह नथली खाकर बल दोहरी होती है,
जिस लिये पिया यह अर्द्धांगिनि रोती है ॥१॥

रावण—किसलिए आज नादान जान खोती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की सत्य होती है॥
कई बार गिरा कट २ के शीश स्वप्ने में।
होगई बात सब झूठ प्रातः उठने में॥
बन जाय भिखारी राजनपति स्वप्ने में।
फिर वही झोंपड़ी आवे नजर उठने में॥
नथली कुछ दबने से दोहरी होती है।
नहीं बात कभी स्वप्ने की सत्य होती है ॥२॥

मन्दोदरी—दण्डक की राणी पुरन्द्रयशां स्वप्ने में।
लिया देख गर्क होगया राज स्वप्ने में॥
जल गये सभी लग गई आग स्वप्ने में।
होगई बात सच नाथ सुबह उठने में॥
सब बात स्वप्न शास्त्र की सच होती है।
जिसलिये पिया यह अर्द्धांगिनि रोती है ॥३॥

रावण—यह बहम सभी देखा तुमने स्वप्ने में।
जो दिन की चिन्ता पड़े नजर स्वप्ने में॥
धन माल कभी खुश जाय सभी स्वप्ने में।
तृषातुर पीता फिरे नीर स्वप्ने में।
भूखे को भोजन मिले खीर स्वप्ने में॥
तू निरर्थक आंसुओं से मुंह धोती है।
नहीं बात० ॥४॥

मन्दो.–जो क्षीर समुद्र स्वप्ने में तिर जाता।
सो उसी जन्म में अक्षयमोक्ष सुख पाता॥
गज भानु शशि कोई जिसे नजर है आता।
तो श्रेष्ठ पुरुष कोई वहां जन्म है पाता॥
यह बात धर्मशास्त्रों में भी होती है।
जिस लिये पिया० ॥५॥

रावण–वैराग्य पक्ष की बात सभी यह प्यारी।
जिनको न चिन्ता होती कोई लगारी॥
किन्तु हम हैं क्षत्रिय योद्धा बलधारी।
क्षत्राणी हो क्यों बनती कायर नारी॥
ना डरें शूर जिस समय बिगुल होती है॥
नहीं बात कभी ॥६॥

मन्दो० दो.–शुभ सम्मति ना उरधरी कभी एक प्राणेश।
अब तो दासी की अर्ज मानो इक लंकेश॥

रावण दोहा–निश्चय में आया नहीं इन बातों से बाज।
किन्तु तुम्हारे कथन पर किया अमल कुछ आज॥

चौबो.–नीचा दिखला कर पहिले फिर सीता उनको देऊंगा॥
यह कथन तुम्हारा पुरा करके यश दुनिया में लेऊंगा॥
पाकर विजय बांध दोनों को आज यहां पर लाता हूं॥
इस कारण ही प्राणप्रिये मैं रणभूमि में जाता हूँ॥

मन्दो दो.–रोना आता है मुझे सुन २ ऐसी बात।
वापिस ही देना उन्हें फिर लड़ने क्यों जात॥

मन्दोदरी व रावण के प्रश्नो. वहरतवील

आप औदार चित्त हो ये खुशी है मुझे।
जाओ लड़ने को हरगिज ना चाहती हूं मैं।
मुंह को आया कलेजा मेरा एक दम।
अपशकुन हो रहे सच सुनाती हूं मैं ॥१॥
आंख दाईं फड़कती धड़कता है दिल।
पटकी चुरियां ये करकी दिखाती हूँ मैं ॥
आज जावो न रण को कहा मान लो।
हा हा खाकर के सिर को झुकाती हूँ मैं ॥२॥
रावण—कायर दुर्बल ही मानें शकुन अपशकुन।
तेरी बातें न हर्गिज मानेंगे हम ॥
असली घर तो योद्धों का रणक्षेत्र है।
चाहे होजावें बेशक वहां दम खतम ॥३॥
होके क्षत्राणी रावण की पटनार तू ॥
बनती कायर जरा भी न आती शर्म ॥४॥
अब अधिक कुछ कहा गुस्सा आ जायेगा।
क्योंकि करना समर का हमारा कर्म ॥५॥

दोहा—एक ना मानी नार की समझाया हरबार।
उसी समय दशकन्धर ने सैना करी तैयार ॥
चौक—रणतूर बजाकर चला मान में चूर भूप हर्षाया है।
महा प्रबल प्रताप सबल दल लेकर आन मोरचा लाया है।
वानरदल था वहां खड़ा हुआ उस तरफ प्रथमही आकरके॥
फिर तो क्या था रणभूमि में भड़गये शूरमा धा करके ॥

राम व रावण प्रश्नोत्तर

राम रावण के दल में मचा वलवला।
लाल झण्डे लड़ाई के फिर आगडे॥
इधर राम हैं उधर रावण खड़े॥
खुशी होकर के रावण हंसा खिलखिला॥१॥

राम—याज रावण तू आ मानमेरा सखुन।
क्यों करता है अपना तू चूरो चकन॥
जलके रावण कहे रामसे सिर हिला॥२॥

रावण—मव मरे योद्धा रण में हुआ खातमा।
है दुखी जिन्दगी से मेरी आत्मा॥
गये योद्धा जहां गये मुझको वुला॥३॥

मैं हस्ति मिटाई है तेरे लिये।
वेटे पोते सभी तेरे अर्पण किये॥
क्योंना जाहिर करूं अवमैं अपना गिला॥४॥

दोहा—ऐसा कह दशकन्धर ने बोल दिया कतलाम।
अमित सुभट उस जंग में पहुंच गये परधाम॥
मानिन्द झड़ी के परस्पर लगे बरसने बाण।
योद्धों का होने लगा महाघोर घमसान॥

चौक—खांडे वर्छी परिघ भुशुंडी दंडास्त्र विस्तार करें।
संग्रामीरथ और विकट गाडियां कहीं धनुषबाण टंकारकरें॥
नभ में लड़ें विमान शूरमे अगणित यहां पर मरते हैं।
मार्ग में ले विश्राम शरों पर फिर नीचे आ गिरते हैं॥

दोहा–रावण के सन्मुख हुआ वीर सुमित्रा लाल।
अरुण वर्ण कर नयन दो बोला हो विकराल।

लक्ष्मण दो.–आवो दशकन्धर बली शूरवीर बलधार।
अन्तिमका रण आज है करलो बढ़कर वार॥

नौ. चौक–करलो बढ़कर वार क्योंकि फिर परभव को जावोगे।
जो कुछ करना करो आज फिर समय नहीं पावोगे॥
करो इन्हें तैयार जिन्हें अपने संग ले जावोगे।
परभव जाते आप अकेले क्या शोभा पावोगे॥

दौड़–काष्ठ चन्दन मंगवालो चिता पहले चिनवालो, शल्य
सब दूर निवारो, यहां से टूट गया अब नाता आगा
जरा सम्भालो।

रावण दोहा–छोटा मुख बातें बड़ी रहा कलेजा फार।
अब यह घाव तभी मिटे देवूं तुझको मार॥

चौक–शक्ति से बच गया इसी कारण क्या फूल रहा है।
परभव आज पठाऊं तुझको क्या मन भूल रहा है॥
मेंढ़क सा क्यों उछल २ अय कायर कूद रहा है।
वदल २ कर आंख चुभा हृदय त्रिशूल रहा है॥

सवै.–दूधके दांत न टूटे अभी शठशूर महान से खात न शंका।
कुन्थु समान न बालक मूर्ख बांध के तेग बना रणवंको।
जीवन छान उठो जग से तव आयु के पूर्ण होगये अंका॥
जान गये हम आन बजा तेरे सिर कालकराल का डंका।

दौड़–विचारा जो था मन में फेर दिया तूने छिन में, यदि
जीना चाहते हो तो डार भगो हथियार नहीं अब पर-
भव को जाते हो।

लक्ष्मण दोहा–वाहजी वाह क्या खूबही दिखा रहे हो धौंस।
जरा चरण आगे धरो अभी बिगाड़ूं होश॥

चौक–दंडरत्न छोटा सा ही पर्वत को तोड़ बगाता है।
और अंकुश देखो छोटा सा हाथी को वश कर लाता है॥
प्रबल सिंह का बच्चा भी कुम्भस्थल को दल जाता है।
भानु की किरणें चढते ही रजनी का पता न पाता है॥

दोहा–तारागण तब तक रहा अपनी चमक दिखाय।
जब तक उदयाचल शिखर रवि न पहुंचा आय॥

चौक–तारागण की तरह देव राक्षस यह वंश तुम्हारा है।
प्रसिद्ध सभी संसार में निश्चय सूर्यवंश हमारा है॥
सूर्यवंशज शूरवीर हम भी शेरों के बच्चे हैं।
उमर जरासी है तो क्या रण के फन में नहीं कच्चे हैं॥

सवै.–तनपै रंग अंग मजीठी चढ्यो आज फड़क रहे भुजदंड हमारे
काल कराल ही जान हमें बन आये तेरे रघुवंश दुलारे॥
लाज न आवत तुझे शठ बोलत कैद पड़े सुतबान्धव सारे।
लावो न शंक निःशंक बढ़ो आज प्राणपखेरू उड़ेंगे तुम्हारे॥

दोहा–सुनी काट करती हुई लक्ष्मण की सब बात।
दशकन्धर आगे बढ़ा शस्त्र लेकर हाथ॥

चौक–बस फिर तो क्या था रणभूमि में लगी रक्त वर्षा होने।
और अगणित शूरे लगे समर में नींद हमेशा की सोने॥
जैसे नट नाचे बांसों पर करता कमाल अपने फन में।
लक्ष्मण भी ऐसे नाच रहा कर रहा कमाल रणके फन में॥

—गाना लावनी शिकस्त—

जुटे दुतर्फी समर में शूरे खांडा खट २ खटक रहा है।
इधर जुटे ये वीर हैं दोनों उधर में जुट कुल कटक रहा है।
लड़ाई अम्बर में ऐसे होती मानों कि मानव बरस रहे हैं।
भस्म व्याधि वाले के मानिन्द रक्त को शस्त्र तरस रहे हैं॥
रक्त फुव्वारा चले सरासर जैसे बादल बरस रहा है॥
खेलें शूरे समर में होली जो जीते सो ही हर्ष रहा है॥
दोहा—रावण ने फिर तान कर मारा कठिन "अनलास्त्र"
व्यापी अग्नि दल राम के योद्धे हुए अति त्रस्त॥
चौक—लखा हाल ये श्री लक्ष्मण ने "पर्जन्यास्त्र" चलाया है।
मूसलधारा मेघधारा से वैश्वानर शान्त बनाया है॥
अब लगी डूबने रावण सेना रायने "पवनास्त्र" चलाया है।
वे घटाटोप जो छाये मेघ थे सबको साफ बनाया है॥
फिर रावण ने रिस खाकर के "कर्कोटक अस्त्र" धार लिया।
छागये व्याल सब रामादल पर प्राणरक्षा को दुश्वार किया॥
संत्रस्त हुई सारी सेना ये लक्ष्मणजी ने निहारा है।
छोड़ा है तभी महा 'तार्क्ष्यास्त्र' निबिड़माया को निवारा है॥
दोहा—देखे काश्यप पुत्र जब भगे अहि जान बचाय।
देर तलक यों ही दुहु अस्त्र शस्त्र चलाय॥
फिर बाणवर्षा करने लगे अति कठिन वे लक्ष्मणवीर।
सह न सका तेजी को वो दशकन्धर वीर॥
छन्द—देख शक्ति लखन की रावण का मन घबरा गया।
समझा कि मेरा काल यह लक्ष्मण ही बनकर आगया॥
फिर ख्याल है बहुरूपिणी विद्या का रावण ने किया।
विद्या ने आकर के सहारा भूप को रण में दिया॥

जिस तरफ देखें उस तरफ रावण ही रावण घूमते।
राम दल के शूरसे अति भय से धरणि चूमते॥
रामदल का उस समय भयमान फूटा गोल है।
यह देख हालत लखन को गुस्सा चढ़ा बेतोल है॥

दोहा—क्रोध अति ही छागया रूप बना विकराल।
गारुड़ीविद्या पर चढ़ उठे बनके भयंकर काल॥
वज्रावर्तज धनुष को लेकर लक्ष्मण वीर।
वज्रमुखे दशशीश के मारे दस २ तीर॥

शोक—जो जहांथे रावण रूप कई वहां बाणरूप कई होने लगे।
जिन रूपों के जा तीर लगे वह रूप धरणि में सोने लगें॥
फिर वानरसेना राक्षसेना पर घोर आक्रमण करनेलगी।
अब पुण्य हारगया रावणका जो अगणित सेना मरनेलगी॥
एक बाण से लक्ष्मणजी के सौ २ बाण निकलते हैं।
सौ सौ से फेर हजार बनें बाणों को बाण उगलते हैं॥
जिस जगह रूप दशकन्धर का जा बाण उसी के लगता है।
वह रूप लोप होजाय तभी क्या पता कहां जामिलता है॥
जैसे बरसाती मेंढक नित्य धूप से मरते जाते हैं॥
यों रूप सभी रावण के भी संख्या कम करते जाते हैं॥
स्वल्प समय में रूप मूल का नजर पड़ा दशकन्धर का।
यह शक्तिका नहीं काम काम लक्ष्मण के पुण्य सिकंदरका॥

दोहा—रावण तब आश्चर्य से देख रहा मुंह बाय।
चक्र सुदर्शन[1] अन्त में कर में लिया उठाय॥

---

[1] चक्ररत्न एक हजार देवाधिष्ठित होता है यह पहले प्रतिवासुदेव के पास रहता बाद में रणभूमि में वासुदेव के हाथ में आता है तथा चक्रवर्ती की आयुधशाला में उत्पन्न होता है।

चौक—चक्रसुदर्शन को भुंझला कर हाथ में खूब घुमाया है।
बिजलीके मानिन्द तड़तड़ाट कर काल रूप बनआया है॥
सुग्रीवादिक सब घबराये जीने की आशा छोड़दई।
ना दृष्टि सामने टिकती है ग्रीवा भी पीछे मोड़ लई॥
वह समय भयानक जैसा था वैसा यहां कहा न जाता है।
यह दृश्य देख दशकन्धर मन में फूला नहीं समता है॥
ले अस्त्र शस्त्र वानर योद्धे चक्र पर सभी चलाते हैं।
पर उसको ना पीछे हटा सके बेशक जाकर टकराते हैं॥

दोहा—होकर के लाचार सब मलते रह गए हाथ।
समझा होगी चक्र से अब लक्ष्मण की घात॥

चौक—भयभीत हुए सबही दिल में श्रीरामका मन भी हांफगया।
भामंडल सुग्रीवादिक सब योद्धों का तन भी कांप गया॥
अमोघ अस्त्र इक नमोकार का ही अब बाकी शरणा है।
बस सिवा अनादि मन्त्र और किसने विपदा को हरना है॥

दोहा—पंच परमेष्ठी का मन में किया निश्चल ध्यान।
चक्र सुदर्शन अनुज के पहुंचा सन्मुख आन॥

चौक—उससमय जो भय था योद्धोंको वर्णनमें नहीं आसकता है
पर वार अनादि मन्त्र का भी खाली कब जा सकता है॥
निज शक्तिका जो मान करे और पुण्यको नहीं निहारते हैं।
पुण्य बिना शक्ति निष्फल श्री जिनवर यही उचारते हैं॥

दोहा—चक्र सुदर्शन लखन को दे प्रदक्षिणा तीन।
दशकन्धर भी उस तरफ देख रहा यह सीन॥

चौपा.—चक्र सुदर्शन लक्ष्मणजी के दक्षिण कर पर आ बैठा,
तब लंकपतिके हृदय पर जैसे कोई फणिधर जा लेटा॥

यह दृश्य देख वानरदल को बस खुशी का ना कुछ पार रहा।
उस तरफ दशानन पिछली बातों को दिल खूब विचार रहा॥
दोहा—याद मुझे अब आगया मुनिजन का व्याख्यान।
परनारी कारण सही लगे जान अब प्राण॥
चौक—अधिकारी मन्त्रीगण क्या सब ही ने मुझको समझाया।
क्या करूं मेरी किस्मत उल्टी कुछ सोच नहीं मनमें लाया॥
दोहा--अर्द्धांगिनिके कथनपर किया न जरा विचार।
नर्म गर्म और प्रेम से समझाया हरबार॥

रावण का पश्चाताप लावनी शिकस्त

किस्मत ने धोखा दिया आज बे मौके।
अब आई मुझको अकल सभी कुछ खोके।
राणी ने आखीर तक समझाया रोके॥
खो दिये हाथ से जितने थे सब मौके।
क्या करूं कैद में योद्धे पड़े तमाम।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना न वो काम ॥१॥
सुत भूख प्यास के कैसे दुख सहेंगे।
ना खबर पिता ने लई ये लाल कहेंगे।
सब योद्धों की आंखों से अश्क बहेंगे॥
किस विध सुत बान्धवके अब प्राण रहेंगे।
मेरे लाल कहां आजादी के आराम।
जिसकारण लाया सीता कुछ न बना वो काम। ॥२॥
किस जन्म की बैरन शूर्पणखा थी मेरी।
तारीफ करी मुझ आगे सीता केरी।
तू प्रलयकाल की पापिन बनी अंधेरी॥

करवाया सब कुछ नाश करी ना देरी।
मेरी बहिन रुढा दिया बेड़ा मेरा तमाम।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना न वो काम ॥३॥
यदि होती कुछ मालूम ये हानि होगी।
तो क्यों बनता हाय मैं इश्क का रोगी।
क्या हालत मन्दोदरी राणी की होगी॥
नहीं मानी सीख तो आज विपत्ति होगी।
होगया हाय मैं मुलकों में बदनाम।
जिस कारण लाया सीता कुछ बना न वो काम ॥४॥
अमोघ विजय शक्ति भी गई निकल के।
बहुरूपीणी विद्या भाग गई सिर धुन के॥
अब चक्र सुदर्शनभी वश में होगया उनके॥
फल दीख रहे राणी के सही स्वप्न के।
हैं पुण्यवान बेशक लक्ष्मण और राम।
जिस कारण लाया सीता कुछ न बना वो काम ॥५॥

दोहा—रावण ऐसे होरहा सोच फिकर में लीन।
दिवस शशि जैसे हुआ चेहरा अति मलीन॥
दशकन्धर के होरहा दिल में दुख अपार।
लक्ष्मण तब यों भूप से बोला गिरा उचार॥

लक्ष्मण दो.—लंकपति अब कर रहे कैसा आप विचार।
और है शक्ति शेष कुछ या होगये लाचार॥

चौक—अमोघ विजय का वार गया खाली जो देवी शक्ति थी।
द्वितीय विद्या काफूर हुई जिसकी की तुमने भक्ति थी॥
वज्रावर्तज के आगे जो रूप थे वह सब धूर हुए।
तेरे ही साधन किये हुए तेरे ही ना अनुकूल हुए॥

इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण आदि सब योद्धे कैद हमारी है।
जो विद्या साधी थी हजार वह कहां पर गई तुम्हारी है॥
चक्र सुदर्शन अन्तिम शस्त्र सो ना तेरे पास रहा।
वह बता कौनसी शक्ति है बाकी जिसकी कर आस रहा॥

दोहा–प्रियवादी गम्भीर नर औदार चित्त सुखधाम।
कथन बन्द कर अनुज का यों बोले श्रीराम॥

राम दोहा–अब भी सोच विचार लो दशकन्धर बलवीर।
जंग आपका होचुका निश्चय आज अखीर॥

नौ.चौक–निश्चय आज अखीर रहा ना तंत जरा कुछ बाकी।
नजर आगई आज युद्ध के अन्त की सब झांकी॥
वही श्रेष्ठनर दुनियां में जो करता बात सुलह की।
करलो सन्धि अब भी हमसे छोड़ सभी चालाकी॥

तोड़–निःशंक रणधीर बहादुर, आप संसार की चादर, हमें अब देवो आदर, राजनपति गम्भीर, वीर दिल में ना जरा गिलाकर।

दोहा–तेज प्रताप प्रचण्ड तव फैल रहा जग मांय।
श्याही सीता हरण की देवो इसे मिटाय॥

चौक–तुम सीता को वापिस करदो फिरभी लाली रह जावेगी॥
सब फौज हमारी प्रातःकालही कूचका बिगुल बजावेगी।
यह लंक मुबारिक आपको हो हम और नहीं कुछ चाहते हैं॥
यदि आज्ञा हो तो शस्त्र छोड़कर पास आपके आते हैं।

दोहा–राज खजानों वास्ते नहीं किया यह जंग।
एक सिया के वास्ते सो भी होकर तंग॥

चौक–सुतबान्धव आपके जितने हैं स्वतंत्र सभी को करदेंगे।
जो हानि यहां पर हुई सभी रलमिल कर दोनों भरलेंगे॥
तुम अपने यहां आनन्द करो हम पुरी अयोध्या जावेंगे।
यदि समय गंमावोगे ऐसा तो कर मलते रह जावेंगे॥

दोहा–रामचन्द्र के वचन सुन दिल में उठे तरंग।
अशुभ ध्यान में लीन था उड़ा जिस्म का रंग॥

चौबो.–मौन चित्र की तरह खड़ा मुख से ना बोल निकलता है।
और सोचविचार अनेक करी पर रास्ता कोई ना मिलता है॥
उसी समय विभीषणवीर वीरको आकर यों समझाने लगे।
और देख हाल मोह के वश हो नयनों से नीर बहाने लगे॥

विभीषण का समझाना

शिक्षा उर धारो अय भाई तुम्हें अन्त समय समझाता हूँ।
मोह के वश होकर आया हूँ कुछ प्रेम के वचन सुनाता हूँ॥१॥
तैने जोर बहुत सा लाया है और विद्याबल दिखलाया है।
पर काम कोई ना आया है मैं दिल में अति घबराता हूँ॥२॥
तेरा चक्रसुदर्शन खाली गया और पुण्य तेरा रखवाला गया।
शुभ ध्यान बाग का माली गया अब तेरी खैर मनाता हूँ॥३॥
तेरे पुत्र भाई बांध लिये और भूप तेरे सब साध लिये।
श्रीराम के तैं अपराध किये वह क्षमा तभी करवाता हूँ॥४॥
यदि भाई तू जीना चाहता है तो राम शरण क्यों न आता है।
रघुनाथ प्रभु सुखदाता है तुम्हें सन्मार्ग बतलाता हूं॥५॥
श्रीमान् वीर ना देर करो प्रभु रामचन्द्र की शरण परो।
इस देशकी विपदा सारी हरो करजोड़ के अर्ज सुनाता हूं॥६॥

अब जनकसुता को पहुंचावो रघुनाथके साथ प्रीति लावो।
निर्भय निजराजके सुखपावो शुभ 'शुक्ल'ध्यान में चाहताहूं॥७॥

दोहा–इतनी सुनकर भूप को चढ़ा क्रोध विकराल।
तेजी से कहने लगा भृकुटि मस्तक डाल॥

रावण दो.–रामचन्द्र क्या चीज है मूढमति अयि वीर।
लक्ष्मण जो है कूदता छिन में डालूं चीर॥

चौक–चक्रसुदर्शन गया हाथ से जो यह है कहना तेरा।
बिगड़ा क्या उसके जानेसे तनका नहीं साहस गया मेरा॥
सब कर दूंगा चूर्ण २ जो करूं मुष्ठि प्रहार उसे।
इस धमकी के डर से हर्गिज ना दूंगा सीता नार उसे॥

दोहा–शक्ति इस लंकेश की जाने सकल जहान।
जीते मैंने समर में अमित भूप बलवान॥

नौ.चौक–अमित भूप बलवान नाम सुन होते पानी पानी।
किया द्विग्विजय भुजा मेरी क्षत्रीपन की काल निशानी॥
रघुवंशिन के बीच सुहागिन छोड़ूं नहीं क्षत्राणी।
तुझ जैसा ना और कोई है कायर मूढ अज्ञानी॥

दौड़–सहित चक्र लक्ष्मण को पहुंचाऊंगा परभव को, राम को वहीं पठाऊं तेज दिखा कर भुजबल का। इन सब को स्वाद चखाऊं।

दोहा–जैसी मति वैसी गति कही श्री जिनराज।
सिर पर धौंसा भूप के रहा काल का बाज॥
शिक्षा पर शिक्षा सभी दे देकर गये हार।
लक्ष्मण फिर लंकेश को बोला गिरा उचार॥

लक्ष्मण दो.-अच्छा तो अब सम्भल कर होजाइये होशियार।
यदि शक्ति है आप में तो रोको हमारा वार॥

चौक-तेरा ही यह चक्र सुदर्शन तेरी ओर चलाते हैं।
यह वार अन्त का समझ तुम्हें हम साफ २ बतलाते हैं॥
पहले प्राण हरूं तेरे फिर ही सीता को ले जाऊंगा।
जो करी प्रतिज्ञा आज वही पूरी करके दिखलाऊंगा॥

दोहा-इतना कहकर अनुज ने किया भूपपर वार।
दशकन्धर ने चक्र पर दिया मुष्टि प्रहार॥

चौक-किन्तु काल के आगे किसी की पेश नहीं आ सकती है।
और युक्ति चाहे हजार करो कोई काम नहीं आसकतीहै॥
चक्र सुदर्शन ने रावण का हृदय कमल विदार दिया।
उस रणभूमि की धूलि में रावण ने पैर पसार दिया॥
प्रस्थान कर गया परभवको उससमय जीव दशकंधरका।
फिर कहोतो क्या बन सकता है खाली गंदे तन मंदिरका॥
जेष्ठ कृष्ण एकादशी को पूरे सब श्वासोश्वास हुए।
दिन के पिछले याम प्राणतज नरक चतुर्थी वास हुए॥

चौपाई-वर्ष चतुर्दश आयु पाई।
अशुभ कर्म लेश्या दुखदाई॥
दुर्गति दाता नार पराई।
गौरव इज्जत खाक रुलाई।

दोहा-विजय हुई श्रीराम की दशकन्धर दिया मार॥
कुसुम वृष्टि कर व्योमसे सुर करते जय कार॥

चौक-अष्टम है ये वासुदेव प्रतिवासुदेव जिन मारा है।
बलदेव अष्टमे रामचन्द्र जिनका अति पुण्य सितारा है॥

धन्य राम जिन महासती सीता का कष्ट मिटाया है।
और धन्य वीर लक्ष्मण जिसने भाई का अंग निभाया है॥
धन्य मित्र सुग्रीव राम के लिये सभी कुछ वार दिया।
वह धन्य विभीषण वीर जिन्होंने सत्यपक्ष स्वीकार किया॥
धन्य अंजनीलाल क्योंकि इस दल का स्तम्भ यही तो है।
रावण के सन्मुख उड़ा दिये योद्धे रणधीर वही तो है॥

दोहा—रघुवरदल आनन्द में राक्षस दल दुःख पूर।
भाग रहे भयभीत हो रावण दल के शूर॥
रावण जब धरती गिरा सहसा चक्र खाय।
आंखों आगे विभीषण के गया अन्धेरा छाय॥

चौबो.—वीर विभीषणने कटार उत्तममय कमरसे खोल लिया॥
अपने हृदय में मारन को दक्षिण मुष्टि में तोल लिया॥
फिर शर्द श्वास भरकर दोनों नेत्रोंसे नीर बहाने लगे।
इन कर्मोंकी है विचित्र गति यह कहकर गीतसुनाने लगे॥

विभीषण का विलाप

आज हृदय की तप्त हाय मैं बुझाऊं किस तरह।
होगया मुझसे जुदा यह वीर पाऊं किस तरह॥१॥
जिसकी शक्ति से धरणि क्या कांपता था आसमान।
शेरे बबर था वीर मेरा अब उठाऊं किस तरह॥२॥
युक्ति लाखों ही चलाई कि जिस तरह भाई बचे।
पर निकाचित कर्म रेखा को मिटाऊं किस तरह॥३॥
होगया संसार सूना एक रावण के बिना।
आज पतझड़ बाग की रौनक बढाऊं किस तरह॥४॥

भाई से प्रतिकूल हो सन्मुख समर के डट गया ॥
'शुक्ल' दुनियां में ये अपना मुख दिखाऊं किस तरह ॥५

शेर-महाबली योद्धा अतुल यह आज रण में मर गया।
मरना है तुझको एक दिन मुझको ये शिक्षा कर गया॥
संसार में सब कुछ मिले पर भाई मिल सकता नहीं।
वह कौन सृष्टि में जिसे अन्तक निगल सकता नहीं ॥
फिर किस लिये आश्चर्य कर करके मैं अपने कर मलूं।
हृदय कटारा मार के भाई के क्यों ना संग मरूं ॥
बस आज ये हृदय और यही कटार है।
चक्र लगा भाई के तो यह मेरे पार है।

दोहा-देख विभीषण की दशा शीघ्र उठे रघुनाथ।
धैर्य यों देने लगे पकड़ मित्र का हाथ ॥
बुद्धिमान हो मित्र तुम क्यों बनते अनजान ॥
हम तुम सबका एक दिन बने हाल यही आन ॥

चौक-जो होना था सो हो ही चुका अब रोने से क्या बनता है
और अशुभ ध्यान करने से आत्मा कर्मों से ही सनता है॥
महाबली योद्धे मित्र सब रणभूमि में मरते हैं।
वह अपना आप मिटा देते नहीं पांव पिछाड़ी धरते हैं ॥
जो खिला बाग में फूल हमेशां खिला नहीं रह सकता है।
इस जन्ममरण संसार में किसको कौन अमर कर सकता है॥
चक्रवर्ती भी दुनियां से लद गये और लद जायेंगे।
ना गई मेदिनी साथ किसी के सब यहां ही तजरायेंगे ॥
बस इतना ही संयोग मित्र था साथ तुम्हारे रावण का।
जो गया कालके गालमें फिर वह मुड़करके नहीं आवनका॥

बिना आपके और, कौन इन सब को धीर बंधायेगा।
जब आपकी ऐसी हालत है क्यों ना सब दल घबरायेगा॥
अब इस कटार को म्यान करो तुम बुद्धिमान और श्याने हो।
सब बातों में चतुर आप सारे संसार में माने हो॥

दोहा—जरा मोह उपशान्त कर किया कटारा म्यान।
धीर बंधाने को किया राक्षस दल पर ध्यान॥
राक्षस दल के शूरमा मुख्य २ बलवान।
धीर विभीषण सभी को बोला ऐसे आन॥

विभी.दोहा.—अब योद्धो अब किस लिये होते हो भयभीत।
राम लखन शत्रु नहीं सब जन के हैं मीत॥

चौक—जो होना था सो हो ही चुका अपना भय दूर निवारो तुम।
श्रीरामचन्द्र के चरणों में निज शीश आनके डारो तुम॥
औदार चित्त ये महापुरुष शत्रु पर कृपा करते हैं।
फिर हम तुम तो सेवक इनके किस लिये आप यों डरते हैं॥
कोई राजपाट धनदौलत की इनको कुछ भी नहीं इच्छा है।
शत्रुजन के भी हितकारी होती शुभ इनकी शिक्षा है॥
जिस कारण जंग हुआ भारी वह छिपी हुई कोई बात नहीं।
यदि सीता वापिस करते तो होती यह इतनी घात नहीं॥

दोहा—सब योद्धों को इस तरह दे उपदेश विशाल।
भर्म भूत उन सभी के मन से दिया निकाल॥

चौक.—विश्वास विभीषण ने देकर योद्धों को धीर बंधाई है।
फिर देख भ्रात की लाश विभीषण की तबियत घबराई है॥
औदार चित्त ने राक्षस दल को प्रेम भाव दर्शाया है।
सब तरह उन्हें आश्रय देकर श्रीराम ने गले लगाया है॥

दोहा—दशकन्धर के मरण की खबर गई झट फैल।
पटरानी मन्दोदरी बैठी थी निज महल॥

चौक—जब लगा पता पटराणी के हृदय पर वज्र पात हुआ।
खो बैठी सारी सुध बुध को पत्थर मूरत सम हाल हुआ॥
कुछ क्षण में चेतना आई है तब हाहाकार मचा भारी।
ज़ारोज़ार रोवे राणी आंखों से चली श्रावण की झरी॥
संग में सभी राणियों को ले रण भूमि में आई है।
समवेदना लंक प्रजा क्या सबने धीर खोई है॥
अश्क आंखों से जारी सबके रुदन से अम्बर दहलाया है।
भीमे आकर सब योद्धों का दिल भी हिलाया है॥
महाराणी का संताप देख सारे दल को संताप हुआ।
राणी का दुःख अपार देख श्रीराम को पश्चाताप हुआ॥
उस समय राम अपने मनमें ऐसे कर स्वच्छ विचार रहे।
और देखर दुख राणी का अपना सिर भी कुछ मार रहे

श्रीराम का विचारना

आज इनकी दुर्दशा मैं देखता हूं किस तरह।
जैसे पत्थर दिल नहीं आंसू बहाता इस तरह।१।
कर्मों के आगे कहो यहां पेश किसकी जासके।
अरिहन्त से भी ना टले मैं तो हटाऊं किस तरह।२।
भ्रष्टाचारिन् पतिव्रता मन्दोदरी राणी सती।
लाल जिसके कैद में रावण मरा यहां इस तरह।३।
छेड़दूं यदि लाल इसके शान्ति कुछ दिल को मिले।
इस पतिव्रता के अब आंसू बुझाऊं इस तरह।४।

जीता न समझा भूप तो मृतक का बन सकता है क्या।
ला चुका ये तो "शुक्ल" परभव में जाकर विस्तरे।५।

दोहा–करुणा सागर के उठी ऐसी दिली तरंग,
स्वतंत्र बस कर दिये सब शूरे इक संग।

चौक.–कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत शूरे सब मेघवाहन आदि।
आंखों से आंसू बहाते हैं और देख झुरें निज बरबादी॥
सब गोल इकट्ठा हुआ आन जहां लाश पड़ी दशकन्धर की।
वहां सभी राणियां आ पहुंची हालत खराब मन्दोदरी की॥

दोहा–देख पति की लाश को व्याकुल हुई अपार।
मोह के वश मन्दोदरी बोली गिरा उचार॥

चौ.दोहा–हा प्रीतम हा प्राणपति हा स्वामी सुखदान।
चले कहां अब छोड़कर हमको जीवनप्राण॥

राणी मन्दोदरी का विलाप

आज हालत ये आपकी कैसे हुई
देखी जाती नहीं प्राणप्यारे पिया।
तुमने माना किसी का भी कहना नहीं
आज गायब हुए हो सितारे पिया।१।
एक नारी के पीछे दई जान खो
गये परभव को करके किनारे पिया।
आज स्वतंत्र सारा जगत होगया
सुनके मरना तुम्हारा हजारे पिया।२।
अपनी शक्ति से तुम थे त्रिखंडी बने
आज सोये क्यों पांव पसारे पिया।

तुम विना अब मैं किसका सहारा लेऊं
जाते लंका को आज विसारे पिया ।३।
मेरे खोटे कर्म दोष किसको देऊं
तुम थे सुख दुख के पूछनहारे पिया ।
आज पापिन ये धरणि भी फटती नहीं
जिसमें छिप जाय सब तन हमारे पिया ।४।
रोवें भाई खड़े आपके सामने
जरा इनको तसल्ली बंधादो पिया ।
पाला पुत्रों को तुमने था जिस प्रेम से
इनको वैसे ही हृदय लगाले पिया ।५।
हाय स्वप्न मेरा सब सत्य ही होगया
ना हटे मैंने हर बार वारे पिया ।
यदि मरते "शुक्ल,, नेक कर्तव्य किये
पाते दुनियां में यश तुम सारे पिया ।६।

मन्दोदरी महारानी का विलाप-पंजाबी

उठगया सिरदां साईंयां वे प्यारा उठगया सिरदा साईंया
किधर जावां किसनू सुनावां रो २ पिया मैं भी मरजावां,
मेरी होइयां नष्ट कमाइयां वे प्यारा ॥१॥
कहंदी सीमैं पहले स्वामी मेरी तुंसा इक बात न मानी,
कानूं की राम संग लड़ाइयां वे प्यारा ॥२॥
कूक २ कर पिया मैं हारी किधर लगी है सुरत तुम्हारी,
किन्नी डुंगियां निद्रा आइयां वे प्यारा ॥३।

तुम बिन स्वामी नहीं लाड़ां गुज़ारा प्रीतम हाय तू किधर सिधारा,
भूटियां मुहब्बतां लाइयां वे प्यारा ॥५॥
भैड़े कर्मने आन सताया मेरू जइया सिर बोझ तें पाया,
आन मुसीबतां छाइयां वे प्यारा ॥६॥

दोहा—कुम्भकर्ण आदि सभी सुत राणी परिवार।
और सभी नर नारियां रोवें ज़ारो ज़ार॥
दशरथ नन्दन फिर उठे समझाने को आप।
लगे कहन मधु वचन यों मेटन को संताप॥
वीर विभीषण मित्रवर मोह अब दूर निवार।
तेरे पीछे रो रहे सब जन अरु परिवार॥

श्रीराम का समझाना बहरतवील

श्याने होकर के ऐसे अयाने बने
किया जाता है जिसका जिकर ही नहीं।
बिलबिलाने से वापिस ये आता नहीं
लाते दिल में जरा भी सबर ही नहीं ॥१॥
जन्म लेकर हमेशा जो जिन्दा रहे
ऐसा दुनियां में कोई बशर ही नहीं।
एक दिन रास्ते सबने इसी चलना है
सिवा सिद्धों के कोई अमर ही नहीं ॥२॥

विभीषण—बहरतवील

प्रभु हम सबको ऐसा ही मालूम है
पर करें क्या ये मोह दिल से जाता नहीं।
जिसकी रक्षा लिये इतनी मेहनत करी
सो ही भाई नजर आज आता नहीं ॥१॥

यदि मरता ये ऐसे धर्म के लिये
तो मैं फूला वदन में समाता नहीं।
बन के इतिहास मरना बुरे काम का
यह महा दुःख दिल में समाता नहीं ॥२॥

राम दोहा—बिल्कुल कहना ठीक पर बन सकता क्या वीर,
संस्कार मृतक सभी करना पड़े आखीर।

चौक—आगे पीछे अहो मित्र ये काम तुम्हीं ने करना है,
अबतो रावण की जगह देश को तेरा ही इक शरणा है।
सामग्री सभी मंगाकरके चन्दन की चिता चिनादेवो,
जैसी भी रीति तुम्हारे है वैसा ही शीघ्र बना देवो।

दोहा—सामग्री सब लंक से लई तुरत मंगवाय,
धूम धाम से भूप की अर्थी लई उठाय।

चौक—उस समय दृश्य वहां जैसा था
लिखने में नहीं आसकता है।
थी भीड़ कई अक्षोहिणी की,
अनुमान किया जा सकता है।
गन्धर्व मंडली कई और बाजों की
ध्वनि निराली है।
श्रीराम उस समय संग ही थे
जब चला लंक का माली है।
ले चले जिस समय अर्थी को
तब जमा गोल अति भारी था।
उस समय खूब मीठे स्वर से
ऐसे इक भजन उचारा था।

उपस्थित जनसमूह का गाना

दशकंधर को इस व्यसन ने मुर्दार कर दिया,
कर्मों ने दोनों जहां में गुनहगार कर दिया ॥१॥
यह त्रिखंडी राजनृपति रत्नों का ताज था,
सिरताज गिराकर धूली पर नादार करदिया ॥२॥
डरते थे योद्धे बड़े २ ऐसा प्रताप था,
यह जिस्म बड़ा बलवान था बेकार करदिया ॥३॥
इसके थीं हजारों राणियां आया न फिर सबर
महाराणियों को कर्मों ने निराधार करदिया ॥४॥
कर्मों के आगे सूर्यचन्द्र तारे घूमते,
मुखरूप चन्द्र जैसा था सब ख्वार करदिया ॥५॥
इस महापुरुष के मरने का अफसोस है हमें,
हाय शूरवीर पै होनी ने क्या वार करदिया ॥६॥
फरमाया श्री जिनराज ने विषय विष से खराब है,
इस कामदेव ने लाखों का सुख छार करदिया ॥७॥
स्पर्शेन्द्रिय के वश से हस्ति फंसता कैद में,
और घ्राण विषय ने भ्रमर को बेजार करदिया ।८।
रसना के वशमें होकर मछली देती प्राणों को,
और कर्ण राग ने तीर हिरण के पार करदिया ।९।
जलते पतंग दीपक में नेत्रों के विषय से,
इन पांचों विषयों ने दुखी संसार करदिया ।१०।
ऐसी इच्छा ना करना कोई नर नारी भूल कर,
यह भजन सुनाकर सबको खबरदार करदिया ।११।
विषयों से मन हटाकर अब 'शुक्ल' शुभ ध्यान कर,
श्रीजिन की शिक्षा ने समूह जन पार करदिया ।१२।

दोहा–संस्कार मृतक किया धूम धाम के साथ,
निवृत्त हुए स्नान कर गई बहुत जब रात।
प्रातःकाल श्रीराम ने सबको लिया बुलाय,
औदार चित्त फिर प्रेम से यों बोले समझाय।

राम दोहा–सदा एकसा ना रहे आयु साज समाज
मिलजुल अब सब प्रेमसे करो लंक का राज।
काल अनादि से यही दुनिया का व्यवहार,
तुम सबको अब चाहिये करना सोच विचार।

चौक–वीरगति को प्राप्त दशानन परभव को हैं सिधार गये,
सब राजपाट का भार समझकर लायक तुमपर डारगये।
अब यही हमारा कहना है मिलजुल कर अपना काम करो,
और दशकन्धर की तरह आप प्रसिद्ध लंक का नाम करो।

दोहा–सुने वचन श्रीराम के खुशी सभी नर नार,
कुम्भकर्ण फिर उस समय बोले गिरा उचार।

भानु॰दोहा–राज पाट की अब नहीं इच्छा है सुखधाम
दुनियां में दुख पूर है तनिक नहीं आराम।

चौक–मेरा २ करता ही प्राणी इक दिन मरजाता है,
मित्र प्यारे क्या राजकोष सब कुछ यहांही धर जाता है।
जैसा करता कर्म कोई वैसा ही संग ले जाता है,
कुछ पूर्व पुण्य यहां भोग और यहांका आगे पाता है।
जो खिले फूल हैं बागों में आगे पीछे मुरझायेंगे,
येही स्वभाव संसार का है कोई जाते हैं कोई आयेंगे।

संयोग मूल दुख जीवों को सर्वज्ञदेव बतलाया है,
कर्मों के संग हो मूढ जीव ने अपना आप गंवाया है
यदि दुनियां में कोई सुख होता तीर्थंकर क्यों तजते इसको
बिन त्यागे दुस्संसार, मोक्ष का राज कहो मिलता किसको
शुभ बुद्धि सदा आतम को ठोकर खाने से आती है,
यदि सम्भल गया तो उच्चगति वरना दुर्गति मिलजाती है।

भानुकर्णजी की वैराग्य भावना

मिले जिस वार भी मौका निकल जाये तो अच्छा है,
फिसलता यदि कोई प्राणी संभल जाये तो अच्छा है ॥१॥
जमाना छानकर देखा कहीं भी सुख नहीं देखा,
इस लिये मोक्ष पद पर जीव लग जाये तो अच्छा है ॥२॥
बिना कारण कभी दुनियां से घृणा हो नहीं सकती,
श्री सर्वज्ञ की वाणी समझ जाये तो अच्छा है ॥३॥
अनन्तीन्तवार सब पुद्गल खा खा करके उगला है,
नहीं सन्तोष आया किन्तु आजाये तो अच्छा है ॥४॥
यह फिरता नरकगति नरगति पशुगति और सुरगति में,
प्रभु फेरा अनादि का यह टल जाये तो अच्छा है ॥५॥
चढ़गया रंग असली अब ये फीका हो नहीं सकता,
ध्यान आया "शुक्ल" अब सिद्ध बनजाये तो अच्छा है ॥६॥

श्रीराम दोहा—संयम से बढ़कर नहीं दुनियां में कोई चीज ।
राग द्वेष का इस बिना नष्ट न होता बीज ॥

चौक–इस श्रेष्ठ काम की तो सबसे पहले हम आज्ञा देवेंगे।
और कर्म अरि को काट आप निश्चय सिद्ध पद को लेवेंगे ॥
धन्य मात और तात आप यह कुल जिसमें तुम आये हो।
वैराग्य भाव में रंगे हुए संयम मार्ग चित्त लाये हो ॥

दोहा–इन्द्रजीत को भी चढा, यही मजीठी रंग।
मेघवाहन को लग रहा, यह संसार भुजंग ॥

चौक–विरक्त हुआ दिल मन्दोदरी का कई राणियां साथ हुई,
या यों कहिये इनके दिल में समज्ञान की आ प्रभात हुई।
राजपाट रूमृद्धि की जिनके हृदय में प्यास नहीं,
उनको दुनियां में क्षणमात्र भी अच्छा लगता वास नहीं ॥

दोहा–कुसुमोद्यान में थे मुनि, अप्रमेयबल नाम।
चार ज्ञान थे प्रथम ही, आतमगुण के धाम ॥

चौबो–था उसी रात में महामुनि ने ब्रह्म-ज्ञान को पास किया
घनघाती चारों कर्मों का तप जप संयम से नाश किया।
कुम्भकर्ण आदिक सबने जा चरणों में शीश नवाया है
केवल ज्ञानी सुखदानी ने ऐसे उपदेश सुनाया है ॥

दोहा–इस संसार असार में, दुःख संयोग वियोग।
सुनो भव्य जन कान धर जरा लगाकर योग ॥

चौक–जब मिले मनोगम चीज जीव तन-मन से खुश होजाता है
यदि मिले इसे प्रतिकूल वस्तु तो देख २ मुरझाता है ॥
यह संसार असार सार इसमें न किसी ने पाया है।
जिसने इससे मन मोड़ लिया वह मुक्तिधाम सिधाया है ॥

उपदेश सार गर्भित ऐसे अप्रमेयवल मुनि फरमाते हैं।
जिसको सुनकर ज्ञानी जनके मुरझे दिल भी खिलजाते हैं
फिर इन्द्रजीत ने सर्वज्ञ के चरणों में मस्तक डारा है।
और हाथ जोड़ बड़ी नम्रता से ऐसे वचन उचारा है॥

इन्द्र.दोहा—जग चक्षु सर्वेश प्रभु दीनबन्धु हितकार।
पूर्व जन्म का हाल कुछ भाषो जगदाधार॥

मुनि दोहा—पूर्व जन्म का हाल कुछ सुनो लगाकर कान।
सर्वज्ञ देव करने लगे ऐसे प्रगट व्याख्यान॥

चौ.—इस ही भरतक्षेत्र के मांही कौसुम्भी नगरी सुखदाई।
प्रथम और पश्चिम नाम तुम्हारा, शुभसंगति से पाप निवारा
भगदत्त मुनि के पास व्रतधारा, शांत कषाय पाप विष टारा
विचरत फेर कौसुम्भी आये, उपवन में निज आसन लाये
ऋतु वसंत खिली फुलवारी, ठंडी पवन चले सुखकारी।
नन्दीघोष राजा वहां आया, संग महाराणी अधिक सुहाया
पश्चिम मुनि को इच्छा जागी, राजकुमार बनूं लवलागी
मनुष्य जन्म का बन्ध लगाया, इक दिन काल मुनि का आया

दोहा—इन्दुमालिनी राणी के जन्म लिया उस धार।
रतिवर्धन शुभ नाम है पुण्यवान सुकुमार॥

चौक—प्रथम मुनि जपतप करके जा स्वर्ग पांचवे वास किया।
यहां विषय-विकारों ने रतिवर्धन को अपना दास किया
अवधिज्ञान से देख प्रथम सुरने आकर समझाया है।
पूर्व भव का हाल देव ने प्रेम से सभी बताया है॥

चौक—जब हुई प्रेरणा भाई की तो जाति निस्मरण ज्ञान हुआ।
और नाशवान दुनियां को तजकर तप संयम में ध्यान हुआ।
ब्रह्मलोक पहुंच जाकर सुरका तन वैक्रिय धार लिया।
पूर्व भव का जो था निदान कुछ उसके फलको टारदिया।

दोहा—इन्दु मालिनी आकर हुई मन्दोदरी यहां नार।
स्वर्ग छोड़ तुमने लिया जन्म इसी के धार॥
सुने वचन सर्वज्ञ के पुण्य उदय हुआ ज्ञान।
यह संसार लगने लगा महा दुखों की खान॥

चौक—ईशानकोण की तरफ बढ़े आभूषण वस्त्र उतार दिये।
केशों का अपने हाथ से लुंचन कर सभी उतार दिये॥
मुख वस्त्रिका में डोरा डालकर मुख पर उसे सजाई है।
और रजोहरण लिया बगल बीच कर में झोली लटकाई है।
दीक्षा उत्सव करवा कर के श्रीराम ने शीश झुकाया है।
फिर देव रमण में जाने को झटपट विमान सजाया है॥
सब योद्धों के साथ राम सीता के पास सिधाये हैं।
उस तरफ कमलिनीवत् सीता ने दोनों नेत्र खिलाये हैं॥

दोहा—आगमन सुन श्रीराम का सीता मन रही फूल।
सुख में लीन होकर सती गाने में रही झूल॥

सीताजी का गाना

पिया के दुःख ने मुझे दुखिया बना रक्खा है।
उनसे मिलने के लिये मन स्रोत बहा रक्खा है ॥१॥
भूल सकती मैं नहीं तेरी भोली सूरत।
मैंने तो तुमको ही सुरधाम बना रक्खा है ॥२॥
प्रेम के रंग में रंगी तुमने ऐसी अद्भुत।
प्रेम के तन्तु ने इक तार बना रक्खा है ॥३॥
तेरे स्वागत के लिये मन रोज सफर करता है।
और आंखों का फरश रास्ते में बिछा रक्खा है ॥४॥
मनके मन्दिर में तेरी करती हूं आरति हर दम।
तुमने तो बदले में दिल वज्र बना रक्खा है ॥५॥

दोहा—ऐसे बैठी गा रही मनमें अति उल्लास।
बार२ देखन लिये दृष्टि का करे विकाश ॥

चौबो:—इधर विमान सरसर करते देव रमण में आये है।
उतारे पास ही सीता के जयकार के नाद सुनाये हैं ॥
देख राम को जनक सुता नेत्रों में जल भर लाई है।
और इधर राम क्या जनता ने आंसुओं की झड़ी लगाई है ॥
दोहा—रामचन्द्र ने सिया को लीना गले लगाय।
बाकी सब उस सती को मस्तक रहे झुकाय ॥

चौबो.—चन्द्र प्रकाशी फूल शशी को देख तुरत खिल जाता है।
था प्रातःकाल ही चकवी को जैसे चकवा मिलजाता है॥

ज्यों सुर्य प्रकाशी देख रवि को फूला नहीं समाता है।
वह प्रेम दम्पति का ऐसा रसना से कहा नहीं जाता है॥

दोहा—दुर्बल तन ऐसे हुआ जैसे द्वितिया चन्द्र।
द्वेष नहीं है किसी पर इस कारण सानन्द॥

चौक—भुवनालंकृत हस्ति पर जगदम्बा को बैठाया है।
और सिंहासन पर बैठ अगाड़ी राम अति शोभाया है॥
श्रीराम सिया के जयकारों से देव रमण गुंजाया है।
है महासती यह व्योम बीच देवों ने शब्द सुनाया है॥

दोहा—लंका नगरी की यहां शोभा कही न जाय।
प्रवेश समय चारों तरफ ऐसी दई सजाय॥
लंका में प्रवेश सब लगे करन जिस बार।
ऐसे फिर गाने लगे प्रेमभाव अनुसार॥

सब का मिलकर मुबारकबादी देना—तर्ज-पँजाबी

मिल करके सब प्राणी तारीफ है,
गाती रामचन्द्र का आना भला॥ टेक॥

चल दुनियां दर्श को आई है; सब ओर से मिले बधाई है।
ध्वनि वाजित्रों की छाई है, वर्षा स्वागत में आई है।
हों वारी बलिहारी सुखकारी, मिलकर के सब प्राणी॥१॥
लंका में अति आनन्द छाया, श्रीराम ने दर्शन दिखलाया।
निज २ घर में मंगल गाया, याचकगण मन में हर्षाया।
॥ हों वारी बलि० ॥ २ ॥

प्रभुदान का मेह वर्षाया है, कंगलों को धनी बनाया है।
कैदी समूह छुड़वाया है, आनन्द का बादल छाया है।
॥ हाँ वारी वलि० ॥ ३ ॥

कृपा हम पर महाराज करो, लंका का सिर पर ताज धरो।
सब जनता का संताप हरो, हमरे सिर अपना हाथ धरो।
॥ हाँ वारी वलि० ॥ ४ ॥

हम लक्ष्मण को प्रणाम करें, सच्चे भाई बन काम करें।
सेवा हम आठों याम करें, निज आत्म का कल्याण करें।
॥ हाँ वारी वलि० ॥ ५ ॥

हर वार मुबारिक देते हैं, सब शरणा तेरा लेते हैं।
देवो कृपादान ये कहते हैं, शुभ "शुक्ल" ध्यान में रहते हैं।
॥ हाँ वारी वलि० ॥ ६ ॥

दोहा—जा पहुंचे दरबार में धूमधाम के साथ।
मिले परस्पर प्रेम से मिला २ कर हाथ ॥

चौक—श्रीराम से वीर विभीषण ने फिर वाणी नम्र उचारी है।
राज करो प्रभु लंका का इच्छा बस यही हमारी है ॥
यहां राजे सभी विराजमान और सभी आपको चाहते हैं।
अभिषेक राज का करने की सब सामग्री मंगवाते हैं ॥

दोहा—जन समूह कहने लगा ठीक ठीक सब ठीक।
सामग्री कहां दूर है सब कुछ यहीं समीप ॥

कवि दोहा—महापुरुष करते सदा निज गौरव का ध्यान।
समविभागी नित्य समझते परहित में कल्याण ॥

चौक-वाकी सेवा स्वीकार किन्तु ऐसी हां कब भर सकते थे।
दे चुके वचन जिसको जैसा उससे कैसे फिर सकते थे।
हंसकर बोले यों श्रीराम मित्र क्यों हमें लजाते हैं
आ बैठो आप सिंहासन पर मस्तकपर तिलक सजाते हैं।

दोहा—उसी समय श्रीराम ने पकड़ मित्र का हाथ।
औदार चित्त कहने लगे बड़े प्रेम के साथ॥

चौक-अय मित्र हमारी खातिर तूंने सब कुछ अर्पण कर डारा।
फिर राज,ताज क्या चीज भला तेंने या मैंने सिरधारा॥
दे चुके वचन अय वीर तुम्हें सो पुरा आज निभायेंगे।
और ताज लंक का तेरे मस्तक पर आज सजायेंगे"

दोहा—उसी समय श्रीराम ने किया यही आदेश।
उत्सव का करदो अभी वैक्रिय और विशेष॥

चौबो.-योग्य समय शुभ नियत कर उत्सव किया अपार।
तिलक किया जब राम ने होने लगे जयकार॥
फिर ताज राम ने मित्र के मस्तक पर आप सजाया है।
उस समय सभी ने मिलकरके जय खुशी का नाद बजाया है॥
कहीं गायन मुबारिकवादी के नर नारी खूब सुनाते हैं।
अपराधी सब स्वतंत्र किये सो भी मिल खुशी मनाते हैं॥

दोहा—विदा होन की राम ने फेर चलाई बात।
रघुपति से मित्र लगा कहन जोड़ कर हाथ॥

विभी. दोहा—लीक अरीसे की तरह किया आपने प्रेम।
आप बिना हम इस तरह ग्रीष्म में जिम हेम ॥

चौक.—शर्दी बिन महाराज बर्फ के पर्वत भी हल जाते हैं।
स्वामी का फिरता हाथ नहीं वो पान सभी गलजाते हैं ॥
कृपा आपकी से ही हमको स्वामी है आनन्द अमन।
यह नम्र निवेदन है चरणों में इतनी जल्दी ना करें गमन ॥

दोहा—विनती मित्र विभीषण की लई राम ने मान।
सुनकरके इस बात को जनता खुशी महान ॥

चौक.—सिंहोदर आदि राजे निज सुता वहीं ले आये हैं।
और उसी जगह सबके लक्ष्मण संग पाणिग्रहण करवाये हैं ॥
श्रीराम लखन सीता को सब लंका की सैर कराते हैं।
अब नित्य प्रति उसका स्वास्थ्य और प्रमोद अधिक बढ़ाते हैं

दोहा—इधर खुशी से लंक में किया राम ने वास।
मातायें सब अवध में होने लगीं उदास ॥

चौक—पुण्य योग से नारदजी वहां फिरते २ आये हैं।
छा रही उदासी रणवासों में देख मुनि घबराये हैं ॥
भाव भक्ति की नारद की सिंहासन पर बिठलाया है।
अब रंग ढंग सब देख मुनि ने ऐसे वचन सुनाया है ॥

नारद दोहा—आज कहो तुम किस लिये आंसू रहीं बहाय।
कारण आर्त ध्यान का देवो हमें बताय ॥

कौश.दो.-दुख मोचन मुनि राम यही घर ना आये लाल।
आती हैं चाहे खबर पर मिलने का अति ख्याल॥

चौक-पुत्रों का मुख देखन को दिल मेरा बड़ा तरसता है।
इस कारणसे हे महा मुनि नयनों से नीर बरसता है॥
तभी शान्ति मिले हमें जब राजकुमर यहां आयेंगे।
नहीं तो ये प्राण तरसते ही परभव को शीघ्र सिधायेंगे॥
किस हालत में है वैदेही कब उसके दर्शन पाऊंगी।
वह धन्य दिवस होगा जिस दिन सीता को गले लगाऊंगी॥
इस कारण सोच समुद्र में नित्य प्रति मैं गोते खाती हूं।
सुत वधू देखने की आशा में समय लंघाये जाती हूं॥

नारद दोहा-अय राणी पुत्र वधू हैं तेरे सानन्द।
दशकन्धर का अन्त कर बनें सुरेन्द्र मानिन्द॥

चौक-यदि तुझे विश्वास नहीं तो स्वयं वहां मैं जाता हूं।
जहां तक होगा सुतवधू तेरे मैं जल्द बुलाकर लाता हूं॥
श्रीरामचन्द्र से मिलने को यह दिल मेरा भी करता है।
अब तो लंका में गये बिना नारद को भी नहीं सरता है॥

दोहा-इतना कहकर के मुनि गये उडारी मार।
जा पहुंचे लंकापुरी जहां मुख्य दरबार॥
इधर रामचन्द्र से मिलन को भरत है आर्तवन्त।
यों विचार थे कर रहे बैठे आप एकान्त॥

राम जुदाई में भरतजी का विलाप

गिन गिन के दिन गुजारे नहीं रामचन्द्र आये।
रघुवर ने हमको दर्शन अब तक नहीं दिखाये ॥१॥
चौदह वर्ष हैं पूरे और दिन भी आज का है।
आने की खबर उनकी नहीं भृत्यगण भी लाये ॥२॥
माता बड़ी कौशल्या रोती हैं नित महल में।
यह वीर की जुदाई मुझसे सही न जाये ॥३॥
कहदे मुझे कोई आकर वह राम आ रहे हैं।
खुश हाल उसको करदूं यों "शुक्ल" मनमें आये ॥४॥

दोहा-इधर देख मुनि को लंक में खुशी सभी नर नार।
सिंहासन देकर किया नारद का सत्कार॥

चौक-नारद का स्वागत किया सभी ने राम लखन हर्षाये हैं।
और जनक सुता को भी रघुपति मुनि के दर्श कराये हैं॥
अन्न पान करवा करके सिंहासन पर बैठाये हैं।
तब रामचन्द्र को नारद मुनि ने ऐसे वचन सुनाये हैं॥

नारद दोहा-माताओं की ओर भी करना चाहिये ख्याल।
आप यहां आनन्द में उनका हाल बेहाल॥

चौक-विरह पुत्र का माताओं से हरगिज़ सहा न जाता है।
वो धन्य पुत्र जो मात तात का हृदय कमल खिलाता है॥
मोह के वश होकर आर्तध्यान में सारा समय बिताया है।
द्वितिया का चन्द्रमा जैसे ऐसे तन सभी सुखाया है॥

प्रथम सवा नौ मास उदर में माता पुत्र को रखती है।
फिर बाल अवस्था की सेवा करती २ नहीं थकती है॥
अब आपने और विलम्ब किया तो निश्चय प्राण गमावेंगी।
फिर वहां रहें चाहे वहां जांय माता न जीती पावेंगी॥

दोहा—नारद के ऐसे सुने रामचन्द्र ने वैन
बुला विभीषण को तुरत लगे इस तरह कहन।

राम दोहा—मित्र विभीषण अब हमें देवें आज्ञा आप।
पुत्र विरह का होरहा माताओं को संताप॥

चौक—उपकार किये जो जो तुमने हम बदला नहीं दे सकते हैं।
प्रसन्न रहो आनन्द रहो आशीश यही कह सकते हैं॥
अबतो माताओं के चरणों की रज मस्तक पर लायेंगे।
और पुत्र विरहिणी दुखियाओं के हृदय शर्द बनावेंगे॥

दो. विभी.—रामचन्द्र के सुन वचन गीले करके नैन,
वीर वीभीषण प्रेम से लगे इस तरह कहन।

चौक—हे नाथ अवश्य सब माताओं का हृदय शान्त करना चाहिये।
पर एक हमारी विनती पर भी ध्यान जरा धरना चाहिये॥
कुल सोलह दिन तक और यहां रहकर पावन स्थान करो।
बस यही कृपा कर आज हमारे ऊपर करुणादान करो॥
मैं अवधपुरी में लंका के कुछ शिल्पकारी भिजवाता हूं
मानिन्द लंक के अवधपुरी पन्दरह दिन में बनवाता हूं॥
फिर बैठके पुष्पविमान में आप वहां जाते शोभायेंगे।
पीछे २ चरणों के सेवक भी सारे जायेंगे॥

दोहा–लंकपति की बात यह लई राम ने मान।
नारदजी ने सब पता दिया अयोध्या आन॥

चौक–लंका के मानिन्द अवधपुरी पन्द्रह दिन में बनवाई है।
श्री रामचन्द्र के आने से पहले २ सजवाई है॥
इस तरफ राम ने भी अपना पुष्पकविमान सजाया है।
बहु जनसमूह श्री रामचन्द्र संग अवधपुरी में आया है।

दोहा–स्वागत करने को गया जनसमूह हर्षाय।
आरहे राम ये खबर सुन हर्षाश्रु रहे बहाय॥

समस्त प्रजा का आनन्द मनाना

रामचन्द्र के दर्शन करने चले अवध के नरनारी।
कूंचे गलियों बाजारों में नवल सजाई फुलवारी॥ टेक॥
बजे नफीरी अति सुरीली खड़काये फिर नक्कारा।
कोई बजावे सितार व ढोलक किसी पै खंजरी इखतारा।
गंधर्व गावें टोडी भैरों राग हैं धुरपत झपतारी॥ १॥
सारंगी मृदंगा बेला बाजे वीणाकार तबला घोरे।
सब मिलकर यों वाक्य उचरत हैं मैं लगूं पांव रघुवर तोरे॥
खबर सुनाई आन अवध को जय हो नारद ब्रह्मचारी॥२॥
रावण मारा लंका जीती मित्र को फिर राज दिया,
तख्तनशीन विभीषण करके लंका का सिरताज दिया।
सब दुष्टों को रण में मारा देव हुए आज्ञाकारी॥ ३॥
आगे २ भरत जा रहे फूलमाल लटके कर में,
सूर्यवंशी झण्डा लहरा लपटभरी गुलकेशर में।
"शुक्ल" ध्यान कर देखो आरही रामचन्द्र की असवारी ४॥

दोहा—जय जयनाद करते हुए आ पहुंचे विमान।
वर्णन नहीं कुछ कर सकें समझो छटा महान ॥
उतारा पुष्पकविमान को झट बढे भरत महाराय।
रामचन्द्र ने भरत को हृदय लिया लगाय ॥

चौबो. उस समय जो अनन्द छायाथा यहां कहने में नहीं आया है
सानन्द पहुंच कर महलों में माता को शीश निवाया है ॥
अद्भुत छटा देख माताओं का हृदय कमल प्रकाश हुआ।
मानिन्द स्वर्ग के अवधपुरी में दृश्य एक यह खास हुआ ॥
जनकसुता ने कौशल्या के चरणों में सिर डार दिया।
निज गले लगाकर वैदेही को सासु ने अतितर प्यार किया ॥
कभी पुत्रों का सिर चूम रही कभी आगे पीछे फिरती है
कभी कैशल्या पै प्रेमभाव से बूंद हर्ष की गिरती है ॥
मिल जुल करके सब मातायें लक्ष्मण का घाव निहार रहीं
दुख सुख की बातें पूछ २ तन मन धन सब कुछ वार रहीं
बाजार गली २ कूंचा २ सब जगह यह चर्चा भारी है।
और राम लखन वैदेही पर बच्चा २ बलिहारी है ॥
श्रीभरतभूप ने कैदी जन सब रियासत भर के छोड दिये।
और लिए गरीबों के देने को दान खजाने खोल दिये ॥
सब सेठ नगर के थाल मोतियों के भर २ के लाते हैं।
चरणों में मस्तक झुका २ खुश होकर भेंट चढाते हैं ॥

दोहा—पुण्यवान जहां पर वहां हर्षानन्द अपार।
प्रेमभाव से मृदु बचन सब जन रहे उचार ॥

प्रजागण का आनन्द मनाना

श्री रघुवर अयोध्या में आज तशरीफ लाये हैं।
आश्विन शुक्ला रवि द्वितीया शोक सब के भुलाये हैं॥
चले हैं दर्श करने को अयोध्या के सभी वासी।
सुधी अपनी है विसराई नहीं फूले समाये हैं॥
महकते हैं गली कूंचे महक घर २ में फैली है।
सजे अद्भुत दरो दीवार मनहर दृश्य लाये हैं।
सभा में स्तम्भ स्वर्णों के झलक रत्नों की न्यारी है।
जिधर देखो मकानों पर दिये घी के जलाये हैं॥
मगन मन में है मातायें देख सियाराम की जोड़ी।
भरत और शत्रुघ्न ने भी चरणों में सिर झुकाये हैं॥
छवि उस वक्त की कोई 'शुक्ल' कुछ कह नहीं सकता
क्या शक्ति लेखनी की यहां देवगण भी लजाते हैं॥

दोहा—जयजयकारों के शब्द गूंज रहे चहुं ओर।
भरत वीर श्रीराम से यूं बोले कर जोर॥

भ०दोहा—अब तो भार गरीब के सिर से लेवो उतार।
राज पाट ये आपका लेवो सब सम्भार॥

चौपै—धन्य धन्य है लक्ष्मणजी तुमको धन्य बारम्बारी है।
जिसने जाये आप धन्य सुमित्रा मात हमारी है॥
केवल एक निर्भाग्य मनुष्य मैं दुष्कर्मों का मारा हूं।
अब तो सेवक को क्षमा करो चरणों का दास तुम्हारा हूं॥

दोहा—रामचन्द्र ने भरत को प्रेम से गले लगाय।
बैठाकर फिर पास में यों बोले समझाय॥

राम.दोहा–मालिक होकर कर रहा कैसी भोली बात।
पूर्ण तैने ही किया वचन पिता का भ्रात॥

चौबो.–मिल आज परस्पर बैठे हैं यह कृपा तुम्हारी ही तो है।
कौशल्या को वहां भिजवाना यह प्रेम तुम्हारा ही तो है।
धन्य कैकयी मात जिन्होंके ऐसे लायक पुत्र हुए।
रघुवंशिन के मणि मुकुट तुम ही इक पुत्र सुपुत्र हुए॥

दोहा–प्रेमभाव से इधर यह मिल रहे चारों वीर।
माताओं के भी उधर बहे प्रेम का नीर॥

चौबो–बार २ माताओं को कुल वधुयें शीश निवाती हैं।
हम जैसी पुत्रवती हो तुम यों सासु आशीष सुनाती हैं॥
अब निवृत्त हो इन कामों से फिर मांगलिक इक सभा लगी
और याचकगण दुखियाप्राणी क्या सबकी किस्मत आनजगी

दोहा–राम लखन भाई भरत और शत्रुघ्न जान।
जनकसुता वहां पांचवी शोभ रही गुणवान॥

चौबो–जनता चहुँ ओरथी खड़ी हुई जिसकाथा कुछ शुम्मार नहीं
था फर्श मणि और रत्नों का बाकी शोभा का पार नहीं।
मीठे स्वर से कुछनरनारी मिलजुल के गायन उचार रहे
सुनर यह वाणी मस्तहुए शुभभाव से जन्म सुधार रहे

गन्धर्वों का उपदेशप्रद गायन

नरनारी सफल अवतार करो सुनो ध्यान से
शिक्षा विचार करो ॥ टेक ॥

श्रीराम सुपुत्र कहाया है
जिन वचन पिता का निभाया है।
कर्तव्य जो है दिखलाया है
अनुकरण सभी नरनार करो ॥ १ ॥

सुमित्रा जैसी माई बनो
और लक्ष्मण जैसे भाई बनो।
सब भाई के भाई सहाई बनो
सब क्षीर नीर सम प्यार करो ॥ २ ॥

सती सीता की महिमा अगाध कही
जिसने निज आत्म साध लई।
सती धर्म की महिमा याद रही
पतिधर्म पै सब न्यौछावर करो ॥ ३ ॥

सब राज सुखों को त्याग दिया
और वन में पति का साथ दिया।
नहीं छोड़ा जिन रघुनाथ पिया
सत्य धर्म पै तन निसार करो ॥ ४ ॥

लक्ष्मण ने वन में सेवा करी
श्रीराम की आज्ञा शीश धरी।
मित्र विभीषण की विपदा हरी
तुम भी निज हृदय उदार करो ॥ ५ ॥

सत्य पुरुषों का अनुकरण करो
जिन धर्म की आकर शरण परो।
सब ऐसे ही पूर्ण प्रण करो
दुखियों पर करुणा अपार करो ॥ ६ ॥
हनुमत से सेवक ना पावेंगे
जो सत्य पै रक्त बहावेंगे।
स्वामी हित कष्ट उठावेंगे
ऐसे धन पर उपकार करो ॥ ७ ॥
कुसंग विभीषण छोड़ दिया
सत्यवादी का संग जोड़ लिया।
अन्याय से निज मन मोड़ लिया
तुम सज्जन जन से प्यार करो ॥ ८ ॥
सच्चे सुग्रीव जैसे मित्र कहां
और ऐसे भक्त पवित्र कहां।
अब कलियुगी मित्र विचित्र यहां
ऐसों का मत विश्वास करो ॥ ९ ॥
तुम भी राम लखन से योग्य बनो
इस भारत का सब रोग हनो।
सतयुग जैसे धर्मी बनो
शुभ ध्यान 'शुक्ल' सुखकार करो ॥१०॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

समाप्तोऽयं रामायणस्य तृतीय खंडम्

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
८	५	अद्नी	अपनी
१२	२	दुनिया	दुनिया में
२२	४	अपन	अयन
२५	३	तेरे दरपे	तेरे पे
४४	८	आवता	आयगा
५०	१३	तरु	मरु
५१	४	क्या तू मेरे	क्या मेरे
५१	२१	उनकी	उनकी यहां
५४	२४	कहूं	खाऊँ
५६	१६	वात	वातें
५८	२३	पति	मति
६२	६	भाई	माई
६२	१३	साधु	साज्ञु
६३	३	जाय	जाप
६४	१४	सम्पकधारी	सम्यकधारी
६६	२	दशकन्ध	दशकन्धर
६६	५	है फरस जमी पर निलम का क्या रतन स्फटिक आड़े हुवे	

६७	४	फलफू	फलफूल
६७	२१	कमी	कामी
६७	२२	गौर वहिन	गौरव हीन
६८	६	मनलाई	मन लाई है
६८	११	थान	वात
६८	१६	मुझाती है	मुस्काती हैं
७०	१०	खभी	सभी
७३	१४	जीं	जो
७५	११	वच	पांच
७६	१५	शर्भ	शर्म
७८	२०	यह सब लाइन अशुद्ध है।	दोनों विद्याधर इसी रूप पर परस्पर लड़ कर के
७९	१२	कहो	कही
७९	२३	दुखी मिलता	दुख मिलता
७९	२४	करुण	करुणा
८०	६	हो औरों	जो औरों
८०	८	मरते हैं	भरते हैं
८०	१४	वर्बाद नहीं	बरबाद वही
८०	२४	पुष्प	पुण्य
८३	२१	कर	न कर
८३	२४	दुखियों	दुखियों को
८४	३	आयें	आज
८४	४	सपा	सदा
८४	६	नाथ	नाय
८५	८	मारा	भारा

८६	१७	पुष्प	पुण्य
९०	१६	जब दिल वैलाते हैं	जब दिन अपना वैलाते हैं
९१	१४	रावण	रावण का
९२	३	शाल	शान
९२	८	कुछ लिये	कुछ दिन के लिये
९२	११	विचार	विचार में
९२	१९	वक्शा	नक्शा
९३	३	मंत्री	मंत्रीश
९३	१२	अव	अवराहु
९३	१४	रोकी	रोको
९५	२४	सभी के	सभी को
९७	७	मूल	भूल
९७	२३	हाकिमों	हाकिमी
९९	५	में है	में
९९	१८	सुखो में भूल रहा	खुशी में फूल रहा है
९९	१९	हूं मगमे	दूंगा
१००	२	वहा रहा है	वहाता रहा
१०८	२	याप करन	याद करने
१०९	१५	साधी	साधी
११४	२१	न	न कुछ
११८	१७	को	का
१२०	२१	आफत	जाफत
१२५	१३	अंचनी	अंजनी
१२६	२१	अकूल	अकल
१२७	२०	प्रलांड	ब्रह्मांड
१३४	१२	लोक	लीक

१४४	१८	हृदय हूं	हृदय से हूं
१४८	६	कर घर	कर धर
१४६	१७	दया	दफा
१५५	१२	कीसी ने है मारा	किसी ने है भारा
१५५	१८	भ्रम	भ्रम का
१५६	१७	सैना	सेना है
१७१	१३	देकरमण	देवरमण
२०४	८	मल	दल
२०६	५	डोल	डोला
२१५	११	पित	पिता
२१८	३	करने	करने में
२२१	१६	कौ	कौन
२४२	१८	तेज वेकार	तजुर्बेकार (अनुभवी)
२४८	३	तमकताब	तमकतान
२४८	२०	सुग्रीवते	सुग्रीवने
२७२	६	परभव	परवस
२७२	१६	वैश्वान	वैश्वानल
२८४	४	ध्याव	ध्यावो
२८५	१६	दया	दवा
२८७	७	लेना	होना
२८८	१२	निःशंक	वेशक
२६२	१३	अष	अब
२६७	३	मर्म	भ्रम
२६८	१६	अरने	अपने
२६६	६	काइयां	कइयों
३०३	५	लक्ष्मीवती	बत्तीस लक्षणी

३०४	१०	चाकर	जाकर
३०४	१५	त्रिराम	विरान
३०५	६	दिल	दिल से
३०८	१७	माम	मामा
३१०	६	इसको	इसका
३१६	७	ने	के
३१६	३	पोधों को	पोधों का
३१६	१२	तुलावेंगे	भुलावेगे
३२४	२०	वघराई है	वतलाई है
३२७	२०	घरसाते हैं	चरताते हैं
३३४	१६	वेपीर	वेपीर पर
३३८	५	जाय	जाय
३४०	२४	कमांध	कामांध
३५०	१६	हुई	रहे
३५४	७	होगी	भोगी
३५६	१६	तभी	सभी
३५८	१७	वर्ष चतुर्दश	सहस्त्र पंचदश
३५६	१६	ततह	तरह
३६०	२२	तजरायेंगे	तज जायेंगे
३६२	८	धीर	धीरज
३६२	१०	मी में	रण भूमि में
३६२	२०	भ्रष्टा चारिन	श्रेष्टाचारिन
३६२	२२	छेड़ दूं	छोड़ दूं
३७२	२१	था या	या
३८२	५	जो मनन्द	जो मानन्द



